1BEDT1

Philosophical Perspective of Education

DR. C.V. RAMAN UNIVERSITY
Chhattisgarh, Bilaspur AN AISECT GROUP UNIVERSITY
Approved by : PCI | AICTE | NCTE | BCI | Member of : AIU | Joint Committee : (UGC | DEB | AICTE) | Recognized by : UGC | A NAAC Accredited University

डॉ. सी.वी. रमन विश्वविद्यालय
करगी रोड, कोटा, बिलासपुर, छत्तीसगढ़
फोन: 07753-253801, 07753-253872
ई-मेल: info@cvru.ac.in, वेबसाइट: www.cvru.ac.in

1BEDT1

Philosophical Perspective of Education

Credit- 4

Subject Expert Team

Prof. Raina Tiwari HEAD , Department of Education, Vijayashree Educational Institute, Rani Durgavati Vishwavidhyalaya Jabalpur (M.P.)

Prof. Jubraj Khamari Department of Education , Sambalpur University Jyoti Vihar , Burla, Sambalpur , Odisha

Dr. Dheerendra Singh Assistant Professor,Department of Education , Guru Ghasidas Vishwavidhyalaya, Bilaspur (C.G.)

Dr. Renu Shukla Assistant Professor, Department of (Sanskrit), Dr. C.V.Raman University Kota, Bilaspur (C.G.)

Dr. Ravi Prakash Choudhary Dean , Department of Law Dr. C.V.Raman University Kota, Bilaspur (C.G.)

Dr.Krishna Kumar Pandey, Assistant Professor , Dr.C.V.Raman Universtiy Kota, Bilaspur (C.G.)

Mrs. Meenakshi Chandravanshi, Assistant Professor, Dr. C.V.Raman University Kota, Bilaspur (C.G.)

Dr. Parvati Yadav, Assistant Professor, Dr. C.V.Raman University Kota, Bilaspur (C.G.)

Dr. Smriti Kiran Saimons, Associate Professor, Dr. C.V.Raman University Kota, Bilaspur (C.G.)

Course Edited By:

Prof.Brijesh Chandra Tripathi, Department of Education,Rajendra University Balangeer Odisha

Unit Written By:

Dr. Krishna Kumar Pandey

Assistant Professor, Dr. C.V. Raman University, Kota, Bilaspur, Chhattisgarh

Warning: All rights reserved, No part of this publication may be reproduced or transmitted or utilized or stored in any form or by any means now known or hereinafter invented, electronic, digital or mechanical, including photocopying, scanning, recording or by any information storage or retrieval system, without prior written permission from the publisher.

Edition: 2026

Published by: Dr. C.V. Raman University Kargi Road, Kota, Bilaspur, (C. G.), Ph. +07753- 253801,07753-253872 E-mail: info@cvru.ac.in, Website: www.cvru.ac.in

कार्यक्रम की संरचना

कार्यक्रम का शीर्षक	**:**	**बैचलर ऑफ़ एजुकेशन**
कार्यक्रम का प्रकार	**:**	**स्नातक**
कार्यक्रम क्रेडिट	**:**	**80**
कार्यक्रम का समय	**:**	2 **साल**
पात्रता मापदंड	**:**	**किसी भी विषय में स्नातक की डिग्री**

कार्यक्रम के उद्देश्य-

- विद्यार्थियों को पुस्तकालय से संबंधित गतिविधियों के प्रति सतर्क और जागरूक बनाना।
- विभिन्न प्रकार की पुस्तकालय संबंधी समस्याओं को समझने में सक्षम बनाना।
- पुस्तकालय के संपूर्ण विकास के बारे में ज्ञान प्रदान करना।
- शोध की मानसिकता और दृष्टिकोण विकसित करना।
- पुस्तकालय को व्यापक रूप से समझने में सक्षम बनाना।
- पुस्तकालय के बारे में पूर्ण ज्ञान उपलब्ध कराना।
- राष्ट्रीय स्तर की प्रतियोगी परीक्षाओं के लिए विद्यार्थियों को तैयार करना।

कार्यक्रम के परिणाम-

- सेमेस्टर के अंत तक विद्यार्थियों में अपेक्षित क्षमताओं का विकास।
- विद्यार्थी समस्याओं की पहचान कर सकें और भविष्य के विकास के लिए आवश्यक अनुप्रयोगों का चयन करने में सक्षम हों।
- सिद्धांतों और अवधारणाओं की गहन समझ के साथ व्यापक और संगठित ज्ञान का प्रदर्शन कर सकें।
- विभिन्न संस्कृतियों और समुदायों के ज्ञान का एकीकरण कर सकें।
- आलोचनात्मक चिंतन, स्वतंत्र निर्णय क्षमता, अंतर–सांस्कृतिक संवेदनशीलता तथा क्षेत्रीय, राष्ट्रीय और वैश्विक दृष्टिकोण अपनाते हुए कला, भाषा एवं सामाजिक विज्ञान के क्षेत्र में समस्याओं की पहचान और समाधान कर सकें।
- समुदाय सहभागिता के विविध संदर्भों में आत्मचिंतन, योजना-निर्माण, नैतिक निर्णय-निर्धारण और अंतर्विषयी टीम वर्क की क्षमता का प्रदर्शन कर सकें।

पाठ्यक्रम की संरचना

कोर्स का शीर्षक	**:**	**Philosophical Perspective of Education**
कोर्स का प्रकार	**:**	**मूल पाठ्यक्रम**
कोर्स कोड	**:**	**1BEDT1**
कोर्स क्रेडिट	**:**	**4**
समसत्र	**:**	**1**

पाठ्यक्रम सीखने का उद्देश्य-

इस पाठ्यक्रम के माध्यम से शिक्षार्थी:

- शिक्षा की अवधारणा, इसके दार्शनिक व समाजशास्त्रीय आयामों, मूल्य शिक्षा, अनुशासन और स्वतंत्रता के अंतर्संबंधों को समझ सकेंगे।
- वैदिक परंपराओं, आस्तिक (सांख्य, वेदांत), नास्तिक (बौद्ध, जैन) तथा पाश्चात्य धाराओं (प्रकृतिवाद, आदर्शवाद, यथार्थवाद, अस्तित्ववाद) का अध्ययन कर इनके शैक्षिक निहितार्थों को जान सकेंगे।
- महात्मा गांधी, रवींद्रनाथ टैगोर, स्वामी विवेकानंद, प्लेटो, फ्रोबेल और जॉन डीवी के शैक्षिक दर्शन एवं पद्धतियों का मूल्यांकन कर सकेंगे।
- स्वतंत्रता के बाद गठित शिक्षा आयोगों (मुदालियर, कोठारी) तथा राष्ट्रीय शिक्षा नीतियों (NPE 1986 एवं NEP 2020) के प्रावधानों और दूरदृष्टि का विश्लेषण कर सकेंगे।
- सैद्धांतिक ज्ञान को शिक्षण-अधिगम प्रक्रियाओं, कक्षा प्रबंधन एवं अधिगम परिणामों (Learning Outcomes) के व्यावहारिक अनुप्रयोगों से जोड़ सकेंगे।

पाठ्यक्रम सीखने के परिणाम-

पाठ्यक्रम को सफलतापूर्वक पूरा करने के बाद, शिक्षार्थी निम्नलिखित कार्यों में सक्षम होंगे:

- **CLO 1 (खंड 1):** शिक्षा के मूलभूत सिद्धांतों, समाज के साथ इसके संबंधों, मूल्य शिक्षा तथा स्वतंत्रता एवं अनुशासन की अवधारणाओं की स्पष्ट व्याख्या कर सकेंगे।
- **CLO 2 (खंड 2):** भारतीय (वैदिक, सांख्य, वेदांत, बौद्ध, जैन) एवं पाश्चात्य (आदर्शवाद, प्रकृतिवाद, यथार्थवाद, अस्तित्ववाद) दर्शन की तुलना करते हुए उनके शैक्षिक अनुप्रयोगों को स्पष्ट कर सकेंगे।
- **CLO 3 (खंड 3):** प्रमुख भारतीय (गांधी, टैगोर, विवेकानंद) एवं पाश्चात्य (प्लेटो, फ्रोबेल, डीवी) विचारकों की शिक्षण विधियों व शैक्षिक दर्शन का समालोचनात्मक विश्लेषण कर सकेंगे।
- **CLO 4 (खंड 4):** स्वतंत्रता-उत्तर भारत में शिक्षा के विकास, मुदालियर व कोठारी आयोग की सिफारिशों तथा NPE 1986 एवं NEP 2020 के प्रमुख नीतिगत ढांचों की समीक्षा कर सकेंगे।
- **CLO 5 (खंड 4):** आधुनिक शिक्षण पद्धतियों, अधिगम परिणामों (Learning Outcomes) और व्यावहारिक अनुप्रयोगों को कक्षा-कक्षीय वातावरण में प्रभावी ढंग से लागू कर सकेंगे।

1BEDT1

Philosophical Perspective of Education

खंड / इकाई क्र.	खंड / इकाई का नाम	प्र. क्र.
खंड 1	ब्लॉक 1 शिक्षा के दार्शनिक एवं समाजशास्त्रीय आधार	**1-64**
इकाई 1	**शिक्षा की अवधारणा, प्रकार एवं उद्देश्य**	01
इकाई 2	शैक्षिक दर्शन एवं इसका क्षेत्र	20
इकाई 3	शैक्षिक समाजशास्त्र एवं समाज	40
इकाई 4	स्वतंत्रता, अनुशासन एवं मूल्य शिक्षा	50
खंड 2	दर्शन की भारतीय एवं पाश्चात्य विचारधाराएँ	**65-176**
इकाई 5	भारतीय दर्शन में वैदिक एवं ज्ञानमीमांसीय परंपराएँ	65
इकाई 6	भारतीय दर्शन की आस्तिक/आर्थोडॉक्स धाराएँ (सांख्य एवं वेदांत)	89
इकाई 7	भारतीय दर्शन की नास्तिक/हेटरोडॉक्स धाराएँ (बौद्ध एवं जैन)	118
इकाई 8	पाश्चात्य दर्शन की क्लासिकल धाराएँ (प्रकृतिवाद एवं आदर्शवाद)	142
इकाई 9	पाश्चात्य दर्शन की आधुनिक धाराएँ (यथार्थवाद एवं अस्तित्ववाद)	164
खंड 3	महान शैक्षिक विचारक एवं उनका योगदान	**177-307**
इकाई 10	भारतीय विचारक: महात्मा गांधी	177
इकाई 11	भारतीय विचारक: रवींद्रनाथ टैगोर एवं स्वामी विवेकानंद	201
इकाई 12	पाश्चात्य विचारक: प्लेटो	224
इकाई 13	पाश्चात्य विचारक: फ्रेडरिक फ्रोबेल	258
इकाई 14	पाश्चात्य विचारक: जॉन डीवी	279
खंड 4	शिक्षा आयोग, नीतियाँ एवं व्यावहारिक अधिगम परिणाम	**308-406**
इकाई 15	स्वतंत्रता-उत्तर शिक्षा आयोग (मुदालियर एवं कोठारी आयोग)	308
इकाई 16	राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 (NPE 1986)	328
इकाई 17	राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 (NEP 2020)	358
इकाई 18	व्यावहारिक अनुप्रयोग एवं अधिगम परिणाम	386

खंड 1	ब्लॉक 1 शिक्षा के दार्शनिक एवं समाजशास्त्रीय आधार	**1-64**
इकाई 1	**शिक्षा की अवधारणा, प्रकार एवं उद्देश्य**	01
इकाई 2	शैक्षिक दर्शन एवं इसका क्षेत्र	20
इकाई 3	शैक्षिक समाजशास्त्र एवं समाज	40
इकाई 4	स्वतंत्रता, अनुशासन एवं मूल्य शिक्षा	50

नोट

इकाई 1
शिक्षा की अवधारणा, प्रकार एवं उद्देश्य

इकाई की संरचना

1.1 प्रस्तावना
1.2 उद्देश्य
1.3 शिक्षा का अर्थ एवं विस्तृत व्याख्या
1.3.1 व्युत्पत्तिपरक अर्थ
1.3.2 भारतीय एवं पाश्चात्य संकल्पना
1.3.3 संकुचित, व्यापक और आधुनिक अर्थ
1.4 शिक्षा की प्रकृति एवं विशेषताएँ
1.5 शिक्षा के प्रकार: विस्तृत अध्ययन
1.5.1 औपचरिक शिक्षा
1.5.2 अनौपचारिक शिक्षा
1.5.3 निरौपचारिक शिक्षा
1.5.4 तीनों प्रकारों की तुलनात्मक समीक्षा
1.6 शिक्षा के प्रमुख उद्देश्य एवं आदर्श
1.6.1 वैयक्तिक विकास के उद्देश्य
1.6.2 सामाजिक एवं राष्ट्रीय उद्देश्य
1.6.3 नैतिक, सांस्कृतिक एवं व्यावसायिक उद्देश्य
1.7 सारांश
1.8 शब्दावली
1.9 बोध प्रश्नों के उत्तर
1.10 सुझावित अध्ययन सामग्री – मुक्त शैक्षिक संसाधन
1.11 संदर्भ ग्रंथ
1.12 अभ्यास प्रश्न

1.1 प्रस्तावना

मानव सभ्यता के क्रमिक विकास और सामाजिक संरचना के निरंतर परिमार्जन में शिक्षा की भूमिका मौलिक एवं अपरिहार्य रही है। शिक्षा मात्र अक्षरों का बोध अथवा सूचनाओं का संकलन नहीं है, अपितु यह व्यक्ति की अंतर्निहित चेतना का प्रस्फुटन और उसकी सुषुप्त सामर्थ्य का सर्वांगीण विकास करने वाली एक अत्यंत सूक्ष्म एवं व्यापक प्रक्रिया है। जैविक रूप से जन्म लेने वाला शिशु जब समाज के संपर्क में आता है, तब शिक्षा ही वह सशक्त माध्यम बनती है जो उसे एक विवेकशील, उत्तरदायी और सुसंस्कृत सामाजिक प्राणी के रूप में रूपांतरित करती है।

नोट

भारतीय दार्शनिक परंपरा में शिक्षा को 'ज्ञान रूपी तृतीय नेत्र' माना गया है, जो अज्ञान के अंधकार को मिटाकर जीवन में परम सत्य और सर्वव्यापी प्रकाश का संचार करता है। पाश्चात्य दार्शनिक धारा में भी शिक्षा को व्यक्ति की स्वाभाविक शक्तियों के नैसर्गिक, समरस और प्रगतिशील विकास के रूप में स्वीकार किया गया है। प्रस्तुत प्रथम इकाई में हम शिक्षा की शास्त्रीय संकल्पना, इसके व्युत्पत्तिपरक अर्थों, विविध दार्शनिक दृष्टिकोणों, व्यापक और संकुचित स्वरूपों, विभिन्न प्रकारों तथा व्यक्ति एवं समाज के संदर्भ में इसके बहुआयामी उद्देश्यों का विषद और गहन विश्लेषण प्रस्तुत करेंगे।

1.2 उद्देश्य

इस विस्तृत इकाई का गहन अध्ययन करने के उपरांत शिक्षार्थी:

1. शिक्षा के व्युत्पत्तिपरक, भारतीय, पाश्चात्य, संकुचित तथा व्यापक अर्थों की शास्त्रीय एवं तार्किक व्याख्या करने में सक्षम हो सकेंगे।
2. शिक्षा की प्रकृति के विविध पक्षों—जैसे द्विध्रुवीय एवं त्रिध्रुवीय प्रक्रिया, कला एवं विज्ञान का समन्वय, और सतत विकास—का आलोचनात्मक विश्लेषण कर सकेंगे।
3. औपचारिक, अनौपचारिक तथा निरौपचारिक शिक्षा की सीमाओं, उपयोगिताओं और व्यावहारिक अंतर्संबंधों के मध्य सूक्ष्म अंतर स्पष्ट कर सकेंगे।
4. वैयक्तिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, नैतिक एवं व्यावसायिक दृष्टिकोण से शिक्षा के विभिन्न उद्देश्यों के संतुलन और प्रासंगिकता का सही मूल्यांकन कर सकेंगे।

1.3 शिक्षा का अर्थ एवं विस्तृत व्याख्या

मानव समाज के विकासक्रम में शिक्षा एक अत्यंत व्यापक, गतिशील और रूपांतरणकारी प्रक्रिया के रूप में स्थापित रही है। इसे केवल साक्षरता या सूचना संचय तक सीमित रखना इसके वास्तविक स्वरूप को संकुचित करना होगा। शिक्षा के संपूर्ण और प्रामाणिक स्वरूप को समझने हेतु इसके व्युत्पत्तिपरक स्रोतों, विविध दार्शनिक दृष्टिकोणों तथा इसके संकुचित, व्यापक एवं आधुनिक अर्थों का क्रमबद्ध अनुशीलन आवश्यक है।

1.3.1 व्युत्पत्तिपरक अर्थ

1. **भारतीय भाषाई उत्पत्ति**
   शिक्ष धातु: शिक्षा शब्द की उत्पत्ति संस्कृत भाषा की शिक्ष धातु से हुई है। इसका अर्थ होता है सीखना और सिखाना अथवा विद्या प्राप्त करना। यह प्रक्रिया केवल ज्ञान ग्रहण करने तक सीमित नहीं है, अपितु यह गुरु के मार्गदर्शन तथा शिक्षार्थी की जिज्ञासा के मध्य चलने वाली अंतःक्रिया को दर्शाती है।
   विद् धातु: भारतीय परंपरा में शिक्षा के पर्याय के रूप में विद्या शब्द अत्यधिक प्रचलित है, जो संस्कृत की विद् धातु से बना है। इसका अर्थ है जानना, ज्ञान प्राप्त करना अथवा सत्य की अनुभूति करना। उपनिषदों में स्पष्ट उल्लेख है—सा विद्या

या विमुक्तये, अर्थात् विद्या वही है जो मनुष्य को अज्ञान, भय, संकीर्णता और भौतिक बंधनों से पूर्णतः मुक्त करे।

नोट

2. पाश्चात्य भाषाई उत्पत्ति

Educare (एड्यूकेयर): इस शब्द का अर्थ है पालन-पोषण करना या संवर्धित करना। जिस प्रकार एक माली पौधे की देख-रेख करके उसे संवर्धित करता है, ठीक उसी प्रकार शिक्षा बालक की शारीरिक, मानसिक और नैतिक क्षमताओं का पोषण करती है।

Educere (एड्यूसेरे): इस शब्द का अर्थ है बाहर निकालना या आगे बढ़ाना। यह अवधारणा स्वीकार करती है कि ज्ञान बालक के भीतर सुप्त रूप में विद्यमान है; शिक्षा का मूल कार्य उस सुप्त ज्ञान को बाहर प्रस्फुटित करना है।

Educatum (एड्यूकेटम): इसका अर्थ है शिक्षण की कला या प्रशिक्षण की क्रिया। यह शिक्षण की प्रविधियों, सिद्धांतों और वैज्ञानिक विधियों को निरूपित करता है।

Educatio (एड्यूकेशियो): इसका तात्पर्य बालक की आंतरिक क्षमताओं को बाह्य अभिव्यक्ति प्रदान करने की अनवरत विकास-यात्रा से है।

1.3.2 भारतीय एवं पाश्चात्य संकल्पना

1. भारतीय दार्शनिकों का दृष्टिकोण

ऋग्वेद: शिक्षा वह प्रक्रिया है जो मनुष्य को आत्मनिर्भर और निस्वार्थी बनाती है।

आदि शंकराचार्य: शिक्षा आत्मा की अनुभूति और आत्म-साक्षात्कार का सशक्त साधन है।

स्वामी विवेकानंद: मनुष्य के भीतर पूर्व से ही विद्यमान संपूर्णता और पूर्णता को अभिव्यक्त कर देना ही शिक्षा है।

महात्मा गांधी: शिक्षा से मेरा तात्पर्य बालक और मनुष्य के शरीर, मन तथा आत्मा के सर्वांगीण और सर्वोत्कृष्ट विकास से है।

डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन: शिक्षा को केवल आजीविका कमाने का साधन मात्र नहीं होना चाहिए; इसे सत्य की खोज, मानव मूल्य की स्थापना और आत्मा का प्रबोधन करना चाहिए।

2. पाश्चात्य दार्शनिकों का दृष्टिकोण

सुकरात: शिक्षा का अर्थ है उन सर्वमान्य विचारों को बाहर लाना जो प्रत्येक मनुष्य के मस्तिष्क में सुप्त अवस्था में निहित हैं।

प्लाटो: शिक्षा बालक में उन प्राथमिक क्षमताओं का विकास करती है जिनके द्वारा वह सही अर्थों में सुख और दुख का अनुभव कर सके तथा सत्य को पहचान सके।

अरस्तू: स्वस्थ शरीर में स्वस्थ मस्तिष्क का निर्माण करना ही शिक्षा है।

पेस्टालॉजी: शिक्षा मनुष्य की जन्मजात शक्तियों का स्वाभाविक, समरस और प्रगतिशील विकास है।

जॉन डीवी: शिक्षा जीवन की भावी तैयारी मात्र नहीं है; शिक्षा स्वयं जीवन जीने की अनवरत प्रक्रिया है।

नोट

1.3.3 संकुचित, व्यापक और आधुनिक अर्थ

1. **शिक्षा का संकुचित अर्थ**
   संकुचित अर्थ में शिक्षा से तात्पर्य केवल विद्यालयी शिक्षा या औपचारिक संस्थागत शिक्षण से है।
   इसके अंतर्गत एक निश्चित समय-सीमा में, निर्धारित स्थान जैसे विद्यालय या विश्वविद्यालय में, पूर्व-नियोजित पाठ्यक्रम के अनुसार, प्रशिक्षित अध्यापकों द्वारा ज्ञान प्रदान किया जाता है।
   इसमें मूल्यांकन, परीक्षा उत्तीर्ण करना और उपाधि या डिग्री प्राप्त करना प्राथमिक लक्ष्य होता है।

2. **शिक्षा का व्यापक अर्थ**
   व्यापक अर्थ में शिक्षा सीमाओं, समय, स्थान और कठोर नियमों के बंधनों से पूर्णतः मुक्त होती है।
   यह एक ऐसी जीवन-पर्यंत चलने वाली अनवरत प्रक्रिया है जो मनुष्य के जन्म के क्षण से प्रारंभ होकर उसकी मृत्यु तक निरंतर चलती रहती है।
   इसके अंतर्गत संपूर्ण संसार एक विशाल विद्यालय है तथा जीवन का प्रत्येक अनुभव, व्यक्ति, प्रकृति और परिस्थितियाँ शिक्षक की भूमिका निभाते हैं।

3. **शिक्षा का आधुनिक एवं व्यावहारिक अर्थ**
   समकालीन 21वीं सदी के परिदृश्य में शिक्षा को केवल सूचनाओं के संचय अथवा सैद्धांतिक ज्ञान तक सीमित नहीं माना जाता।
   आधुनिक दृष्टिकोण में शिक्षा ज्ञान के निर्माण और जीवन-कौशल संवर्धन की एक बाल-केंद्रित प्रक्रिया है।
   इसका मूल उद्देश्य शिक्षार्थी में आलोचनात्मक चिंतन, समस्या-समाधान क्षमता, अनुकूलनशीलता और नैतिक चेतना का विकास करके उसे समाज का एक उत्तरदायी, आत्मनिर्भर और वैश्विक नागरिक बनाना है।

1.4: शिक्षा की प्रकृति एवं विशेषताएँ (Nature and Characteristics of Education)

1. शिक्षा की प्रकृति (Nature of Education)

- शिक्षा एक आजीवन चलने वाली प्रक्रिया है (Lifelong Process): शिक्षा जन्म से लेकर मृत्यु तक अनवरत चलती रहती है। व्यक्ति औपचारिक और अनौपचारिक दोनों रूपों में जीवनभर सीखता है।

नोट

- शिक्षा एक द्वि-ध्रुवीय प्रक्रिया है (Bi-polar Process): एडमण्ड्स के अनुसार, इसमें एक पक्ष सिखाने वाला (शिक्षक) और दूसरा पक्ष सीखने वाला (शिक्षार्थी) होता है।
- शिक्षा एक त्रि-ध्रुवीय प्रक्रिया है (Tri-polar Process): जॉन डीवी के अनुसार, शिक्षा केवल शिक्षक और शिक्षार्थी तक सीमित नहीं है, बल्कि इसमेंसामाजिक वातावरण (पाठ्यक्रम)भी एक महत्वपूर्ण ध्रुव होता है।
- शिक्षा एक गतिशील प्रक्रिया है (Dynamic Process): यह समय, स्थान और समाज की आवश्यकताओं के अनुसार परिवर्तित होती रहती है, यह स्थिर या जड़ नहीं है।
- शिक्षा एक विकासत्मक प्रक्रिया है (Developmental Process): यह बालक की जन्मजात शक्तियों और अंतर्निहित क्षमताओं का व्यवस्थित विकास करती है।
- शिक्षा एक विज्ञान एवं कला दोनों है (Both Science and Art):
    - *विज्ञान के रूप में*:यह शिक्षण के सिद्धांतों, मनोविज्ञान और व्यवस्थित विधियों पर आधारित है।
    - *कला के रूप में*:यह व्यावहारिक कौशल, शिक्षण शैली और रचनात्मकता पर निर्भर करती है।

2. शिक्षा की प्रमुख विशेषताएँ (Key Characteristics of Education)

- सर्वांगीण विकास का साधन (All-round Development): शिक्षा व्यक्ति के शारीरिक, मानसिक, नैतिक, सामाजिक और संवेगात्मक पक्षों का संतुलित विकास करती है।
- सकारात्मक व्यवहार परिवर्तन (Positive Behavioral Modification): शिक्षा का मुख्य उद्देश्य बालक के व्यवहार, सोच और दृष्टिकोण में वांछित एवं सकारात्मक बदलाव लाना है।
- सामाजिककरण की प्रक्रिया (Process of Socialization): यह व्यक्ति को समाज के नियमों, संस्कृति और मूल्यों से परिचित कराकर उसे एक जिम्मेदार सामाजिक नागरिक बनाती है।
- संस्कृति का संरक्षण एवं हस्तांतरण (Preservation and Transfer of Culture): शिक्षा भावी पीढ़ियों तक सांस्कृतिक विरासत, परंपराओं और ज्ञान को पहुँचाने का कार्य करती है।
- वातावरण के साथ समायोजन (Adaptation to Environment): यह व्यक्ति को उसके भौतिक और सामाजिक परिवेश के साथ सफलतापूर्वक समायोजन करने की क्षमता प्रदान करती है।

नोट

- आत्म-साक्षात्कार एवं चेतना का विकास (Self-Actualization): यह मनुष्य में आत्म-जागरूकता, तर्कशक्ति, निर्णय लेने की क्षमता और नैतिक चेतना का विकास करती है।

इकाई 1.4: शिक्षा की प्रकृति एवं विशेषताएँ

शिक्षा की प्रकृति (Nature of Education)

शिक्षा केवल पुस्तकों तक सीमित ज्ञान नहीं है, बल्कि यह मानव जीवन को दिशा देने वाली एक जटिल और व्यापक प्रक्रिया है। इसकी प्रकृति को निम्नलिखित बिंदुओं के माध्यम से समझा जा सकता है:

- सतत एवं निरंतर चलने वाली प्रक्रिया:शिक्षा जन्म से लेकर मृत्यु तक बिना रुके चलती है। मनुष्य अपने जीवन के प्रत्येक पड़ाव पर अनुभवों, परिस्थितियों और व्यक्तियों से सीखता रहता है।
- द्वि-ध्रुवीय तथा त्रि-ध्रुवीय प्रक्रिया:प्रारम्भिक विद्वानों ने शिक्षा को केवल शिक्षक और शिक्षार्थी के बीच का संबंध माना था। परंतु आधुनिक शिक्षाशास्त्र के अनुसार यह एक त्रि-ध्रुवीय प्रक्रिया है, जिसमें शिक्षक, शिक्षार्थी और सामाजिक वातावरण (पाठ्यक्रम) तीनों समान रूप से महत्वपूर्ण हैं।



शिक्षक

शिक्षार्थी /_____\ सामाजिक वातावरण / पाठ्यक्रम

- गतिशील एवं परिवर्तनशील:शिक्षा की प्रकृति जड़ या स्थिर नहीं है। यह समाज की आवश्यकताओं, वैज्ञानिक प्रगति और बदलते युग के अनुसार स्वयं को परिवर्तित करती रहती है।
- विज्ञान एवं कला का समन्वय:शिक्षा एक विज्ञान है क्योंकि यह निश्चित सिद्धांतों, मनोविज्ञान और क्रमबद्ध अध्ययन पर आधारित है। साथ ही यह एक कला भी है क्योंकि ज्ञान को जीवन में लागू करने और सिखाने के लिए रचनात्मकता तथा व्यावहारिक कौशल की आवश्यकता होती है।
- अंतर्निहित शक्तियों का प्रस्फुटन:मनुष्य के भीतर अनेक क्षमताएँ जन्मजात होती हैं। शिक्षा का कार्य बाहर से ज्ञान थोपना नहीं, बल्कि अंदर छिपी प्रतिभा और शक्तियों को बाहर लाना तथा उन्हें सही दिशा देना है।

शिक्षा की प्रमुख विशेषताएँ (Characteristics of Education)

नोट

शिक्षा मनुष्य के व्यक्तित्व के निर्माण से लेकर समाज के उत्थान तक बहुआयामी भूमिका निभाती है। इसकी मुख्य विशेषताओं का विवरण इस प्रकार है:

- सर्वांगीण विकास का आधार:शिक्षा का मूल उद्देश्य केवल बौद्धिक ज्ञान देना नहीं है, बल्कि यह व्यक्ति के शारीरिक, मानसिक, संवेगात्मक, नैतिक और सामाजिक पक्षों का संतुलित विकास करती है।

┌──शारीरिक विकास

├──मानसिक एवं बौद्धिक विकास

सर्वांगीण विकास——┤──नैतिक एवं चारित्रिक विकास

├──सामाजिक विकास

└──संवेगात्मक संतुलन

- व्यवहार परिमार्जन की प्रक्रिया:शिक्षा व्यक्ति के सोचने, समझने और कार्य करने के तरीके में सकारात्मक बदलाव लाती है। यह अवांछित प्रवृत्तियों को नियंत्रित कर वांछनीय गुणों का निर्माण करती है।
- सामाजिककरण एवं सांस्कृतिक हस्तांतरण:मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। शिक्षा उसे समाज के नियमों, नैतिक मूल्यों और परंपराओं का बोध कराती है। इसके साथ ही यह पुरानी पीढ़ी के ज्ञान और संस्कृति को नई पीढ़ी तक पहुँचाने का कार्य करती है।
- समायोजन क्षमता का निर्माण:जीवन में परिस्थितियाँ सदैव एक समान नहीं रहतीं। शिक्षा मनुष्य को विषम परिस्थितियों, नए वातावरण और नए विचारों के साथ सामंजस्य बिठाने योग्य बनाती है।

शिक्षा के विविध रूपों की तुलना

शिक्षा मुख्य रूप से तीन रूपों में प्राप्त की जाती है। इनकी भिन्नता और स्वरूप को इस तालिका द्वारा स्पष्ट समझा जा सकता है:

आधार	औपचारिक शिक्षा	अनौपचारिक शिक्षा	निरौपचारिक शिक्षा
स्थान	विद्यालय, कॉलेज या संस्थान	परिवार, समाज, वातावरण	दूरस्थ शिक्षा केंद्र, ऑनलाइन माध्यम
नियम एवं संरचना	कठोर नियम, निश्चित समय व पाठ्यक्रम	कोई नियम या निश्चित पाठ्यक्रम नहीं	लचीले नियम, आवश्यकतानुसार संरचना

नोट

उद्देश्य	डिग्री, प्रमाणपत्र व विशिष्ट ज्ञान	जीवन मूल्य, अनुभव व व्यावहारिक ज्ञान	ज्ञान का विस्तार व कौशल संवर्धन
मूल केंद्र	शिक्षक एवं संस्था केंद्रित	अनुभव एवं परिस्थिति केंद्रित	शिक्षार्थी की सुविधा केंद्रित

1.5: शिक्षा के प्रकार — विस्तृत अध्ययन

शिक्षा मानव जीवन की एक मूलभूत आवश्यकता है जो व्यक्ति के विकास और समाज की प्रगति को दिशा देती है। ज्ञान प्राप्त करने की प्रक्रियाओं, साधनों और वातावरण के आधार पर शिक्षाशास्त्रियों ने शिक्षा को मुख्य रूप से तीन भागों में विभाजित किया है:औपचारिक शिक्षा, अनौपचारिक शिक्षा, औरनिरौपचारिक शिक्षा।

नीचे शिक्षा के इन तीनों रूपों का विस्तृत, व्याख्यात्मक एवं संरचनात्मक अध्ययन प्रस्तुत है।

1.5.1 औपचारिक शिक्षा

औपचारिक शिक्षा वह व्यवस्थित और सुसंगठित शिक्षा प्रणाली है जो विशेष रूप से स्थापित शैक्षणिक संस्थानों (जैसे विद्यालय, महाविद्यालय, विश्वविद्यालय और तकनीकी संस्थान) में प्रदान की जाती है। यह प्रणाली पूरी तरह से सुनियोजित, सचेतन तथा नियमों से बंधी होती है।

प्रमुख लक्षण एवं कार्यप्रणाली

- निश्चित संरचना व समय-सीमा:इसमें प्रवेश की एक निश्चित आयु होती है और अध्ययन की अवधि (वर्ष या सत्र) तय होती है।
- पूर्व-निर्धारित पाठ्यक्रम:अध्ययन अध्यापन का विषय-क्षेत्र पहले से तय होता है। शिक्षण विधियों, पाठ्यपुस्तकों और परीक्षाओं का निर्धारण अग्रिम रूप से किया जाता है।
- योग्य एवं प्रशिक्षित शिक्षक:इस व्यवस्था में अध्यापन का कार्य प्रशिक्षित और अर्हता प्राप्त शिक्षकों द्वारा किया जाता है।
- मूल्यांकन एवं उपाधि वितरण:नियमित परीक्षाओं के माध्यम से शिक्षार्थी की प्रगति का आकलन किया जाता है और उत्तीर्ण होने पर डिग्री, डिप्लोमा या प्रमाण पत्र प्रदान किया जाता है।

लाभ एवं सीमाएँ

- लाभ:यह प्रणाली समाज को अनुशासित, कुशल और व्यावसायिक रूप से योग्य नागरिक प्रदान करती है। इसमें ज्ञान का क्रमबद्ध और वैज्ञानिक हस्तांतरण संभव होता है।

नोट

- सीमाएँ:यह प्रणाली अत्यधिक कठोर और खर्चीली होती है। इसमें व्यक्तिगत रुचियों और व्यक्तिगत गति से सीखने के अवसर सीमित होते हैं।

1.5.2 अनौपचारिक शिक्षा

अनौपचारिक शिक्षा वह सहज और स्वाभाविक शिक्षा है जो व्यक्ति अपने दैनिक जीवन में, बिना किसी पूर्व योजना या संस्थान के, स्वतः ही प्राप्त करता है। यह जन्म से लेकर मृत्यु तक निरंतर चलने वाली प्रक्रिया है, जिसमें परिवार, समाज, मित्र, धर्म, खेल का मैदान और जनसंचार माध्यम मुख्य भूमिका निभाते हैं।

प्रमुख लक्षण एवं कार्यप्रणाली

- स्वाभाविकता एवं अकस्मात सीखना:इसमें सीखने की प्रक्रिया बिना किसी पूर्व-निर्धारित लक्ष्य या योजना के, दैनिक अनुभवों और अंतःक्रियाओं के माध्यम से घटित होती है।
- स्थान एवं समय की स्वतंत्रता:इसके लिए किसी विद्यालय, निश्चित समय सारणी या कक्षा-कक्ष की आवश्यकता नहीं होती। यह घर, बाजार या कार्यस्थल कहीं भी घटित हो सकती है।
- पाठ्यक्रम एवं परीक्षा का अभाव:इसमें न तो कोई निश्चित पाठ्यक्रम होता है और न ही कोई लिखित परीक्षा या उपाधि दी जाती है।
- संस्कृति एवं मूल्यों का विकास:यह व्यक्ति को व्यावहारिक जीवन, सामाजिक नियम, नैतिक मूल्य, भाषा और जीवन जीने की कला सिखाती है।

लाभ एवं सीमाएँ

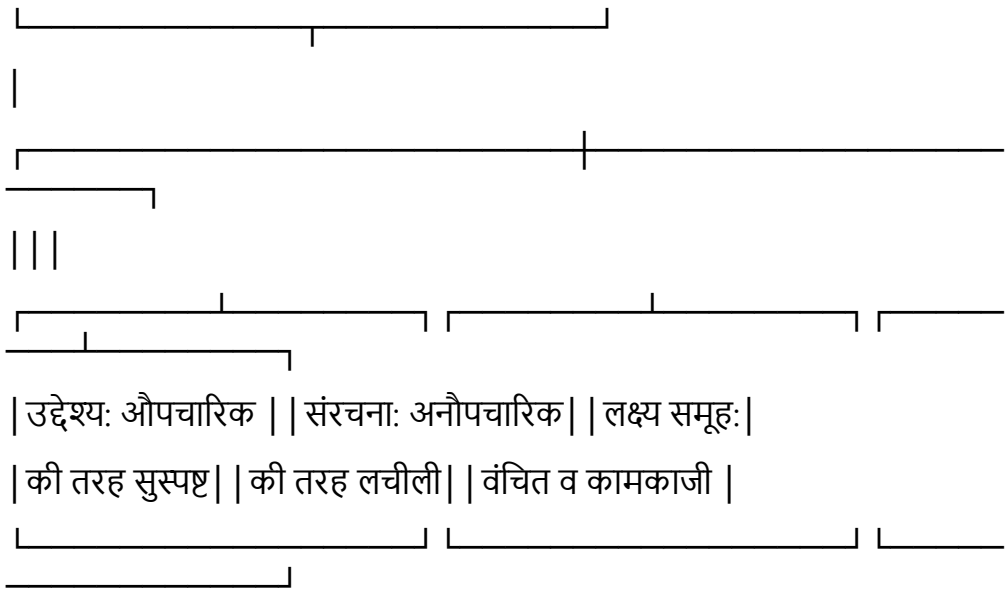
- लाभ:यह जीवन से सीधी जुड़ी होती है और अत्यंत व्यावहारिक होती है। इसके लिए कोई आर्थिक व्यय नहीं करना पड़ता।
- सीमाएँ:इसमें ज्ञान का कोई क्रमबद्ध ढाँचा नहीं होता। कभी-कभी असामाजिक या नकारात्मक बातें सीख जाने का भी जोखिम रहता है।

1.5.3 निरौपचारिक शिक्षा

निरौपचारिक शिक्षा औपचारिक और अनौपचारिक शिक्षा के बीच का एक लचीला एवं व्यावहारिक माध्यम है। यह उन लोगों के लिए तैयार की गई व्यवस्था है जो किसी कारणवश औपचारिक शिक्षा (विद्यालय या कॉलेज) का लाभ नहीं उठा सके, या जो अपनी नौकरी अथवा कार्य के साथ-साथ अपनी शिक्षा को जारी रखना चाहते हैं। दूरस्थ शिक्षा, मुक्त विश्वविद्यालय (ओपन यूनिवर्सिटी), पत्राचार पाठ्यक्रम और प्रौढ़ शिक्षा इसके प्रमुख उदाहरण हैं।

| निरौपचारिक शिक्षा|

नोट



प्रमुख लक्षण एवं कार्यप्रणाली

- उद्देश्यपूर्ण एवं लचीली संरचना:इसके उद्देश्य औपचारिक शिक्षा की भांति स्पष्ट होते हैं, परंतु नियम (जैसे उपस्थिति, समय-सारणी, आयु सीमा) अनौपचारिक शिक्षा की भांति लचीले होते हैं।
- शिक्षार्थी-केंद्रित व्यवस्था:इसमें छात्र अपनी सुविधा, समय और गति के अनुसार अध्ययन सामग्री (प्रिंट, डिजिटल, ऑनलाइन कक्षाएं) से सीखता है।
- कम खर्चीली एवं सुलभ:यह व्यवस्था भौगोलिक और आर्थिक बाधाओं को दूर कर समाज के अंतिम व्यक्ति तक शिक्षा पहुँचाने में सक्षम है।
- प्रमाणन की सुविधा:पाठ्यक्रम पूरा होने और परीक्षा उत्तीर्ण करने पर मान्यता प्राप्त प्रमाणपत्र या डिग्री प्रदान की जाती है।

1.5.4 तीनों प्रकारों की तुलनात्मक समीक्षा

शिक्षा के तीनों रूपों की स्पष्ट समझ और विभेद के लिए नीचे तालिका में तुलनात्मक विश्लेषण प्रस्तुत है:

तुलना का आधार	औपचारिक शिक्षा	अनौपचारिक शिक्षा	निरौपचारिक शिक्षा
मुख्य स्थल	विद्यालय, कॉलेज, विश्वविद्यालय	घर, समाज, परिवेश, परिवार	मुक्त विश्वविद्यालय, अध्ययन केंद्र, ऑनलाइन प्लेटफॉर्म
नियम एवं शर्तें	अत्यंत कठोर और निश्चित	कोई नियम या शर्त नहीं	अत्यधिक लचीले नियम

नोट

पाठ्यक्रम	निश्चित, पूर्व-निर्धारित और विस्तृत	कोई निश्चित पाठ्यक्रम नहीं	आवश्यकता-आधारित और जीवन-उपयोगी
समय व अवधि	निश्चित समय सारणी व निर्धारित वर्ष	जीवनपर्यंत चलने वाली प्रक्रिया	शिक्षार्थी की अपनी गति एवं सुविधा अनुसार
शिक्षक की भूमिका	प्रत्यक्ष एवं मुख्य भूमिका	अप्रत्यक्ष (माता-पिता, मित्र, समाज)	मार्गदर्शक व अध्ययन सामग्री के रूप में
मूल्यांकन व उपाधि	नियमित परीक्षा एवं अंकपत्र/डिग्री	कोई परीक्षा या उपाधि नहीं	सत्रीय कार्य (Assignment) एवं परीक्षा द्वारा अंकपत्र
प्राथमिक लक्ष्य	बौद्धिक विकास व अकादमिक योग्यता	सामाजिक विकास व व्यावहारिक जीवन	कौशल विकास, साक्षरता व निरंतर अध्ययन

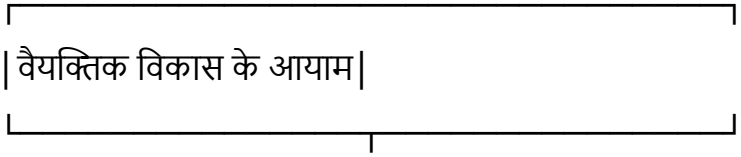
1.6: शिक्षा के प्रमुख उद्देश्य एवं आदर्श — विस्तृत अध्ययन

शिक्षा बिना किसी निश्चित उद्देश्य के एक दिशाहीन प्रयास मात्र बनकर रह जाती है। उद्देश्य ही वह ध्रुव तारे के समान मानदंड हैं जो शिक्षण प्रक्रियाओं, पाठ्यक्रम निर्धारण, शिक्षण विधियों और मूल्यांकन पद्धतियों को एक सार्थक दिशा प्रदान करते हैं। शिक्षा के आदर्श एवं उद्देश्य स्थिर नहीं होते; ये व्यक्तिगत आवश्यकताओं, सामाजिक परिवेश, राष्ट्रीय प्राथमिकताओं और मानवीय मूल्यों के परिवर्तन के साथ-साथ विकसित होते रहते हैं।

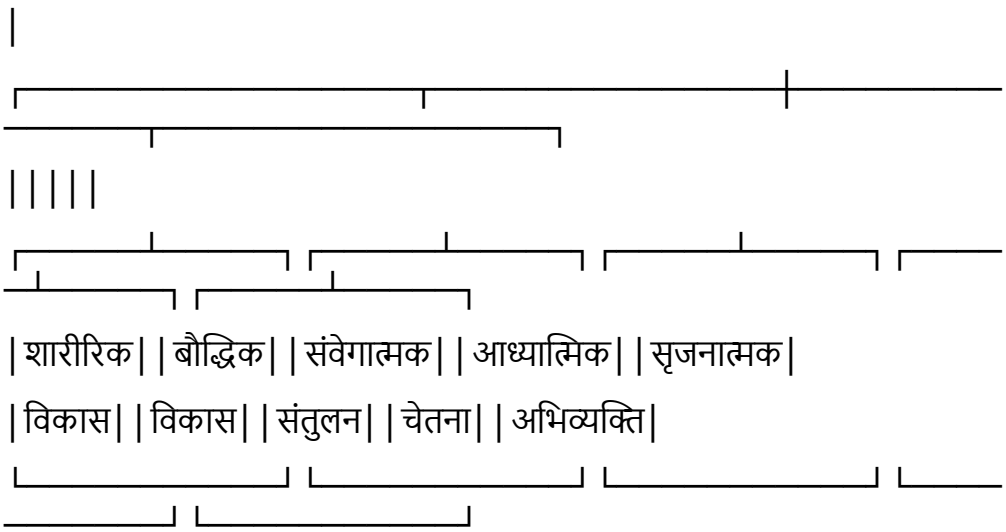
शिक्षाशास्त्रियों ने मानव जीवन के विभिन्न आयामों को ध्यान में रखते हुए शिक्षा के उद्देश्यों को मुख्य रूप से तीन व्यापक श्रेणियों में वर्गीकृत किया है:वैयक्तिक विकास के उद्देश्य, सामाजिक एवं राष्ट्रीय उद्देश्य, तथानैतिक, सांस्कृतिक एवं व्यावसायिक उद्देश्य।

1.6.1 वैयक्तिक विकास के उद्देश्य (Individual Development Aims)

वैयक्तिक विकास का सिद्धांत इस मूलभूत सत्य पर आधारित है किप्रत्येक बालक अपनी जन्मजात क्षमताओं, रुचियों, बुद्धि और प्रतिभा में अद्वितीय होता है। शिक्षा का प्राथमिक कर्तव्य इस स्वाभाविक विशिष्टता का आदर करना और उसका पूर्ण विकास करना है।



नोट



1. शारीरिक एवं मानसिक क्षमता का संवर्धन

- शारीरिक स्वास्थ्य:एक स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मस्तिष्क का निवास होता है। शिक्षा खेलकूद, व्यायाम, योग और व्यक्तिगत स्वच्छता के माध्यम से शरीर को सबल और नीरोग बनाती है।
- बौद्धिक एवं मानसिक शक्तियाँ:यह बालक में तर्कशक्ति, निर्णय लेने की क्षमता, चिंतन, स्मरण और समस्या-समाधान की मौलिक क्षमता का बीजारोपण करती है।

2. संवेगात्मक संतुलन तथा आत्म-साक्षात्कार

- संवेगों का प्रबोधन:भय, क्रोध, ईर्ष्या और प्रेम जैसे मानवीय संवेगों को सही दिशा (Sublimation) देकर संतुलित व्यक्तित्व का निर्माण करना शिक्षा का कार्य है।
- आत्म-ज्ञान एवं आत्म-साक्षात्कार:स्वामी विवेकानंद के अनुसार, "शिक्षा मनुष्य में पहले से विद्यमान पूर्णता का प्रकटीकरण है।" शिक्षा व्यक्ति को उसकी अपनी योग्यताओं और सीमाओं का बोध कराती है।

3. मौलिकता एवं सृजनात्मकता का प्रस्फुटन

प्रत्येक बालक के अंदर कोई न कोई रचनात्मक क्षमता छिपी होती है। शिक्षा ऐसा मुक्त वातावरण प्रदान करती है जहाँ शिक्षार्थी कला, साहित्य, विज्ञान या प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में अपनी मौलिक सोच प्रदर्शित कर सके।

1.6.2 सामाजिक एवं राष्ट्रीय उद्देश्य (Social and National Aims)

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। अकेला व्यक्ति समाज के बिना अपने अस्तित्व और सुरक्षा की कल्पना नहीं कर सकता। अतः वैयक्तिक विकास के साथ-साथ शिक्षा का एक अत्यंत महत्वपूर्ण दायित्व व्यक्ति को समाज और राष्ट्र का एक सुयोग्य, उपयोगी तथा उत्तरदायी अंग बनाना है।

1. सामाजिककरण एवं नागरिकता का निर्माण

नोट

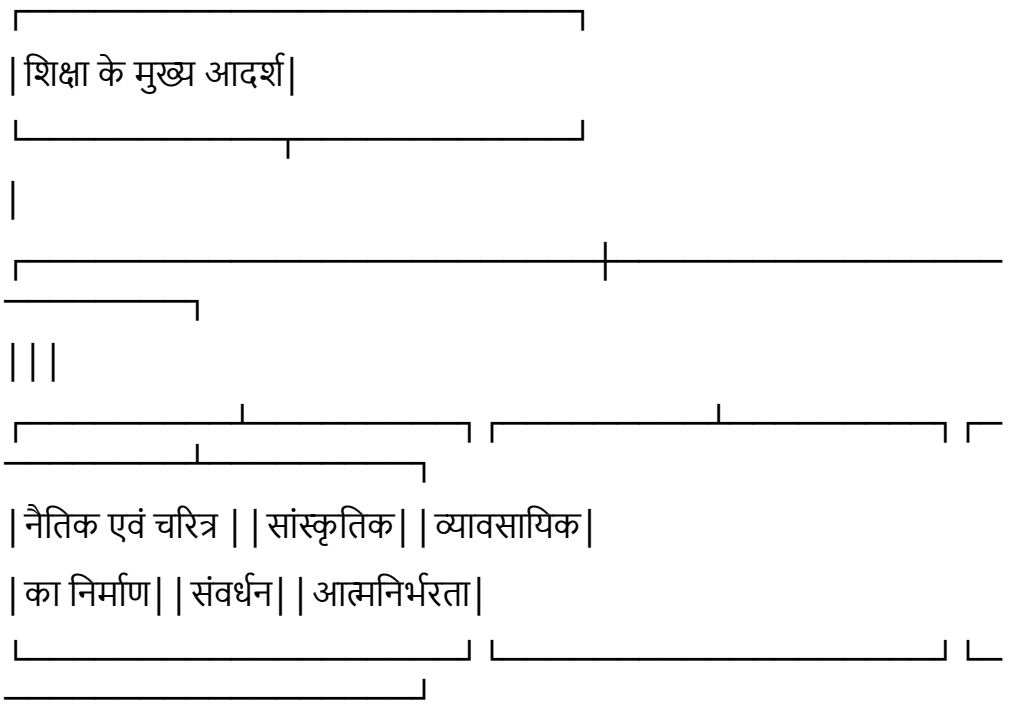
- सामाजिक भावना का विकास:शिक्षा व्यक्ति को अपने स्वार्थ से ऊपर उठकर सहकारिता, सहानुभूति, त्याग और परस्पर सहयोग से जीने की प्रेरणा देती है।
- सशक्त नागरिकता के गुण:लोकतांत्रिक व्यवस्था को सफल बनाने के लिए नागरिकों में अपने अधिकारों और कर्तव्यों के प्रति जागरूकता अनिवार्य है। शिक्षा अनुशासन, न्यायप्रियता और सहिष्णुता का पाठ पढ़ाती है।

2. राष्ट्रीय एकता, भावनात्मक एकरूपता एवं अंतर्राष्ट्रीय समझ

- राष्ट्रीय भावना का विकास:भारत जैसे बहुसांस्कृतिक, बहुभाषी और विविधताओं से भरे देश में शिक्षा विभिन्नताओं के बीच एकता की भावना (Emotional Integration) को सुदृढ़ करती है।
- वसुधैव कुटुंबकम् की भावना:राष्ट्रीय हित के साथ-साथ आधुनिक शिक्षा व्यक्ति में वैश्विक भ्रातृत्व (International Understanding) और अंतर्राष्ट्रीय शांति का दृष्टिकोण भी विकसित करती है।

1.6.3 नैतिक, सांस्कृतिक एवं व्यावसायिक उद्देश्य (Moral, Cultural and Vocational Aims)

जीवन की गुणवत्ता केवल भौतिक समृद्धि से तय नहीं होती; इसके लिए उच्च चरित्र, समृद्ध संस्कृति और आर्थिक स्वावलंबन तीनों का संतुलित समन्वय आवश्यक है।



1. नैतिक एवं चारित्रिक विकास (Moral and Character Development)

महात्मा गांधी ने चरित्र निर्माण को शिक्षा का सर्वोच्च लक्ष्य माना था।

नोट

- मूल्य-आधारित शिक्षा:शिक्षा शिक्षार्थी में सत्य, अहिंसा, ईमानदारी, करुणा, उत्तरदायित्व और निष्ठा जैसे शाश्वत मानवीय मूल्यों को रोपित करती है।
- चरित्र की दृढ़ता:यह केवल किताबी ज्ञान तक सीमित नहीं है, बल्कि व्यक्ति को जीवन में आने वाले प्रलोभनों और नैतिक संकटों के समय सही निर्णय लेने का नैतिक बल प्रदान करती है।

2. सांस्कृतिक संरक्षण, शोधन एवं हस्तांतरण (Cultural Aim)

- सांस्कृतिक विरासत का ज्ञान:शिक्षा व्यक्ति को अपनी भाषा, कला, परंपराओं, जीवन-दर्शन और ऐतिहासिक धरोहरों से परिचित कराती है।
- संस्कृति का परिष्कार:यह प्राचीन संस्कृति के अंधविश्वासों और कुरीतियों को दूर कर उसे वैज्ञानिक दृष्टिकोण के अनुरूप परिष्कृत करती है।
- पीढ़ी-दर-पीढ़ी हस्तांतरण:यह परिष्कृत सांस्कृतिक ज्ञान को नई पीढ़ी को सौंपने का सशक्त माध्यम है।

3. व्यावसायिक एवं आर्थिक स्वावलंबन (Vocational / Bread and Butter Aim)

शिक्षा का एक अत्यंत व्यावहारिक उद्देश्य व्यक्ति को अपनी आजीविका कमाने और आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बनने योग्य बनाना है।

- जीविकोपार्जन की क्षमता:यदि शिक्षा मनुष्य को भोजन, वस्त्र और मकान जैसी बुनियादी आवश्यकताओं को पूरा करने योग्य नहीं बनाती, तो वह अधूरी मानी जाती है।
- उत्पादकता एवं कौशल विकास:यह तकनीकी, व्यावसायिक और व्यावहारिक ज्ञान देकर श्रम की गरिमा स्थापित करती है तथा देश के आर्थिक विकास में योगदान देने हेतु कुशल जनशक्ति (Skilled Manpower) तैयार करती है।

उद्देश्यों का समग्र एवं समन्वित स्वरूप

शिक्षा के वैयक्तिक, सामाजिक, नैतिक और व्यावसायिक उद्देश्य एक-दूसरे के विरोधी नहीं हैं, बल्कि वे एक-दूसरे के पूरक हैं। एक संपूर्ण शिक्षा प्रणाली वही है जो व्यक्ति के निजी विकास और सामाजिक दायित्वों के बीच एक आदर्श संतुलन स्थापित करती है।

उद्देश्य श्रेणी	मुख्य ध्यान केंद्रित बिंदु	अंतिम परिणाम / लक्ष्य
वैयक्तिक विकास	स्वास्थ, बुद्धि, चिंतन, मौलिकता, आत्म-ज्ञान	संतुलित, परिपक्व एवं आत्मनिर्भर व्यक्तित्व
सामाजिक एवं राष्ट्रीय	नागरिकता, सामाजिक मूल्य, राष्ट्रीय एकता, सहिष्णुता	सशक्त, लोकतांत्रिक एवं संगठित समाज
नैतिक एवं चरित्र	सत्य, निष्ठा, करुणा, नैतिक निर्णय शक्ति	उच्च चरित्र वाला कर्तव्यनिष्ठ मनुष्य

सांस्कृतिक	परंपराएँ, भाषा, इतिहास, सांस्कृतिक परिष्कार	जीवंत एवं परिष्कृत सांस्कृतिक चेतना
व्यावसायिक	कौशल विकास, आजीविका, उत्पादन क्षमता	आर्थिक आत्मनिर्भरता एवं राष्ट्र निर्माण

नोट

1. 'Education' शब्द की उत्पत्ति लैटिन भाषा के किस शब्द से मानी जाती है?

(A) Educare

(B) Educere

(C) Educatum

(D) उपर्युक्त सभी

2. औपचारिक शिक्षा (Formal Education) का मुख्य लक्षण क्या है?

(A) समय और स्थान का निश्चित न होना

(B) निश्चित पाठ्यक्रम, समय-सारणी और विद्यालयी व्यवस्था

(C) केवल जीवन के अनुभवों से सीखना

(D) कोई परीक्षा न होना

3. दूरस्थ शिक्षा और अनौपचारिक शिक्षा (Non-Formal Education) का मुख्य उद्देश्य क्या है?

(A) केवल डिग्री बाँटना

(B) लचीलापन प्रदान कर सर्वसुलभ शिक्षा देना

(C) विद्यालयी शिक्षा को समाप्त करना

(D) केवल रोजगार देना

4. शिक्षा का व्यक्तिगत उद्देश्य (Individual Aim) किस पर बल देता है?

(A) राज्य की संप्रभुता पर

(B) बालक के सर्वांगीण और स्वतंत्र व्यक्तित्व के विकास पर

(C) केवल आर्थिक उत्पादन पर

(D) सामाजिक नियमों के अंधानुकरण पर

5. 'शिक्षा बालक की अंतर्निहित पूर्णता की अभिव्यक्ति है'—यह कथन किसका है?

(A) स्वामी विवेकानंद

(B) महात्मा गांधी

(C) रवींद्रनाथ टैगोर

(D) जॉन डीवी

नोट

1.7 सारांश

- **शिक्षा की मूलभूत अवधारणा:**शिक्षा मानव जीवन की एक अत्यंत व्यापक, गतिशील और जीवन-पर्यंत चलने वाली अनवरत प्रक्रिया है। यह व्यक्ति के अंतर्निहित ज्ञान और शक्तियों का पोषण करके उसे समाज में सार्थक योगदान देने हेतु सक्षम बनाती है।
- **शास्त्रीय उत्पत्ति:** 'शिक्षा' शब्द संस्कृत की 'शिक्ष' (सीखना-सिखाना) तथा 'विद्' (जाना या ज्ञान प्राप्त करना) धातु से बना है। पाश्चात्य संदर्भ में यह लैटिन के 'एड्यूकेयर' (पालन-पोषण करना) और 'एड्यूसेरे' (बाहर निकालना) शब्दों से निकला है, जो व्यक्ति की आंतरिक शक्तियों के विकास को रेखांकित करते हैं।
- **प्रक्रियात्मक स्वरूप:**जॉन एडम्स ने शिक्षा को शिक्षक और शिक्षार्थी के बीच चलने वाली 'द्विध्रुवीय प्रक्रिया' माना, जबकि जॉन डीवी ने इसमें समाज और पाठ्यक्रम का समावेशन करके इसे 'त्रिध्रुवीय प्रक्रिया' के रूप में स्थापित किया।
- **शिक्षा के तीन विविध रूप:**
    1. *औपचारिक शिक्षा:*विद्यालय या विश्वविद्यालय आधारित कठोर, नियमबद्ध, पाठ्यक्रम-केंद्रित और समय-सीमा से बंधी हुई शिक्षा।
    2. *अनौपचारिक शिक्षा:*परिवार, समाज और दैनिक जीवन के अनुभवों से अनायास एवं स्वाभाविक रूप से सीखी जाने वाली जीवन-पर्यंत शिक्षा।
    3. *निरौपचारिक शिक्षा:*दूरस्थ एवं मुक्त अधिगम प्रणाली पर आधारित एक लचीली और सुलभ व्यवस्था, जो औपचारिक सीमाओं से मुक्त होकर सभी वर्गों को सीखने का अवसर देती है।
- **उद्देश्यों का संतुलन:**शिक्षा का परम लक्ष्य वैयक्तिक विकास (शारीरिक, मानसिक, चरित्र निर्माण) तथा सामाजिक आवश्यकताओं (योग्य नागरिकता, सांस्कृतिक संरक्षण, व्यावसायिक दक्षता) का एक आदर्श और सर्वांगीण संतुलन स्थापित करना है।

1.8 शब्दावली

- **व्युत्पत्तिशास्त्र:**किसी शब्द की भाषाई उत्पत्ति, उसके मूल धातु-रूप और ऐतिहासिक अर्थ-विकास का वैज्ञानिक अध्ययन।
- **द्विध्रुवीय प्रक्रिया:**वह शिक्षण प्रक्रिया जिसमें केवल दो प्रमुख घटक—शिक्षक (सिखाने वाला) और शिक्षार्थी (सीखने वाला) ही परस्पर अंतःक्रिया करते हैं।
- **त्रिध्रुवीय प्रक्रिया:**वह व्यापक शिक्षण प्रक्रिया जिसमें शिक्षक और शिक्षार्थी के साथ-साथ तीसरा महत्वपूर्ण ध्रुव सामाजिक वातावरण अथवा पाठ्यक्रम होता है।

नोट

- **निरौपचारिक शिक्षा:**पारंपरिक औपचारिक नियमों (जैसे अनिवार्य उपस्थिति, आयु सीमा) से मुक्त, दूरस्थ और लचीले माध्यमों से प्रदान की जाने वाली उद्देश्यपूर्ण शिक्षण प्रणाली।
- **सांस्कृतिक हस्तांतरण:**समाज के संचित ज्ञान, जीवन-मूल्यों, परंपराओं और कलाओं को शिक्षा के माध्यम से एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक पहुँचाने की निरंतर प्रक्रिया।
- **सर्वांगीण विकास:**बालक का किसी एक पक्ष में नहीं, अपितु शारीरिक, मानसिक, संवेगात्मक, नैतिक, सामाजिक और आध्यात्मिक—सभी पक्षों में संतुलित एवं पूर्ण विकास।

1.9 बोध प्रश्नों के उत्तर

1. उत्तर: (D) उपर्युक्त सभी
2. उत्तर: (B) निश्चित पाठ्यक्रम, समय-सारणी और विद्यालयी व्यवस्था
3. उत्तर: (B) लचीलापन प्रदान कर सर्वसुलभ शिक्षा देना
4. उत्तर: (B) बालक के सर्वांगीण और स्वतंत्र व्यक्तित्व के विकास पर
5. उत्तर: (A) स्वामी विवेकानंद

1.10 सुझावित अध्ययन सामग्री – मुक्त शैक्षिक संसाधन (Open Educational Resources - OER)

स्व-अध्ययन को अधिक सुलभ, व्यापक और गहन बनाने के लिए निम्नलिखित नि:शुल्क एवं मुक्त शैक्षिक संसाधनों का उपयोग किया जा सकता है:

- **ई-ज्ञानकोश (eGyanKosh):**इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय (IGNOU) का डिजिटल भंडार, जहाँ शिक्षाशास्त्र और शिक्षा के सिद्धांतों से संबंधित बी.ए. एवं एम.ए. स्तर की स्व-शिक्षण सामग्री (SLM) पीडीएफ प्रारूप में उपलब्ध है।
- **एनसीईआरटी (NCERT) टेक्स्टबुक्स व ई-पाठशाला:**राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद द्वारा निर्मित पोर्टल, जहाँ शिक्षा के समाजशास्त्रीय और दार्शनिक आधारों पर प्रामाणिक पाठ्य-सामग्री उपलब्ध है।
- **दीक्षा (DIKSHA) पोर्टल:**भारत सरकार का राष्ट्रीय शिक्षा मंच, जिस पर शिक्षणशास्त्र, बाल विकास और शिक्षण विधियों से संबंधित डिजिटल विषय-वस्तु और वीडियो व्याख्यान उपलब्ध हैं।
- **दीपक (SWAYAM) एवं स्वयं प्रभा:**मानव संसाधन विकास मंत्रालय (शिक्षा मंत्रालय) द्वारा संचालित ऑनलाइन पाठ्यक्रम, जहाँ देश के शीर्ष प्राध्यापकों द्वारा शिक्षाशास्त्र के विभिन्न विषयों पर ई-कंटेंट उपलब्ध कराया जाता है।

नोट

- **राष्ट्रीय डिजिटल पुस्तकालय (NDLI):**भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, खड़गपुर द्वारा प्रबंधित एक विशाल डिजिटल लाइब्रेरी, जिसमें शिक्षाशास्त्र से संबंधित पुस्तकें, शोध-पत्र और आलेख निःशुल्क पढ़े जा सकते हैं।

1.11 संदर्भ ग्रंथ (References)

इस इकाई के निर्माण एवं गहन अध्ययन हेतु निम्नलिखित प्रामाणिक पुस्तकों की सहायता ली जा सकती है:

- **पांडेय, रामशकल (2018):** *शिक्षा के दार्शनिक एवं सामाजिक आधार*, अग्रवाल पब्लिकेशन्स, आगरा।
- **गुप्ता, एस.पी. (2020):** *भारतीय शिक्षा का इतिहास, विकास एवं समस्याएँ*, शारदा पुस्तक भवन, प्रयागराज।
- **सक्सेना, एन.आर. स्वरूप (2017):** *शिक्षा सिद्धांत एवं शिक्षाशास्त्र*, लायल बुक डिपो, मेरठ।
- **जॉन डीवी (अनू. 2012):** *लोकतंत्र और शिक्षा (Democracy and Education)*, ग्रंथ शिल्पी, नई दिल्ली।
- **शर्मा, पी.एल. (2019):** *शिक्षा के मूलभूत सिद्धांत*, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा।

1.12 अभ्यास प्रश्न (Practice Questions)

भाग-क: लघु उत्तरीय प्रश्न (Short Answer Questions)

(उत्तर सीमा: लगभग 100-150 शब्द)

1. शिक्षा की त्रि-ध्रुवीय प्रक्रिया से आप क्या समझते हैं? संक्षेप में स्पष्ट कीजिए।
2. अनौपचारिक शिक्षा और निरौपचारिक शिक्षा में दो मुख्य अंतर बताइए।
3. शिक्षा के वैयक्तिक विकास संबंधी दो प्रमुख उद्देश्यों का वर्णन कीजिए।
4. चरित्र निर्माण में शिक्षा की क्या भूमिका है? संक्षेप में लिखिए।
5. शिक्षा के सांस्कृतिक हस्तांतरण के कार्य को स्पष्ट कीजिए।

भाग-ख: दीर्घ उत्तरीय प्रश्न (Long Answer Questions)

(उत्तर सीमा: लगभग 300-400 शब्द)

1. औपचारिक, अनौपचारिक तथा निरौपचारिक शिक्षा का सविस्तार वर्णन करते हुए इनकी तुलनात्मक समीक्षा कीजिए।

2. "शिक्षा एक आजीवन चलने वाली एवं गतिशील प्रक्रिया है।" इस कथन की न्यायसंगत व्याख्या कीजिए।
3. व्यक्ति के सर्वांगीण विकास तथा राष्ट्रीय निर्माण में शिक्षा के प्रमुख उद्देश्यों की सोदाहरण विवेचना कीजिए।

नोट

भाग-ग: अति-दीर्घ उत्तरीय प्रश्न (Very Long Answer Questions)

(उत्तर सीमा: लगभग 600-800 शब्द)

1. शिक्षा की प्रकृति और विशेषताओं का विस्तृत अध्ययन प्रस्तुत कीजिए। आधुनिक लोकतांत्रिक समाज में शिक्षा के बदलते स्वरूप और प्रासंगिकता पर प्रकाश डालिए।
2. शिक्षा के विभिन्न उद्देश्यों (वैयक्तिक, सामाजिक, नैतिक, सांस्कृतिक एवं व्यावसायिक) का आलोचनात्मक विश्लेषण कीजिए। आपके अनुसार एक संतुलित शिक्षा प्रणाली में इन उद्देश्यों का समन्वय किस प्रकार होना चाहिए?

नोट

इकाई 2
शैक्षिक दर्शन एवं इसका क्षेत्र
(Educational Philosophy and Its Scope)

इकाई की संरचना

2.1 प्रस्तावना (Introduction)
2.2 उद्देश्य (Objectives)
2.3 दर्शन का अर्थ, अवधारणा एवं प्रकृति (Meaning, Concept and Nature of Philosophy)
2.3.1 दर्शन की व्युत्पत्तिपरक एवं परिभाषाएँ
2.3.2 दर्शन की प्रकृति एवं मुख्य शाखाएँ (तत्वमीमांसा, ज्ञानमीमांसा, मूल्य/आचारमीमांसा)
2.4 शिक्षा और दर्शन का संबंध (Relationship between Education and Philosophy)
2.4.1 दर्शन का शिक्षा पर प्रभाव
2.4.2 शिक्षा का दर्शन पर प्रभाव
2.5 शैक्षिक दर्शन: अर्थ एवं अवधारणा (Educational Philosophy: Meaning and Concept)
2.6 शैक्षिक दर्शन का क्षेत्र एवं विषय-वस्तु (Scope and Subject Matter of Educational Philosophy)
2.6.1 शिक्षा के उद्देश्यों का निर्धारण
2.6.2 पाठ्यक्रम निर्माण एवं दार्शनिक आधार
2.6.3 शिक्षण विधियाँ एवं अनुशासन संबंधी दृष्टिकोण
2.6.4 शिक्षक एवं शिक्षार्थी के संबंध
2.7 शैक्षिक दर्शन की आवश्यकता एवं महत्व (Need and Importance of Educational Philosophy)
2.8 सारांश (Summary)
2.9 शब्दावली (Glossary)
2.10 बोध प्रश्नों के उत्तर
2.11 सुझावित अध्ययन सामग्री – मुक्त शैक्षिक संसाधन (Suggested Reading / OER)
2.12 संदर्भ ग्रंथ (References)
2.13 अभ्यास प्रश्न (Practice Questions)

नोट

2.1 प्रस्तावना (Introduction)

शिक्षा मानव समाज का वह सशक्त माध्यम है जिसके द्वारा ज्ञान, संस्कृति, मूल्यों और जीवन-कौशलों का हस्तांतरण एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को किया जाता है। परंतु शिक्षा की यह प्रक्रिया बिना किसी दिशा और दार्शनिक आधार के फलदायी नहीं हो सकती। दर्शनशास्त्र मानव चेतना, सत्य की खोज, ज्ञान के स्वरूप और जीवन के अंतिम लक्ष्यों का अनुशीलन करता है। जब दर्शन के सिद्धांतों और चिंतन को शिक्षा के व्यावहारिक धरातल पर लागू किया जाता है, तो उसे 'शैक्षिक दर्शन' कहा जाता है।

शैक्षिक दर्शन केवल एक अकादमिक विषय नहीं है, बल्कि यह संपूर्ण शिक्षा प्रणाली का मार्गदर्शक तंत्र है। यह शिक्षा शास्त्रियों, नीति-निर्माताओं और शिक्षकों को यह स्पष्टता प्रदान करता है कि शिक्षा का मूल उद्देश्य क्या होना चाहिए, पाठ्यक्रम का चयन किस आधार पर किया जाए, शिक्षण विधियों का स्वरूप कैसा हो और अनुशासन का क्या अर्थ होना चाहिए। इस इकाई में हम दर्शन और शिक्षा के बीच के गहरे अंतर्संबंधों, शैक्षिक दर्शन के अर्थ, इसके विस्तृत क्षेत्र तथा इसकी व्यावहारिक आवश्यकता का गहन अध्ययन करेंगे।

2.2 उद्देश्य (Objectives)

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात आप:

- दर्शन और शिक्षा के मूलभूत अर्थ, व्युत्पत्ति तथा उनकी प्रकृति की व्याख्या कर सकेंगे।
- शैक्षिक दर्शन की अवधारणा, परिभाषाओं और आधुनिक संदर्भ में इसकी प्रासंगिकता को स्पष्ट कर सकेंगे।
- शैक्षिक दर्शन के क्षेत्र (उद्देश्य निर्धारण, पाठ्यक्रम, शिक्षण विधियाँ एवं अनुशासन) की विस्तृत विवेचना कर सकेंगे।
- शिक्षण-प्रशिक्षण और शैक्षिक समस्याओं के समाधान में शैक्षिक दर्शन की आवश्यकता तथा महत्व का मूल्यांकन कर सकेंगे।

2.3 दर्शन का अर्थ, अवधारणा एवं प्रकृति

2.3.1 दर्शन की व्युत्पत्तिपरक उत्पत्ति एवं परिभाषाएँ

दर्शनशास्त्र मानव चेतना की वह सर्वोच्च स्थिति है जहाँ वह परम सत्य, जगत् और जीवन के वास्तविक मूल्य की खोज करता है। यह केवल कोरी कल्पना नहीं, बल्कि जीवन को देखने, समझने और उसकी समस्याओं का तार्किक समाधान खोजने का एक क्रमबद्ध दृष्टिकोण है।

नोट

व्युत्पत्तिपरक अर्थ

भारतीय तथा पाश्चात्य दोनों परंपराओं में 'दर्शन' शब्द की उत्पत्ति और उसका अर्थ अलग-अलग दृष्टिकोणों से विकसित हुआ है:

- भारतीय दृष्टिकोण:संस्कृत भाषा में 'दर्शन' शब्द की उत्पत्ति 'दृश्' धातु से हुई है, जिसका अर्थ है 'देखना'। भारतीय परंपरा में इसका तात्पर्य केवल भौतिक आँखों से देखना नहीं है, बल्कि उस अंतर्दृष्टि या ज्ञान चक्षु से है जिसके द्वारा परम तत्व या अंतिम सत्य का साक्षात्कार किया जाता है। जैसा कि उपनिषदों में कहा गया है: *"दृश्यते अनेन इति दर्शनम्"*अर्थात जिसके द्वारा सत्य के दर्शन किए जाएँ, वही दर्शन है।
- पाश्चात्य दृष्टिकोण:आंग्ल भाषा में दर्शन के लिए प्रयुक्त शब्द ग्रीक (यूनानी) भाषा के दो शब्दों से मिलकर बना है—'फिलो' (जिसका अर्थ है अनुराग या प्रेम) और 'सोफिया' (जिसका अर्थ है ज्ञान या विद्या)। इस प्रकार इसका संयुक्त शाब्दिक अर्थ 'ज्ञान से अनुराग या प्रेम' होता है।

दर्शनशास्त्र का व्युत्पत्तिपरक आधार

|

┌──────────────────────────────────┴──────────────────────────────────┐

||

भारतीय दृष्टिकोणपाश्चात्य दृष्टिकोण

('दृश्' धातु से निर्मित) ('फिलो' + 'सोफिया' से निर्मित)

||

▼▼

सत्य का साक्षात्कार / दर्शनज्ञान से अनुराग या प्रेम

प्रमुख परिभाषाएँ

विभिन्न दार्शनिकों ने दर्शन को अपने-अपने दृष्टिकोण से परिभाषित किया है:

- प्लेटो के अनुसार: "जो व्यक्ति ज्ञान को प्राप्त करने के लिए उत्सुक रहता है, जिसमें सीखने की तीव्र इच्छा बनी रहती है और जो कभी संतुष्ट नहीं होता, वही वास्तविक दार्शनिक है।"
- अरस्तू के अनुसार: "दर्शन एक ऐसा विज्ञान है जो परम तत्व के वास्तविक स्वरूप की खोज करता है।"
- कॉम्ते के अनुसार: "दर्शन विज्ञानों का विज्ञान है।"

नोट

- डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन के अनुसार: "दर्शन सत्य के वास्तविक स्वरूप की तार्किक खोज है।"
- डॉ. सम्पूर्णानंद के अनुसार: "दर्शन वह दृष्टि है जिसके द्वारा सत्य का बोध होता है और जो जीवन को सही दिशा प्रदान करता है।"

2.3.2 दर्शन की प्रकृति एवं मुख्य शाखाएँ

दर्शन की प्रकृति

दर्शन की प्रकृति को समझने के लिए इसके विभिन्न व्यावहारिक और वैचारिक पक्षों का विश्लेषण करना आवश्यक है:

- अन्वेषणात्मक एवं तार्किक:दर्शन किसी भी मान्यता, परंपरा या विचार को बिना तर्क की कसौटी पर कसे स्वीकार नहीं करता। यह प्रत्येक विचार के पीछे छिपे 'क्यों', 'कैसे' और 'क्या' का अन्वेषण करता है।
- व्यापक एवं सार्वभौमिक:यह जीवन और जगत् के किसी एक हिस्से का अध्ययन नहीं करता, बल्कि संपूर्ण अस्तित्व, ब्रह्मांड और मानवीय अनुभवों को अपने अध्ययन क्षेत्र में समाहित करता है।
- समस्या-समाधान की विधि:दर्शन केवल सैद्धांतिक चिंतन तक सीमित नहीं है। जीवन में उत्पन्न होने वाले नैतिक, बौद्धिक और अस्तित्ववादी संकटों का तार्किक समाधान खोजना इसकी मूल प्रकृति है।
- विज्ञान एवं कला का समन्वय:दर्शन एक विज्ञान है क्योंकि इसमें तार्किक और क्रमबद्ध अध्ययन प्रणाली का प्रयोग होता है। साथ ही यह एक कला भी है क्योंकि यह जीवन को सुंदर, अनुशासित और उद्देश्यपूर्ण तरीके से जीने का मार्ग दिखाता है।

दर्शन की प्रकृति

|

┌──────────────────────────┬──────────────────┬──────────────┐

└──┬──────────────────────┘

||||

तार्किक एवं अन्वेषणात्मकव्यापक एवं सार्वभौमिकसमस्या-समाधान केंद्रितविज्ञान व कला का समन्वय

दर्शन की मुख्य शाखाएँ

दार्शनिक चिंतन और उसकी विषय-वस्तु को मुख्य रूप से तीन व्यापक शाखाओं में विभाजित किया जाता है:

1. तत्वमीमांसा

नोट

तत्वमीमांसा दर्शन की वह शाखा है जो इस दृश्यमान भौतिक जगत् से परे के अंतिम सत्य का अध्ययन करती है। यह उन प्रश्नों का उत्तर खोजने का प्रयास करती है जिनका समाधान भौतिक विज्ञान के पास नहीं है।

- **अध्ययन क्षेत्र:**
    - ईश्वरशास्त्र:ईश्वर का अस्तित्व, उसका स्वरूप और उसकी शक्तियाँ।
    - आत्मशास्त्र:आत्मा की प्रकृति, उसका अमरत्व और शरीर से उसका संबंध।
    - सृष्टिशास्त्र:ब्रह्मांड की उत्पत्ति, इसका विनाश और इसके पीछे के नियम।

2. ज्ञानमीमांसा

ज्ञानमीमांसा के अंतर्गत ज्ञान के स्वरूप, ज्ञान की प्राप्ति के साधनों और उसकी प्रामाणिकता का गहराई से अध्ययन किया जाता है।

- अध्ययन क्षेत्र:
    - ज्ञान क्या है और अज्ञान क्या है?
    - ज्ञान प्राप्त करने के वैध साधन (प्रत्यक्ष, अनुमान, शब्द, उपमान आदि)।
    - ज्ञान की सीमाएँ और सत्यता की परीक्षा के मानदंड।

3. मूल्यमीमांसा / आचारमीमांसा

यह शाखा मानवीय जीवन के आदर्शों, मूल्यों और आचरण के नियमों से संबंधित है। यह मनुष्य को उचित और अनुचित के बीच का अंतर समझाती है।

- अध्ययन क्षेत्र:
    - नीतिशास्त्र:मानवीय आचरण, कर्तव्य, शुभ-अशुभ और नैतिक मूल्य।
    - सौंदर्यशास्त्र:सौंदर्य की अवधारणा, कलात्मक चेतना और अनुभूति।
    - तर्कशास्त्र:विचारों की संगति, तार्किक चिंतन और निष्कर्ष की सत्यता।

दर्शन की मुख्य शाखाओं का तुलनात्मक विश्लेषण

दार्शनिक शाखा	मूल केंद्र बिंदु	मुख्य प्रश्न	शिक्षा में अनुप्रयोग
तत्वमीमांसा	अंतिम सत्य एवं अस्तित्व	ब्रह्मांड और जीवन का अंतिम सत्य क्या है?	शिक्षा के दीर्घकालिक उद्देश्यों का निर्धारण

नोट

ज्ञानमीमांसा	ज्ञान की प्रकृति एवं साधन	सच्चा ज्ञान क्या है और इसे कैसे प्राप्त करें?	पाठ्यक्रम संरचना एवं शिक्षण विधियों का चयन
मूल्यमीमांसा	नैतिक मूल्य एवं आचरण	जीवन के आदर्श मूल्य क्या हैं और आचरण कैसा हो?	अनुशासन, चरित्र निर्माण एवं शिक्षक-छात्र संबंध

2.4 शिक्षा और दर्शन का संबंध (Relationship between Education and Philosophy)

शिक्षा और दर्शन के बीच अत्यंत गहरा, घनिष्ठ और अन्योन्याश्रित संबंध है। ये दोनों मानव जीवन और समाज के सर्वांगीण विकास के लिए एक ही प्रक्रिया के दो अभिन्न पहलू हैं। दार्शनिक चिंतन के बिना शिक्षा आधारहीन और दिशाहीन हो जाती है, जबकि शिक्षा के बिना दर्शन व्यावहारिक उपयोगिता से वंचित होकर केवल बौद्धिक कल्पना तक सीमित रह जाता है।

महान शिक्षाशास्त्रीरॉस (Ross) के शब्दों में: *"दर्शन और शिक्षा एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। पहला पक्ष सैद्धांतिक पहलू को दर्शाता है, जबकि दूसरा पक्ष उसके व्यावहारिक पहलू को अभिव्यक्त करता है।"*

2.4.1 दर्शन का शिक्षा पर प्रभाव

दर्शनशास्त्र शिक्षाशास्त्र की आत्मा और उसकी दिशा-निर्देशक शक्ति है। शिक्षा का प्रत्येक अंग किसी न किसी रूप में दार्शनिक मान्यताओं से प्रभावित होता है:

1. शिक्षा के उद्देश्यों का निर्धारण

शिक्षा का मूल लक्ष्य क्या होना चाहिए—बालक का बौद्धिक विकास, नैतिक चरित्र का निर्माण, आध्यात्मिक चेतना या व्यावसायिक दक्षता—यह निर्णय केवल दार्शनिक चिंतन के आधार पर ही संभव है। उदाहरण के लिए, आदर्शवादी दर्शन नैतिक और आध्यात्मिक विकास पर बल देता है, जबकि प्रयोजनवादी दर्शन व्यावहारिक और जीवन-उपयोगी उद्देश्यों को प्राथमिकता देता है।

2. पाठ्यक्रम की विषय-वस्तु की संरचना

पाठ्यक्रम में कौन-कौन से विषय और क्रियाएँ शामिल की जाएँ, इसका निर्धारण दार्शनिक विचारधाराएँ ही करती हैं।

- प्रकृतिवाद:प्राकृतिक विज्ञान, शारीरिक शिक्षा और भूगोल जैसे विषयों को पाठ्यक्रम का आधार मानता है।
- आदर्शवाद:धर्म, नीतिशास्त्र, साहित्य, कला और दर्शनशास्त्र को प्राथमिकता देता है।

नोट

- प्रयोजनवाद:सामाजिक विज्ञान, गणित, तकनीकी कौशल और जीवन से जुड़ी व्यावहारिक समस्याओं को स्थान देता है।

3. शिक्षण विधियों का चयन

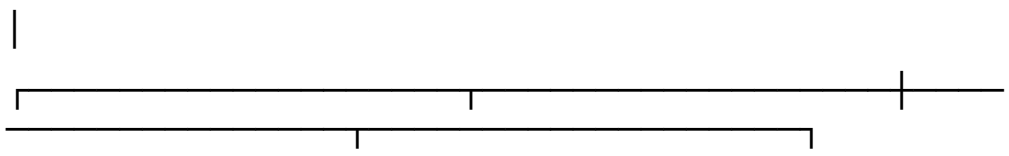
शिक्षक कक्षा में किस पद्धति से ज्ञान हस्तांतरित करेगा, यह भी दार्शनिक मान्यताओं से तय होता है।

- आदर्शवादसंवाद, व्याख्यान और प्रश्नोत्तर विधिपर बल देता है।
- प्रकृतिवादनिरीक्षण, खेल-कूद और मुक्तात्मक अनुभवको सर्वश्रेष्ठ मानता है।
- प्रयोजनवादकरके सीखने (Learning by Doing) और परियोजना विधि (Project Method) को आधार बनाता है।

4. अनुशासन की अवधारणा

अनुशासन का स्वरूप कैसा हो—दंडात्मक, स्व-नियंत्रित या मुक्तात्मक—यह दर्शन द्वारा तय होता है। आधुनिक शिक्षा में आत्म-अनुशासन और लोकतांत्रिक मूल्यों का समावेश दार्शनिक चिंतन का ही परिणाम है।

दर्शन का शिक्षा के घटकों पर प्रभाव



उद्देश्य निर्धारणपाठ्यक्रम निर्माणशिक्षण विधियाँअनुशासन का स्वरूपशिक्षक की भूमिका

2.4.2 शिक्षा का दर्शन पर प्रभाव

जिस प्रकार दर्शन शिक्षा को दिशा और सिद्धांत प्रदान करता है, उसी प्रकार शिक्षा दर्शन को जीवंत, प्रासंगिक और गतिशील बनाए रखने में केंद्रीय भूमिका निभाती है:

1. दार्शनिक विचारों का संरक्षण एवं हस्तांतरण

महान दार्शनिकों (जैसे स्वामी विवेकानंद, महात्मा गांधी, प्लेटो, जॉन डीवी) के विचार केवल पुस्तकों में बंद रहकर नष्ट हो जाते, यदि शिक्षा प्रणाली उन्हें एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक पहुँचाने का कार्य न करती। शिक्षा ही दार्शनिक परंपराओं और ज्ञान को निरंतर प्रवाहमान रखती है।

2. दार्शनिक सिद्धांतों की व्यावहारिक परीक्षा (प्रयोगशाला के रूप में शिक्षा)

शिक्षा का प्रांगण दर्शन के लिए एक प्रयोगशाला के समान है। जब कोई दार्शनिक जीवन का कोई सिद्धांत या मूल्य प्रस्तुत करता है, तो शिक्षा प्रणाली उस सिद्धांत को विद्यार्थियों

नोट

के व्यवहार में लागू करके उसकी सत्यता, उपयोगिता और सार्थकता की परीक्षा करती है।

दार्शनिक चिंतन (सिद्धान्त)

|

▼

शिक्षा प्रणाली (व्यावहारिक प्रयोग)

|

▼

व्यवहार परिमार्जन एवं मूल्यांकन

3. नए दर्शन और प्रगतिशील विचारों का जन्म

शिक्षा समाज में जागरूकता, वैज्ञानिक दृष्टिकोण और तर्कशक्ति का विकास करती है। जब पुरानी दार्शनिक मान्यताएँ या कुरीतियाँ समाज की प्रगति में बाधा बनती हैं, तो शिक्षित चेतना उन पर प्रश्न उठाती है। इसके परिणामस्वरूप नए, आधुनिक और प्रगतिशील दार्शनिक विचारों का जन्म होता है।

2.4.3 शिक्षा और दर्शन का पारस्परिक समन्वय

शिक्षा और दर्शन का संबंध पूरकता का है। इनमें से किसी भी एक के बिना दूसरे का अस्तित्व अधूरा है। दोनों मिलकर मानव समाज को परिष्कृत और उन्नत बनाते हैं।

शिक्षा और दर्शन का समन्वय

|

┌──────────────────────┴──────────────────────┐

||

दार्शनिक चिंतन (ज्ञान/सिद्धान्त)शैक्षणिक क्रियान्वयन (व्यवहार/प्रयोग)

||

└──────────────────────┬──────────────────────┘

|

▼

मानव व्यक्तित्व का विकास

दार्शनिक विचारधाराओं और शिक्षा के अंगों का तुलनात्मक विश्लेषण

नोट

शिक्षा और दर्शन के इस अंतर्संबंध को विभिन्न प्रमुख दार्शनिक धाराओं के आधार पर निम्नलिखित तालिका द्वारा स्पष्ट रूप से समझा जा सकता है:

दार्शनिक धारा	शिक्षा का मुख्य उद्देश्य	पाठ्यक्रम की प्रकृति	शिक्षण विधि	अनुशासन की अवधारणा
आदर्शवाद	आत्म-साक्षात्कार, नैतिक एवं आध्यात्मिक विकास	साहित्य, धर्म, कला, नीतिशास्त्र, मानविकी	संवाद, व्याख्यान, प्रश्नोत्तर विधि	प्रभावात्मक एवं स्व-नियंत्रित अनुशासन
प्रकृतिवाद	प्रकृति के अनुकूल स्वाभाविक विकास, स्वतंत्रता	प्राकृतिक विज्ञान, भूगोल, शारीरिक शिक्षा	प्रत्यक्ष अनुभव, खेल-कूद, निरीक्षण	मुक्तात्मक अनुशासन (자유/स्वतंत्रता केंद्रित)
प्रयोजनवाद	व्यावहारिक जीवन हेतु तैयारी, सामाजिक कुशलता	सामाजिक विज्ञान, गणित, तकनीकी विषय, क्रियाएँ	परियोजना विधि, करके सीखना (Problem Solving)	सामाजिक एवं लोकतांत्रिक अनुशासन

निष्कर्ष

संक्षेप में, दर्शनशास्त्र शिक्षा का 'मस्तिष्क' है जो सोचता है, योजना बनाता है और लक्ष्य निर्धारित करता है; जबकि शिक्षाशास्त्र उसका 'शरीर' है जो उन योजनाओं और लक्ष्यों को व्यावहारिक रूप देकर धरातल पर क्रियान्वित करता है। एक उत्कृष्ट और सार्थक शिक्षा प्रणाली के निर्माण के लिए दर्शन और शिक्षा का यह सामंजस्य अनिवार्य है।

बिलकुल! स्व-शिक्षण सामग्री (SLM) की गुणवत्ता और पठनीयता को बढ़ाने के लिए रेखाचित्र (Diagrams), आरेख और संरचनात्मक चार्ट का होना अत्यंत आवश्यक है।

चित्र और चार्ट केवल उत्तर को सुंदर नहीं बनाते, बल्कि कठिन दार्शनिक और शैक्षिक विचारों को शिक्षार्थी के लिए समझने में बेहद आसान और स्मरणीय बना देते हैं।

अनुभाग 2.4, 2.5 और 2.6 का विस्तृत विवरणचित्रात्मक आरेखों, प्रवाह आरेखों (Flowcharts) और संरचनात्मक तालिकाओं (Tables) के साथ इस प्रकारहै:

2.5 शैक्षिक दर्शन: अर्थ एवं अवधारणा

नोट

शैक्षिक दर्शन, दर्शनशास्त्र की वह व्यावहारिक शाखा है जो शिक्षा की संपूर्ण प्रक्रिया, उसके सिद्धांतों और समस्याओं का दार्शनिक दृष्टिकोण से अध्ययन करती है। यह केवल दार्शनिक सिद्धांतों का संकलन नहीं है, बल्कि यह शिक्षा प्रणाली को एक निश्चित दिशा और उद्देश्य प्रदान करता है।

1. शैक्षिक दर्शन का अवधारणात्मक ढाँचा

शैक्षिक दर्शन शिक्षा के 'क्यों', 'क्या' और 'कैसे' जैसे मूलभूत प्रश्नों का उत्तर प्रस्तुत करता है:

- क्यों पढ़ाना है? (शिक्षा के अंतिम और व्यावहारिक उद्देश्य निर्धारित करना)
- क्या पढ़ाना है? (पाठ्यक्रम की विषय-वस्तु का दार्शनिक चयन)
- कैसे पढ़ाना है? (शिक्षण विधियों और अनुशासन के स्वरूप का मार्गदर्शन)

शैक्षिक दर्शन का मूलभूत ढाँचा

|

┌──────────────────────────────────────┼──────────────────────────────────────┐

|||

▼▼▼

शिक्षा के उद्देश्यपाठ्यक्रम की संरचनाशिक्षण विधियाँ व अनुशासन

("क्यों पढ़ाना है?") ("क्या पढ़ाना है?") ("कैसे पढ़ाना है?")

2. शैक्षिक दर्शन की प्रमुख परिभाषाएँ

- जॉन डीवी के अनुसार: "व्यापक अर्थ में दर्शन को शिक्षा का सामान्य सिद्धांत ही कहा जा सकता है, क्योंकि दार्शनिक चिंतन का अंतिम लक्ष्य मानव आचरण का परिष्कार करना है जो केवल शिक्षा से संभव है।"
- टी. पी. नन के अनुसार: "शिक्षा का प्रत्येक पक्ष दार्शनिक मान्यताओं पर आधारित होता है और दार्शनिक सिद्धांतों के बिना शिक्षा एक बिना पतवार की नाव के समान है।"

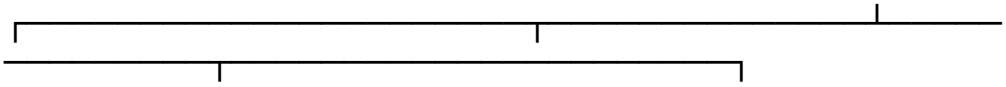
2.6 शैक्षिक दर्शन का क्षेत्र एवं विषय-वस्तु

शैक्षिक दर्शन का कार्यक्षेत्र अत्यंत व्यापक है। यह शिक्षा के सभी प्रमुख अंगों को वैज्ञानिक और तार्किक आधार प्रदान करता है।

शैक्षिक दर्शन का क्षेत्र

|

नोट



उद्देश्य निर्धारणपाठ्यक्रम निर्माणशिक्षण विधियाँशिक्षार्थी-शिक्षक संबंध

(तत्वमीमांसा आधारित) (ज्ञानमीमांसा आधारित) (प्रयोजनवादी चिंतन) (मूल्यमीमांसा आधारित)

2.6.1 शिक्षा के उद्देश्यों का निर्धारण

शिक्षा के उद्देश्य हवा में तय नहीं किए जा सकते; इनके पीछे गहरा दार्शनिक चिंतन होता है। तत्वमीमांसा के सिद्धांतों के आधार पर शैक्षिक दर्शन यह तय करता है कि बालक का भौतिक विकास मुख्य लक्ष्य है या नैतिक व आध्यात्मिक विकास।

2.6.2 पाठ्यक्रम निर्माण एवं दार्शनिक आधार

ज्ञानमीमांसा यह तय करती है कि कौन-सा ज्ञान प्रामाणिक और शिक्षार्थी के लिए उपयोगी है। दार्शनिक विचारधाराएँ पाठ्यक्रम के निर्माण को सीधे प्रभावित करती हैं:

दार्शनिक दृष्टिकोण	पाठ्यक्रम में मुख्य विषय
आदर्शवाद	धर्म, साहित्य, कला, नीतिशास्त्र, संगीत
प्रकृतिवाद	प्राकृतिक विज्ञान, भूगोल, खेल-कूद, शारीरिक शिक्षा
प्रयोजनवाद	गणित, सामाजिक अध्ययन, तकनीकी ज्ञान, व्यावहारिक कौशल

2.6.3 शिक्षण विधियाँ एवं अनुशासन संबंधी दृष्टिकोण

शिक्षण विधियाँ और कक्षा का वातावरण कैसा हो, इसका निर्धारण दार्शनिक मान्यताओं द्वारा होता है:

- शिक्षण विधियाँ:आदर्शवाद प्रश्नोत्तर व संवाद विधि पर, प्रकृतिवाद प्रत्यक्ष अनुभव व निरीक्षण पर, तथा प्रयोजनवाद करके सीखने (Learning by Doing) व परियोजना विधि पर बल देता है।
- अनुशासन:शैक्षिक दर्शन यह स्पष्ट करता है कि अनुशासन बाहरी दबाव या दंड से नहीं, बल्कि आंतरिक चेतना और स्व-नियंत्रण (Self-discipline) से आना चाहिए।

2.6.4 शिक्षक एवं शिक्षार्थी के संबंध

दार्शनिक चिंतन के आधार पर शिक्षक और शिक्षार्थी के संबंधों की रूपरेखा तय होती है:

नोट

दार्शनिक दृष्टिकोण और शिक्षक की भूमिका

|

┌──┼──┐

|||

आदर्शवाद प्रकृतिवाद प्रयोजनवाद

(शिक्षक: मुख्य पथ-प्रदर्शक व आदर्श) (शिक्षक: पर्दे के पीछे का निरीक्षक)(शिक्षक: मित्र, सलाहकार व सहयोगी)

शैक्षिक दर्शन की आवश्यकता एवं महत्व

एक कुशल शिक्षक, शिक्षाशास्त्री और नीति-निर्माता के लिए शैक्षिक दर्शन का ज्ञान होना अत्यंत अनिवार्य है।

शैक्षिक दर्शन का महत्व

|

┌──┼──┐

|||

शिक्षक के लिए मार्गदर्शनशैक्षिक समस्याओं का समाधानसामाजिक व सांस्कृतिक परिष्कार

(दृष्टिकोण में स्पष्टता) (नीतिगत व तार्किक हल) (मूल्यों व संस्कृति का संरक्षण)

1. शिक्षक के दृष्टिकोण को स्पष्टता प्रदान करना:यह शिक्षक को केवल पुस्तकें पढ़ाने वाला साधन न बनाकर एक चिंतनशील, संवेदनशील और स्पष्ट लक्ष्य वाला मार्गदर्शक बनाता है।
2. शैक्षिक समस्याओं का समाधान:परीक्षा प्रणाली, अनुशासनहीनता, पाठ्यक्रम के बोझ और शिक्षण विधियों से जुड़ी जटिल समस्याओं का दार्शनिक एवं स्थाई समाधान खोजने में सहायता करता है।
3. सामाजिक एवं सांस्कृतिक दिशा-निर्देशन:यह शिक्षा प्रणाली को समाज के सांस्कृतिक मूल्यों, लोकतांत्रिक आदर्शों और भावी आवश्यकताओं के अनुरूप ढालने का कार्य करता है।

2.7 शैक्षिक दर्शन की आवश्यकता एवं महत्व (Need and Importance of Educational Philosophy)

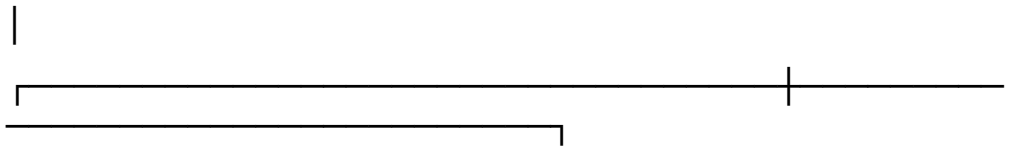
2.7.1 शैक्षिक दर्शन का मूलभूत औचित्य

नोट

शिक्षा की प्रक्रिया केवल पाठ्यपुस्तकों को पढ़ा देने या सूचनाओं को हस्तांतरित करने तक सीमित नहीं है। यह मानव व्यक्तित्व के गढ़ने, सामाजिक परिवर्तन लाने और राष्ट्र के भावी नागरिकों को आकार देने की एक अति-महत्वपूर्ण प्रक्रिया है। इस प्रक्रिया को सार्थक, उद्देश्यपूर्ण और वैज्ञानिक बनाने के लिएशैक्षिक दर्शनकी आवश्यकता सर्वोपरि है।

दार्शनिक आधार के बिना शिक्षा एक ऐसी यात्रा के समान है जिसकी कोई मंजिल तय न हो। शैक्षिक दर्शन शिक्षक, शिक्षार्थी, पाठ्यक्रम निर्माता और शिक्षाविदों को एक तार्किक दृष्टिकोण, स्पष्ट दृष्टि और नैतिक दिशा प्रदान करता है।

शैक्षिक दर्शन का महत्व



शिक्षक के लिए मार्गदर्शनशैक्षिक समस्याओं का समाधानसामाजिक व सांस्कृतिक परिष्कार

(दृष्टिकोण में स्पष्टता) (नीतिगत व तार्किक हल) (मूल्यों व संस्कृति का संरक्षण)

2.7.2 शैक्षिक दर्शन की आवश्यकता एवं महत्व का विस्तृत वर्गीकरण

शैक्षिक दर्शन की आवश्यकता को शिक्षा प्रणाली के विभिन्न घटकों के संदर्भ में निम्नलिखित बिंदुओं के माध्यम से गहराई से समझा जा सकता है:

1. शिक्षक के लिए मार्गदर्शक के रूप में

- दृष्टिकोण में स्पष्टता:एक शिक्षक के पास केवल विषय-वस्तु (Content) का ज्ञान होना पर्याप्त नहीं है; उसे यह भी ज्ञात होना चाहिए कि वह उस विषय को क्यों पढ़ा रहा है। शैक्षिक दर्शन शिक्षक को उसके कार्य के प्रति स्पष्ट दृष्टि देता है।
- व्यक्तित्व निर्माण:यह शिक्षक को केवल एक 'सूचनादाता' न बनाकर एक संवेदनशील, नैतिक और दूरदर्शी 'पथ-प्रदर्शक' के रूप में स्थापित करता है।

2. शिक्षा के स्पष्ट एवं प्रासंगिक उद्देश्यों के निर्धारण हेतु

- समाज की आवश्यकताएँ और परिस्थितियाँ समय के साथ बदलती रहती हैं। शैक्षिक दर्शन समाज की सामयिक और भावी आवश्यकताओं का दार्शनिक विश्लेषण करके शिक्षा के ऐसे उद्देश्य तय करता है जो बालक का बौद्धिक, नैतिक, सामाजिक और व्यावहारिक विकास कर सकें।

3. पाठ्यक्रम को प्रामाणिक एवं संतुलित बनाने हेतु

नोट

- ज्ञान का भंडार असीमित है, लेकिन शिक्षार्थी के पास समय और क्षमता सीमित होती है। ज्ञानमीमांसा के सिद्धांतों के आधार पर शैक्षिक दर्शन यह तय करता है कि कौन-सा ज्ञान सर्वाधिक उपयोगी, प्रामाणिक और शिक्षार्थी के जीवन के अनुकूल है।

4. अनुशासित एवं लोकतांत्रिक वातावरण के निर्माण हेतु

- यह कक्षा में कठोर दंडात्मक प्रथाओं का खंडन करता है और स्व-नियंत्रित (Self-discipline) तथा लोकतांत्रिक मूल्यों पर आधारित अनुशासन की अवधारणा का समर्थन करता है।

5. सामाजिक एवं सांस्कृतिक मूल्यों के संरक्षण एवं हस्तांतरण हेतु

- प्रत्येक समाज की अपनी सांस्कृतिक पहचान और नैतिक मूल्य होते हैं। शैक्षिक दर्शन यह सुनिश्चित करता है कि शिक्षा प्रणाली संस्कृति के उपयोगी तत्वों का संरक्षण करे, उनका संवर्धन करे और उन्हें भावी पीढ़ी को हस्तांतरित करे।

शैक्षिक दर्शन की व्यावहारिक कार्यप्रणाली

|

┌──────────────────────┴──────────────────────┐

||

सैद्धांतिक चिंतन एवं विश्लेषणव्यावहारिक क्रियान्वयन व समाधान

(उद्देश्य, मूल्य एवं नीति निर्धारण) (कक्षा-कक्ष, पाठ्यक्रम एवं अनुशासन)

2.7.3 शैक्षिक दर्शन की आवश्यकता एवं महत्व की विस्तृत तुलनात्मक तालिका

विभिन्न हितधारकों, शैक्षिक घटकों और व्यावहारिक संदर्भों में शैक्षिक दर्शन की भूमिका को निम्नलिखित तालिका में स्पष्ट रूप से रेखांकित किया गया है:

क्षेत्र / हितधारक	शैक्षिक दर्शन की मुख्य आवश्यकता	व्यावहारिक महत्व एवं प्रभाव
1. शिक्षक (Teachers)	• शिक्षा के 'क्यों' और 'कैसे' को समझने के लिए • शिक्षण रणनीतियों में तार्किक स्पष्टता लाने हेतु	• शिक्षक को कुशल पथ-प्रदर्शक और मार्गदर्शक बनाता है। • कक्षा में विविध आवश्यकताओं वाले

नोट

		बालकों को समझने में मदद करता है।
2. शिक्षार्थी (Students)	• चिंतन, तर्क और आलोचनात्मक सोच के विकास हेतु • नैतिक और आध्यात्मिक चेतना के जागरण हेतु	• केवल रटने की जगह 'स्व-चिंतन' और 'समस्या-समाधान' की क्षमता विकसित होती है। • चरित्र और संतुलित व्यक्तित्व का निर्माण होता है।
3. पाठ्यक्रम निर्माता (Curriculum Designers)	• अप्रासंगिक सामग्री को छाँटने हेतु • संतुलित एवं उपयोगी विषय-वस्तु के चयन हेतु	• ज्ञानमीमांसा के आधार पर जीवन-ोपयोगी विषयों का समावेशन संभव होता है। • विषय-वस्तु में सैद्धांतिक और व्यावहारिक संतुलन बनता है।
4. शैक्षिक प्रशासक व नीति-निर्माता (Administrators)	• राष्ट्रीय और सामाजिक आवश्यकताओं के अनुरूप नीतियाँ बनाने हेतु • मूल्य-आधारित ढाँचा तैयार करने हेतु	• समावेशी शिक्षा, समानता और न्याय पर आधारित नीतियाँ बनती हैं। • शिक्षा प्रणाली में दिशाहीनता और भटकाव की स्थिति समाप्त होती है।
5. समाज एवं राष्ट्र (Society & Nation)	• सांस्कृतिक विरासत के संरक्षण हेतु	• समाज में सहिष्णुता, भ्रातृत्व और नागरिक उत्तरदायित्व की भावना बढ़ती है।

नोट

	• लोकतांत्रिक एवं मानवीय मूल्यों की स्थापना हेतु	• सामाजिक कुरीतियों का उन्मूलन और प्रगतिशील विचारों का जन्म होता है।
6. शैक्षिक समस्या-समाधान (Educational Problem Solving)	• परीक्षा प्रणाली, अनुशासनहीनता और पाठ्यक्रम के बोझ जैसी समस्याओं के समाधान हेतु	• समस्याओं के सतही उपचार के बजाय उनके मूल दार्शनिक कारणों को खोजकर स्थाई समाधान प्रदान करता है।

निष्कर्ष

संक्षेप में, शैक्षिक दर्शन शिक्षा रूपी भवन की वह नींव है जिस पर संपूर्ण शैक्षणिक संरचना (उद्देश्य, पाठ्यक्रम, शिक्षण विधियाँ, अनुशासन और शिक्षक-छात्र संबंध) टिकी होती है। इसके बिना शिक्षा प्रणाली अपने मुख्य लक्ष्य—मानव चेतना का परिष्कार—को प्राप्त नहीं कर सकती।

भाग-क: रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए

1. दर्शन शब्द संस्कृत की _____ धातु से बना है, जिसका अर्थ 'देखना' होता है
2. जॉन डीवी के अनुसार, शिक्षा केवल शिक्षक और शिक्षार्थी तक सीमित नहीं है, बल्कि इसमें _____ भी एक महत्वपूर्ण ध्रुव है।
3. दर्शन की _____ शाखा के अंतर्गत ज्ञान की सीमा, ज्ञान प्राप्ति के साधन और सत्यता की परीक्षा का अध्ययन किया जाता है।
4. "दर्शन और शिक्षाएक ही सिक्के के दो पहलू हैं" - यह प्रसिद्ध कथन दार्शनिक _____ का है।
5. मानव आचरण के नैतिक मूल्यों, शुभ-अशुभ के विवेक और आचार-संहिता का अध्ययन दर्शन की _____ शाखा में किया जाता है।

भाग-ख: बहुविकल्पीय प्रश्न (MCQs)

1. ग्रीक भाषा में 'फिलासफी' (Philosophy) शब्द का शाब्दिक अर्थ क्या है?

(a) सत्य की खोज

(b) ज्ञान से प्रेम (Love of Wisdom)

(c) आत्मा का अध्ययन

(d) व्यवहार का रूपांतरण

नोट

2. निम्नलिखित में से कौन-सा घटक शिक्षा की त्रि-ध्रुवीय प्रक्रिया में शामिल नहीं है?

(a) शिक्षक
(b) शिक्षार्थी
(c) पाठ्यपुस्तक
(d) सामाजिक वातावरण

3. सृष्टि के अंतिम सत्य, ईश्वर, आत्मा और जगत् की उत्पत्ति का अध्ययन दर्शन की किस शाखा के अंतर्गत आता है?

(a) ज्ञानमीमांसा (Epistemology)

(b) मूल्यमीमांसा (Axiology)

(c) तत्वमीमांसा (Metaphysics)

(d) तर्कशास्त्र (Logic)

4. "व्यापक अर्थ में दर्शन को शिक्षा का सामान्य सिद्धांत ही कहा जा सकता है" - यह विचार किसका है?

(a) प्लेटो

(b) जॉन डीवी

(c) स्वामी विवेकानंद

(d) महात्मा गांधी

5. दूरस्थ शिक्षा, मुक्त विश्वविद्यालय और पत्राचार पाठ्यक्रम शिक्षा के किस रूप के अंतर्गत आते हैं?

(a) औपचारिक शिक्षा

(b) अनौपचारिक शिक्षा

(c) निरौपचारिक शिक्षा

(d) व्यावसायिक शिक्षा

2.8 सारांश (Summary)

शैक्षिक दर्शन, दर्शनशास्त्र की वह अनुप्रयुक्त और व्यावहारिक शाखा है जो शिक्षा की अवधारणा, उसके स्वरूप, उद्देश्यों और क्रियान्वयन को तार्किक तथा दार्शनिक आधार प्रदान करती है। दर्शन जीवन के अंतिम सत्य, ईश्वर, आत्मा, ज्ञान के स्वरूप और नैतिक मूल्यों की खोज करता है, जबकि शिक्षा इन दार्शनिक निष्कर्षों को बालक के व्यवहार और समाज में ढालने का कार्य करती है। अतः रॉस के शब्दों में, दर्शन और शिक्षा एक ही सिक्के के दो पहलू हैं—दर्शन सैद्धांतिक पक्ष है और शिक्षा उसका व्यावहारिक पक्ष।

नोट

शैक्षिक दर्शन का कार्यक्षेत्र अत्यंत व्यापक है। यह तत्वमीमांसा के आधार पर शिक्षा के अंतिम एवं तात्कालिक उद्देश्यों का निर्धारण करता है, ज्ञानमीमांसा के आधार पर प्रामाणिक पाठ्यक्रम का निर्माण करता है, तथा मूल्यमीमांसा के आधार पर नैतिक अनुशासन, मानवीय मूल्यों और शिक्षक-शिक्षार्थी संबंधों की आदर्श रूपरेखा प्रस्तुत करता है। आधुनिक युग में शिक्षकों के लिए शैक्षिक दर्शन का अध्ययन अत्यंत अनिवार्य है, क्योंकि यह उन्हें शिक्षण के प्रति एक स्पष्ट और संवेदनशील दृष्टिकोण प्रदान करता है तथा शिक्षा क्षेत्र में उत्पन्न होने वाली जटिल नीतिगत एवं सामाजिक समस्याओं का तार्किक समाधान खोजने में सहायता करता है।

2.9 शब्दावली (Glossary)

तत्वमीमांसा (Metaphysics):दर्शनशास्त्र की वह प्रमुख शाखा जो भौतिक संसार से परे के अंतिम सत्य, ईश्वर, आत्मा, जगत् की उत्पत्ति और अस्तित्व की वास्तविक प्रकृति का अध्ययन करती है।

ज्ञानमीमांसा (Epistemology):दर्शन की वह शाखा जो ज्ञान के स्वरूप, उसकी उत्पत्ति के साधनों, सत्यता की परीक्षा, प्रामाणिकता और अज्ञान की सीमाओं का विश्लेषणात्मक अध्ययन करती है।

मूल्यमीमांसा / आचारमीमांसा (Axiology / Ethics):दर्शन की वह शाखा जिसके अंतर्गत मानव आचरण के नैतिक मूल्यों, शुभ-अशुभ के विवेक, आचार-संहिता और सौंदर्यशास्त्र के सिद्धांतों का अनुशीलन किया जाता है।

2.10 बोध प्रश्न के उत्तर (Self-Assessment Questions)

उत्तरमाला (Answer Key)

A. रिक्त स्थानों की पूर्ति के उत्तर

1. दृश्
2. सामाजिक वातावरण (पाठ्यक्रम)
3. ज्ञानमीमांसा
4. रॉस (Ross)
5. मूल्यमीमांसा (आचारमीमांसा)

B. बहुविकल्पीय प्रश्नों के उत्तर

1. (b) ज्ञान से प्रेम (Love of Wisdom)
2. (c) पाठ्यपुस्तक
3. (c) तत्वमीमांसा (Metaphysics)
4. (b) जॉन डीवी

नोट

5. (c) निरौपचारिक शिक्षा

2.11 सुझावित अध्ययन सामग्री – मुक्त शैक्षिक संसाधन (Open Educational Resources - OER)

- **ई-ज्ञानकोश (eGyanKosh):**इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय (IGNOU) द्वारा संचालित यह एक प्रमुख डिजिटल भंडार है, जहाँ शिक्षा के दार्शनिक आधारों से संबंधित अध्ययन सामग्री उपलब्ध है।
    - **वेबसाइट लिंक:**http://www.egyankosh.ac.in/
- **एनसीईआरटी (NCERT) ई-पाठशाला:**राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद का यह पोर्टल शिक्षाशास्त्र और दार्शनिक दृष्टिकोण पर प्रामाणिक पुस्तकें प्रदान करता है।
    - **वेबसाइट लिंक:**https://epathshala.nic.in/
- **स्वयं (SWAYAM) पोर्टल:**भारत सरकार के शिक्षा मंत्रालय द्वारा संचालित इस राष्ट्रीय ऑनलाइन शिक्षा मंच पर 'Philosophical Foundations of Education' विषय पर ई-कंटेंट उपलब्ध है।
    - **वेबसाइट लिंक:**https://swayam.gov.in/
- **राष्ट्रीय डिजिटल पुस्तकालय (NDLI):**भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, खड़गपुर द्वारा प्रबंधित यह डिजिटल लाइब्रेरी शैक्षिक दर्शन और अनुसंधान सामग्री का विशाल संग्रह प्रदान करती है।

वेबसाइट लिंक:https://ndl.iitkgp.ac.in/

2.12 संदर्भ ग्रंथ (References)

- **पांडेय, रामशकल (2018):***शिक्षा के दार्शनिक एवं सामाजिक आधार*, अग्रवाल पब्लिकेशन्स, आगरा।
- **सक्सेना, एन.आर. स्वरूप (2017):***शिक्षा सिद्धांत एवं शिक्षाशास्त्र*, लायल बुक डिपो, मेरठ।
- **शर्मा, पी.एल. (2019):***शैक्षिक दर्शन की रूपरेखा*, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा।
- **गुप्ता, एस.पी. (2020):***भारतीय एवं पाश्चात्य शैक्षिक दर्शन*, शारदा पुस्तक भवन, प्रयागराज।
- **जॉन डीवी (अनू. 2012):***लोकतंत्र और शिक्षा (Democracy and Education)*, ग्रंथ शिल्पी, नई दिल्ली।

2.13 अभ्यास प्रश्न (Practice Questions)

नोट

2.13.1 लघु उत्तरीय प्रश्न

1. दर्शन शब्द की व्युत्पत्तिपरक उत्पत्ति और इसके शाब्दिक अर्थ की व्याख्या कीजिए।
2. ज्ञानमीमांसा से आप क्या समझते हैं? शैक्षिक संदर्भ में इसका क्या महत्व है?
3. दर्शनशास्त्र का शिक्षा के उद्देश्यों के निर्धारण पर क्या प्रभाव पड़ता है?
4. "शिक्षा और दर्शन एक ही सिक्के के दो पहलू हैं।" इस कथन का अर्थ स्पष्ट कीजिए।
5. शिक्षक के लिए शैक्षिक दर्शन के अध्ययन की आवश्यकता क्यों है?

2.13.2 दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. दर्शन की मुख्य शाखाओं (तत्वमीमांसा, ज्ञानमीमांसा, मूल्यमीमांसा) का वर्णन कीजिए और बताइए कि ये शिक्षा के विभिन्न पहलुओं को कैसे प्रभावित करती हैं।
2. शैक्षिक दर्शन के अर्थ, स्वरूप और इसके मुख्य कार्यक्षेत्र का सविस्तार विश्लेषण कीजिए।
3. पाठ्यक्रम निर्माण और शिक्षण विधियों के चयन में दार्शनिक दृष्टिकोण की भूमिका की सोदाहरण व्याख्या कीजिए।

2.13.3 अति-दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. शैक्षिक दर्शन की अवधारणा की विस्तृत व्याख्या करते हुए यह सिद्ध कीजिए कि बिना दार्शनिक आधार के शिक्षा की प्रक्रिया दिशाहीन और निष्प्राण हो जाती है।
2. शिक्षा और दर्शन के पारस्परिक संबंधों का समालोचनात्मक अध्ययन प्रस्तुत कीजिए। आधुनिक युग की शैक्षिक समस्याओं के समाधान में शैक्षिक दर्शन किस प्रकार उपयोगी सिद्ध हो सकता है?

नोट

इकाई 3
शैक्षिक समाजशास्त्र एवं समाज
इकाई की संरचना

इकाई संरचना (Structure)

3.1 प्रस्तावना (Introduction)
3.2 उद्देश्य
3.3 शैक्षिक समाजशास्त्र की अवधारणा (Concept of Educational Sociology)
3.3.1 अर्थ एवं परिभाषा) Meaning and Definition)
3.3.2 प्रकृति एवं क्षेत्र) Nature and Scope)
3.4 शिक्षा और समाज का अंतरसंबंध (Interrelationship between Education and Society)
3.4.1 समाज का शिक्षा पर प्रभाव (Impact of Society on Education)
3.4.2 शिक्षा का समाज पर प्रभाव (Impact of Education on Society)
3.5 सामाजिक परिवर्तन और शिक्षा सामाजिक परिवर्तन के कारक
3.5.2 परिवर्तन के एजेंट के रूप में शिक्षा) Education as an Agent of Change)
3.6 सामाजिक गतिशीलता और शिक्षा (Social Mobility and Education)
3.6.1 गतिशीलता के प्रकार) Types of Mobility)
3.6.2 गतिशीलता में शिक्षा की भूमिका (Role of Education in Mobility)
3.7 सामाजिकीकरण और शिक्षा (Socialization and Education)
3.7.1 सामाजिकीकरण की प्रक्रिया) Process of Socialization)
3.7.2 विद्यालय एवं परिवार की भूमिका) Role of School and Family)
3.8 सारांश (Summary)
3.9 शब्दावली (Glossary)
3.10 बोध प्रश्नों के उत्तर
3.11 सुझावित अध्ययन सामग्री – मुक्त शैक्षिक संसाधन
3.12 अभ्यास प्रश्न (Self-Assessment Questions)
3.13 संदर्भ एवं उपयोगी पुस्तकें (References and Further Readings)

नोट

3.1 प्रस्तावना) Introduction)

मानव एक सामाजिक प्राणी है और वह अलग-थलग रहकर अपना सर्वांगीण विकास नहीं कर सकता। जन्म से लेकर मृत्यु तक व्यक्ति जिस ताने-बाने में सांस लेता है, सीखता है और बढ़ता है, उसे हम 'समाज' कहते हैं। इसी प्रकार, शिक्षा केवल पुस्तकों तक सीमित रहने वाली कोई बंद प्रक्रिया नहीं है, बल्कि यह वह माध्यम है जो व्यक्ति को समाज में एक योग्य, जिम्मेदार और रचनात्मक घटक के रूप में ढालती है।

शिक्षा और समाज के इसी अनूठे, अटूट और गतिशील संबंध को समझने के लिए**'शैक्षिक समाजशास्त्र' (Educational Sociology)**का जन्म हुआ। शैक्षिक समाजशास्त्र मुख्य रूप से इस बात का अध्ययन करता है कि:

- समाज किस प्रकार शिक्षा के उद्देश्यों, नीतियों और पाठ्यक्रम को निर्धारित करता है।
- शिक्षा किस प्रकार समाज में फैली कुरीतियों को दूर कर नवीन विचारों, तकनीकों और सामाजिक परिवर्तन का संचार करती है।

इस इकाई में हम यह समझने का प्रयास करेंगे कि शिक्षा किस प्रकार केवल ज्ञान बांटने का कार्य नहीं करती, बल्कि वह बालक का सामाजिकीकरण करती है, सामाजिक गतिशीलता (Social Mobility) को बढ़ावा देती है और समाज को आधुनिकता की ओर ले जाने वाले एक मुख्य 'एजेंट' के रूप में में कार्य करती है।

3.2 उद्देश्य (Objectives)

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात आप:

शैक्षिक समाजशास्त्र के अर्थ, प्रकृति एवं क्षेत्र की व्याख्या कर सकेंगे।

- शिक्षा और समाज के बीच के द्विमार्गी (Two-way) संबंधों को स्पष्ट कर सकेंगे।
- समाज पर शिक्षा के प्रभाव तथा शिक्षा पर समाज के नियंत्रण का विश्लेषण कर सकेंगे।

3.3 शैक्षिक समाजशास्त्र की अवधारणा (Concept of Educational Sociology)

3.3.1 अर्थ एवं परिभाषा (Meaning and Definition)

शैक्षिक समाजशास्त्र (Educational Sociology) समाजशास्त्र की एक व्यावहारिक शाखा है, जो शिक्षा और समाज के संबंधों का अध्ययन करती है। यह इस बात का अध्ययन करता है कि व्यक्ति अपनी सामाजिक प्रक्रियाओं और संस्थाओं के माध्यम से

नोट

किस प्रकार सीखता है और विकसित होता है।**जॉर्ज पेन (George Payne)**को शैक्षिक समाजशास्त्र का जनक माना जाता है।

- **जॉर्ज पेन के अनुसार:** "शैक्षिक समाजशास्त्र वह विज्ञान है जो उन संस्थाओं, सामाजिक समूहों और सामाजिक प्रक्रियाओं का अध्ययन करता है जिनमें और जिनके द्वारा व्यक्ति अपने सामाजिक अनुभवों को प्राप्त करता है और संगठित करता है।"
- **ब्राउन (Brown) के अनुसार:** "शैक्षिक समाजशास्त्र व्यक्ति और उसके सांस्कृतिक वातावरण के बीच होने वाली अंतःक्रिया (Interaction) का अध्ययन है।"

3.3.2 प्रकृति एवं क्षेत्र (Nature and Scope)

- **प्रकृति:**इसकी प्रकृति वैज्ञानिक एवं व्यावहारिक है। यह समाजशास्त्रीय सिद्धांतों का उपयोग शिक्षा की समस्याओं के समाधान और पाठ्यक्रम के निर्माण में करती है।
- **क्षेत्र (Scope):**

समाज में शिक्षक एवं विद्यालय की भूमिका का अध्ययन।

1. सामाजिक नियंत्रण और सामाजिक परिवर्तन में शिक्षा के योगदान का विश्लेषण।
2. पाठ्यक्रम पर सामाजिक आवश्यकताओं और संस्कृति के प्रभाव का अध्ययन।
3. सामाजिक गतिशीलता एवं लोकतंत्र में शिक्षा के महत्व का आकलन।

3.4 शिक्षा और समाज का अंतरसंबंध (Interrelationship between Education and Society)

शिक्षा और समाज एक-दूसरे के पूरक हैं। समाज के बिना शिक्षा की कल्पना नहीं की जा सकती और शिक्षा के बिना समाज की प्रगति संभव नहीं है।

3.4.1 समाज का शिक्षा पर प्रभाव (Impact of Society on Education)

1. **सामाजिक संरचना (Social Structure):**समाज की बनावट (जाति, वर्ग, धर्म आदि) यह निर्धारित करती है कि शिक्षा का स्वरूप कैसा होगा।
2. **सांस्कृतिक मूल्य (Cultural Values):**समाज की संस्कृति और मूल्य ही शिक्षा के उद्देश्यों और पाठ्यक्रम का निर्माण करते हैं।
3. **आर्थिक स्थिति (Economic Condition):**समृद्ध समाज अधिक संसाधन और आधुनिक शैक्षिक ढांचा (Technology) प्रदान कर सकता है।

नोट

4. **राजनीतिक विचारधारा (Political Ideology):**सरकार की नीतियां (जैसे NEP 2020) यह तय करती हैं कि शिक्षा प्रणाली किस दिशा में जाएगी।

3.4.2 शिक्षा का समाज पर प्रभाव (Impact of Education on Society)

1. **सामाजिक परिवर्तन (Social Change):**शिक्षा अंधविश्वासों और कुरीतियों को समाप्त कर नए वैज्ञानिक दृष्टिकोण को जन्म देती है।
2. **संस्कृति का संरक्षण एवं हस्तांतरण:**शिक्षा समाज की सांस्कृतिक विरासत को सुरक्षित रखती है और उसे अगली पीढ़ी तक पहुँचाती है।
3. **सामाजिक गतिशीलता (Social Mobility):**शिक्षा व्यक्ति को बेहतर कौशल प्रदान कर उसकी सामाजिक-आर्थिक स्थिति को ऊपर उठाने में मदद करती है।
4. **नागरिक गुणों का विकास:**शिक्षा व्यक्ति को समाज के नियमों, अधिकारों और कर्तव्यों के प्रति जागरूक बनाकर एक जिम्मेदार नागरिक बनाती है।

3.5 सामाजिक परिवर्तन और शिक्षा (Social Change and Education)

सामाजिक परिवर्तन से तात्पर्य समाज के ढांचे, संस्थाओं, सांस्कृतिक प्रतिमानों और व्यवहार में आने वाले बदलावों से है। शिक्षा और सामाजिक परिवर्तन के बीच एक गहरा और दोतरफा संबंध होता है।

3.5.1 सामाजिक परिवर्तन के कारक (Factors of Social Change)

सामाजिक परिवर्तन किसी एक कारण से नहीं होता, बल्कि इसके पीछे कई मुख्य कारक कार्य करते हैं:

तकनीकी कारक (Technological Factors):सूचना प्रौद्योगिकी, इंटरनेट और औद्योगिकीकरण ने मानव जीवन और कार्यशैली को पूरी तरह से बदल दिया है।

- **सांस्कृतिक कारक (Cultural Factors):**नए विचारों, मूल्यों और जीवन-शैली का आगमन पुरानी रूढ़ियों को तोड़कर परिवर्तन लाता है।
- **आर्थिक कारक (Economic Factors):**आर्थिक विकास, उदारीकरण और रोजगार के साधनों में बदलाव समाज के स्तर को प्रभावित करता है।
- **जनसांख्यिकी कारक (Demographic Factors):**जनसंख्या वृद्धि, प्रवासन (Migration) और शहरीकरण सामाजिक संरचना में बदलाव लाते हैं।

3.5.2 परिवर्तन के एजेंट के रूप में शिक्षा (Education as an Agent of Change)

नोट

शिक्षा सामाजिक परिवर्तन का केवल एक परिणाम ही नहीं है, बल्कि यह परिवर्तन की सबसे सशक्त चालक (Agent) भी है:

1. **वैज्ञानिक दृष्टिकोण का विकास:**शिक्षा अंधविश्वास, बाल विवाह, लिंगभेद और सामाजिक कुरीतियों को समाप्त कर तर्कसंगत सोच को बढ़ावा देती है।
2. **चेतना और जागरूकता:**यह नागरिकों को उनके अधिकारों, कर्तव्यों और लोकतांत्रिक मूल्यों के प्रति जागरूक बनाती है।
3. **नवाचार (Innovation) को प्रोत्साहन:**शिक्षा अनुसंधान और नई तकनीकों को जन्म देती है, जिससे समाज आधुनिकता की ओर बढ़ता है।
4. **नेताओं और विचारकों का निर्माण:**शिक्षा ऐसे विचारकों और समाज सुधारकों को तैयार करती है जो समाज को नई दिशा देते हैं।

3.6 सामाजिक गतिशीलता और शिक्षा (Social Mobility and Education)

सामाजिक गतिशीलता का अर्थ है—किसी व्यक्ति, परिवार या समूह की सामाजिक-आर्थिक स्थिति या वर्ग में होने वाला बदलाव (जैसे निम्न वर्ग से उच्च-मध्यम वर्ग में पहुंचना)।

3.6.1 गतिशीलता के प्रकार (Types of Mobility)

गतिशीलता का प्रकार	विवरण	उदाहरण
क्षैतिज गतिशीलता (Horizontal Mobility)	सामाजिक स्तर में बदलाव के बिना केवल स्थान या भूमिका में बदलाव।	एक प्राथमिक शिक्षक का दूसरे स्कूल में प्राथमिक शिक्षक के रूप में स्थानांतरण।
लंबवत/उर्ध्वाधर गतिशीलता (Vertical Mobility)	सामाजिक या आर्थिक स्थिति में ऊपर या नीचे का बदलाव।	*आरोही (Upward):*क्लर्क का प्रोमोट होकर अधिकारी बनना। *अवरोही (Downward):*व्यापार में नुकसान से निम्न वर्ग में आना।
अन्तर-पीढ़ीगत (Inter-generational)	दो या दो से अधिक पीढ़ियों के बीच स्थिति का अंतर।	एक मजदूर का बेटा डॉक्टर या आईएएस अधिकारी बनता है।
अंतः-पीढ़ीगत (Intra-generational)	एक ही व्यक्ति के अपने जीवनकाल में स्थिति का बदलाव।	एक साधारण कर्मचारी का अपनी मेहनत से कंपनी का CEO बनना।

3.6.2 गतिशीलता में शिक्षा की भूमिका (Role of Education in Mobility)

नोट

शिक्षा को सामाजिक गतिशीलता की सीढ़ी माना जाता है:

1. **कौशल और ज्ञान का विकास:**उच्च शिक्षा और तकनीकी ज्ञान व्यक्ति को बेहतर रोजगार और उच्च आय प्राप्त करने योग्य बनाते हैं।
2. **अवसरों की समानता:**शिक्षा जन्म आधारित (जाति/वंश) सीमाओं को तोड़कर योग्यता (Merit) के आधार पर आगे बढ़ने का अवसर देती है।
3. **सामाजिक प्रतिष्ठा में वृद्धि:**गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्राप्त करने से व्यक्ति का सामाजिक सम्मान बढ़ता है।
4. **सशक्तिकरण:**वंचित और पिछड़े वर्गों के लिए शिक्षा सामाजिक-आर्थिक उत्थान का सबसे प्रभावी माध्यम है।

3.7 सामाजिकीकरण और शिक्षा (Socialization and Education)

सामाजिकीकरण (Socialization) वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा एक नवजात बच्चा या व्यक्ति समाज के मूल्यों, मापदंडों, संस्कृति, विश्वासों और व्यवहार पद्धतियों को सीखकर समाज का एक सक्रिय और जिम्मेदार सदस्य बनता है। यह प्रक्रिया जीवनपर्यंत (birth to death) चलती रहती है।

3.7.1 सामाजिकीकरण की प्रक्रिया (Process of Socialization)

सामाजिकीकरण केवल नियमों को रटना नहीं है, बल्कि समाज में रहने योग्य बनने की एक निरंतर प्रक्रिया है। इसे मुख्य रूप से दो चरणों में विभाजित किया जाता है:

1. **प्राथमिक सामाजिकीकरण (Primary Socialization):**
    - यह शैशवावस्था और प्रारंभिक बचपन में होता है।
    - इसका मुख्य केंद्र परिवार और माता-पिता होते हैं।
    - यहाँ बच्चा बुनियादी भाषा, भावनात्मक जुड़ाव, सही-गलत की प्राथमिक समझ और बुनियादी शिष्टाचार सीखता है।
2. **द्वितीयक सामाजिकीकरण (Secondary Socialization):**
    - यह बचपन के उत्तरार्ध से शुरू होकर किशोरावस्था और वयस्कता तक चलता है।
    - इसमें विद्यालय, सहपाठी (Peer groups), पड़ोस, मीडिया और कार्यस्थल जैसी संस्थाएं शामिल होती हैं।
    - यहाँ व्यक्ति जटिल सामाजिक भूमिकाएँ, नियम, व्यावसायिक कौशल और व्यापक सामाजिक मूल्य सीखता है।

नोट

3.7.2 विद्यालय एवं परिवार की भूमिका (Role of School and Family)

- **परिवार की भूमिका (Role of Family):**
    - **प्रथम पाठशांला:**परिवार बालक की प्रथम पाठशाला है जहाँ वह प्रेम, सहानुभूति, सहयोग और त्याग जैसे मूलभूत मानवीय गुण सीखता है।
    - **संस्कृति का संचार:**माता-पिता अपने आचरण और परंपराओं के माध्यम से बच्चे में अपनी सांस्कृतिक पहचान और नैतिक मूल्यों का सिंचन करते हैं।
    - **सुरक्षा और आत्मविश्वास:**परिवार से मिलने वाला भावनात्मक सहयोग बच्चे के आत्म-विश्वास और व्यक्तित्व के आधार को मजबूत करता है।
- **विद्यालय की भूमिका (Role of School):**
    - **औपचारिक सामाजिकीकरण:**विद्यालय बच्चे को औपचारिक अनुशासन, नियमों का पालन और समय की पाबंदी सिखाता है।
    - **विविधता से परिचय:**विद्यालय में विभिन्न सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक पृष्ठभूमि के बच्चे एक साथ आते हैं, जिससे उनमें सहिष्णुता, भ्रातृत्व और विविधता का सम्मान करने की भावना विकसित होती है।
    - **छिपा हुआ पाठ्यक्रम (Hidden Curriculum):**केवल पाठ्यपुस्तकें ही नहीं, बल्कि विद्यालय का माहौल, शिक्षक का व्यवहार और खेल का मैदान बच्चे में नेतृत्व, सहयोग और प्रतिस्पर्धात्मकता जैसे सामाजिक गुणों का विकास करते हैं।

1. 'शैक्षिक समाजशास्त्र' (Educational Sociology) के जनक किसे माना जाता है?

- (A) जॉर्ज पायने (George Payne)
- (B) एमिल दुर्खीम
- (C) अगस्त कॉम्टे
- (D) जॉन डीवी

2. शिक्षा का प्राथमिक सामाजिकीकरण कारक (Primary Agent of Socialization) कौन सा है?

- (A) मीडिया
- (B) परिवार
- (C) राज्य
- (D) राजनीतिक दल

3. सामाजिक गतिशीलता (Social Mobility) में शिक्षा की क्या भूमिका है?

- (A) यह सामाजिक परिवर्तन और प्रगति का माध्यम बनती है

नोट

- (B) यह समाज को स्थिर रखती है
- (C) यह वर्गों के बीच अंतर बढ़ाती है
- (D) इसका कोई प्रभाव नहीं पड़ता

4. विद्यालय को 'समाज का लघु रूप' (Microcosm of Society) किसने कहा?

- (A) जॉन डीवी
- (B) प्लेटो
- (C) रूसो
- (D) मोंटेसरी

5. शिक्षा और समाजशास्त्र का आपस में क्या संबंध है?

- (A) दोनों एक दूसरे से स्वतंत्र हैं
- (B) शिक्षा साध्य है और समाजशास्त्र उसका सैद्धांतिक आधार
- (C) शिक्षा केवल राजनीति से जुड़ी है
- (D) समाजशास्त्र का शिक्षा से कोई लेना-देना नहीं

3.8 सारांश (Summary)

- **शैक्षिक समाजशास्त्र का केंद्र बिंदु:**शैक्षिक समाजशास्त्र शिक्षा और समाज के बीच के अंतःसंबंधों का अध्ययन करता है। यह इस बात पर जोर देता है कि शिक्षा केवल व्यक्तिगत विकास का साधन नहीं, बल्कि एक सामाजिक प्रक्रिया है।
- **द्विमार्गी संबंध:**शिक्षा और समाज एक-दूसरे को गहराई से प्रभावित करते हैं। समाज शिक्षा के उद्देश्यों, नीतियों और पाठ्यक्रम को आकार देता है, वहीं शिक्षा समाज में कुरीतियों को दूर कर नवीन विचारों का संचार करती है।
- **परिवर्तन और गतिशीलता की वाहक:**शिक्षा सामाजिक परिवर्तन लाने और व्यक्तियों की सामाजिक-आर्थिक स्थिति में सुधार (सामाजिक गतिशीलता) लाने की सबसे प्रभावी कुंजी है।
- **सामाजिकीकरण का माध्यम:**परिवार और विद्यालय मिलकर बच्चे के सामाजिकीकरण में मुख्य भूमिका निभाते हैं, जिससे वह एक जिम्मेदार और उपयोगी नागरिक के रूप में समाज में अपना योगदान दे पाता है।

3.9 शब्दावली (Glossary)

- **शैक्षिक समाजशास्त्र (Educational Sociology):**समाजशास्त्र की वह शाखा जो शिक्षा और समाज के बीच संबंधों, सामाजिक प्रक्रियाओं और शिक्षण संस्थानों के सामाजिक प्रभावों का अध्ययन करती है।

नोट

- **सामाजिकीकरण (Socialization):**वह प्रक्रिया जिसके माध्यम से व्यक्ति समाज के मूल्यों, मापदंडों, संस्कृति और व्यवहार की शैलियों को सीखकर समाज का एक कार्यशील सदस्य बनता है।
- **सामाजिक गतिशीलता (Social Mobility):**किसी व्यक्ति, परिवार या समूह का समाज के एक सामाजिक-आर्थिक स्तर (Class/Status) से दूसरे स्तर में होने वाला बदलाव।
- **लंबवत गतिशीलता (Vertical Mobility):**व्यक्ति की सामाजिक या आर्थिक स्थिति में ऊपर (Upward) या नीचे (Downward) की ओर होने वाला बदलाव।
- **छिपता/अदृश्य पाठ्यक्रम (Hidden Curriculum):**विद्यालय के वे अघोषित या अप्रत्यक्ष मूल्य, व्यवहार और सामाजिक नियम जिन्हें विद्यार्थी बिना किसी औपचारिक पाठ्यपुस्तक के विद्यालय के वातावरण और आचरण से सीखते हैं।
- **सामाजिक परिवर्तन (Social Change):**समय के साथ समाज के ढांचे, सांस्कृतिक मूल्यों, संस्थाओं और सामाजिक संबंधों में आने वाला बदलाव।

3.10 बोध प्रश्नों के उत्तर

- **उत्तर: (A) जॉर्ज पायने (George Payne)**
- **उत्तर: (B) परिवार**
- **उत्तर: (A) यह सामाजिक परिवर्तन और प्रगति का माध्यम बनती है**
- **उत्तर: (A) जॉन डीवी**
- **उत्तर: (B) शिक्षा साध्य है और समाजशास्त्र उसका सैद्धांतिक आधार**

3.11 सुझावित अध्ययन सामग्री – मुक्त शैक्षिक संसाधन

1. eGyanKosh: Sociology of Education and Society (IGNOU)
2. OER Commons: Educational Sociology Concepts
3. UNESCO: Education and Social Transformation
4. OpenStax: Introduction to Sociology and Education
5. Swayam: Sociology of Education Course Material

3.12 सन्दर्भ ग्रन्थ

1. **पाण्डेय, रामशकल.** *शिक्षा के दार्शनिक एवं समाजशास्त्रीय आधार* (Philosophical and Sociological Foundations of Education). विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा।
2. **सक्सेना, एन.आर. स्वरूप .** *शिक्षा के दार्शनिक एवं समाजशास्त्रीय सिद्धांत* (Philosophical and Sociological Principles of Education). आरलाल . बुक डिपो, मेरठ।

नोट

3. **माथुर, एस.एस .** *शैक्षिक समाजशास्त्र* (A Sociological Approach to Indian Education). विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा।
4. **Bhattacharya, Srinibas.** *Sociological Foundations of Education*. Atlantic Publishers & Distributors, New Delhi.
5. **Ottaway, A. K. C.** *Education and Society: An Introduction to the Sociology of Education*. Routledge & Kegan Paul, London.

3.13 अभ्यास प्रश्न (Self-Assessment Questions)

भाग क: वस्तुनिष्ठ एवं लघु उत्तर प्रश्न (Short Answer Questions)

1. शैक्षिक समाजशास्त्र के जनक किसे माना जाता है?
2. प्राथमिक और द्वितीयक सामाजिकीकरण में क्या मुख्य अंतर है?
3. सामाजिक गतिशीलता के दो प्रमुख प्रकारों का नाम लिखिए।
4. "विद्यालय समाज का एक लघु रूप है" - इस कथन का क्या अर्थ है?

भाग ख: दीर्घ उत्तरीय प्रश्न (Long Answer Questions)

1. **शैक्षिक समाजशास्त्र की अवधारणा:**शैक्षिक समाजशास्त्र के अर्थ, प्रकृति और क्षेत्र की विस्तार से व्याख्या कीजिए।
2. **शिक्षा और समाज का द्विमार्गी संबंध:** "शिक्षा और समाज एक-दूसरे के पूरक हैं।" उपयुक्त उदाहरणों की सहायता से इस कथन का विश्लेषण कीजिए।
3. **सामाजिक परिवर्तन में शिक्षा की भूमिका:**परिवर्तन के एक एजेंट (Agent of Change) के रूप में शिक्षा की भूमिका पर प्रकाश डालिए।
4. **सामाजिक गतिशीलता और शिक्षा:**सामाजिक गतिशीलता के विभिन्न प्रकारों की व्याख्या कीजिए तथा यह स्पष्ट कीजिए कि शिक्षा गतिशीलता की सीढ़ी के रूप में कैसे कार्य करती है।
5. **सामाजिकीकरण की प्रक्रिया:**बालक के सामाजिकीकरण में परिवार और विद्यालय की भूमिका की तुलनात्मक विवेचना कीजिए।

नोट

इकाई 4
स्वतंत्रता, अनुशासन एवं मूल्य शिक्षा

इकाई की संरचना (Unit Structure)

4.1 प्रस्तावना
4.2 उद्देश्य
4.3 स्वतंत्रता की अवधारणा
4.3.1 स्वतंत्रता का अर्थ एवं परिभाषा
4.3.2 शिक्षा में स्वतंत्रता का महत्व
4.3.3 स्वतंत्रता और स्वेच्छाचारिता में अंतर
4.4 अनुशासन की अवधारणा एवं प्रकार
4.4.1 अनुशासन का अर्थ एवं बदलता स्वरूप
4.4.2 दमनकारी बनाम आत्म-अनुशासन
4.4.3 स्वतंत्रता और अनुशासन में अंतर्संबंधमूल्य शिक्षा)
4.5.1 मूल्य का अर्थ, प्रकृति एवं प्रकार)
4.5.2 शिक्षा में मूल्यों की आवश्यकता और महत्व
4.5.3 मूल्य संवर्धन हेतु शिक्षण विधियाँ एवं नीतियाँ
4.6 विद्यालय एवं शिक्षक की भूमिका
4.6.1 जनतांत्रिक वातावरण का निर्माण
4.6.2 शिक्षक एक आदर्श रोल मॉडल के रूप में
4.7 सारांश (Summary)
4.8 मुख्य शब्द (Key Terms)
4.9 बोध प्रश्नों के उत्तर
4.10 सुझावित अध्ययन सामग्री – मुक्त शैक्षिक संसाधन
4.11 संदर्भ एवं विस्तृत अध्ययन हेतु पुस्तकें
4.12 अभ्यास प्रश्न (Self-Assessment Questions)

4.1 प्रस्तावना (Introduction)

शिक्षा केवल सूचनाओं का आदान-प्रदान या औपचारिक ज्ञान का हस्तांतरण मात्र नहीं है, बल्कि यह मानव व्यक्तित्व के सर्वांगीण विकास की एक सतत प्रक्रिया है। इस प्रक्रिया के केंद्र में मानव चेतना, उसका व्यवहार और उसके नैतिक मूल्य निहित होते हैं। शैक्षिक दर्शन और समाजशास्त्र में 'स्वतंत्रता', 'अनुशासन' और 'मूल्य' तीन ऐसे स्तंभ हैं जो शिक्षा के वास्तविक स्वरूप और दिशा को निर्धारित करते हैं।

इतिहास के विभिन्न कालखंडों में शिक्षा के स्वरूप में व्यापक परिवर्तन आए हैं। प्राचीन काल में जहाँ शिक्षक-केंद्रित और अत्यंत कठोर अनुशासन पर आधारित शिक्षा प्रणाली का वर्चस्व था, वहीं आधुनिक युग में बाल-केंद्रित (Child-Centric) और प्रगतिशील शिक्षा

नोट

की अवधारणा ने जन्म लिया है। इस आधुनिक दृष्टिकोण ने बालक की स्वायत्तता, उसकी स्वाभाविक रुचियों, अभिव्यक्तियों और रचनात्मकता को प्राथमिकता दी है। इस बदलाव के मूल में 'स्वतंत्रता' का विचार ही सबसे महत्वपूर्ण रहा है।

हालाँकि, जब हम शिक्षा में स्वतंत्रता की बात करते हैं, तो अक्सर अनुशासन और स्वतंत्रता के संबंध को लेकर भ्रम की स्थिति उत्पन्न हो जाती है। कुछ विचारक स्वतंत्रता को नियमों के अभाव के रूप में देखते हैं, जो अंततः अराजकता और स्वेच्छाचारिता का रूप ले लेती है। इसके विपरीत, वास्तविक स्वतंत्रता वह वातावरण प्रदान करती है जहाँ बालक बिना किसी बाह्य भय या दबाव के अपनी अंतरनिहित क्षमताओं का विकास कर सके। अनुशासन और स्वतंत्रता एक-दूसरे के विरोधी न होकर पूरक हैं; सच्चा अनुशासन स्वतंत्रता का हनन नहीं करता, बल्कि उसे एक सार्थक दिशा प्रदान करता है।

इसके साथ ही, वर्तमान समय में भौतिकवादी दृष्टिकोण के विस्तार के कारण सामाजिक और नैतिक मूल्यों का ह्रास देखने को मिल रहा है। ऐसे वातावरण में स्वतंत्रता और अनुशासन तब तक अर्थहीन रहते हैं जब तक उन्हें 'मूल्य शिक्षा' का सुदृढ़ आधार प्राप्त न हो। मूल्य ही वह दिशा-निर्देशक हैं जो यह तय करते हैं कि स्वतंत्रता का उपयोग व्यक्तिगत एवं सामाजिक कल्याण के लिए किस प्रकार किया जाए। प्रस्तुत इकाई में स्वतंत्रता, अनुशासन तथा मूल्य शिक्षा के इन्हीं अंतरसंबंधों, अवधारणाओं और व्यावहारिक अनुप्रयोगों का गहन अध्ययन किया जाएगा।

4.2 उद्देश्य (Objectives)

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात आप:

- स्वतंत्रता की अवधारणा, इसके दार्शनिक अर्थ और शिक्षा के क्षेत्र में इसकी प्रासंगिकता को समझ सकेंगे।
- शिक्षा में स्वतंत्रता के महत्व की व्याख्या कर सकेंगे तथा यह समझ सकेंगे कि बाल-केंद्रित शिक्षा में स्वतंत्रता किस प्रकार अधिगम को बढ़ावा देती है।
- स्वतंत्रता और स्वेच्छाचारिता (Licentiousness) के मध्य के सूक्ष्म एवं मौलिक अंतर को स्पष्ट कर सकेंगे।

शिक्षा में स्वतंत्रता की सीमाओं तथा समाज एवं व्यक्ति के संतुलित विकास में इसके योगदान का विश्लेषण कर सकेंगे।

4.3 स्वतंत्रता की अवधारणा (Concept of Freedom)

4.3.1 स्वतंत्रता का अर्थ एवं परिभाषा (Meaning and Definition of Freedom)

'स्वतंत्रता' शब्द अंग्रेजी के 'Freedom' या 'Liberty' का हिंदी रूपांतरण है। 'Liberty' शब्द की उत्पत्ति लैटिन भाषा के 'Liber' शब्द से हुई है, जिसका शाब्दिक अर्थ होता है—

नोट

'बंधनों का अभाव' (Absence of Restraints)। सामान्य व्यावहारिक भाषा में स्वतंत्रता का अर्थ किसी भी प्रकार के बाह्य नियंत्रण, दबाव, रुकावट या दमन से मुक्त होकर अपनी इच्छानुसार कार्य करने की स्थिति से लिया जाता है।

किंतु, दार्शनिक और शैक्षिक दृष्टि से स्वतंत्रता का अर्थ केवल 'बंधनों का अभाव' नहीं है। यह एक सकारात्मक अवधारणा (Positive Concept) है, जिसका अर्थ है व्यक्ति को अपने सर्वांगीण विकास के लिए उचित अवसर और अनुकूल वातावरण प्राप्त होना। स्वतंत्रता का वास्तविक तात्पर्य स्वायत्तता (Autonomy), स्व-निर्देशन (Self-Direction) और उत्तरदायित्व की भावना से है।

प्रमुख विचारकों के अनुसार स्वतंत्रता की परिभाषाएँ:

- **रूसो (Jean-Jacques Rousseau):**प्राकृतिक शिक्षा के जनक रूसो के अनुसार, *"मनुष्य स्वतंत्र पैदा होता है, लेकिन वह सर्वत्र जंजीरों में जकड़ा हुआ है।"*उनका मानना था कि बालक को प्रकृति के सानिध्य में स्वतंत्र रूप से विकसित होने देना चाहिए और उस पर समाज के कृत्रिम नियम और बंधन नहीं थोपे जाने चाहिए।
- **जॉन डीवी (John Dewey):**प्रगतिशील शिक्षा के समर्थक डीवी के अनुसार, *"स्वतंत्रता का अर्थ केवल शारीरिक हलचल की छूट नहीं है, बल्कि यह विचार करने, योजना बनाने और बिना किसी बाह्य भय के अपने निर्णयों को क्रियान्वित करने की मानसिक स्वतंत्रता है।"*
- **महात्मा गांधी:**गांधीजी के अनुसार स्वतंत्रता केवल बाह्य नियंत्रण से मुक्ति नहीं है, बल्कि यह 'स्वराज' है—अर्थात अपने मन और इंद्रियों पर स्वयं का नियंत्रण होना। सच्ची स्वतंत्रता आत्मानुशासन से उत्पन्न होती है।
- **टी. एच. ग्रीन (T. H. Green):**राजनीतिशास्त्री और दार्शनिक ग्रीन के अनुसार, *"स्वतंत्रता उन सकारात्मक कार्यों को करने या उन स्थितियों का उपभोग करने की शक्ति है जो करने या उपभोग करने योग्य हैं।"*

इस प्रकार, शैक्षिक संदर्भ में स्वतंत्रता का अर्थ बालक की मानसिक, बौद्धिक, भावनात्मक और शारीरिक क्षमताओं के स्वाभाविक और बिना किसी अनुचित दबाव के विकास से है।

4.3.2 शिक्षा में स्वतंत्रता का महत्व (Importance of Freedom in Education)

आधुनिक शैक्षिक मनोविज्ञान और दर्शन में बालक की स्वतंत्रता को अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान दिया गया है। शिक्षा की प्रक्रिया में स्वतंत्रता निम्नलिखित कारणों से आवश्यक और महत्वपूर्ण है:

1. **स्वाभाविक और प्राकृतिक विकास (Natural Development):**

प्रत्येक बालक जन्मजात प्रतिभाओं और विशिष्ट योग्यताओं के साथ पैदा होता है। कठोर नियमों, डर और दमन के वातावरण में बालक की मौलिकता दब जाती है। स्वतंत्रता का

नोट

वातावरण बालक को अपनी प्राकृतिक गति और रुचि के अनुसार सीखने का अवसर प्रदान करता है।

2. **रचनात्मकता और मौलिक चिंतन का विकास (Development of Creativity and Original Thinking):**

रचनात्मकता (Creativity) के लिए मानसिक स्वतंत्रता प्राथमिक शर्त है। जब बालक को नए विचार व्यक्त करने, प्रयोग करने और प्रश्न पूछने की स्वतंत्रता मिलती है, तो उसकी कल्पनाशीलता और मौलिक चिंतन का विकास होता है। डर या दबाव का माहौल रचनात्मक सोच को अवरुद्ध कर देता है।

3. **आत्म-विश्वास और स्वावलंबन (Self-Confidence and Self-Reliance):**

स्वतंत्र वातावरण में कार्य करने से बालक में अपने निर्णयों के प्रति उत्तरदायित्व की भावना आती है। जब वह स्वयं प्रयास करता है, गलतियाँ करता है और उनसे सीखता है, तो उसमें आत्म-विश्वास का निर्माण होता है। यह स्वावलंबन उसे जीवन की भावी चुनौतियों का सामना करने में सक्षम बनाता है।

4. **लोकतांत्रिक मूल्यों का बीजारोपण (Inculcation of Democratic Values):**

एक लोकतांत्रिक समाज के निर्माण के लिए बालकों में स्वतंत्रता, समानता और बंधुत्व की भावना का विकास आवश्यक है। कक्षा और विद्यालय में स्वतंत्रता का अनुभव करके ही बालक दूसरों के विचारों का सम्मान करना, अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का सही उपयोग करना और लोकतांत्रिक जीवन शैली को अपनाना सीखता है।

5. **सकारात्मक अधिगम वातावरण (Positive Learning Environment):**

आनंददायक और तनावमुक्त वातावरण में अधिगम (Learning) अधिक प्रभावी और स्थायी होता है। जब शिक्षार्थी भयमुक्त होकर शिक्षक से संवाद स्थापित करता है, तो कक्षा का वातावरण बोझिल न होकर जीवंत और सहभागी बनता है।

4.3.3 स्वतंत्रता और स्वेच्छाचारिता में अंतर (Difference between Freedom and Licentiousness)

शिक्षा के क्षेत्र में 'स्वतंत्रता' और 'स्वेच्छाचारिता' (Licentiousness or Whim) के बीच स्पष्ट रेखा खींचना अत्यंत आवश्यक है। अक्सर स्वतंत्रता का गलत अर्थ निकालकर इसे पूर्ण अनियंत्रित व्यवहार मान लिया जाता है, जो कि स्वेच्छाचारिता है।

क्र.सं.	आधार	स्वतंत्रता (Freedom)	स्वेच्छाचारिता (Licentiousness / UrestrainedBehavior)

नोट

1.	**प्रकृति**	यह एक सकारात्मक (Positive) अवधारणा है, जिसमें विवेक और उत्तरदायित्व शामिल होता है।	यह एक नकारात्मक (Negative) अवधारणा है, जो विवेकहीनता और स्वार्थ पर आधारित होती है।
2.	**नियम एवं सीमाएँ**	यह स्व-नियंत्रण (Self-Control) और सामाजिक/नैतिक सीमाओं के भीतर कार्य करती है।	यह सभी नियमों, सीमाओं और दूसरों के अधिकारों का पूरी तरह से उल्लंघन करती है।
3.	**दूसरों के अधिकारों का ध्यान**	इसमें व्यक्ति अपनी स्वतंत्रता का उपभोग करते हुए दूसरों की स्वतंत्रता और अधिकारों का सम्मान करता है।	इसमें केवल अपनी इच्छाओं की पूर्ति पर बल दिया जाता है, भले ही इससे दूसरों को नुकसान पहुँचे।
4.	**मूल आधार**	इसका आधार विवेक, नैतिक मूल्य, न्याय और आत्म-अनुशासन है।	इसका आधार क्षणिक आवेग, अनियंत्रित इच्छाएँ, उदंडता और अराजकता है।
5.	**शैक्षिक परिणाम**	यह बालक के व्यक्तित्व का संतुलित और सर्वांगीण विकास करती है।	यह व्यक्तित्व में उदंडता, अनुशासनहीनता और असामाजिक व्यवहार को जन्म देती है।

निष्कर्ष:

शिक्षा में स्वतंत्रता का तात्पर्य बालक को मनमानी करने की छूट देना (स्वेच्छाचारिता) नहीं है, बल्कि उसे ऐसी परिस्थितियाँ प्रदान करना है जहाँ वह अपने विवेक का उपयोग करते हुए सही और गलत का चुनाव कर सके। सच्ची स्वतंत्रता सीमाओं के पूर्ण अभाव में नहीं, बल्कि उचित और तर्कसंगत सीमाओं को सहर्ष स्वीकार करने में निहित है। जैसा कि जॉन लॉक ने कहा था, *"जहाँ कानून (नियम) नहीं है, वहाँ स्वतंत्रता नहीं हो सकती।"*

4.4 अनुशासन की अवधारणा एवं प्रकार (Concept and Types of Discipline)

4.4.1 अनुशासन का अर्थ एवं बदलता स्वरूप (Meaning and Changing Dynamics of Discipline)

'अनुशासन' शब्द अंग्रेजी के 'Discipline' शब्द का हिंदी पर्याय है। 'Discipline' शब्द की उत्पत्ति लैटिन भाषा के 'Discipulus' (जिसका अर्थ 'शिष्य' या 'अध्ययनकर्ता' होता है) और 'Disciplina' (जिसका अर्थ 'शिक्षण', 'ज्ञान की शाखा' या 'प्रशिक्षण' होता है) से हुई है। व्युत्पत्तिपरक अर्थ में अनुशासन का तात्पर्य शिष्य द्वारा गुरु के निर्देशों का पालन करने और स्वयं को नियमों के अधीन ढालने की प्रक्रिया से है।

नोट

ऐतिहासिक और शैक्षिक दृष्टि से अनुशासन की अवधारणा में समय के साथ क्रांतिकारी बदलाव आए हैं:

1. प्राचीन एवं मध्यकालीन दृष्टिकोण (पारंपरिक या दमनकारी दृष्टिकोण):

पारंपरिक काल में अनुशासन का सीधा संबंध बाह्य नियंत्रण, कठोर नियमों के पालन और शिक्षक के प्रति पूर्ण समर्पण से था। इस व्यवस्था में 'दंड' (Punishment) को अनुशासन बनाए रखने का मुख्य साधन माना जाता था। "छड़ी छोड़ो और बालक को बिगाड़ो" (Spare the rod and spoil the child) का सिद्धांत प्रचलित था। बालकों को नियमों का अंधानुकरण करने के लिए बाध्य किया जाता था, जिससे उनके मन में भय, कुंठा और दमन की भावना पनपती थी।

2. आधुनिक दृष्टिकोण (प्रगतिशील एवं वैज्ञानिक दृष्टिकोण):

20वीं शताब्दी में मनोविज्ञान और शैक्षिक दर्शन के विकास के साथ अनुशासन की अवधारणा में अमूल्य परिवर्तन आया। आधुनिक शिक्षाशास्त्र अनुशासन को बाह्य भय या दबाव से मुक्त मानकर इसे एक 'आंतरिक प्रेरणा' और 'सकारात्मक अभिवृत्ति' के रूप में देखता है। आज अनुशासन का अर्थ बालक को आज्ञाकारी सैनिक बनाना नहीं, बल्कि उसे एक स्वतंत्र, उत्तरदायी और स्व-निर्देशित (Self-directed) नागरिक बनाना है। यह दृष्टिकोण दमन के स्थान पर स्वतंत्रता, सहभागिता और स्व-नियंत्रण पर बल देता है।

4.4.2 दमनकारी बनाम आत्म-अनुशासन (Repressive vs. Self-Discipline)

शिक्षा के दर्शन में अनुशासन को मुख्य रूप से दो विरोधी रूपों के माध्यम से समझा जा सकता है:

1. दमनकारी या बाह्य अनुशासन (Repressive or External Discipline):

यह अनुशासन की पारंपरिक और नकारात्मक प्रणाली है। इसमें बालक पर बाह्य शक्तियों जैसे—शिक्षक, विद्यालय प्रशासन या शारीरिक दंड के भय द्वारा नियमों का पालन कराया जाता है।

- विशेषताएँ:
    - यह भय, भयभीत करने की प्रवृत्तियों और शारीरिक/मानसिक दंड पर आधारित होता है।
    - इसमें बालक की स्वतंत्रता और स्वायत्तता का पूरी तरह हनन होता है।
    - इसका प्रभाव क्षणिक होता है; जैसे ही बाह्य भय या नियंत्रण हटता है, बालक पुनः अनुशासनहीन हो जाता है।
    - यह बालक के व्यक्तित्व में विद्रोह, कुंठा, हीनभावना और छद्म आचरण को जन्म देता है।

2. आत्म-अनुशासन या मुक्तात्मक अनुशासन (Self-Discipline or Free Discipline):

नोट

यह आधुनिक बाल-केंद्रित शिक्षा की आत्मा है। जॉन डीवी और मारिया मोंटेसरी जैसे विचारकों ने इसका पुरजोर समर्थन किया है। इसमें बालक बाह्य दबाव के कारण नहीं, बल्कि अपनी आंतरिक चेतना, समझ और सामाजिक उत्तरदायित्व के कारण नियमों का पालन करता है।

- विशेषताएँ:
    - यह स्व-नियंत्रण, आत्म-प्रेरणा और विवेक पर आधारित होता है।
    - इसमें बालक अपनी इच्छा और समझ से अनुशासित व्यवहार चुनता है।
    - यह स्थायी होता है और जीवनभर व्यक्ति के आचरण को मार्गदर्शित करता है।
    - यह बालक में आत्म-सम्मान, उत्तरदायित्व और लोकतांत्रिक मूल्यों का विकास करता है।

4.4.3 स्वतंत्रता और अनुशासन में अंतर्संबंध (Interrelationship between Freedom and Discipline)

शिक्षाशास्त्र में स्वतंत्रता और अनुशासन के संबंध को लेकर प्रायः दो भ्रांतियाँ पाई जाती हैं—पहला यह कि स्वतंत्रता और अनुशासन एक-दूसरे के विरोधी हैं, और दूसरा यह कि अनुशासन की उपस्थिति में स्वतंत्रता असंभव है। किंतु, वास्तविक शैक्षिक दर्शन मेंस्वतंत्रता और अनुशासन एक ही सिक्के के दो पहलू हैं।

1. पूरकता का संबंध (Relationship of Complementarity):

सच्ची स्वतंत्रता बिना अनुशासन के संभव नहीं है, और सच्चा अनुशासन बिना स्वतंत्रता के प्राप्त नहीं किया जा सकता। यदि स्वतंत्रता को बिना किसी अनुशासन या सीमा के छोड़ दिया जाए, तो वह स्वेच्छाचारिता और अराजकता में बदल जाती है। ठीक इसी प्रकार, यदि अनुशासन में स्वतंत्रता का अभाव हो, तो वह दमन और गुलामी बन जाता है।

2. आत्म-अनुशासन के लिए स्वतंत्रता की आवश्यकता:

आत्म-अनुशासन का विकास केवल तभी हो सकता है जब बालक को निर्णय लेने और विकल्प चुनने की स्वतंत्रता प्राप्त हो। यदि बालक पर हर समय बाह्य नियंत्रण रहेगा, तो उसे कभी भी अपने विवेक और स्व-नियंत्रण का उपयोग करने का अवसर नहीं मिलेगा।

3. अनुशासन द्वारा स्वतंत्रता की रक्षा:

अनुशासन स्वतंत्रता को नष्ट नहीं करता, बल्कि उसकी रक्षा करता है। समाज और विद्यालय में नियम और अनुशासन इसीलिए बनाए जाते हैं ताकि प्रत्येक व्यक्ति अपनी स्वतंत्रता का उपभोग सुरक्षित रूप से कर सके, बिना दूसरों के अधिकारों का हनन किए।

4.5 मूल्य शिक्षा (Value Education)

नोट

4.5.1 मूल्य का अर्थ, प्रकृति एवं प्रकार (Meaning, Nature, and Types of Values)

मूल्य का अर्थ (Meaning of Values):

'मूल्य' शब्द अंग्रेजी भाषा के 'Value' का हिंदी रूपांतरण है, जिसकी उत्पत्ति लैटिन शब्द 'Valere' से हुई है। इसका शाब्दिक अर्थ है—'योग्य होना', 'शक्तिशाली होना' या 'उपयोगी होना'। सामान्य शब्दों में, मूल्य वे मानक, आदर्श, विश्वास या मानदंड हैं जो व्यक्ति के आचरण, विचारों, निर्णयों और व्यवहार को दिशा प्रदान करते हैं।

शैक्षिक संदर्भ में मूल्य का तात्पर्य उन वांछनीय विचारों और व्यवहारों से है जिन्हें समाज व्यक्ति के व्यक्तित्व और सामाजिक कल्याण के लिए श्रेष्ठ मानता है। अर्बन (Urban) के अनुसार, *"मूल्य वह है जो मानव इच्छाओं की तृप्ति करे।"*वहीं, सी. वी. गुड (C.V. Good) के अनुसार, *"मूल्य वे आदर्श या लक्ष्य हैं जिनके आधार पर मानव अपने व्यवहार का मूल्यांकन करता है।"*

मूल्य की प्रकृति (Nature of Values):

- **गत्यात्मक एवं परिवर्तनशील:**मूल्य जड़ नहीं होते, बल्कि काल, परिस्थिति और सामाजिक आवश्यकताओं के अनुसार बदलते रहते हैं।
- **आंतरिक एवं बाह्य दोनों:**मूल्य व्यक्ति की चेतना और समझ का आंतरिक अंग होते हैं, जो उसके बाह्य व्यवहार के माध्यम से प्रकट होते हैं।
- **अधिगम्य (Learned Behavior):**मूल्य जन्मजात होने के साथ-साथ वातावरण, संस्कृति और शिक्षा के माध्यम से अर्जित और सीखे जाते हैं।
- **व्यक्तिगत एवं सामाजिक द्वैत:**ये व्यक्ति के चरित्र का निर्माण करते हैं और साथही समाज को एकजुट रखने वाले गोंद (Glue) का कार्य करते हैं।

मूल्यों के प्रकार (Types of Values):

भारतीय और पाश्चात्य दर्शन के आधार पर मूल्यों को निम्नलिखित मुख्य श्रेणियों में विभाजित किया गया है:

1. **नैतिक एवं आचरण संबंधी मूल्य (Moral and Ethical Values):**सत्य, अहिंसा, ईमानदारी, कर्तव्यनिष्ठा और न्याय।
2. **सामाजिक मूल्य (Social Values):**सहकारिता, बंधुत्व, सहानुभूति, करुणा और सेवा भाव।
3. **लोकतांत्रिक एवं संवैधानिक मूल्य (Democratic and Constitutional Values):**स्वतंत्रता, समानता, धर्मनिरपेक्षता, न्याय और नागरिक अधिकारों व कर्तव्यों का सम्मान।

नोट

4. **सांस्कृतिक एवं आध्यात्मिक मूल्य (Cultural and Spiritual Values):**सहिष्णुता, अपनी परंपराओं का सम्मान, आत्म-नियंत्रण और शांति।
5. **बौद्धिक एवं सौन्दर्यात्मक मूल्य (Intellectual and Aesthetic Values):**जिज्ञासा, वैज्ञानिक दृष्टिकोण, रचनात्मकता और सौंदर्यबोध।

4.5.2 शिक्षा में मूल्यों की आवश्यकता और महत्व (Need and Importance of Values in Education)

आधुनिक युग में जहाँ एक ओर तकनीकी और वैज्ञानिक प्रगति ने मानव जीवन को अत्यंत भौतिकवादी और सुविधाजनक बना दिया है, वहीं दूसरी ओर नैतिक पतन, स्वार्थपरता, सामाजिक तनाव और हिंसा में भी वृद्धि हुई है। ऐसी स्थिति में मूल्य शिक्षा की आवश्यकता निम्नलिखित कारणों से अत्यंत प्रासंगिक हो जाती है:

1. **चरित्र निर्माण एवं सर्वांगीण विकास (Character Building and Holistic Development):**

केवल बौद्धिक या व्यावसायिक योग्यता व्यक्ति को सफल बना सकती है, किंतु एक अच्छा इंसान बनाने के लिए मूल्य शिक्षा आवश्यक है। स्वामी विवेकानंद के अनुसार, *"शिक्षा वह है जिससे चरित्र का निर्माण होता है, मन का बल बढ़ता है, और बुद्धि का विकास होता है।"*

2. **मानसिक शांति और आंतरिक संतुलन (Mental Peace and Inner Balance):**

वर्तमान प्रतिस्पर्धात्मक वातावरण में युवा तनाव, अवसाद और भटकाव का शिकार हो रहे हैं। मूल्य शिक्षा बालकों को आत्म-नियंत्रण, संतोष, और धैर्य सिखाती है, जिससे वे जीवन की विकट परिस्थितियों में भी अपना मानसिक संतुलन बनाए रखते हैं।

3. **सामाजिक समरसता एवं राष्ट्रीय एकीकरण (Social Harmony and National Integration):**

भारत जैसे बहुसांस्कृतिक और विविध समाज में सहिष्णुता, बंधुत्व और परस्पर सम्मान के मूल्यों की भारी आवश्यकता है। मूल्य शिक्षा बालकों को संकीर्णताओं से ऊपर उठाकर संपूर्ण समाज और राष्ट्र हित में सोचने के लिए प्रेरित करती है।

4. **तकनीक एवं ज्ञान का सही उपयोग (Ethical Use of Technology and Knowledge):**

ज्ञान और तकनीक स्वयं में तटस्थ होते हैं। उनका उपयोग जन-कल्याण के लिए होगा या विनाश के लिए, यह उपयोग करने वाले व्यक्ति के मूल्यों पर निर्भर करता है। मूल्य शिक्षा यह सुनिश्चित करती है कि ज्ञान का उपयोग मानव हित में हो।

नोट

5. **वैश्वीकरण के दौर में सांस्कृतिक पहचान की रक्षा (Preservation of Cultural Identity):**

वैश्वीकरण के प्रभाव से आ रहे अंधानुकरण और सांस्कृतिक ह्रास के बीच मूल्य शिक्षा युवाओं को अपनी जड़ों, परंपराओं और नैतिक चेतना से जोड़े रखती है।

4.5.3 मूल्य संवर्धन हेतु शिक्षण विधियाँ एवं नीतियाँ (Pedagogical Methods and Strategies for Value Inculcation)

मूल्यों को केवल पुस्तकों के माध्यम से या रटाकर नहीं सिखाया जा सकता। मूल्य उपदेश देने से नहीं, बल्कि 'अनुभव करने' और 'अनुकरण करने' से सीखे जाते हैं। इसके लिए शिक्षण की प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष दोनों विधियों का उपयोग किया जाना चाहिए:

1. प्रत्यक्ष शिक्षण विधियाँ (Direct Pedagogical Methods):

- **कहानी कथन एवं साहित्य (Storytelling and Literature):**महापुरुषों के जीवन प्रसंगों, पौराणिक एवं नैतिक कहानियों के माध्यम से बालकों के हृदय में दया, करुणा, साहस और सत्य जैसे मूल्यों का बीजारोपण किया जा सकता है।
- **भूमिका निर्वहन (Role Playing):**विभिन्न सामाजिक या नैतिक दुविधाओं पर बालकों से अभिनय (Drama/Skit) कराना। इससे बालकों में दूसरों के दृष्टिकोण को समझने और सहानुभूति (Empathy) का विकास होता है।
- **द्वंद्व एवं विचार-विमर्श सत्र (Moral Dilemma Discussions):**कोहलबर्ग के नैतिक विकास सिद्धांत के अनुसार बालकों के समक्ष ऐसी स्थितियाँ रखी जानी चाहिए जहाँ उन्हें नैतिक निर्णय लेना पड़े। इस पर कक्षा में खुली चर्चा कराने से बालकों के नैतिक तर्क (Moral Reasoning) का विकास होता है।

2. अप्रत्यक्ष शिक्षण विधियाँ एवं नीतियाँ (Indirect Methods and Strategies):

- **एकीकृत पाठ्यक्रम दृष्टिकोण (Integrated Curriculum Approach):**मूल्यों के लिए अलग से विषय चलाने के बजाय इन्हें गणित, विज्ञान, सामाजिक विज्ञान और भाषा शिक्षण के साथ जोड़कर पढ़ाया जाना चाहिए (जैसे- पर्यावरण शिक्षा के माध्यम से प्रकृति प्रेम सिखाना)।
- **सह-पाठ्यचर्या गतिविधियाँ (Co-curricular Activities):**
    - **खेलकूद:**टीम भावना, अनुशासन और खेल भावना (Sportsmanship) का विकास।
    - **एन.सी.सी. / एन.एस.एस. / स्काउटिंग:**सेवा भाव, राष्ट्रीयता, नागरिक कर्तव्य और श्रम का सम्मान।
    - **सामुदायिक सेवा एवं भ्रमण (Community Service):**अनाथालयों, वृद्ध आश्रमों या ग्रामीण क्षेत्रों का दौरा कराकर बालकों में संवेदनशीलता और सामाजिक उत्तरदायित्व जगाना।

नोट

- **विद्यालय का छिपा हुआ पाठ्यक्रम (Hidden Curriculum):**विद्यालय का अनुशासन, समयबद्धता, स्वच्छता, प्रार्थना सभाएँ, शिक्षकों का आपसी व्यवहार और विद्यालय परिसर की शांति बालकों के अवचेतन मन पर मूल्यों का गहरा प्रभाव डालती है।

4.6 विद्यालय एवं शिक्षक की भूमिका (Role of School and Teacher)

स्वतंत्रता, अनुशासन और मूल्य शिक्षा के उद्देश्यों को व्यावहारिक रूप से सिद्ध करने में विद्यालय के वातावरण और शिक्षक के आचरण की केंद्रीय भूमिका होती है।

4.6.1 जनतांत्रिक वातावरण का निर्माण (Creating a Democratic Environment)

विद्यालय को समाज का एक लघु रूप (Microcosm of Society) माना जाता है। यदि विद्यालय का वातावरण तानाशाहीपूर्ण होगा, तो बालकों में स्वतंत्रता और स्व-अनुशासन का विकास नहीं हो सकता। इसके लिए निम्नलिखित प्रयास आवश्यक हैं:

- **सहभागी प्रबंधन (Participatory Management):**विद्यालय की गतिविधियों, खेलकूद, सांस्कृतिक कार्यक्रमों और नियमों के निर्धारण में छात्रों की भागीदारी सुनिश्चित की जानी चाहिए। छात्र संसद (Student Council) जैसी संस्थाएँ बालकों में उत्तरदायित्व और लोकतांत्रिक नेतृत्व के गुण विकसित करती हैं।
- **भयमुक्त वातावरण (Fear-free Environment):**कक्षा और परिसर में ऐसा माहौल होना चाहिए जहाँ बालक बिना किसी डर के अपने प्रश्न पूछ सकें, अपनी राय व्यक्त कर सकें और अपनी मौलिक सोच को सामने रख सकें।
- **समानता और न्याय की संस्कृति (Culture of Equality and Justice):**विद्यालय में जाति, धर्म, लिंग या सामाजिक स्तर के आधार पर कोई भेदभाव नहीं होना चाहिए। सभी शिक्षार्थियों को समान अवसर और सम्मान मिलना चाहिए।

4.6.2 शिक्षक एक आदर्श रोल मॉडल के रूप में (Teacher as a Role Model)

मूल्य और अनुशासन उपदेश देने से नहीं, बल्कि आचरण में देखने से सीखे जाते हैं। शिक्षक बालक के लिए सबसे बड़ा प्रत्यक्ष आदर्श (Role Model) होता है:

1. **आदर्श आचरण (Exemplary Conduct):**

शिक्षक का अपना जीवन अनुशासित, मूल्यनिष्ठ और सत्यनिष्ठ होना चाहिए। यदि शिक्षक स्वयं समयबद्धता, ईमानदारी, सहानुभूति और निष्पक्षता का पालन करता है, तो छात्र स्वाभाविक रूप से उन मूल्यों को अपनाते हैं।

2. **सुविधादाता और मार्गदर्शक (Facilitator and Guide):**

नोट

शिक्षक को एक तानाशाह या नियंत्रक के रूप में नहीं, बल्कि एक मित्र, दार्शनिक और पथ-प्रदर्शक (Friend, Philosopher, and Guide) के रूप में कार्य करना चाहिए। उसे बालकों पर अपने विचार थोपने के बजाय उन्हें स्वयं सोचने और सही-गलत का निर्णय लेने के लिए प्रेरित करना चाहिए।

3. **सहानुभूतिपूर्ण एवं निदानात्मक दृष्टिकोण (Empathic and Diagnostic Approach):**

अनुशासनहीनता की स्थिति में शिक्षक को बालक को दंडित करने के स्थान पर उसके व्यवहार के पीछे के कारणों (जैसे—पारिवारिक तनाव, हीनभावना, या ध्यान खींचने की इच्छा) को समझना चाहिए और सुधारात्मक/परामर्शदाता की भूमिका निभानी चाहिए।

1. 'मुक्तात्मक अनुशासन' (Free Discipline / Permissive Discipline) की अवधारणा पर किसने बल दिया?

(A) प्रकृतिवादियों ने (Naturalists)
(B) आदर्शवादियों ने
(C) यथार्थवादियों ने
(D) कठोर परंपरावादियों ने

2. स्व-अनुशासन (Self-Discipline) का तात्पर्य क्या है?

(A) बाह्य दंड के भय से नियमों का पालन
(B) आंतरिक प्रेरणा और आत्म-नियंत्रण से सही आचरण करना
(C) शिक्षक के डर से शांत बैठना
(D) नियमों का उल्लंघन करना

3. मूल्य शिक्षा (Value Education) का मुख्य लक्ष्य क्या है?

(A) केवल परीक्षा में उच्च अंक पाना
(B) नैतिक, मानवीय और सामाजिक मूल्यों का संवर्धन
(C) केवल व्यावसायिक दक्षता प्राप्त करना
(D) केवल किताबी ज्ञान देना

4. शिक्षा में स्वतंत्रता का अर्थ क्या है?

(A) बिना किसी नियम के स्वेच्छाचारिता
(B) बालक के स्वाभाविक और सृजनात्मक विकास हेतु अनुकूल वातावरण
(C) शिक्षकों की अनुपस्थिति
(D) अनुशासन का पूर्ण अभाव

5. 'दमनात्मक अनुशासन' (Repressive Discipline) का आधुनिक शिक्षा में क्या स्थान है?

(A) इसे सर्वोत्तम माना गया है
(B) इसे अमान्य और बाल-विकास के प्रतिकूल माना गया है
(C) यह अनिवार्य है
(D) इसे प्राथमिक स्तर पर लागू करना चाहिए

नोट

4.7 सारांश (Summary)

- **स्वतंत्रता का वास्तविक अर्थ:**शिक्षा में स्वतंत्रता केवल बाह्य बंधनों का अभाव नहीं है, बल्कि यह बालक के शारीरिक, मानसिक और नैतिक विकास के लिए अनुकूल, स्वायत्त और सकारात्मक वातावरण प्रदान करने की प्रक्रिया है।
- **स्वतंत्रता बनाम स्वेच्छाचारिता:**स्वतंत्रता विवेक, उत्तरदायित्व और सामाजिक सीमाओं पर आधारित होती है; जबकि स्वेच्छाचारिता अनियंत्रित, स्वार्थी और उदंड व्यवहार को दर्शाती है।
- **अनुशासन का बदलता स्वरूप:**शिक्षा में दमनकारी बाह्य अनुशासन और शारीरिक दंड के स्थान पर अब आत्म-अनुशासन, स्व-नियंत्रण और मुक्तात्मक अनुशासन को प्राथमिकता दी जाती है।
- **स्वतंत्रता और अनुशासन का संबंध:**स्वतंत्रता और अनुशासन परस्पर विरोधी न होकर पूरक हैं। अनुशासन स्वतंत्रता की सीमाओं और सुरक्षा को तय करता है, जबकि स्वतंत्रता आत्म-अनुशासन को विकसित होने का अवसर देती है।
- **संस्थागत भूमिका:**विद्यालय का जनतांत्रिक वातावरण और शिक्षक का एक जीवंत रोल मॉडल के रूप में आचरण ही बालकों में स्वतंत्रता, अनुशासन और नैतिक मूल्यों का वास्तविक समावेश कर सकता है।

4.8 मुख्य शब्द (Key Terms)

- **स्वायत्तता (Autonomy):**स्वयं के विवेक और नैतिक सिद्धांतों के आधार पर स्वतंत्रतापूर्वक निर्णय लेने तथा अपने आचरण को निर्देशित करने की क्षमता।
- **स्वेच्छाचारिता (Licentiousness):**सामाजिक नियमों, नैतिक सीमाओं और दूसरों के अधिकारों की अवहेलना करते हुए अनियंत्रित व स्वेच्छाचारी व्यवहार करना।
- **आत्म-अनुशासन (Self-Discipline):**बाह्य भय, दबाव या दमन के बिना अपनी आंतरिक चेतना, विवेक और समझ से नियमों का पालन व स्व-नियंत्रण करना।
- **मूल्य (Values):**वे आदर्श, मानक या मानदंड जो व्यक्ति के विचारों, प्राथमिकताओं और आचरण को दिशा प्रदान करते हैं तथा समाज द्वारा वांछनीय माने जाते हैं।
- **प्रकाट्य एवं गुप्त पाठ्यचर्या (Explicit & Hidden Curriculum):**औपचारिक रूप से पढ़ाया जाने वाला विषय-ज्ञान 'प्रकाट्य पाठ्यचर्या' है, जबकि विद्यालय के वातावरण, अनुशासन और शिक्षकों के

नोट

आचरण से अवचेतन रूप से सीखे जाने वाले मूल्य 'गुप्त पाठ्यचर्या' (Hidden Curriculum) कहलाते हैं।

- **नैतिक तर्क (Moral Reasoning):**नैतिक दुविधा की स्थिति में सही और गलत का चुनाव करने के लिए विवेक एवं चिंतन का प्रयोग करने की प्रक्रिया।

4.9 बोध प्रश्नों के उत्तर

उत्तर: (A) प्रकृतिवादियों ने (Naturalists)

उत्तर: (B) आंतरिक प्रेरणा और आत्म-नियंत्रण से सही आचरण करना

उत्तर: (B) नैतिक, मानवीय और सामाजिक मूल्यों का संवर्धन

उत्तर: (B) बालक के स्वाभाविक और सृजनात्मक विकास हेतु अनुकूल वातावरण

उत्तर: (B) इसे अमान्य और बाल-विकास के प्रतिकूल माना गया है

4.10 सुझावित अध्ययन सामग्री – मुक्त शैक्षिक संसाधन

1. eGyanKosh: Freedom, Discipline and Value Education (IGNOU)
2. NCERT: Value Education and Moral Development Modules
3. OER Commons: Human Values and Professional Ethics
4. UNESCO Digital Library: Values in Education
5. Swayam Prabha: Moral and Value Education Lectures

4.11 सन्दर्भ

1. **गुप्ता, एस.पी .** *भारतीय शिक्षा का इतिहास, विकास एवं समस्याएँ* (History, Development and Problems of Indian Education). शारदा पुस्तक भवन, प्रयागराज।
2. **शर्मा, रामनाथ.** *शिक्षा दर्शन तथा मूल्य शिक्षा* (Educational Philosophy and Value Education). केदारनाथ रामनाथ, मेरठ।
3. **NCERT.** *Education for Values in Schools: A Framework*. National Council of Educational Research and Training, New Delhi.
4. **Dewey, John.** *Democracy and Education*. Free Press / Macmillan, New York. (विशेष रूप से स्वतंत्रता और अनुशासन के सिद्धांतों हेतु।(
5. **Reddy, B. K.** *Value Education: Principles and Practice*. Discovery Publishing House, New Delhi.

4.12 अभ्यास प्रश्न / स्वयं जांचिए (Self-Assessment Questions)

भाग 'क' : लघु उत्तरीय प्रश्न (Short Answer Type Questions)

नोट

1. शिक्षा के संदर्भ में स्वतंत्रता की सकारात्मक अवधारणा से आप क्या समझते हैं?
2. स्वतंत्रता और स्वेच्छाचारिता (Licentiousness) के मध्य अंतर स्पष्ट कीजिए।
3. दमनकारी (बाह्य) अनुशासन और आत्म-अनुशासन में मुख्य अंतर क्या हैं?
4. मूल्य शिक्षा की परिभाषा दीजिए तथा इसके दो मुख्य प्रकारों का उल्लेख कीजिए।
5. 'गुप्त पाठ्यचर्या' (Hidden Curriculum) किस प्रकार बालकों में मूल्यों का संवर्धन करती है?

भाग 'ख' : दीर्घ उत्तरीय प्रश्न (Long Answer Type Questions)

1. "स्वतंत्रता और अनुशासन एक-दूसरे के विरोधी न होकर पूरक हैं।" इस कथन की दार्शनिक और शैक्षिक दृष्टिकोण से समीक्षा कीजिए।
2. आधुनिक समय में मूल्य शिक्षा की आवश्यकता क्यों बढ़ गई है? विद्यालय में मूल्य संवर्धन हेतु अपनाई जाने वाली प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष शिक्षण विधियों का विस्तृत वर्णन कीजिए।
3. एक प्रजातांत्रिक एवं भयमुक्त वातावरण के निर्माण में विद्यालय तथा रोल मॉडल के रूप में शिक्षक की भूमिका का समालोचनात्मक विश्लेषण कीजिए।

नोट

इकाई 5
भारतीय दर्शन में वैदिक एवं ज्ञानमीमांसीय परंपराएँ

इकाई संरचना (Unit Structure)

5.1 उद्देश्य (Objectives)
5.2 प्रस्तावना (Introduction)
5.3 वैदिक परंपरा: अर्थ, स्वरूप एवं मूल अवधारणाएँ
5.3.1 वेद, उपनिषद एवं आरण्यक का शैक्षिक परिचय
5.3.2 वैदिक दर्शन में ऋत (Cosmic Order) एवं कर्म का सिद्धांत
5.4 भारतीय ज्ञानमीमांसा (Epistemology in Indian Philosophy)
5.4.1 ज्ञान की अवधारणा :परा विद्या एवं अपरा विद्या
5.4.2 प्रमारूप ज्ञान एवं प्रमा के साधन (प्रमाण: प्रत्यक्ष, अनुमान, शब्द आदि)
5.5 वैदिक एवं उपनिषदकालीन शिक्षा व्यवस्था
5.5.1 शिक्षा के उद्देश्य एवं गुरु-शिष्य परंपरा
5.5.2 शिक्षण विधियाँ (श्रवण, मनन एवं निदिध्यासन)
5.6 वैदिक ज्ञानमीमांसा की आधुनिक शिक्षा में प्रासंगिकता
5.7 सारांश (Summary)
5.8 महत्वपूर्ण शब्दावली (Key Terms)
5.9 बोध प्रश्नों के उत्तर
5.10 सुझावित अध्ययन सामग्री – मुक्त शैक्षिक संसाधन
5.11 संदर्भ एवं विस्तृत अध्ययन हेतु पुस्तकें
5.12 अभ्यास प्रश्न

5.1 प्रस्तावना (Introduction)

भारतीय दर्शन विश्व की प्राचीनतम एवं समृद्धतम चिंतन परंपराओं में से एक है। इसकी जड़ें वैदिक साहित्य में निहित हैं, जहाँ जीवन, जगत, आत्मा और परम सत्य की गहन खोज की गई है। भारतीय दार्शनिक परंपरा केवल अमूर्त विचारों का संग्रह नहीं है, बल्कि यह जीवन जीने की एक व्यावहारिक कला और सत्य की साक्षात् अनुभूति का मार्ग प्रस्तुत करती है।

शिक्षा के क्षेत्र में भारतीय दर्शन का योगदान अत्यंत महत्वपूर्ण है। वैदिक परंपरा में ज्ञान (Epistemology) को केवल सूचनाओं का संग्रह नहीं माना गया, बल्कि इसे व्यक्ति के आत्म-विकास, चरित्र-निर्माण और मोक्ष (मुक्ति) प्राप्ति का साधन स्वीकार किया गया है।

नोट

इस इकाई में हम वैदिक परंपरा की मूल अवधारणाओं, ज्ञान की प्रकृति, ज्ञान प्राप्ति के साधनों (प्रमाणों) तथा वैदिक कालीन शिक्षा पद्धतियों का विस्तृत अध्ययन करेंगे, ताकि यह समझा जा सके कि यह प्राचीन ज्ञान परंपरा आधुनिक शैक्षिक संदर्भों में किस प्रकार प्रासंगिक है।

5.2 उद्देश्य (Objectives)

इस इकाई का अध्ययन करने के पश्चात आप:

- वैदिक परंपरा के अर्थ, स्वरूप एवं इसके मूल दार्शनिक सिद्धांतों को स्पष्ट कर सकेंगे।
- ऋत (Cosmic Order) एवं कर्म के सिद्धांत का मानव जीवन तथा शिक्षा के संदर्भ में विश्लेषण कर सकेंगे।
- भारतीय ज्ञानमीमांसा में परा विद्या (आध्यात्मिक ज्ञान) तथा अपरा विद्या (व्यावहारिक ज्ञान) के अंतर को समझ सकेंगे।
- ज्ञान प्राप्ति के प्रमुख साधनों (प्रमाणों: प्रत्यक्ष, अनुमान, शब्द आदि) की व्याख्या कर सकेंगे।
- वैदिक एवं उपनिषदकालीन शिक्षण विधियों (श्रवण, मनन एवं निदिध्यासन) के व्यावहारिक महत्व को रेखांकित कर सकेंगे।
- वैदिक ज्ञानमीमांसा की आधुनिक शिक्षा प्रणाली में प्रासंगिकता का मूल्यांकन कर सकेंगे।

5.3 वैदिक परंपरा: अर्थ, स्वरूप एवं मूल अवधारणाएँ

भारतीय दर्शन एवं शिक्षाशास्त्र का प्रादुर्भाव वैदिक साहित्य की समृद्ध बौद्धिक एवं आध्यात्मिक पृष्ठभूमि से हुआ है। "वेद" शब्द की उत्पत्ति संस्कृत की 'विद्' धातु से हुई है, जिसका शाब्दिक अर्थ है—"जानना" अर्थात 'ज्ञान'। वैदिक परंपरा भारतीय उपमहाद्वीप की ज्ञानमीमांसीय एवं नीतिशास्त्रीय चिंतन की आधारशिला है। वैदिक साहित्य केवल धार्मिक अनुष्ठानों का संग्रह नहीं है, बल्कि इसमें जीवन, ब्रह्मांड, प्रकृति, मानव चेतना, नैतिक मूल्यों एवं परम सत्य की खोज का गूढ़ दर्शन समाहित है।

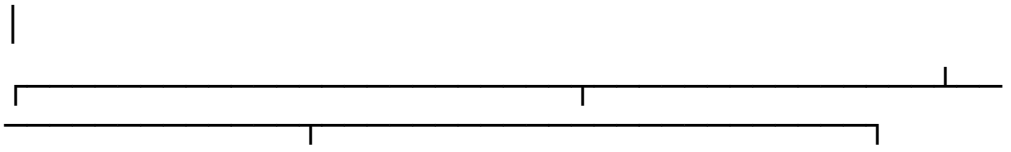
वैदिक चिंतन में शिक्षा का उद्देश्य केवल आजीविका कमाना या भौतिक तथ्यों का संकलन करना नहीं था, बल्कि व्यक्ति के सर्वांगीण विकास, आत्म-साक्षात्कार (Self-Realization) तथा सामाजिक दायित्वों के निर्वहन हेतु क्षमता निर्माण करना था। इस अनुभाग में हम वैदिक साहित्य के शैक्षिक वर्गीकरण तथा इसके दो मुख्य स्तंभों—'ऋत' और 'कर्म सिद्धांत' का विस्तृत अध्ययन करेंगे।

5.3.1 वेद, उपनिषद एवं आरण्यक का शैक्षिक परिचय

नोट

वैदिक साहित्य को ऐतिहासिक एवं दार्शनिक विकासक्रम के आधार पर मुख्य रूप से चार भागों में विभाजित किया जाता है: संहित, ब्राह्मण, आरण्यक, और उपनिषद। शैक्षिक दृष्टि से इनमें से उपनिषद और आरण्यक का विशेष महत्व है, क्योंकि ये कर्मकांडीय विधानों से ऊपर उठकर ज्ञान मार्ग और दार्शनिक विमर्श को रेखांकित करते हैं।

वैदिक साहित्य (Vedic Literature)



संहिताब्राह्मणआरण्यकउपनिषद

(मंतों का संग्रह) (कर्मकांड व यज्ञ की व्याख्या) (अरण्य/चिंतन-मनन) (ज्ञान/ज्ञानमीमांसा)

1. संहिता (Samhitas)

संहिताएँ वैदिक साहित्य का मूल भाग हैं, जिनमें विभिन्न देवताओं की स्तुति में रचे गए मंत्र समाहित हैं। वैदिक संहिताएँ चार हैं:

- **ऋग्वेद:**यह मानव जाति का प्राचीनतम ग्रंथ माना जाता है। इसमें प्रकृति की शक्तियों के प्रति सौंदर्यबोध, काव्य और दार्शनिक जिज्ञासा का समावेश है।
- **सामवेद:**इसमें ऋग्वेद की ऋचाओं का संगीतात्मक रूप है। शैक्षिक दृष्टि से यह कला, संगीत एवं स्वर-विज्ञान (Phonetics) के प्रारंभिक सिद्धांतों का आधार है।
- **यजुरवेद:**इसमें यज्ञ और अनुष्ठानों की विधियाँ हैं, जो नियमानुपालन और अनुशासन का पाठ पढ़ाती हैं।
- **अथर्ववेद:**इसमें व्यावहारिक जीवन, आयुर्वेद, हस्तशिल्प, विज्ञान एवं औषधि संबंधी ज्ञान का संकलन है, जो जीवन के लौकिक पक्ष को संबोधित करता है।

2. ब्राह्मण ग्रंथ (Brahmanas)

ब्राह्मण ग्रंथ मुख्यतः गद्य में लिखे गए हैं। इनमें संहिताओं के मंत्रों के विनियोग, यज्ञों के आयोजन एवं अनुष्ठानिक क्रियाओं की व्याख्या की गई है। शैक्षिक दृष्टि से ये ग्रंथ नियमबद्धता, अनुशासन और विधियों के सटीक निष्पादन की सीख देते हैं।

3. आरण्यक (Aranyakas)

'अरण्य' का अर्थ होता है—वन या जंगल। आरण्यक वे ग्रंथ हैं जिनका अध्ययन एवं चिंतन एकांत में, वनों के शांत वातावरण में किया जाता था।

- **दार्शनिक परिवर्तन:**आरण्यक ग्रंथ बाहरी कर्मकांडों से ध्यान हटाकर आंतरिक प्रतीकवाद और चिंतन पर बल देते हैं।

नोट

- **शैक्षिक महत्व:**ये ग्रंथ स्थूल अनुष्ठानों से सूक्ष्म दार्शनिक चिंतन की ओर संक्रमण की स्थिति दर्शाते हैं। ये विद्यार्थियों में एकाग्रता, स्वाध्याय और अमूर्त चिंतन (Abstract Thinking) की क्षमता का विकास करते हैं।

4. उपनिषद (Upanishads)

'उपनिषद' शब्द 'उप' (समीप), 'नि' (निष्ठापूर्वक) और 'षद' (बैठना) के योग से बना है, जिसका अर्थ है—गुरु के समीप बैठकर निष्ठापूर्वक गुप्त ज्ञान ग्रहण करना। उपनिषदों को**'वेदांत'** (वेदों का अंतिम भाग तथा वेदों का सार) भी कहा जाता है।

- **ज्ञानमीमांसीय केंद्र बिंदु:**उपनिषदों का मूल विषय 'ब्रह्म' (परम सत्य) और 'आत्मा' (स्वयं का यथार्थ स्वरूप) की एकता को जानना है। "अहं ब्रह्मास्मि" (मैं ब्रह्म हूँ) और "तत्त्वमसि" (वह तुम ही हो) जैसे महावाक्य उपनिषदों की देन हैं।
- **शैक्षिक प्रासंगिकता:**उपनिषद प्रश्नोत्तर पद्धति, संवाद (Dialogue System), और तार्किक तर्क-वितर्क की संस्कृति को जन्म देते हैं। उपनिषदों में शिक्षा का लक्ष्य 'अविद्या' (अज्ञान) का नाश करके 'विद्या' (ज्ञान) के माध्यम से मोक्ष या परम स्वतंत्रता प्राप्त करना है।

5.3.2 वैदिक दर्शन में ऋत (Cosmic Order) एवं कर्म का सिद्धांत

वैदिक दर्शन का पूरा नैतिक एवं आध्यात्मिक ढांचा दो महान अवधारणाओं पर टिका हुआ है:**'ऋत'**और**'कर्म का सिद्धांत'**। ये अवधारणाएँ न केवल व्यक्तिगत आचरण को संचालित करती हैं, बल्कि सामाजिक व्यवस्था और शिक्षा के उद्देश्यों को भी दिशा प्रदान करती हैं।

1. ऋत का सिद्धांत (The Concept of Rta / Cosmic Order)

'ऋत' वैदिक दर्शन की सबसे महत्वपूर्ण और मौलिक अवधारणाओं में से एक है। ऋग्वेद में ऋत का उल्लेख बहुलता से मिलता है।

- **अर्थ एवं स्वरूप:**ऋत का तात्पर्य ब्रह्मांडीय व्यवस्था, प्राकृतिक नियम और नैतिक नियम से है। यह वह सार्वभौमिक नियम है जिससे संपूर्ण सृष्टि—सूर्य, चंद्रमा, नक्षत्र, ऋतु चक्र और मानव जीवन—अनुशासित एवं संचालित होती है।
- **प्राकृतिक और नैतिक समन्वय:**ऋत केवल भौतिक जगत का नियम (जैसे दिन-रात का होना) नहीं है, बल्कि यह नैतिक जगत का भी नियम है। सत्य, न्याय और प्रामाणिकता ऋत के ही रूप हैं। जो आचरण ऋत के अनुकूल है, वह धर्म है; जो ऋत के विपरीत है, वह 'अनृत' (अधर्म/व्यवस्थाहीनता) है।
- **शैक्षिक निहितार्थ (Educational Implications):**
    - **अनुशासन एवं संतुलन:**ऋत की अवधारणा शिक्षार्थी को यह सिखाती है कि प्रकृति में कोई भी घटना अनियंत्रित नहीं है। अतः मानव जीवन को भी एक निश्चित अनुशासन और संतुलन में व्यतीत होना चाहिए।

नोट

- **पर्यावरणीय चेतना:**वैदिक शिक्षा में प्रकृति को ऋत का प्रत्यक्ष रूप माना गया। विद्यार्थियों को प्रकृति के साथ सामंजस्य बिठाकर रहने की शिक्षा दी जाती थी, जो आज के पर्यावरण शिक्षा (Environmental Education) का मूल आधार है।

ऋत (सार्वभौमिक नियम)

|

┌──────────────────────────────┴──────────────────────────────┐

▼▼

भौतिक/प्राकृतिक स्तरनैतिक/सामाजिक स्तर

(सूर्य, चंद्रमा, ऋतु चक्र की नियमितता) (सत्य, न्याय, सत्यनिष्ठा एवं धर्म)

2. कर्म का सिद्धांत (The Doctrine of Karma)

कर्म का सिद्धांत ऋत की अवधारणा का ही व्यक्तिगत और नैतिक विस्तार है। वैदिक परंपरा और उपनिषदों में कर्म के नियम को परम सत्य माना गया है।

- **मूल भावना:** "जैसी करनी, वैसी भरनी" या कार्य-कारण सिद्धांत (Law of Cause and Effect)। मनुष्य द्वारा किया गया प्रत्येक विचार और कार्य एक निश्चित परिणाम उत्पन्न करता है। कर्म का सिद्धांत व्यक्ति को अपने जीवन और भाग्य का स्वयं निर्माता स्वीकार करता है।
- **कर्म के प्रकार:**
    1. **संचित कर्म:**अतीत के वे सभी कर्म जो संचित हैं किंतु अभी उनका फल मिलना शुरू नहीं हुआ है।
    2. **प्रारब्ध कर्म:**संचित कर्मों का वह भाग जो वर्तमान जीवन में फल देना शुरू कर चुका है।
    3. **क्रियमाण (आगामी) कर्म:**वे कर्म जो मनुष्य वर्तमान समय में कर रहा है और जिनका फल भविष्य में प्राप्त होगा।
- **शैक्षिक निहितार्थ (Educational Implications):**
    - **व्यक्तिगत उत्तरदायित्व:**कर्म का सिद्धांत विद्यार्थी में उत्तरदायित्व (Accountability) की भावना जगाता है। विद्यार्थी समझता है कि उसकी सफलता या असफलता भाग्य के भरोसे नहीं, बल्कि उसके अपने प्रयासों (पुरुषार्थ) पर निर्भर करती है।

नोट

- **आंतरिक प्रेरणा:**यह सिद्धांत बाह्य पुरस्कार या दंड के बजाय आंतरिक नैतिकता (Internal Motivation) और स्व-नियंत्रण को प्रोत्साहित करता है।

3. वैदिक जीवन मूल्य: पुरुषार्थ चतुष्टय

वैदिक परंपरा में कर्म और ऋत के आधार पर मानव जीवन के चार मुख्य लक्ष्य निर्धारित किए गए, जिन्हें**'पुरुषार्थ चतुष्टय'**कहा जाता है:

1. **धर्म (Dharma):**नैतिक कर्तव्य, ऋत का पालन और न्यायसंगत आचरण।
2. **अर्थ (Artha):**भौतिक समृद्धि, संसाधन एवं न्यायपूर्ण तरीकों से जीविकोपार्जन।
3. **काम (Kama):**मानसिक, संवेगात्मक एवं शारीरिक इच्छाओं की मर्यादित पूर्ति।
4. **मोक्ष (Moksha):**परम स्वतंत्रता, अज्ञान से मुक्ति और आत्म-साक्षात्कार।

शिक्षा का मूल कार्य व्यक्ति को इस प्रकार तैयार करना था कि वह 'धर्म' को आधार बनाकर 'अर्थ' और 'काम' का उपभोग करे, ताकि अंततः वह 'मोक्ष' की प्राप्ति कर सके।

निष्कर्ष

संक्षेप में, वैदिक परंपरा में शिक्षा एक समग्र जीवन-दृष्टि प्रदान करती है। वेद, आरण्यक और उपनिषद ज्ञान के विकास के विभिन्न सोपानों को दर्शाते हैं—जहाँ संहिता से प्राप्त स्तुतियों का सफर उपनिषदों के गंभीर ज्ञानमीमांसीय चिंतन पर समाप्त होता है। वहीं, 'ऋत' और 'कर्म सिद्धांत' विद्यार्थी को ब्रह्मांडीय व्यवस्था के साथ एकाकार होना, पर्यावरण का सम्मान करना और अपने प्रत्येक कर्म के प्रति उत्तरदायी होना सिखाते हैं। यह दार्शनिक पृष्ठभूमि modern शिक्षा में चरित्र निर्माण और मूल्य-आधारित शिक्षा (Value Education) का सुदृढ़ आधार तैयार करती है।

5.4 भारतीय ज्ञानमीमांसा (Epistemology in Indian Philosophy)

ज्ञानमीमांसा (Epistemology) दर्शनशास्त्र की वह शाखा है जो ज्ञान की प्रकृति, उसकी उत्पत्ति, सीमा, प्रामाणिकता तथा ज्ञान प्राप्ति के साधनों का सूक्ष्म और तार्किक अध्ययन करती है। भारतीय दार्शनिक चिंतन में ज्ञानमीमांसा को अत्यंत उच्च स्थान दिया गया है। यहाँ दर्शन केवल कोरी कल्पना या बौद्धिक व्यायाम नहीं है, बल्कि 'तत्वज्ञान' (सत्य का ज्ञान) के माध्यम से दुःखों से मुक्ति और मोक्ष प्राप्त करने का मार्ग है।

भारतीय परंपरा में यह स्पष्ट माना गया है कि जब तक हम ज्ञान के सही स्वरूप और उसे प्राप्त करने के वैध साधनों को नहीं समझते, तब तक हम असत्य से सत्य की ओर नहीं बढ़ सकते। इस अनुभाग में हम भारतीय ज्ञानमीमांसा के दो मूल आधारों का विस्तृत विश्लेषण करेंगे: ज्ञान के दो मुख्य रूप (परा एवं अपरा विद्या) तथा ज्ञान प्राप्ति के प्रमुख साधन (प्रमाण)।

नोट

5.4.1 ज्ञान की अवधारणा: परा विद्या एवं अपरा विद्या

मुंडकोपनिषद में ज्ञान के दो स्पष्ट स्तरों का उल्लेख मिलता है—**परा विद्या**और**अपरा विद्या**। यह वर्गीकरण ज्ञान के विषय (Object of Knowledge) और उसके अंतिम उद्देश्य के आधार पर किया गया है।

ज्ञान के रूप (Forms of Knowledge)

|

┌──────────────────────────────────────┴──────────────────────────────────────┐

└──────────────────────┐

▼▼

अपरा विद्यापरा विद्या

(व्यावहारिक / लौकिक ज्ञान) (परम / आध्यात्मिक ज्ञान)

||

┌──────────────────────┴──────────────────────┐ ┌──────────────────────┴──────────────────────┐

└──────────────────────┐

▼▼▼▼

इंद्रियजन्य ज्ञानशास्त्र/विज्ञानआत्म-साक्षात्कारपरम सत्य (ब्रह्म)

(Sensory Knowledge) (Empirical Knowledge) (Self-Realization) (Ultimate Truth)

1. अपरा विद्या (Lower / Empirical Knowledge)

अपरा विद्या से तात्पर्य उस ज्ञान से है जो हमारे भौतिक जगत, इंद्रिय अनुभवों, तर्क, विज्ञान और लौकिक विषयों से संबंधित है।

- **स्वरूप और क्षेत्र:**यह विद्या शब्द, तर्क, गणित, भाषाशास्त्र, भौतिक विज्ञान, अर्थशास्त्र और दैनिक जीवन के कौशलों का आवरण प्रस्तुत करती है। वेदों के कर्मकांडीय भाग (संहिता और ब्राह्मण) तथा छह वेदांग (शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्त, छंद, ज्योतिष) भी अपरा विद्या के अंतर्गत ही आते हैं।
- **प्राप्ति का माध्यम:**अपरा विद्या की प्राप्ति हमारी पंचज्ञानेंद्रियों (आँख, कान, नाक, जीभ, त्वचा), मन और बुद्धि के माध्यम से होती है। यह विषय-विषयी (Subject-Object) के भेद पर आधारित है, जहाँ जानने वाला (ज्ञाता) और जाना जाने वाला विषय (ज्ञेय) एक-दूसरे से भिन्न होते हैं।
- **शैक्षिक एवं व्यावहारिक महत्व:**

नोट

- अपरा विद्या जीवन निर्वाह, सामाजिक व्यवस्था, वैज्ञानिक प्रगति और भौतिक समृद्धि (अर्थ एवं काम) के लिए अनिवार्य है।
- यह बुद्धि को तीक्ष्ण करती है और विद्यार्थी को समाज में एक सक्षम एवं उत्तरदायी नागरिक के रूप में स्थापित करती है।
- यद्यपि इसे 'अपरा' (निम्न या प्रारंभिक) कहा गया है, किंतु यह परा विद्या तक पहुँचने की पहली सीढ़ी है। बिना व्यावहारिक आधार के आध्यात्मिक विकास संभव नहीं है।

2. परा विद्या (Higher / Ultimate Knowledge)

परा विद्या वह सर्वोच्च ज्ञान है जिसके द्वारा उस परम अक्षर (नष्ट न होने वाले) तत्व या 'ब्रह्म' का बोध होता है।

- **स्वरूप और क्षेत्र:**यह आत्मा और परमात्मा के यथार्थ स्वरूप का ज्ञान है। यह अविद्या (अज्ञान) के आवरण को हटाकर जीव को मोक्ष या परम स्वतंत्रता की ओर ले जाती है।
- **प्राप्ति का माध्यम:**परा विद्या केवल पुस्तकों, तर्कों या इंद्रिय अनुभवों से प्राप्त नहीं की जा सकती। यह प्रत्यक्ष अनुभूति (Direct Intuition), ध्यान, स्वाध्याय, और 'श्रवण-मनन-निदिध्यासन' की प्रक्रिया से प्राप्त होती है। यहाँ ज्ञाता और ज्ञेय का भेद समाप्त हो जाता है और व्यक्ति परम सत्य के साथ एकाकार हो जाता है।
- **शैक्षिक एवं आध्यात्मिक महत्व:**
  - यह मनुष्य को संकीर्णता, भय, मोह और मानसिक बंधनों से मुक्त करती है।
  - यह शिक्षा के अंतिम लक्ष्य—'सा विद्या या विमुक्तये' (विद्या वही है जो मुक्ति दिलाए)—को पूरा करती है।
  - यह विद्यार्थी में नैतिक मूल्यों, आत्म-नियंत्रण, शांति और करुणा की पराकाष्ठा का विकास करती है।

परा एवं अपरा विद्या का तुलनात्मक विश्लेषण

नोट

तुलनात्मक बिंदु	अपरा विद्या (Empirical Knowledge)	परा विद्या (Transcendent Knowledge)
विषय-वस्तु	भौतिक जगत, विज्ञान, भाषा, कला, व्यवहार	आत्मा, ब्रह्म, परम सत्य, आध्यात्मिक चेतना
माध्यम/साधन	इंद्रियाँ, मन, बुद्धि, तर्क, प्रयोग, ग्रंथ	ध्यान, अंतर्दृष्टि (Intuition), आत्म-साक्षात्कार
प्रकृति	परिवर्तनशील, देश-काल से सीमित, विषय-परक	अद्वैत, नित्य, सार्वभौमिक, देश-काल से परे
जीवन में उद्देश्य	आजीविका, भौतिक विकास, सामाजिक दक्षता	मोक्ष, दुःखों से पूर्ण मुक्ति, परम शांति
शैक्षिक प्रासंगिकता	व्यावसायिक एवं वैज्ञानिक शिक्षा	मूल्य शिक्षा, चरित्र निर्माण, चेतना का विकास

5.4.2 प्रमारूप ज्ञान एवं प्रमा के साधन (प्रमाण)

भारतीय ज्ञानमीमांसा का सबसे जटिल और तार्किक पक्ष 'प्रमाण शास्त्र' है। दार्शनिकों ने यथार्थ ज्ञान (सत्य ज्ञान) और अयथार्थ ज्ञान (भ्रम या मिथ्या ज्ञान) के बीच स्पष्ट अंतर किया है।

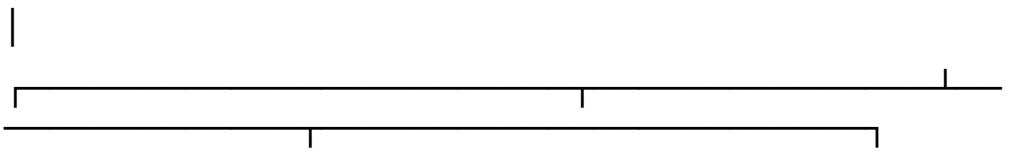
1. प्रमा, अप्रमा और प्रमाण की अवधारणा

- **प्रमा (Valid Knowledge):**यथार्थ और असंदिग्ध ज्ञान को 'प्रमा' कहा जाता है। वह ज्ञान जो वस्तु के वास्तविक स्वरूप को उजागर करे, जो बाधा-रहित (Non-contradicted) हो और जो नया हो (नवीन ज्ञान), उसे प्रमा कहते हैं। उदाहरण के लिए, अँधेरे में रस्सी को स्पष्ट रूप से देखना और पहचानना कि वह 'रस्सी' ही है, प्रमा है।
- **प्रमाता (Subject):**ज्ञान प्राप्त करने वाला व्यक्ति (ज्ञाता)।
- **प्रमेय (Object):**जिस विषय या वस्तु का ज्ञान प्राप्त किया जा रहा है।
- **प्रमाण (Means of Valid Knowledge):**प्रमा (सत्य ज्ञान) प्राप्त करने के साधन या माध्यम को 'प्रमाण' कहा जाता है। (प्रमीयते अनेन इति प्रमाणम्)।

नोट

- **अप्रमा (Invalid Knowledge):**अयथार्थ ज्ञान, भ्रम (Illusion), संशय (Doubt), या तर्कहीन स्मृतियों को 'अप्रमा' कहते हैं। जैसे अँधेरे में रस्सी को सांप समझ लेना।

ज्ञान प्रक्रिया के घटक



▼▼▼▼

प्रमाताप्रमेयप्रमाप्रमाण

(ज्ञान प्राप्तकर्ता) (ज्ञान का विषय) (यथार्थ/सत्य ज्ञान) (ज्ञान प्राप्त करने का साधन)

2. प्रमा के मुख्य साधन (भारतीय दर्शन के ६ प्रमुख प्रमाण)

भारतीय दर्शन के विभिन्न संप्रदायों (सांख्य, वेदांत, न्याय, मीमांसा, बौद्ध, जैन आदि) ने प्रमाणों की संख्या पर भिन्न-भिन्न विचार व्यक्त किए हैं। मुख्य रूप से निम्नलिखित ६ प्रमाण स्वीकार किए जाते हैं:

(क) प्रत्यक्ष प्रमाण (Pratyaksha / Perception)

यह ज्ञान प्राप्ति का सबसे मौलिक और प्राथमिक साधन है।

- **अर्थ:** 'प्रति' + 'अक्ष' अर्थात जो ज्ञान इंद्रियों का विषयों के साथ सीधे संपर्क (सन्निकर्ष) होने से प्राप्त होता है, उसे प्रत्यक्ष कहते हैं।
- **प्रकार:**
    1. **बाह्य प्रत्यक्ष:**जो हमारी पाँच बाह्य इंद्रियों (देखना, सुनना, चखना, सूंघना, छूना) से होता है।
    2. **आंतरिक प्रत्यक्ष:**जो मन के माध्यम से सुख, दुख, भय, इच्छा आदि का बोध कराता है।
- **शैक्षिक महत्व:**यह करके सीखने (Learning by Doing), अवलोकन विधि (Observation Method) और प्रयोगशाला प्रयोगों का आधार है।

(ख) अनुमान प्रमाण (Anumana / Inference)

'अनु' का अर्थ है पश्चात (बाद में) और 'मान' का अर्थ है ज्ञान। प्रत्यक्ष ज्ञान के पश्चात होने वाले तार्किक ज्ञान को 'अनुमान' कहते हैं।

- **प्रक्रिया:**हम किसी देखे गए चिह्न (हेतु) के आधार पर न दिखाई देने वाली वस्तु (साध्य) का ज्ञान प्राप्त करते हैं। इसका प्रसिद्ध उदाहरण है: *"पर्वत पर धुआँ देखकर वहाँ आग होने का ज्ञान होना।"*

नोट

- **व्याप्ति (Concomitance):**अनुमान का मूल आधार 'व्याप्ति' है, अर्थात हेतु (धुआँ) और साध्य (आग) के बीच का नियत और अविनाभाव संबंध।
- **शैक्षिक महत्व:**अनुमान प्रमाण विद्यार्थियों में आगमनात्मक (Inductive) और निगमनात्मक (Deductive) तर्कशक्ति, समस्या-समाधान (Problem Solving) और अमूर्त चिंतन का विकास करता है।

(ग) शब्द प्रमाण (Shabda / Verbal Testimony)

किसी आप्त पुरुष (आप्त = सत्य वक्ता, योग्य, विश्वासी व्यक्ति) या प्रामाणिक शास्त्रों के कथनों द्वारा प्राप्त ज्ञान को 'शब्द प्रमाण' कहते हैं।

- **प्रकार:**
    1. **वैदिक/दृष्टार्थ:**वेदों या ऋषियों के आध्यात्मिक वचन।
    2. **लौकिक:**समाज के विश्वसनीय व्यक्तियों, वैज्ञानिकों, शिक्षकों या प्रामाणिक ग्रंथों के कथन।
- **शैक्षिक महत्व:**कक्षा-शिक्षण में शिक्षक का व्याख्यान, पाठ्यपुस्तकें और विशेषज्ञों की सलाह 'शब्द प्रमाण' का ही रूप हैं। विद्यार्थी हर तथ्य का प्रत्यक्ष प्रयोग नहीं कर सकता, अतः शब्द प्रमाण अधिगम को सुगम बनाता है।

(घ) उपमान प्रमाण (Upamana / Analogy)

सादृश्य या समानता के आधार पर होने वाले ज्ञान को 'उपमान' कहते हैं।

- **उदाहरण:**यदि किसी व्यक्ति ने कभी 'गवय' (जंगली गाय/नीलगाय) न देखा हो और उसे बताया जाए कि "गवय गाय जैसा ही होता है।" इसके पश्चात जब वह जंगल में गाय जैसी आकृति वाले जीव को देखता है, तो उसे 'गवय' का ज्ञान हो जाता है।
- **शैक्षिक महत्व:**यह विधि शिक्षण में**'ज्ञात से अज्ञात की ओर'** (Known to Unknown) के सिद्धांत का पालन करती है। नए प्रत्ययों को समझाने के लिए उदाहरण और सादृश्यता (Analogy) देना उपमान प्रमाण पर ही आधारित है।

(ङ) अर्थापत्ति प्रमाण (Arthapatti / Postulation)

किसी अनदेखी या अप्रत्यक्ष घटना को स्पष्ट करने के लिए किसी तथ्य की स्वतः कल्पना या उपपत्ति करना 'अर्थापत्ति' कहलाता है।

- **उदाहरण:**यदि कोई व्यक्ति (जैसे देवदत्त) दिन में भोजन नहीं करता, फिर भी उसका शरीर निरंतर मोटा होता जा रहा है; तो इस असंगति को सुलझाने के लिए हम यह निष्कर्ष निकालते हैं कि "वह व्यक्ति निश्चित रूप से रात्रि में भोजन करता है।"

नोट

- **शैक्षिक महत्व:**यह विद्यार्थियों में परिकल्पना (Hypothesis Construction), आलोचनात्मक सोच और जटिल समस्याओं को सुलझाने की क्षमता विकसित करता है।

(च) अनुपलब्धता या अभाव प्रमाण (Anupalabdhi / Non-apprehension)

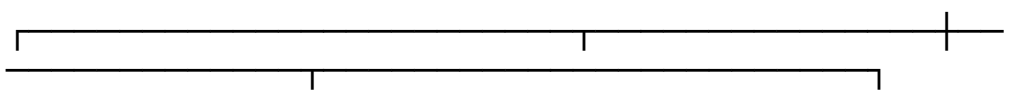
किसी वस्तु की अनुपस्थिति या न होने का ज्ञान प्राप्त करना 'अनुपलब्धता' प्रमाण है।

- **उदाहरण:** *"कक्षा में कोई छात्र उपस्थित नहीं है"*या *"मेज पर पुस्तक नहीं है।"*यहाँ पुस्तक का न होना (अभाव) ही हमें ज्ञान देता है।
- **शैक्षिक महत्व:**यह विश्लेषणात्मक चिंतन में शून्य/अभाव की स्थिति को समझने और नकारात्मक साक्ष्यों की पहचान करने में मदद करता है।

विभिन्न भारतीय दर्शनों द्वारा स्वीकृत प्रमाण

विभिन्न दार्शनिक संप्रदायों ने अपनी मान्यताओं के अनुसार प्रमाणों को स्वीकार किया है:

विभिन्न दर्शनों में प्रमाणों की स्वीकार्यता



▼▼▼▼▼

चार्वाक दर्शनबौद्ध/वैशेषिकसांख्य/योगन्याय दर्शनअद्वैत वेदांत/मीमांसा

(केवल 1: प्रत्यक्ष) (2: प्रत्यक्ष, (3: प्रत्यक्ष, (4: प्रत्यक्ष, अनुमान, (6: प्रत्यक्ष, अनुमान, शब्द,

अनुमान)अनुमान, शब्द)शब्द, उपमान)उपमान, अर्थापत्ति, अनुपलब्धता)

भारतीय ज्ञानमीमांसा के शैक्षिक निहितार्थ

1. **संतुलित पाठ्यक्रम (Balanced Curriculum):**आधुनिक शिक्षा को 'अपरा विद्या' (विज्ञान, गणित, तकनीक) और 'परा विद्या' (नैतिकता, जीवन मूल्य, आत्म-विकास) का संतुलित मिश्रण होना चाहिए। केवल भौतिक ज्ञान मनुष्य को एकांगी बनाता है।
2. **विविध शिक्षण पद्धतियाँ:**ज्ञान प्राप्ति के भिन्न-भिन्न साधनों (प्रमाणों) के अनुसार शिक्षण विधियों में विविधता लाई जानी चाहिए:
    - प्रत्यक्ष हेतु: अवलोकन, प्रयोग, क्षेत्र भ्रमण (Field Visits)।
    - अनुमान हेतु: तर्कशास्त्र, गणितीय हल, अनुसंधान, विचार-मंथन।
    - शब्द हेतु: व्याख्यान, स्वाध्याय, संगोष्ठी।
    - उपमान हेतु: उदाहरण, रूपक, शिक्षण सहायक सामग्री।

नोट

3. **सत्य की परीक्षा और तार्किक चेतना:**भारतीय ज्ञानमीमांसा अंधी आस्था का समर्थन नहीं करती। यह विद्यार्थी को सिखाती है कि ज्ञान को प्रामाणिकता की कसौटी (प्रमाणों) पर परख कर ही स्वीकार किया जाना चाहिए।

निष्कर्ष

भारतीय ज्ञानमीमांसा केवल दार्शनिक विमर्श का विषय नहीं है, बल्कि यह सीखने की प्रक्रिया (Learning Process) का एक संपूर्ण और वैज्ञानिक ढांचा प्रस्तुत करती है। परा और अपरा विद्या का समन्वय मनुष्य को भौतिक रूप से सक्षम और आध्यात्मिक रूप से समृद्ध बनाता है। वहीं, प्रत्यक्ष, अनुमान और शब्द जैसे प्रमाण विद्यार्थी में वैज्ञानिक दृष्टिकोण, तार्किक क्षमता और प्रामाणिक अधिगम का विकास करते हैं।

5.5 वैदिक एवं उपनिषदकालीन शिक्षा व्यवस्था

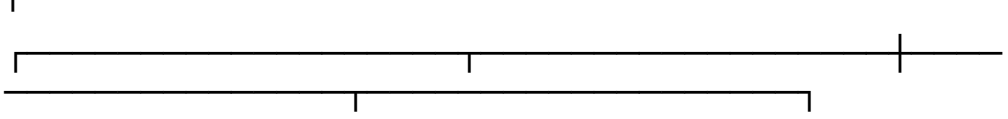
वैदिक और उपनिषदकालीन शिक्षा व्यवस्था प्राचीन भारत का एक अत्यंत संगठित, उद्देश्यपूर्ण और अनुशासित रूप थी। इस शिक्षा प्रणाली का मुख्य लक्ष्य व्यक्ति का केवल बौद्धिक विकास करना नहीं था, बल्कि उसके भौतिक, नैतिक, सामाजिक और आध्यात्मिक पक्षों का संतुलित एवं सर्वांगीण विकास करना था। शिक्षा को जीवन की एक सतत साधना माना जाता था जो मनुष्य को अज्ञानता से ज्ञान की ओर तथा मृत्यु से अमरता (मुक्ति) की ओर ले जाती थी।

5.5.1 शिक्षा के उद्देश्य एवं गुरु-शिष्य परंपरा

वैदिक युग में शिक्षा केवल सूचनाओं को रटने का साधन नहीं थी, बल्कि यह व्यक्तित्व के रूपांतरण की प्रक्रिया थी। इस व्यवस्था की रीढ़ 'गुरु-शिष्य परंपरा' थी।

1. वैदिक शिक्षा के प्रमुख उद्देश्य

वैदिक शिक्षा के मुख्य उद्देश्य



आत्म-साक्षात्कारचरित्र निर्माणव्यक्तित्व विकाससामाजिक दायित्वसांस्कृतिक संरक्षण

(Self-Realization) (Character Building) (Overall Growth) (Social Duties) (Cultural Heritage)

- **आत्म-साक्षात्कार एवं मोक्ष (Self-Realization and Liberation):**वैदिक शिक्षा का अंतिम और सर्वोपरि लक्ष्य 'मोक्ष' (मुक्ति) की प्राप्ति था। "सा विद्या या विमुक्तये" (विद्या वही है जो मुक्ति दिलाए) इस काल का मूल वाक्य था। शिक्षा शिक्षार्थी को अपने वास्तविक स्वरूप (आत्मा) को जानने में सहायता करती थी।

नोट

- **चरित्र निर्माण एवं नैतिक उत्थान (Character Building):**चरित्र निर्माण को बौद्धिक ज्ञान से भी अधिक महत्व दिया जाता था। संयम, सत्य, अहिंसा, दया, और शुचिता (पवित्रता) जैसे गुणों का विकास करना शिक्षा का मुख्य अंग था।
- **सर्वांगीण व्यक्तित्व का विकास (Holistic Personality Development):**विद्यार्थी के शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक और आध्यात्मिक पहलुओं को एक साथ विकसित किया जाता था।
- **सामाजिक एवं नागरिक कर्तव्यों का बोध (Social and Civic Duties):**शिक्षा विद्यार्थी को समाज का एक जिम्मेदार अंग बनाती थी। इसमें गृहस्थ जीवन के कर्तव्यों, यज्ञ, दान, और समाज सेवा के महत्व पर बल दिया जाता था।
- **संस्कृति एवं ज्ञान परंपरा का संरक्षण:**मुद्रण (Printing) तकनीक न होने के कारण वैदिक ज्ञान को कंठस्थ करके एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक पहुँचाना शिक्षा का एक प्रमुख उद्देश्य था।

2. गुरु-शिष्य परंपरा (The Teacher-Disciple Relationship)

गुरु-शिष्य परंपरा वैदिक शिक्षा प्रणाली का आधारस्तंभ थी। गुरुकुल एक ऐसा स्थान था जहाँ गुरु और शिष्य एक ही परिवार के सदस्यों की तरह रहते थे।

- **उपनयन संस्कार (Upanayana Samskara):**गुरुकुल में प्रवेश से पूर्व बालक का 'उपनयन संस्कार' होता था। इसका अर्थ है 'पास ले जाना' (गुरु के पास ले जाना)। इस संस्कार के बाद बालक 'द्विज' (दूसरा जन्म लेने वाला) कहलाता था—पहला जन्म माता के गर्भ से और दूसरा ज्ञान के माध्यम से गुरु के सानिध्य में।
- **गुरु का स्थान एवं भूमिका:**
    - गुरु को केवल एक शिक्षक नहीं, बल्कि आध्यात्मिक पिता माना जाता था जो अज्ञान रूपी अंधकार को हटाकर ज्ञान रूपी प्रकाश प्रदान करता था (*'गु' का अर्थ अंधकार, 'रु' का अर्थ प्रकाश*)।
    - गुरु स्वार्थी या व्यावसायिक नहीं होते थे; वे ज्ञान का दान निष्काम भाव से करते थे।
- **शिष्य के कर्तव्य:**
    - शिष्य को 'अन्तेवासी' (गुरु के पास रहने वाला) कहा जाता था।
    - शिष्य गुरुकुल के सभी दैनिक कार्यों (भिक्षा मांगना, समिधा/लकड़ी एकत्र करना, आश्रम की सफाई, गोसेवा) का निष्पादन करते थे। इससे उनमें श्रम का सम्मान, नम्रता, और अहंकार का त्याग होता था।

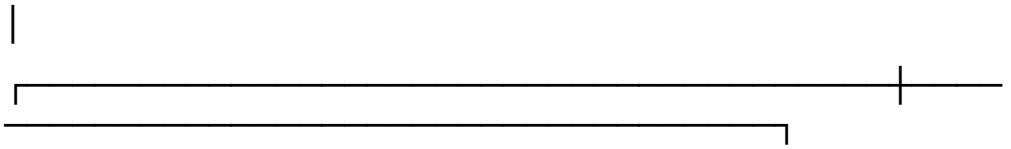
नोट

- **संबंधों की प्रगाढ़ता:**गुरु और शिष्य के बीच का संबंध वित्तीय या संविदात्मक (Contractual) नहीं था, बल्कि यह पितृवत, स्नेहपूर्ण, और पूर्ण निष्ठा पर आधारित था।

5.5.2 शिक्षण विधियाँ (Shruti, Manana, and Nididhyasana)

वैदिक और उपनिषद काल में मुद्रित पुस्तकों का अभाव था, इसलिए ज्ञान का हस्तांतरण मुख्य रूप से मौखिक और अनुभवात्मक (Oral and Experiential) पद्धतियों द्वारा होता था। उपनिषदों में ज्ञान को आत्मसात करने की तीन-स्तरीय वैज्ञानिक प्रक्रिया का वर्णन किया गया है:**श्रवण**, **मनन**, और**निदिध्यासन**।

उपनिषदकालीन त्रि-स्तरीय शिक्षण प्रक्रिया



1. श्रवण (Shravana) 2. मनन (Manana) 3. निदिध्यासन (Nididhyasana)

(सुनना एवं ग्रहण करना) (विचार-विमर्श एवं तर्क) (ध्यान एवं साक्षात् अनुभव)

1. श्रवण (Shravana / Listening and Reception)

'श्रवण' का अर्थ है गुरु के मुख से उच्चारित वेदों और शास्त्रों के ज्ञान को ध्यानपूर्वक सुनना और ग्रहण करना।

- **प्रक्रिया:**गुरु मंत्रों या सिद्धांतों का स्पष्ट उच्चारण करते थे, और शिष्य उनका सस्वर अनुकरण करते थे।
- **ध्वनि-विज्ञान (Phonetics):**इस चरण में स्वर, ताल, छंद और उच्चारण की शुद्धता (उदात्त, अनुदात्त, स्वरित) पर अत्यंत सूक्ष्म ध्यान दिया जाता था, ताकि मंत्रों का मूल अर्थ और प्रभाव सुरक्षित रहे।
- **शैक्षिक महत्व:**श्रवण की प्रक्रिया विद्यार्थी में एकाग्रता (Concentration) और सुनने के कौशल (Listening Skills) का उच्चतम स्तर विकसित करती थी।

2. मनन (Manana / Reflection and Logical Analysis)

केवल सुन लेना या रट लेना ज्ञान नहीं है; सुने गए ज्ञान पर स्वयं विचार करना और उसकी तार्किक परीक्षा करना 'मनन' कहलाता है।

- **प्रक्रिया:**इस चरण में शिष्य गुरु द्वारा बताए गए विचारों पर एकांत में चिंतन करता था। उसके मन में उठने वाली शंकाओं और प्रश्नों का समाधान गुरु के साथ प्रश्नोत्तर एवं संवाद (Dialogue) के माध्यम से किया जाता था।

नोट

- **संवाद और शास्त्रार्थ पद्धति:**उपनिषदों में ज्ञानवर्धक वाद-विवाद (Debates) और संवादों की समृद्ध परंपरा मिलती है (जैसे याज्ञवल्क्य और गार्गी का संवाद)।
- **शैक्षिक महत्व:**मनन विधि विद्यार्थी में अंधविश्वास के स्थान पर तर्कशक्ति (Reasoning), विश्लेषण (Analysis), और स्वतंत्र चिंतन (Critical Thinking) की क्षमता पैदा करती थी।

3. निदिध्यासन (Nididhyasana / Meditation and Assimilation)

यह अधिगम की उच्चतम और अंतिम अवस्था है। मनन द्वारा जब ज्ञान तार्किक रूप से सिद्ध हो जाता है, तब उसे अपने आचरण और चेतना में पूरी तरह उतारने के लिए 'निदिध्यासन' (गहन ध्यान) किया जाता है।

- **प्रक्रिया:**इस चरण में विद्यार्थी प्राप्त ज्ञान का निरंतर ध्यान (Meditation) और अभ्यास करता है, जिससे वह ज्ञान बौद्धिक स्तर से उठकर उसके जीवन का प्रत्यक्ष अनुभव (Direct Experience) बन जाता है।
- **परिणाम:**निदिध्यासन से अज्ञान का आवरण हट जाता है और विद्यार्थी को 'तत्वज्ञान' या आत्म-साक्षात्कार प्राप्त होता है।
- **शैक्षिक महत्व:**यह चरण आधुनिक शिक्षा के**'ज्ञान को जीवन से जोड़ने'**और**'आत्मीकरण' (Internalization of Knowledge)**के सिद्धांत के अनुरूप है।

अन्य सहायक शिक्षण विधियाँ

उपर्युक्त तीन मुख्य विधियों के अलावा वैदिक काल में निम्नलिखित विधियों का भी प्रयोग किया जाता था:

- **प्रश्नोत्तर एवं संवाद विधि (Question-Answer & Dialogue Method):**उपनिषद मुख्यतः गुरु और शिष्य के बीच हुए प्रश्नों और उत्तरों का संकलन हैं।
- **दृष्टांत एवं रूपक विधि (Illustrations and Analogies):**कठिन दार्शनिक प्रत्ययों को समझाने के लिए व्यावहारिक उदाहरणों (जैसे मिट्टी और घड़ा, सूत और कपड़ा) का उपयोग किया जाता था।
- **स्वाध्याय (Self-Study):**विद्यार्थियों को स्वयं अध्ययन करने और अपने ज्ञान का निरंतर पुनरावलोकन करने के लिए प्रेरित किया जाता था।

वैदिक शिक्षा व्यवस्था के प्रमुख गुण एवं सीमाएँ

मुख्य गुण (Merits):

1. **मुफ्त एवं सार्वभौमिक पहुँच:**शिक्षा के लिए कोई निश्चित शुल्क नहीं लिया जाता था; यह समाज के सहयोग और राजाओं के संरक्षण से चलती थी।

नोट

2. **पूर्ण आवासीय वातावरण (Residential Setup):**अनुशासन, स्वावलंबन और प्रकृति के सानिध्य में रहने का सुअवसर मिलता था।
3. **व्यवहार और मूल्यों पर बल:**केवल बौद्धिक विकास के स्थान पर चरित्र निर्माण को प्राथमिकता दी जाती थी।

सीमाएँ (Limitations):

1. **मौखिक परंपरा पर अति-निर्भरता:**लिखित साक्ष्यों के अभाव में ज्ञान के लुप्त होने या परिवर्तित होने का जोखिम रहता था।
2. **सीमित सामाजिक पहुँच:**कालांतर में वैदिक शिक्षा व्यवस्था में कठोरता आई और समाज के कुछ वर्गों तथा महिलाओं की शिक्षा का दायरा सीमित हो गया।

निष्कर्ष

वैदिक एवं उपनिषदकालीन शिक्षा व्यवस्था एक अत्यंत समृद्ध और वैज्ञानिक जीवन-दृष्टि पर आधारित थी। गुरु-शिष्य का पवित्र संबंध, अनुशासित आश्रम जीवन और 'श्रवण-मनन-निदिध्यासन' की त्रि-स्तरीय शिक्षण पद्धति यह सुनिश्चित करती थी कि ज्ञान केवल मस्तिष्क का बोझ न बने, बल्कि वह व्यक्ति की चेतना का अंग बन जाए। यह प्राचीन प्रणाली आधुनिक शिक्षा को यह सिखाती है कि शिक्षा का असली मकसद केवल परीक्षा पास करना नहीं, बल्कि मनुष्य का सर्वांगीण और नैतिक उत्थान करना है।

5.6 वैदिक ज्ञानमीमांसा की आधुनिक शिक्षा में प्रासंगिकता

21वीं सदी की आधुनिक शिक्षा प्रणाली मुख्य रूप से सूचना-प्रौद्योगिकी, वैज्ञानिक प्रगति, सूचना के तीव्र प्रसार और रोजगार-उन्मुख कौशलों पर केंद्रित है। यद्यपि इसने भौतिक समृद्धि और तकनीकी विकास के नए द्वार खोले हैं, किंतु इसके साथ ही आधुनिक शिक्षा प्रणाली में कुछ गंभीर चुनौतियाँ भी उभर कर आई हैं—जैसे मूल्यों का ह्रास, मानसिक तनाव, एकांगी बौद्धिक विकास, और पर्यावरणीय असंतुलन।

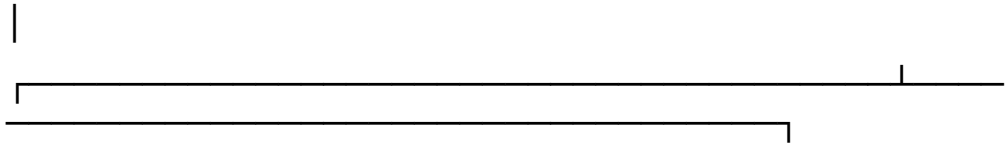
ऐसे समय में प्राचीन भारतीय ज्ञानमीमांसा (Vedic Epistemology) केवल एक ऐतिहासिक दर्शन नहीं रह जाती, बल्कि यह आधुनिक शिक्षा की कई अंतर्निहित समस्याओं का एक व्यावहारिक और संतुलित समाधान प्रस्तुत करती है। वैदिक ज्ञानमीमांसा की आधुनिक शिक्षा में प्रासंगिकता को निम्नलिखित प्रमुख बिंदुओं के अंतर्गत समझा जा सकता है:

1. परा और अपरा विद्या का समन्वय: संतुलित पाठ्यक्रम का आधार

आधुनिक शिक्षा प्रणाली मुख्यतः 'अपरा विद्या' (भौतिक, वैज्ञानिक और व्यावसायिक ज्ञान) पर जोर देती है। हम विद्यार्थियों को कुशल इंजीनियर, डॉक्टर, डेटा विश्लेषक और प्रबंधक बनाना तो सिखा रहे हैं, किंतु उन्हें एक संवेदनशील और नैतिक इंसान बनाना भूल रहे हैं।

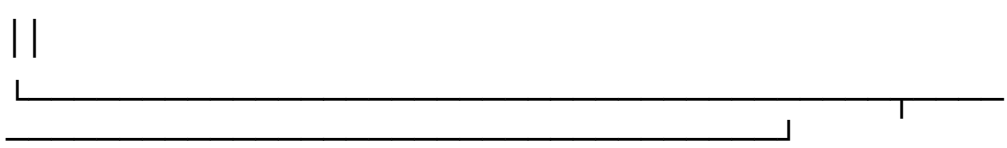
नोट

आधुनिक शिक्षा में संतुलन की आवश्यकता



अपरा विद्या (Current Focus) परा विद्या (Missing Link)

(तकनीक, विज्ञान, गणित, जीविकोपार्जन) (मूल्य, नैतिकता, आत्म-बोध, शांति)



समग्र एवं संतुलित शिक्षा

(Holistic & Balanced Education)

- **एकांगी विकास की रोकथाम:**केवल अपरा विद्या पर बल देने से व्यक्ति भौतिक रूप से तो समृद्ध हो जाता है, किंतु उसमें आंतरिक शांति और नैतिक दृष्टि का अभाव रहता है।
- **समग्रता (Holism):**वैदिक दर्शन सिखाता है कि शिक्षा में अपरा विद्या (तकनीक व विज्ञान) और परा विद्या (नैतिकता, आत्म-नियंत्रण व जीवन मूल्य) का संतुलित समावेश होना चाहिए। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 (NEP 2020) में भी इसी प्रकार के समग्र विकास (Holistic Development) पर विशेष बल दिया गया है।

2. प्रमाण शास्त्र और वैज्ञानिक दृष्टिकोण (Scientific Temper)

यह एक भ्रांति है कि वैदिक दर्शन केवल अंधविश्वास या आस्था पर आधारित है। वैदिक ज्ञानमीमांसा का 'प्रमाण शास्त्र' अत्यंत तार्किक और विश्लेषणात्मक है।

- **वस्तुनिष्ठता और प्रामाणिकता:**प्रत्यक्ष, अनुमान, और शब्द जैसे प्रमाण विद्यार्थियों को यह सिखाते हैं कि किसी भी सूचना को बिना जांचे-परखे स्वीकार नहीं करना चाहिए।
- **आलोचनात्मक सोच (Critical Thinking):**अनुमान प्रमाण में कार्य-कारण (Cause and Effect) और 'व्याप्ति' का सिद्धांत विद्यार्थियों में आगमनात्मक और निगमनात्मक तर्कशक्ति विकसित करता है। यह आज की STEM (Science, Technology, Engineering, and Mathematics) शिक्षा का मूल आधार है।
- **फर्जी खबरों (Fake News) के युग में प्रासंगिकता:**आज डिजिटल युग में सूचनाओं का अतिप्रवाह है। शब्द प्रमाण की कसौटी (आप्त पुरुष/प्रामाणिक

नोट

स्रोत) विद्यार्थियों को सत्य और भ्रामक जानकारियों के बीच अंतर करने में सक्षम बनाती है।

3. श्रवण, मनन और निदिध्यासन: आधुनिक शिक्षण शास्त्र (Pedagogy)

आधुनिक शिक्षा में 'रटने की प्रणाली' (Rote Learning) को एक बड़ी समस्या माना गया है। उपनिषदकालीन त्रि-स्तरीय शिक्षण पद्धति इस समस्या का वैज्ञानिक समाधान प्रस्तुत करती है:

चरण	वैदिक शिक्षण पद्धति	आधुनिक शिक्षण शास्त्र में प्रासंगिकता
1. श्रवण (Shravana)	ध्यानपूर्वक सुनना और ग्रहण करना	एकाग्रता, सक्रिय श्रवण (Active Listening) और सूचना बोध का विकास।
2. मनन (Manana)	तार्किक चिंतन, विश्लेषण एवं शंका-समाधान	आलोचनात्मक चिंतन (Critical Thinking), विचार-विमर्श और समस्या-समाधान।
3. निदिध्यासन (Nididhyasana)	ध्यानात्मक आत्मीकरण और व्यावहारिक प्रयोग	ज्ञान का आत्मीकरण (Internalization) और 'अनुभवजन्य अधिगम' (Experiential Learning)।

यह पद्धति दर्शाती है कि अधिगम (Learning) केवल कक्षा में सुनने तक सीमित नहीं है, बल्कि जब तक विद्यार्थी ज्ञान पर स्वयं चिंतन (Mindfulness) नहीं करता और उसे अपने आचरण में नहीं ढालता, तब तक अधिगम पूर्ण नहीं होता।

4. ऋत की अवधारणा और पर्यावरणीय चेतना (Environmental Consciousness)

आज संपूर्ण विश्व जलवायु परिवर्तन और पर्यावरणीय संकट से जूझ रहा है। वैदिक दर्शन में 'ऋत' (Cosmic Order) की अवधारणा मनुष्य और प्रकृति के बीच के अटूट संबंध को रेखांकित करती है।

- **प्रकृति के साथ तादात्म्य:**वैदिक परंपरा सिखाती है कि प्रकृति शोषित करने की वस्तु नहीं है, बल्कि यह एक नियमबद्ध सार्वभौमिक व्यवस्था है जिसका मनुष्य भी एक अंग है।

नोट

- **पर्यावरण शिक्षा का आधार:**ऋत का सिद्धांत विद्यार्थियों में 'पारिस्थितिकीय संवेदनशीलता' (Ecological Sensitivity) पैदा करता है, जो सतत विकास (Sustainable Development) के लिए अनिवार्य है।

5. चरित्र निर्माण और मूल्य आधारित शिक्षा (Value Education)

आधुनिक समाज में बढ़ती अपराध दर, भ्रष्टाचार और मानसिक अवसाद का मुख्य कारण शिक्षा में मूल्यों का अभाव है।

- **पुरुषार्थ चतुष्टय का संतुलन:**वैदिक ज्ञानमीमांसा केवल 'अर्थ' (धन) और 'काम' (इच्छाओं) को जीवन का लक्ष्य नहीं मानती, बल्कि इन्हें 'धर्म' (नैतिकता) के नियंत्रण में रखने की सलाह देती है।
- **मानसिक स्वास्थ्य एवं तनाव प्रबंधन:** 'कर्म सिद्धांत' विद्यार्थी को परिणाम की चिंता में टूटने के बजाय अपने कर्तव्यों (पुरुषार्थ) पर ध्यान केंद्रित करना सिखाता है। यह आधुनिक समय में छात्रों में परीक्षा के तनाव और डिप्रेशन को दूर करने में सहायक है।

निष्कर्ष

वैदिक ज्ञानमीमांसा को अतीत का एक बंद पृष्ठ मानने के बजाय आधुनिक शिक्षा के पुनरुद्धार के एक उत्प्रेरक (Catalyst) के रूप में देखा जाना चाहिए। यह प्रणाली तकनीक और नैतिकता, भौतिक समृद्धि और आध्यात्मिक शांति, तथा तर्क और अंतर्दृष्टि के बीच एक सुंदर संतुलन स्थापित करती है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 (NEP 2020) में भारतीय ज्ञान प्रणाली (Indian Knowledge Systems - IKS) को शामिल करने का मुख्य उद्देश्य यही है कि हम आधुनिक तकनीकी ज्ञान प्राप्त करने के साथ-साथ अपनी इस कालजयी ज्ञानमीमांसीय दृष्टि से जुड़े रहें, जिससे एक संवेदनशील, तार्किक और सर्वांगीण समाज का निर्माण हो सके।

1. वैदिक दर्शन में 'ऋत' (Rta) की अवधारणा का क्या अर्थ है?

(A) केवल धार्मिक कर्मकांड
(B) ब्रह्मांडीय और नैतिक व्यवस्था (Cosmic Order)
(C) यज्ञ की आहुति
(D) भौतिक धन

2. भारतीय ज्ञानमीमांसा में 'प्रमाण' का क्या अर्थ है?

(A) यथार्थ ज्ञान प्राप्त करने का साधन
(B) केवल अनुमान लगाना
(C) तर्कहीन बातें करना
(D) केवल शब्द प्रमाण

3. उपनिषदों का मुख्य प्रतिपाद्य विषय क्या है?

(A) केवल युद्ध नीतियाँ

नोट

(B) ब्रह्म और आत्मा का ज्ञान (आध्यात्मिक चिंतन)
(C) व्यापारिक नियम
(D) कर्मकांडीय बलि

4. भारतीय परंपरा में 'पुरुषार्थ चतुष्टय' में कौन-कौन शामिल हैं?
(A) धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष
(B) सत्य, अहिंसा, अस्तेय, अपरिग्रह
(C) कर्म, ज्ञान, भक्ति, योग
(D) ज्ञान, दर्शन, चरित्र, तप

5. परा विद्या और अपरा विद्या का उल्लेख किसमें मिलता है?
(A) उपनिषदों में
(B) पाश्चात्य दर्शन में
(C) यथार्थवाद में
(D) अस्तित्ववाद में

5.7 सारांश (Summary)

- **वैदिक परंपरा एवं साहित्य:**वैदिक परंपरा भारतीय दर्शन और शिक्षाशास्त्र की मूल आधारशिला है। वैदिक साहित्य को चार भागों—संहिता, ब्राह्मण, आरण्यक और उपनिषद में विभाजित किया जाता है। उपनिषद (वेदांत) ज्ञानमीमांसीय चिंतन के उच्चतम स्तर को दर्शाते हैं।
- **ऋत और कर्म सिद्धांत:** 'ऋत' सार्वभौमिक प्राकृतिक और नैतिक व्यवस्था का प्रतिनिधित्व करता है, जबकि 'कर्म का सिद्धांत' कार्य-कारण नियम पर आधारित है जो मनुष्य को अपने आचरण के प्रति पूर्ण उत्तरदायी बनाता है।
- **ज्ञान का द्विस्तरीय रूप:**उपनिषदों के अनुसार ज्ञान दो प्रकार का होता है—अपरा विद्या (व्यावहारिक, वैज्ञानिक एवं लौकिक ज्ञान) तथा परा विद्या (परम सत्य, ब्रह्म और आत्म-साक्षात्कार का ज्ञान)।
- **प्रमाण व्यवस्था:**यथार्थ ज्ञान (प्रमा) की प्राप्ति के लिए भारतीय ज्ञानमीमांसा में ६ मुख्य प्रमाण स्वीकार किए गए हैं—प्रत्यक्ष, अनुमान, शब्द, उपमान, अर्थापत्ति और अनुपलब्धता।
- **वैदिक शिक्षा प्रणाली:**वैदिक शिक्षा व्यवस्था का मुख्य उद्देश्य मोक्ष, चरित्र निर्माण और सर्वांगीण विकास था। गुरुकुल परंपरा में 'श्रवण' (सुनना), 'मनन' (तार्किक विचार) और 'निदिध्यासन' (ध्यानात्मक आत्मीकरण) की प्रक्रिया द्वारा अधिगम पूरा होता था।
- **आधुनिक प्रासंगिकता:**वैदिक ज्ञानमीमांसा आधुनिक शिक्षा को वैज्ञानिक तर्कशीलता (प्रमाण शास्त्र), पर्यावरण चेतना (ऋत) और मूल्य आधारित संतुलित शिक्षा (परा-अपरा विद्या का समन्वय) प्रदान करने में अत्यंत प्रासंगिक है।

नोट

5.8 महत्वपूर्ण शब्दावली (Key Terms)

- **वेद (Veda):** 'विद्' धातु से बना शब्द जिसका अर्थ 'ज्ञान' है; भारतीय दर्शन के प्राचीनतम आधार ग्रंथ।
- **उपनिषद (Upanishad):**गुरु के समीप निष्ठापूर्वक बैठकर प्राप्त किया जाने वाला गूढ़ आध्यात्मिक एवं ज्ञानमीमांसीय ज्ञान।
- **ऋत (Rta):**ब्रह्मांडीय, प्राकृतिक और नैतिक नियमों की सार्वभौमिक व्यवस्था।
- **परा विद्या (Para Vidya):**आत्म-साक्षात्कार, ब्रह्म और परम सत्य से संबंधित आध्यात्मिक ज्ञान।
- **अपरा विद्या (Apara Vidya):**भौतिक जगत, विज्ञान, भाषा, तर्क और आजीविका से संबंधित व्यावहारिक ज्ञान।
- **प्रमा (Prama):**यथार्थ, असंदिग्ध और नवीन सत्य ज्ञान।
- **प्रमाण (Pramana):**यथार्थ ज्ञान (प्रमा) प्राप्त करने के वैध साधन (जैसे- प्रत्यक्ष, अनुमान, शब्द)।
- **व्याप्ति (Vyapti):**हेतु (धुआँ) और साध्य (आग) के बीच का नियत और अविनाभाव संबंध, जो अनुमान प्रमाण का आधार है।
- **श्रवण (Shravana):**गुरु द्वारा उच्चारित ज्ञान को ध्यानपूर्वक सुनना।
- **मनन (Manana):**सुने गए ज्ञान पर तर्कपूर्ण चिंतन और शंका-समाधान करना।
- **निदिध्यासन (Nididhyasana):**ज्ञान को आचरण और चेतना में उतारने हेतु किया जाने वाला निरंतर ध्यान।

5.9 बोध प्रश्नों के उत्तर

उत्तर: (B) ब्रह्मांडीय और नैतिक व्यवस्था (Cosmic Order)

उत्तर: (A) यथार्थ ज्ञान प्राप्त करने का साधन

उत्तर: (B) ब्रह्म और आत्मा का ज्ञान (आध्यात्मिक चिंतन)

उत्तर: (A) धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष

उत्तर: (A) उपनिषदों में

5.10 सुझावित अध्ययन सामग्री – मुक्त शैक्षिक संसाधन

1. eGyanKosh: Epistemology in Indian Philosophy (IGNOU)

नोट

2. Stanford Encyclopedia of Philosophy: Epistemology in Classical Indian Philosophy
3. Internet Encyclopedia of Philosophy: Indian Epistemology
4. Swayam: Indian Philosophical Traditions
5. OER Commons: Foundations of Vedic Philosophy

5.11 संदर्भ एवं विस्तृत अध्ययन हेतु पुस्तकें (References and Further Readings)

- शर्मा, चंद्रधर (2018). *भारतीय दर्शन: आलोचनात्मक सर्वेक्षण*. मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली।
- पांडेय, रामशकल (2015). *शिक्षा के दार्शनिक एवं समाजशास्त्रीय आधार*. अग्रवाल पब्लिकेशंस, आगरा।
- राधाकृष्णन, सर्वपल्ली (2010). *भारतीय दर्शन (खंड 1 एवं 2)*. राजपाल एंड संस, दिल्ली।
- सक्सेना, एन.आर. (2012). *शैक्षिक दर्शन एवं समाजशास्त्र*. आर. लाल बुक डिपो, मेरठ।
- Dasgupta, S. N. (1922). *A History of Indian Philosophy (Vol. 1)*. Cambridge University Press.
- Hiriyanna, M. (1993). *Outlines of Indian Philosophy*. Motilal Banarsidass, Delhi.

5.12 अभ्यास प्रश्न (Self-Assessment Questions)

वस्तुनिष्ठ एवं लघु उत्तरीय प्रश्न:

1. 'वेद' शब्द किस धातु से बना है और इसका शाब्दिक अर्थ क्या है?
2. परा विद्या और अपरा विद्या में मुख्य अंतर क्या है?
3. उपनिषदकालीन त्रि-स्तरीय शिक्षण पद्धतियों के नाम लिखिए।
4. 'प्रमा' और 'प्रमाण' से आप क्या समझते हैं?
5. ऋत (Rta) का सिद्धांत किस प्रकार की व्यवस्था को दर्शाता है?

निबंधात्मक एवं विश्लेषणात्मक प्रश्न:

1. वैदिक साहित्य के चार प्रमुख भागों का संक्षिप्त विवरण देते हुए शिक्षा में उपनिषदों के योगदान की चर्चा कीजिए।

नोट

2. भारतीय ज्ञानमीमांसा के प्रमुख ६ प्रमाणों का सोदाहरण वर्णन कीजिए।
3. वैदिक एवं उपनिषदकालीन शिक्षण विधि (श्रवण, मनन एवं निदिध्यासन) की प्रक्रिया की व्याख्या कीजिए तथा इसकी आधुनिक शिक्षण शास्त्र में उपयोगिता सिद्ध कीजिए।
4. "वैदिक ज्ञानमीमांसा आधुनिक शिक्षा की एकांगी प्रवृत्ति और मूल्य ह्रास को रोकने में सक्षम है।" इस कथन की समीक्षा कीजिए।

नोट

इकाई 6
भारतीय दर्शन की आस्तिक/आर्थोडॉक्स धाराएँ (सांख्य एवं वेदांत)

इकाई संरचना (Unit Structure)

6.1 प्रस्तावना (Introduction)
6.2 उद्देश्य (Objectives)
6.3 भारतीय दर्शन में आस्तिकधारा का अर्थ एवं विशेषताएँ
6.4 सांख्य दर्शन: मूल सिद्धांत एवं शैक्षिक निहितार्थ
- 6.4.1 सांख्य दर्शन की अवधारणा एवं प्रवर्तक
- 6.4.2 द्वैतवादी सिद्धांत: पुरुष एवं प्रकृति
- 6.4.3 त्रिगुण सिद्धांत (सत्व, रज, तम)
- 6.4.4 सांख्य दर्शन के अनुसार ज्ञानमीमांसा (ज्ञान प्राप्ति के साधन)
- 6.4.5 सांख्य दर्शन के शैक्षिक निहितार्थ (उद्देश्य, पाठ्यक्रम एवं शिक्षण विधियाँ)

6.5 वेदांत दर्शन: मूल सिद्धांत एवं शैक्षिक निहितार्थ
- 6.5.1 वेदांत दर्शन का परिचय एवं ऐतिहासिक पृष्ठभूमि
- 6.5.2 अद्वैत वेदांत: ब्रह्म, जीव एवं माया की अवधारणा
- 6.5.3 वेदांत के प्रमुख प्रकार (अद्वैत, विशिष्टाद्वैत एवं द्वैत का संक्षिप्त परिचय)
- 6.5.4 वेदांत के अनुसार ज्ञान एवं मुक्ति (अविद्या बनाम विद्या)
- 6.5.5 वेदांत दर्शन के शैक्षिक निहितार्थ (उद्देश्य, अनुशासन, शिक्षक-शिक्षार्थी संबंध)

6.6 सांख्य एवं वेदांत दर्शन का तुलनात्मक अध्ययन
6.7 सारांश (Summary)
6.8 पारिभाषिक शब्दावली (Glossary)
6.9 बोध प्रश्नों के उत्तर
6.10 सुझावित अध्ययन सामग्री – मुक्त शैक्षिक संसाधन
6.11 संदर्भ एवं संदर्भ ग्रंथ सूची (References & Suggested Readings)
6.12 अभ्यास कार्य एवं प्रश्न (Exercises and Questions)
- 6.12.1 स्व-मूल्यांकन प्रश्न (Self-Assessment Questions)
- 6.12.2 वस्तुनिष्ठ प्रश्न (Multiple Choice Questions)
- 6.12.3 लघु उत्तरीय प्रश्न (Short Answer Questions)
- 6.12.4 दीर्घ उत्तरीय प्रश्न (Long Answer / Essay Type Questions)

नोट

6.1 प्रस्तावना (Introduction)

भारतीय दार्शनिक चिंतन परंपरा अत्यंत समृद्ध, प्राचीन और विविधतापूर्ण रही है। सत्य, ईश्वर, आत्मा, जगत और जीवन के अंतिम लक्ष्य (मोक्ष) की खोज में भारतीय ऋषियों एवं चिंतकों ने चिंतन की दो प्रमुख धाराएँ प्रस्तुत कीं—**आस्तिक (Orthodox)**और**नास्तिक (Heterodox)**।

सामान्य व्यावहारिक भाषा में 'आस्तिक' का अर्थ ईश्वर में विश्वास रखने वाले से लगाया जाता है, किंतु भारतीय दर्शन शास्त्र के अंतर्गत 'आस्तिक' शब्द का पारिभाषिक अर्थ**"वेदों की प्रामाणिकता को स्वीकार करने वाले दर्शन"**से है। जो दर्शन वेदों को अंतिम प्रमाण और ज्ञान का सर्वोच्च स्रोत मानते हैं, उन्हें आस्तिक/वैदिक दर्शन कहा जाता है। भारतीय दर्शन की इस आस्तिक धारा के अंतर्गत छह प्रमुख दर्शन आते हैं, जिन्हें**'षड्दर्शन' (Six Systems of Indian Philosophy)**कहा जाता है—न्याय, वैशेषिक, सांख्य, योग, मीमांसा और वेदांत।

प्रस्तुत इकाई (इकाई 6) में हम आस्तिक धारा के दो अत्यंत महत्त्वपूर्ण एवं प्रभावशाली दर्शनों—**सांख्य दर्शन**और**वेदांत दर्शन**का विस्तृत अध्ययन करेंगे।

- **सांख्य दर्शन**भारतीय चिंतन का सबसे प्राचीन दर्शन माना जाता है, जो संपूर्ण ब्रह्मांड की उत्पत्ति और विकास की व्याख्या 'पुरुष' (चेतना) और 'प्रकृति' (पदार्थ) के द्वैतवादी सिद्धांत तथा त्रिगुणों के माध्यम से करता है।
- दूसरी ओर, **वेदांत दर्शन** (जो उपनिषदों का सार है) मुख्य रूप से 'अद्वैत' (ब्रह्म और जीव की अभिन्नता) का प्रतिपादन करता है और "अहम ब्रह्मास्मि" तथा "तत्त्वमसि" जैसे महावाक्यों के माध्यम से ज्ञान और मोक्ष का मार्ग प्रशस्त करता है।

शिक्षा केवल सूचनाओं का संग्रह नहीं है, बल्कि यह व्यक्ति के सर्वांगीण विकास और आत्म-साक्षात्कार (Self-realization) का साधन है। इस दृष्टि से सांख्य और वेदांत दर्शन के सिद्धांत आधुनिक शिक्षा शास्त्र के लिए अत्यंत प्रासंगिक हैं। इस इकाई में इन दोनों दर्शनों के तात्विक, ज्ञानमीमांसीय एवं मूल्यमीमांसीय पहलुओं के साथ-साथ उनके शैक्षिक अनुप्रयोगों का विस्तार से अध्ययन किया जाएगा।

6.2 उद्देश्य (Objectives)

नोट

इस इकाई का अध्ययन करने के पश्चात शिक्षार्थी (विद्यार्थी) निम्नलिखित विषयों में सक्षम हो सकेंगे:

- **आस्तिक दर्शन को परिभाषित करने में:**भारतीय दर्शन के संदर्भ में 'आस्तिक' (आर्थोडॉक्स) धारा के वास्तविक अर्थ, वेदों की प्रामाणिकता और इसकी मुख्य विशेषताओं को स्पष्ट कर सकेंगे।
- **सांख्य दर्शन की व्याख्या करने में:**सांख्य दर्शन के संस्थापक (महर्षि कपिल), द्वैतवादी सिद्धांत (पुरुष एवं प्रकृति) और त्रिगुणों (सत्व, रज, तम) की अवधारणा को समझा सकेंगे।
- **वेदांत दर्शन के मूल सिद्धांतों का विश्लेषण करने में:**वेदांत (उत्तर मीमांसा) की पृष्ठभूमि, अद्वैत वेदांत के अनुसार ब्रह्म, जीव तथा माया के संबंधों की व्याख्या कर सकेंगे।
- **ज्ञानमीमांसा को समझने में:**सांख्य एवं वेदांत दर्शन द्वारा स्वीकार किए गए ज्ञान प्राप्ति के साधनों (प्रमाणों) का विश्लेषणात्मक विवरण दे सकेंगे।
- **शैक्षिक निहितार्थों की पहचान करने में:**सांख्य एवं वेदांत दर्शन के सिद्धांतों का आधुनिक शिक्षा के उद्देश्यों, पाठ्यक्रम, शिक्षण विधियों और शिक्षक-शिक्षार्थी संबंधों पर पड़ने वाले प्रभावों का मूल्यांकन कर सकेंगे।

तुलनात्मक समझ विकसित करने में:सांख्य (द्वैतवाद) और वेदांत (अद्वैत/विशिष्टाद्वैत) के बीच की समानताओं और अंतरों को स्पष्ट कर सकेंगे।

6.3 भारतीय दर्शन में आस्तिकधारा का अर्थ एवं विशेषताएँ

भारतीय दर्शन परंपरा विश्व की प्राचीनतम और सर्वाधिक समृद्ध दार्शनिक चिंतन धाराओं में से एक है। इसमें सत्य, जीवन, ईश्वर, आत्मा और मोक्ष जैसे गूढ़ विषयों पर गहराई से विचार किया गया है। भारतीय दार्शनिकों ने इन विचारों को मुख्य रूप से दो प्रमुख वर्गों

नोट

में विभाजित किया है:**आस्तिक (Orthodox/Vedic)**और**नास्तिक (Heterodox/Non-Vedic)**। इस विभाजन का आधार ईश्वर में विश्वास नहीं, बल्कि **वेदों की प्रामाणिकता** और उनका प्रामाण्य स्वीकार करना है।

1. 'आस्तिक' शब्द का दार्शनिक एवं पारिभाषिक अर्थ

सामान्य व्यावहारिक अर्थ में 'आस्तिक' उसे कहा जाता है जो ईश्वर या किसी सर्वशक्तिमान सत्ता के अस्तित्व में विश्वास रखता है, और 'नास्तिक' उसे कहते हैं जो ईश्वर को नहीं मानता। परंतु भारतीय दर्शनशास्त्र के पारिभाषिक संदर्भ में यह परिभाषा पूरी तरह लागू नहीं होती।

भारतीय दर्शनशास्त्र में:

- **आस्तिक दर्शन:**वह दर्शन है जो**वेदों की प्रामाणिकता (Authority of the Vedas)**को स्वीकार करता है, वेदों को 'अपौरुषेय' (किसी मनुष्य द्वारा न रचा गया) तथा ज्ञान का परम स्रोत मानता है।
- **नास्तिक दर्शन:**वह दर्शन है जो वेदों की प्रामाणिकता को अस्वीकार करता है और उन्हें अंतिम सत्य नहीं मानता (जैसे—चार्वाक, बौद्ध और जैन दर्शन)।

इस दार्शनिक परिभाषा का एक अनोखा उदाहरण **सांख्य दर्शन** और **मीमांसा दर्शन** हैं। सांख्य और पूर्व-मीमांसा दर्शन ईश्वर की सत्ता को स्वीकार नहीं करते (या ईश्वर के अस्तित्व पर मौन रहते हैं), फिर भी वेदों की प्रामाणिकता को स्वीकार करने के कारण इन्हें 'आस्तिक दर्शन' की श्रेणी में ही रखा जाता है। इसी प्रकार, बौद्ध और जैन दर्शन नैतिकता और पुनर्जन्म में विश्वास रखते हुए भी वेदों को न मानने के कारण नास्तिक दर्शन कहलाते हैं।

महर्षि पाणिनि ने अपने व्याकरण ग्रंथ 'अष्टाध्यायी' में लिखा है:**"अस्ति नास्ति दिष्टं मतिः"** (अर्थात जो परलोक, आत्मा या वेदों के अस्तित्व को मानता है, वही आस्तिक है)।

2. षड्दर्शन (Six Systems of Indian Philosophy)

नोट

भारतीय दर्शन की आस्तिक धारा के अंतर्गत छह प्रमुख दर्शन आते हैं, जिन्हें सामूहिक रूप से'**षड्दर्शन**'कहा जाता है। ये छह दर्शन तीन युगलों (Pairs) में विभाजित हैं, जिनका आपस में घनिष्ठ संबंध है:

1. **न्याय दर्शन (महर्षि गौतम):**यह तर्कशास्त्र और प्रमाणमीमांसा पर आधारित है।
2. **वैशेषिक दर्शन (महर्षि कणाद):**यह ब्रह्मांड के भौतिक तत्वों और परमाणुवाद का विश्लेषण करता है।
3. **सांख्य दर्शन (महर्षि कपिल):**यह पुरुष (चेतना) और प्रकृति (पदार्थ) के द्वैतवादी सिद्धांत पर आधारित है।
4. **योग दर्शन (महर्षि पतंजलि):**यह सांख्य के व्यावहारिक पक्ष और चित्त-वृत्ति निरोध का मार्ग बताता है।
5. **मीमांसा/पूर्व मीमांसा (महर्षि जैमिनी):**यह वेदों के कर्मकांडीय पक्ष और यज्ञों की व्याख्या करता है।
6. **वेदांत/उत्तर मीमांसा (महर्षि वादरायण/व्यास):**यह उपनिषदों के ज्ञानकांड पर आधारित है और ब्रह्म-जीव के संबंधों की व्याख्या करता है।

3. आस्तिक दर्शन की प्रमुख विशेषताएँ

भारतीय दर्शन की आस्तिक धारा की मौलिक विशेषताएँ निम्नलिखित बिंदुओं के अंतर्गत समझी जा सकती हैं:

(क) वेदों की परम प्रामाणिकता

आस्तिक दर्शन वेदों को ज्ञान का सर्वोच्च और अचूक स्रोत मानते हैं। इनका मानना है कि वेद किसी व्यक्ति विशेष के विचारों की उपज नहीं हैं, बल्कि वे ऋषियों द्वारा ध्यान की अवस्था में साक्षात्कृत 'अपौरुषेय' सत्य हैं। यद्यपि सभी छह आस्तिक दर्शनों का तर्क और दृष्टिकोण अलग है, किंतु उन सभी की नींव वेदों के सिद्धांतों पर ही टिकी है।

(ख) आत्मा की अमरता और नित्यता

नोट

आस्तिक धारा के सभी दर्शन (सांख्य, योग, न्याय, वैशेषिक, मीमांसा और वेदांत) आत्मा के अस्तित्व को स्वीकार करते हैं। आत्मा को अजर, अमर, नित्य और देह (शरीर) से भिन्न माना गया है। शरीर का नाश होने पर भी आत्मा का नाश नहीं होता; वह केवल वस्त्र की भाँति नया शरीर धारण करती है।

(ग) कर्म और पुनर्जन्म का सिद्धांत

आस्तिक दर्शन 'कार्य-कारण' के नियम पर आधारित कर्म के सिद्धांत को स्वीकार करता है। मनुष्य जैसा कर्म करता है, उसे वैसा ही फल (शुभ या अशुभ) भोगना पड़ता है। यही कर्म फल आत्मा को जन्म और मृत्यु के चक्र में बाँधे रखता है। जब तक संचित कर्मों का क्षय नहीं होता, तब तक पुनर्जन्म की प्रक्रिया चलती रहती है।

(घ) मोक्ष (परम पुरुषार्थ) की अवधारणा

भारतीय चिंतन में जीवन के चार पुरुषार्थ बताए गए हैं—धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष। इनमें से 'मोक्ष' (मुक्ति/अपवर्ग/कैवल्य) को जीवन का अंतिम और सर्वोच्च लक्ष्य माना गया है। आस्तिक धारा के अनुसार, मोक्ष का अर्थ केवल दुःखों का अंत होना नहीं है, बल्कि अज्ञान के बंधन से मुक्त होकर अपनी वास्तविक स्वरूपगत स्थिति (आत्मा या ब्रह्म) को प्राप्त कर लेना है।

(ङ) दुःख की त्रिविध अवधारणा

सांख्य और वेदांत सहित आस्तिक दर्शन मानव जीवन में तीन प्रकार के दुःखों की उपस्थिति स्वीकार करते हैं:

1. **आध्यात्मिक दुःख:**जो स्वयं के शारीरिक या मानसिक कारणों से उत्पन्न होते हैं (जैसे—बीमारी, चिंता, क्रोध)।
2. **आधिभौतिक दुःख:**जो अन्य जीवों या बाह्य भौतिक वस्तुओं के कारण होते हैं (जैसे—सप का काटना, शत्रु द्वारा कष्ट)।
3. **आधिदैविक दुःख:**जो प्राकृतिक आपदाओं या अमानवीय शक्तियों से होते हैं (जैसे—भूकंप, बाढ़, अतिवृष्टि)।

इन तीनों दुःखों से आत्यंतिक (स्थायी) मुक्ति पाना ही मोक्ष का मार्ग प्रस्तुत करता है।

नोट

(च) गुरु-शिष्य परंपरा और साधना मार्ग

आस्तिक दर्शन केवल बौद्धिक विमर्श नहीं हैं, बल्कि ये जीवन जीने की एक अनुशासनात्मक पद्धति हैं। ज्ञान की प्राप्ति के लिए गुरु के मार्गदर्शन, श्रवण (सुनना), मनन (विचार करना) और निदिध्यासन (ध्यान लगाना) को अत्यंत आवश्यक माना गया है।

4. आस्तिक दर्शन की ज्ञानमीमांसा एवं प्रमाण विचार

यथार्थ ज्ञान (प्रमा) की प्राप्ति के लिए आस्तिक दर्शनों ने विभिन्न प्रमाणों को स्वीकार किया है:

- **प्रत्यक्ष प्रमाण (Perception):**इंद्रियों द्वारा प्राप्त ज्ञान।
- **अनुमान प्रमाण (Inference):**तर्क और पूर्व ज्ञान के आधार पर निकाला गया निष्कर्ष।
- **शब्द प्रमाण (Verbal Testimony):**वेदों के वाक्य या आप्त पुरुषों (सच्चे और ज्ञानवान व्यक्तियों) के कथन।

सांख्य दर्शन प्रत्यक्ष, अनुमान और शब्द—इन तीनों प्रमाणों को स्वीकार करता है, जबकि वेदांत दर्शन छह प्रमाणों (प्रत्यक्ष, अनुमान, शब्द, उपमान, अर्थापत्ति, अनुपलब्धि) को ज्ञान प्राप्ति का साधन मानता है।

5. शिक्षा में आस्तिकधारा का महत्त्व एवं योगदान

आस्तिक धारा के सिद्धांतों का आधुनिक शिक्षाशास्त्र में गहरा प्रभाव है:

- **चरित्र निर्माण और नैतिक शिक्षा:**आस्तिक दर्शन शिक्षा का मुख्य उद्देश्य केवल साक्षरता या जीविकोपार्जन नहीं, बल्कि चरित्र निर्माण और नैतिक मूल्यों का विकास मानता है।
- **अनुशासन और संयम:**योग और वेदांत के माध्यम से विद्यार्थी में आत्म-नियंत्रण, ध्यान और मानसिक एकाग्रता का विकास होता है।

नोट

- **सर्वांगीण विकास:**यह दर्शन मनुष्य के शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक और आध्यात्मिक—चारों पक्षों के संतुलित विकास पर बल देता है।
- **शिक्षक का आदरणीय स्थान:**आस्तिक परंपरा में शिक्षक (गुरु) को केवल सूचना देने वाला नहीं, बल्कि अज्ञान के अंधकार से प्रकाश की ओर ले जाने वाला पथ-प्रदर्शक माना गया है।

निष्कर्ष

संक्षेप में, भारतीय दर्शन की आस्तिक धारा वेदों की नींव पर खड़ी एक ऐसी विचार-परंपरा है, जो मनुष्य को उसके क्षुद्र 'अहं' से उठाकर 'परम सत्य' (ब्रह्म या शुद्ध चेतना) से जोड़ती है। सांख्य का द्वैतवाद हो या वेदांत का अद्वैतवाद, इन सभी दर्शनों का मुख्य ध्येय मानव को अज्ञान, बंधन और दुःखों से मुक्त कर उसे परम ज्ञान और शांति की ओर ले जाना है।

यहाँ इकाई 6: भारतीय दर्शन की आस्तिक / आर्थोडॉक्स धाराएँ (सांख्य एवं वेदांत) का विस्तृत उप-अनुभाग प्रस्तुत है।

6.4 सांख्य दर्शन: मूल सिद्धांत एवं शैक्षिक निहितार्थ

सांख्य दर्शन भारतीय चिंतन परंपरा का सबसे प्राचीन एवं व्यवस्थित आस्तिक दर्शन माना जाता है। 'सांख्य' शब्द का उद्भव 'संख्या' से हुआ है, जिसका अर्थ है—सम्यक ज्ञान (सच्चा और विवेकपूर्ण ज्ञान) तथा तत्वों की सही संख्या का निरूपण। इस दर्शन का मुख्य उद्देश्य मनुष्य को तीनों प्रकार के दुःखों (आध्यात्मिक, आधिभौतिक, आधिदैविक) से स्थायी मुक्ति दिलाना है।

6.4.1 सांख्य दर्शन की अवधारणा एवं प्रवर्तक

- **प्रवर्तक:**सांख्य दर्शन के मूल संस्थापक**महर्षि कपिल**हैं। उनके द्वारा रचित 'सांख्यसूत्र' इस दर्शन का आधार स्तंभ है। बाद में ईश्वरकृष्ण ने 'सांख्यकारिका' नामक प्रसिद्ध ग्रंथ लिखा, जो सांख्य के सिद्धांतों का सबसे स्पष्ट और प्रमाणिक विवेचन प्रस्तुत करता है।

नोट

- **निरीश्वरवादी आस्तिक दर्शन:**सांख्य दर्शन वेदों की प्रामाणिकता को स्वीकार करता है, इसलिए यह 'आस्तिक' है। किंतु ब्रह्मांड की सृष्टि के लिए यह किसी ईश्वर की आवश्यकता स्वीकार नहीं करता, बल्कि इसे प्रकृति और पुरुष के संयोग का परिणाम मानता है। इसीलिए इसे 'निरीश्वर सांख्य' भी कहा जाता है।

6.4.2 द्वैतवादी सिद्धांत: पुरुष एवं प्रकृति

सांख्य दर्शन एक**द्वैतवादी (Dualistic)**दर्शन है। इसके अनुसार संपूर्ण ब्रह्मांड का निर्माण दो अनादि, अनंत और स्वतंत्र तत्वों से मिलकर हुआ है:

तत्व	**प्रकृति (Matter/Nature)**	**पुरुष (Pure Consciousness/Self)**
स्वरूप	अचेतन, जड़, और क्रियाशील	नित्य चेतन, निष्क्रिय, और अकर्ता
भूमिका	सृष्टि का उपादान कारण (सृष्टि का निर्माण इसी से होता है)	केवल दृष्टा (साक्षी) और भोक्ता
संख्या	एक (संपूर्ण ब्रह्मांड में प्रकृति एक ही है)	अनेक (प्रत्येक जीव में पृथक पुरुष/आत्मा है)
गुण	त्रिगुणात्मक (सत्व, रज, तम से निर्मित)	निर्गुण, त्रिगुणातीत और अनावृत

सृष्टि चक्र (Creation Process):

सृष्टि का प्रारंभ तब होता है जब 'पुरुष' और 'प्रकृति' का संयोग होता है। सांख्य में इसे**'पंगु-अंध न्याय'** (लंगड़े और अंधे व्यक्ति का सहयोग) के रूप में समझाया गया है—प्रकृति अंधे व्यक्ति की तरह जड़ पर क्रियाशील है, और पुरुष लंगड़े व्यक्ति की तरह चेतन पर निष्क्रिय। जब दोनों पास आते हैं, तो प्रकृति में हलचल शुरू होती है और 25 तत्वों के विकास का क्रम (Evolution) आरंभ होता है।

6.4.3 त्रिगुण सिद्धांत (सत्व, रज, तम)

प्रकृति तीन सूक्ष्म गुणों के संतुलन की अवस्था है। इन तीनों गुणों के मिलने से ही संसार के समस्त पदार्थों और मानसिक वृत्तियों का निर्माण होता है:

1. **सत्व गुण (Sattva):**यह प्रकाश, ज्ञान, सुख, पवित्रता और लघुता (हल्कापन) का प्रतीक है। जब मन में शांति और स्पष्टता होती है, तो सत्व गुण प्रधान होता है।

नोट

2. **रजस गुण (Rajas):**यह गति, क्रियाशीलता, उत्तेजना, चंचलता और दुःख का प्रतीक है। यह सत्व और तम दोनों को गति प्रदान करता है।
3. **तमास गुण (Tamas):**यह अंधकार, अज्ञान, आलस्य, भारीपन और निष्क्रियता का प्रतीक है। यह ज्ञान और गति को रोकता है।

गुणों की साम्यावस्था एवं विषमावस्था:

- **साम्यावस्था:**जब तीनों गुण समान अनुपात में रहते हैं, तब प्रलय की स्थिति होती है और सृष्टि नहीं बनती।
- **विषमावस्था:**पुरुष के सानिध्य से जब तीनों गुणों का संतुलन बिगड़ता है (एक गुण दूसरे पर हावी होता है), तब विश्व का निर्माण प्रारंभ होता है।

6.4.4 सांख्य दर्शन के अनुसार ज्ञानमीमांसा (ज्ञान प्राप्ति के साधन)

सांख्य के अनुसार यथार्थ ज्ञान (प्रमा) की प्राप्ति के लिए तीन प्रमाण स्वीकार किए गए हैं:

- **प्रत्यक्ष प्रमाण (Perception):**इंद्रियों और विषयों के सन्निकर्ष (संपर्क) से प्राप्त ज्ञान।
- **अनुमान प्रमाण (Inference):**पूर्व ज्ञान और लिंग (चिह्न) के आधार पर निकाला गया निष्कर्ष (जैसे—धुएँ को देखकर अग्नि का अनुमान)।
- **शब्द प्रमाण (Verbal Testimony):**वेदों के वाक्य या आप्त (सच्चे/ज्ञानी) पुरुषों के कथन।

सांख्य दर्शन के अनुसार ज्ञान तब उत्पन्न होता है जब बुद्धि में 'पुरुष' (चेतना) का प्रतिबिंब पड़ता है, जिससे अचेतन बुद्धि चेतन की भांति कार्य करने लगती है।

6.4.5 सांख्य दर्शन के शैक्षिक निहितार्थ (Educational Implications)

सांख्य दर्शन केवल एक तात्विक सिद्धांत नहीं है, बल्कि इसका आधुनिक शिक्षाशास्त्र पर गहरा प्रभाव है:

(क) शिक्षा के उद्देश्य

नोट

- **विवेक ज्ञान की प्राप्ति:**शिक्षा का मुख्य ध्येय शिक्षार्थी में यह विवेक (Discriminative Knowledge) उत्पन्न करना है कि वह पुरुष (आत्मा) और प्रकृति (शरीर/मन) को अलग-अलग समझ सके।
- **दुःखों की आत्यंतिक निवृत्ति:**विद्यार्थी को जीवन के दुःखों से निपटने और मानसिक संतुलन बनाए रखने में सक्षम बनाना।
- **त्रिगुणों का विकास:**शिक्षा का उद्देश्य तमोगुण को कम करना, रजोगुण को नियंत्रित करना और सत्वगुण का संवर्धन करना है।

(ख) पाठ्यक्रम (Curriculum)

सांख्य दर्शन का पाठ्यक्रम अत्यंत व्यावहारिक और व्यापक है:

- **शारीरिक एवं प्राकृतिक विकास:**भौतिक विज्ञान, रसायन शास्त्र, जीव विज्ञान और शरीर विज्ञान (क्योंकि यह सब प्रकृति का विस्तार है)।
- **मानसिक एवं बौद्धिक विकास:**गणित, तर्कशास्त्र, और भाषा।
- **आध्यात्मिक विकास:**योग, ध्यान, और दर्शनशास्त्र।

(ग) शिक्षण विधियाँ (Teaching Methods)

- **इंद्रिय प्रशिक्षण (Sense Training):**ज्ञानेंद्रियों को तीव्र और एकाग्र बनाने की विधियाँ।
- **प्रत्यक्ष एवं प्रयोगात्मक विधि:**निरीक्षण, अवलोकन और स्वयं करके सीखने पर बल।
- **तार्किक एवं आगमनात्मक विधि (Inductive Method):**उदाहरणों के माध्यम से नियमों की ओर बढ़ना।

(घ) अनुशासन एवं शिक्षक-शिक्षार्थी संबंध

- **आंतरिक अनुशासन:**सांख्य बाह्य दंड या दबाव का विरोध करता है। आत्म-नियंत्रण और विवेक द्वारा उपजा अनुशासन ही वास्तविक है।

नोट

- **शिक्षक की भूमिका:**शिक्षक को एक 'मार्गदर्शक' और 'आप्त पुरुष' होना चाहिए, जो विद्यार्थी के भीतर छिपी क्षमताओं को बाहर निकालने में मदद करे (क्योंकि सांख्य के 'सत्कार्यवाद' के अनुसार कार्य कारण में पहले से मौजूद रहता है)।

6.5 वेदांत दर्शन: मूल सिद्धांत एवं शैक्षिक निहितार्थ

भारतीय दार्शनिक चिंतन का सर्वोच्च शिखर**वेदांत दर्शन**को माना जाता है। यह दर्शन न केवल भारत में बल्कि संपूर्ण विश्व में अपनी अमूर्त (Abstract) तार्किकता, आध्यात्मिक गहराई और सार्वभौमिक दृष्टिकोण के लिए प्रसिद्ध है। 'वेदांत' शब्द दो शब्दों के मेल से बना है:**'वेद' + 'अंत'**। इसका शाब्दिक अर्थ है—**"वेदों का अंतिम भाग"**या**"वेदों का सार (Ul**

timate Culmination of Vedas)"।

वेदों के अंतिम भाग उपनिषद हैं, इसलिए उपनिषदों में निहित दर्शन को ही 'वेदांत दर्शन' कहा जाता है।

6.5.1 वेदांत दर्शन का परिचय एवं ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

वेदांत दर्शन का मुख्य आधार वेदों का 'ज्ञानकांड' है (जबकि मीमांसा दर्शन 'कर्मकांड' पर आधारित है)। वेदांत का प्रतिपादन मुख्य रूप से तीन ग्रंथों पर टिका है, जिन्हें सामूहिक रूप से**'प्रस्थानत्रयी'**कहा जाता है:

1. **उपनिषद (श्रुति प्रस्थान):**वेदों के अंतिम दार्शनिक भाग।
2. **भगवद्गीता (स्मृति प्रस्थान):**व्यावहारिक जीवन और कर्मयोग में वेदांत का अनुप्रयोग।
3. **ब्रह्मसूत्र (न्याय/युक्ति प्रस्थान):**महर्षि वादरायण (वेदव्यास) द्वारा रचित ग्रंथ, जिसमें उपनिषदों के विचारों को तर्कसंगत और क्रमबद्ध रूप से प्रस्तुत किया गया है।

समय के साथ वेदांत दर्शन की कई शाखाओं और व्याख्याओं का विकास हुआ, जिनमें से तीन प्रमुख संप्रदाय निम्नलिखित हैं:

नोट

- **अद्वैत वेदांत (Monism):**इसके सबसे महान व्याख्याकार**आदि शंकराचार्य** (8वीं शताब्दी) हैं। यह धारा मानती है कि केवल 'ब्रह्म' ही एकमात्र सत्य है और जीव तथा ब्रह्म में कोई भेद नहीं है।
- **विशिष्ट अद्वैत (Qualified Non-Dualism):**इसके प्रवर्तक**रामानुजाचार्य** (11वीं शताब्दी) हैं। इनके अनुसार ईश्वर (ब्रह्म) एक है, किंतु जीव और जगत उसकी सूक्ष्म शक्तियाँ या शरीर हैं (जैसे शरीर और आत्मा का संबंध)।
- **द्वैत वेदांत (Dualism):**इसके प्रवर्तक**माधवाचार्य** (13वीं शताब्दी) हैं। यह धारा ईश्वर, जीव और जगत को पूरी तरह से अलग-अलग और स्वतंत्र तत्व मानती है।

(प्रस्तुत अध्ययन में मुख्य बल **अद्वैत वेदांत** के सिद्धांतों पर केंद्रित है, क्योंकि इसका शैक्षिक और दार्शनिक प्रभाव सबसे व्यापक रहा है।

6.5.2 अद्वैत वेदांत: ब्रह्म, जीव एवं माया की अवधारणा

आदि शंकराचार्य ने अद्वैत वेदांत के मूल सिद्धांत को एक प्रसिद्ध सूत्र वाक्य में समेटा है:

"ब्रह्म सत्यं जगन्मिथ्या जीवो ब्रह्मैव नापरः।"

(अर्थात: केवल ब्रह्म ही सत्य है, यह जगत व्यावहारिक रूप से मिथ्या/परिवर्तनशील है, और जीव वस्तुतः ब्रह्म से भिन्न नहीं है।)

1. ब्रह्म की अवधारणा (Concept of Brahman)

वेदांत के अनुसार 'ब्रह्म' इस संपूर्ण ब्रह्मांड का परम सत्य, मूल कारण और अंतिम यथार्थ है। ब्रह्म सर्वव्यापी, सर्वशक्तिमान, नित्य, असीम और चेतना स्वरूप है। अद्वैत वेदांत में ब्रह्म के दो रूप बताए गए हैं:

- **निर्गुण ब्रह्म:**यह ब्रह्म का परम और वास्तविक रूप है। यह गुणों, रूपों, सीमाओं और उपाधियों से परे है। इसे केवल**'सच्चिदानंद'** (सत + चित + आनंद = परम सत्य, परम चेतना और परम आनंद) के रूप में अनुभव किया जा सकता है।
- **सगुण ब्रह्म (ईश्वर):**जब निर्गुण ब्रह्म माया के साथ जुड़ता है, तो उसे 'सगुण ब्रह्म' या ईश्वर कहते हैं। यही ईश्वर सृष्टि की रचना, पालन और संहार करता है।

नोट

2. जीव की अवधारणा (Concept of Jiva)

जीव से तात्पर्य मनुष्य या प्राणी की आत्मा से है। वेदांत के अनुसार, स्वरूपतः जीव और ब्रह्म में कोई अंतर नहीं है। जैसे एक बड़े आकाश (महाकाश) और बर्तन के अंदर के आकाश (घटाकाश) में मूलतः कोई अंतर नहीं होता, केवल बर्तन की दीवारें (उपाधि) उन्हें अलग दिखाती हैं; ठीक उसी प्रकार शरीर और मन रूपी अज्ञान की उपाधि के कारण जीव स्वयं को ब्रह्म से अलग मानता है।

उपनिषदों का महावाक्य**"तत्त्वमसि" (वह तुम ही हो)**और**"अहम ब्रह्मास्मि" (मैं ही ब्रह्म हूँ)**इसी अभिन्नता को प्रकट करता है।

3. माया की अवधारणा (Concept of Maya)

'माया' ब्रह्म की वह रहस्यमयी और अनिर्वचनीय (जिसका शब्दों में वर्णन न हो सके) शक्ति है, जिसके कारण निर्गुण ब्रह्म हमें अनेक रूपों वाले इस दृश्य जगत के रूप में दिखाई देता है। माया के दो मुख्य कार्य (शक्तियाँ) हैं:

- **आवरण शक्ति (Veiling Power):**यह परम सत्य (ब्रह्म) के वास्तविक स्वरूप को ढंक देती है या छिपा देती है।
- **विक्षेप शक्ति (Projecting Power):**यह ढके हुए सत्य पर एक असत्य या नए रूप का आरोप कर देती है (जैसे अंधेरे में पड़ी रस्सी को देखकर साँप का भ्रम होना)।

संसार पूरी तरह से शून्य या असत्य नहीं है, बल्कि यह'**व्यावहारिक सत्य**'है। जब तक जीव को परम ज्ञान नहीं होता, तब तक यह संसार सत्य प्रतीत होता है; किंतु ज्ञान प्राप्त होते ही यह ब्रह्म में लीन हो जाता है (पारमार्थिक सत्य)।

6.5.3 वेदांत के अनुसार ज्ञान एवं मुक्ति (विद्या बनाम अविद्या)

वेदांत दर्शन में ज्ञान को दो स्तरों पर विभाजित किया गया है:

ज्ञान का प्रकार	स्वरूप	क्षेत्र	उद्देश्य

नोट

परा विद्या (Higher Knowledge)	पारमार्थिक एवं आध्यात्मिक ज्ञान	ब्रह्म, आत्मा और अंतिम सत्य का ज्ञान	मोक्ष एवं आत्म-साक्षात्कार की प्राप्ति
अपरा विद्या (Lower Knowledge)	व्यावहारिक एवं भौतिक ज्ञान	संसार, विज्ञान, समाज और विषय-वस्तु	सांसारिक जीवन एवं जीविकोपार्जन

अविद्या और बंधन:

जीव के दुःखों का मूल कारण**अविद्या (अज्ञान)**है। अविद्या के कारण जीव अपने वास्तविक स्वरूप (ब्रह्म) को भूलकर स्वयं को यह नश्वर शरीर, मन और अहंकार मान बैठता है। इसी अज्ञान के कारण वह काम, क्रोध, लोभ, मोह और कर्म चक्र में फँसकर जन्म-मरण के बंधन को प्राप्त होता है।

मोक्ष (Liberation):

वेदांत में मोक्ष का अर्थ किसी नए स्थान (जैसे स्वर्ग) में जाना नहीं है, बल्कि अविद्या के नाश होने पर अपने**सच्चिदानंद स्वरूप की पहचान कर लेना**ही मोक्ष है। वेदांत दो प्रकार की मुक्ति स्वीकार करता है:

1. **जीवन्मुक्ति:**इस संसार में जीवित रहते हुए ही अज्ञान से मुक्त होकर ज्ञानी की भांति जीवन व्यतीत करना।
2. **विदेहमुक्ति:**शरीर त्यागने के उपरांत आत्मा का पूरी तरह से ब्रह्म में विलीन हो जाना।

6.5.4 वेदांत दर्शन के शैक्षिक निहितार्थ (Educational Implications)

वेदांत दर्शन का शिक्षाशास्त्र पर गहरा और स्थायी प्रभाव है। यह शिक्षा को केवल बौद्धिक कसरत या कौशल विकास न मानकर मानव चेतना के रूपांतरण का साधन मानता है।

1. शिक्षा का अर्थ एवं अवधारणा (Concept of Education)

नोट

स्वामी विवेकानंद ने वेदांत के सार को आधुनिक शिक्षा की परिभाषा में ढालते हुए कहा था:

"शिक्षा मनुष्य के भीतर पूर्व से निहित पूर्णता की अभिव्यक्ति है।" (Education is the manifestation of the perfection already in man.)

वेदांत के अनुसार बालक कोई कोरी पाटी (Blank Slate) नहीं है, बल्कि उसके भीतर अनंत ज्ञान और चेतना (ब्रह्म) पहले से विद्यमान है। शिक्षा का कार्य केवल उस अज्ञान रूपी आवरण को हटाना है।

2. शिक्षा के उद्देश्य (Objectives of Education)

- **आत्म-साक्षात्कार एवं आत्म-ज्ञान:**शिक्षा का परम उद्देश्य बालक को उसके वास्तविक 'अहं' से परे ले जाकर उसके आत्म-स्वरूप का बोध कराना है।
- **नैतिक एवं आध्यात्मिक विकास:**सत्य, अहिंसा, दया, और समभाव जैसे सार्वभौमिक नैतिक मूल्यों की स्थापना करना।
- **एकाग्रता एवं मानसिक नियंत्रण:**बुद्धि को तीव्र और मन को शांत करने के लिए ध्यान और संयम की क्षमता विकसित करना।
- **समग्र व्यक्तित्व का विकास (परा और अपरा का समन्वय):**बालक को सांसारिक जीवन में सफल बनाने के लिए व्यावहारिक ज्ञान (अपरा विद्या) देने के साथ-साथ उसे जीवन के अंतिम लक्ष्य (परा विद्या) की ओर अग्रसर करना।

3. पाठ्यक्रम (Curriculum)

वेदांत दर्शन का पाठ्यक्रम अत्यंत विस्तृत है, जो भौतिक और आध्यात्मिक दोनों पक्षों को समेटता है:

- **व्यावहारिक/भौतिक विषय (अपरा विद्या):**भाषा, गणित, विज्ञान, सामाजिक अध्ययन, अर्थशास्त्र, और शारीरिक शिक्षा।
- **व्यावसायिक/कौशल विषय:**जीविकोपार्जन के लिए विभिन्न कलाएँ, शिल्प और तकनीकी ज्ञान।

नोट

- **आध्यात्मिक एवं नैतिक विषय (परा विद्या):**उपनिषद, दर्शनशास्त्र, नीतिशास्त्र, साहित्य, और संगीत।
- **अभ्यास:**योग, प्राणायाम, और ध्यान (Meditation) को पाठ्यक्रम का अभिन्न अंग माना गया है।

4. शिक्षण विधियाँ (Teaching Methods)

वेदांत दर्शन में ज्ञान प्राप्ति की तीन-स्तरीय पारंपरिक विधि का प्रतिपादन किया गया है:

1. **श्रवण (Listening):**गुरु या शिक्षक के मुख से ज्ञानवर्धक वचनों, ग्रंथों और सिद्धांतों को ध्यानपूर्वक सुनना।
2. **मनन (Reflection/Thinking):**सुने गए ज्ञान पर तर्क, चिंतन और विश्लेषण करना तथा अपनी शंकाओं का समाधान करना।
3. **निदिध्यासन (Meditation/Internalization):**मनन द्वारा प्राप्त ज्ञान को ध्यान और निरंतर अभ्यास के माध्यम से अपने आचरण और अनुभव में उतारना (आत्मसात करना)।

इसके अतिरिक्त, **प्रश्नोत्तर विधि (Socratic Method/Dialogue)**, **तर्क विधि**, और**स्वाध्याय (Self-study)**को भी अत्यंत महत्त्वपूर्ण शिक्षण विधियाँ माना गया है।

5. शिक्षक एवं शिक्षार्थी का संबंध (Teacher-Student Relationship)

- **शिक्षक (गुरु) की भूमिका:**वेदांत में गुरु का स्थान अत्यंत उच्च है। गुरु केवल सूचनादाता नहीं है, बल्कि वह'**श्रोत्रिय**' (शास्त्रों का ज्ञाता) और'**ब्रह्मनिष्ठ**' (जिसने स्वयं सत्य का अनुभव किया हो) होना चाहिए। शिक्षक एक दीप की भांति होता है जो विद्यार्थी के अज्ञान को दूर करता है।
- **शिक्षार्थी (विद्यार्थी) के गुण:**विद्यार्थी में'**साधन चतुष्टय**'या अनुशासन के गुण होने चाहिए—

नोट

1. *विवेक* (सत्य और असत्य में अंतर करने की क्षमता),
2. *वैराग्य* (अनपेक्षित प्रलोभनों से दूरी),
3. *षट्संपत्ति* (शम, दम, उपरति, तितिक्षा, श्रद्धा, समाधान—अर्थात मन और इंद्रियों का नियंत्रण),
4. *मुमुक्षुत्व* (ज्ञान प्राप्त करने की तीव्र इच्छा)।

6. अनुशासन (Discipline)

वेदांत बाह्य दंड, डर या जबरन थोपे गए अनुशासन का कड़ा विरोध करता है। यह**'आत्म-अनुशासन' (Self-discipline)**और स्व-नियंत्रण पर बल देता है। जब विद्यार्थी योग और ध्यान के माध्यम से अपनी इंद्रियों पर नियंत्रण रखना सीखता है, तो अनुशासन स्वतः ही उसके जीवन में प्रवाहित होने लगता है।

संक्षेप में

वेदांत दर्शन मानव को उसकी संकीर्ण सीमाओं, जाति, धर्म और भौतिक बंधनों से ऊपर उठाकर 'अयं आत्मा ब्रह्म' का सार्वभौमिक संदेश देता है। शिक्षा के क्षेत्र में वेदांत का यह दृष्टिकोण बालकों में उच्च नैतिक मूल्य, मानसिक एकाग्रता, आत्म-विश्वास और विश्व बंधुत्व (वसुधैव कुटुंबकम) की भावना विकसित करने में आज भी पूरी तरह प्रासंगिक और मार्गदर्शक है।

6.6 सांख्य एवं वेदांत दर्शन का तुलनात्मक अध्ययन

भारतीय दर्शन की आस्तिक धारा में**सांख्य**और**वेदांत**दो ऐसे स्तंभ हैं जिन्होंने भारतीय चिंतन, ज्ञानमीमांसा और अध्यात्म को सर्वाधिक प्रभावित किया है। यद्यपि ये दोनों दर्शन वेदों की प्रामाणिकता को स्वीकार करते हैं और मानव जीवन का अंतिम लक्ष्य दुःखों से मुक्ति (मोक्ष) मानते हैं, फिर भी ब्रह्मांड की उत्पत्ति, परम सत्य के स्वरूप और तत्वों की संख्या को लेकर दोनों के दृष्टिकोण में मौलिक अंतर हैं।

नीचे सांख्य दर्शन और (विशेष रूप से आदि शंकराचार्य के) अद्वैत वेदांत दर्शन का विस्तृत और विश्लेषणात्मक तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया गया है:

नोट

1. तात्विक दृष्टिकोण (Metaphysical Comparison)

- **सांख्य का द्वैतवाद (Dualism):**सांख्य दर्शन एक द्वैतवादी दर्शन है। इसके अनुसार यह ब्रह्मांड दो स्वतंत्र, अनादि और अनंत तत्वों—**पुरुष** (चेतना) और**प्रकृति** (जड़/पदार्थ)—से मिलकर बना है। सांख्य के अनुसार प्रकृति और पुरुष दोनों वास्तविक (Real) हैं।
- **वेदांत का अद्वैतवाद (Monism):**अद्वैत वेदांत एक अद्वैतवादी (एकत्ववादी) दर्शन है। इसके अनुसार परम सत्य केवल**एक ही है—'ब्रह्म'** ("एकमेवाद्वितीयम्")। वेदांत सांख्य के द्वैत का खंडन करता है और प्रकृति तथा जगत को ब्रह्म की ही लीला या 'माया' (आभासी रूप) मानता है।

2. सृष्टि की उत्पत्ति का सिद्धांत (Theory of Creation)

- **सांख्य का विकासवाद (Theory of Evolution / परिणामवाद):**सांख्य का मानना है कि सृष्टि की रचना प्रकृति और पुरुष के संयोग से होती है। प्रकृति में परिणाम (परिवर्तन) होता है और 25 तत्वों का विकास क्रम से होता है। इसे'**परिणामवाद**'कहा जाता है (अर्थात कारण स्वयं कार्य के रूप में वास्तविक रूप से बदलता है, जैसे दूध का दही बनना)।
- **वेदांत का विवर्तवाद (Theory of Illusion / Vivartavada):**वेदांत के अनुसार ब्रह्म अद्विकारी और नित्य है, उसमें कोई वास्तविक परिवर्तन नहीं होता। माया के कारण ब्रह्म ही हमें अनेक रूपों वाले संसार के रूप में दिखाई देता है। इसे'**विवर्तवाद**'कहते हैं (अर्थात परिवर्तन केवल आभासी है, वास्तविक नहीं—जैसे अंधेरे में रस्सी का साँप प्रतीत होना)।

3. चेतना एवं आत्मा की अवधारणा (Concept of Soul/Consciousness)

- **सांख्य (बहु-पुरुषवाद):**सांख्य दर्शन**पुरुषों की बहुलता (Plurality of Purushas)**को स्वीकार करता है। इसका मानना है कि प्रत्येक जीव में एक स्वतंत्र और पृथक पुरुष (आत्मा) निवास करता है।
- **वेदांत (एकमेव अद्वैत आत्मा):**अद्वैत वेदांत के अनुसार आत्मा एक ही है, जो सर्वव्यापी ब्रह्म ही है। अज्ञान या उपाधियों के कारण एक ही ब्रह्म अलग-अलग

नोट

जीवों में भिन्न प्रतीत होता है (जैसे विभिन्न घड़ों में एक ही आकाश का आभास होना)।

4. ईश्वर की सत्ता (Concept of God)

- **सांख्य दर्शन:**सांख्य (निरीश्वर सांख्य) सृष्टि की व्याख्या के लिए ईश्वर की आवश्यकता स्वीकार नहीं करता। प्रकृति स्वयं पुरुष के सानिध्य में सृष्टि की रचना करती है।
- **वेदांत दर्शन:**वेदांत में ब्रह्म जब माया से युक्त होता है, तो उसे 'सगुण ब्रह्म' या **ईश्वर** कहा जाता है, जो इस पूरे ब्रह्मांड का रचयिता, पालक और संहारक है।

5. सांख्य एवं वेदांत दर्शन की मुख्य तुलनात्मक तालिका

दार्शनिक बिंदु	**सांख्य दर्शन (Sankhya)**	**वेदांत दर्शन - अद्वैत (Vedanta)**
मूल सिद्धांत	द्वैतवाद (पुरुष एवं प्रकृति)	अद्वैतवाद (केवल ब्रह्म सत्य)
प्रवर्तक/व्याख्याकार	महर्षि कपिल	वादरायण / आदि शंकराचार्य
तत्वों की संख्या	25 तत्व	1 परम तत्व (ब्रह्म)
सृष्टि सिद्धांत	परिणामवाद (प्रकृति का वास्तविक रूपांतरण)	विवर्तवाद (माया का आभासी परिवर्तन)
आत्मा/पुरुष	अनेक (पुरुष बहुलता)	एक (जीव और ब्रह्म अभिन्न हैं)
ईश्वर का स्थान	निरीश्वरवादी (ईश्वर की आवश्यकता नहीं)	सगुण ब्रह्म (ईश्वर) सृष्टि का आधार है
अज्ञान का स्वरूप	विवेक-ज्ञान का अभाव (पुरुष-प्रकृति का भ्रम)	अविद्या / माया
ज्ञान प्राप्ति के साधन	3 प्रमाण (प्रत्यक्ष, अनुमान, शब्द)	6 प्रमाण (प्रत्यक्ष, अनुमान, शब्द, उपमान, अर्थापत्ति, अनुपलब्धि)

6. शैक्षिक निहितार्थों में तुलना (Educational Comparison)

दोनों दर्शनों के शैक्षिक सिद्धांतों और विधियों में भी सूक्ष्म अंतर देखने को मिलता है:

नोट

1. **शिक्षा का उद्देश्य:**
    - **सांख्य:**विद्यार्थी में पुरुष और प्रकृति के बीच 'विवेक ज्ञान' उत्पन्न करना ताकि वह दुःखों से मुक्त हो सके।
    - **वेदांत:**बालक के भीतर पूर्व से निहित पूर्णता (अहं ब्रह्मास्मि) को प्रकट करना तथा आत्म-साक्षात्कार कराना।
2. **पाठ्यक्रम (Curriculum):**
    - **सांख्य:**भौतिक और वैज्ञानिक विषयों (प्रकृति का अध्ययन) पर अधिक व्यावहारिक बल देता है, क्योंकि प्रकृति 24 तत्वों का विस्तार है।
    - **वेदांत:**अपरा विद्या (सांसारिक/व्यावहारिक ज्ञान) तथा परा विद्या (आध्यात्मिक/उपनिषदिक ज्ञान) दोनों का संतुलन बनाता है।
3. **शिक्षण विधियाँ:**
    - **सांख्य:**प्रत्यक्ष अवलोकन, इंद्रिय प्रशिक्षण, और आगमनात्मक (Inductive) तर्क पर बल देता है।
    - **वेदांत:**श्रवण, मनन, और निदिध्यासन (ध्यान) जैसी तीन-स्तरीय गहन चिंतन प्रणाली तथा स्वाध्याय पर बल देता है।

निष्कर्ष

संक्षेप में, सांख्य दर्शन भारतीय दार्शनिक चिंतन का**वैज्ञानिक एवं विश्लेषणात्मक (Analytical)**पक्ष प्रस्तुत करता है, जहाँ तत्वों का सूक्ष्म वर्गीकरण किया गया है। दूसरी ओर, वेदांत दर्शन चिंतन का**संश्लेषणात्मक (Synthetic) एवं चरम आध्यात्मिक**पक्ष प्रस्तुत करता है, जहाँ विविधता के पीछे छिपी हुई मौलिक एकता (ब्रह्म) की खोज की जाती है। शिक्षाशास्त्र के लिए दोनों ही दर्शन अत्यंत महत्त्वपूर्ण हैं—सांख्य वैज्ञानिक सोच और प्रकृति को समझने की दृष्टि देता है, जबकि वेदांत उच्च नैतिक मूल्यों, आत्म-विश्वास और विश्व-बंधुत्व की भावना का संचार करता है।

1. सांख्य दर्शन के प्रवर्तक कौन हैं?

(A) महर्षि कपिल

नोट

(B) शंकराचार्य

(C) पतंजलि

(D) गौतम बुद्ध

2. सांख्य दर्शन के अनुसार सृष्टि का निर्माण किन दो तत्वों के संयोग से होता है?

(A) पुरुष और प्रकृति

(B) ब्रह्म और माया

(C) अणु और परमाणु

(D) जीव और अजीव

3. अद्वैत वेदांत के मुख्य प्रतिपादक कौन हैं?

(A) स्वामी दयानंद

(B) आदि शंकराचार्य

(C) रामानुजाचार्य

(D) मध्वाचार्य

4. अद्वैत वेदांत के अनुसार 'अहम ब्रह्मास्मि' का क्या तात्पर्य है?

(A) जीव और ब्रह्म अभिन्न (एक) हैं

(B) जीव और ब्रह्म अलग हैं

(C) प्रकृति ही सर्वोच्च है

(D) संसार ही एकमात्र सत्य है

5. सांख्य दर्शन में तीन गुण (त्रिगुण) कौन से बताए गए हैं?

(A) सत्, रज, तम

(B) मन, बुद्धि, अहंकार

(C) धर्म, अर्थ, काम

(D) बाल्यावस्था, युवावस्था, वृद्धावस्था

6.7 सारांश (Summary)

नोट

- **आस्तिक दर्शन का अर्थ:**भारतीय दर्शन परंपरा में 'आस्तिक' का पारिभाषिक अर्थ वेदों की प्रामाणिकता को स्वीकार करना है। इस श्रेणी में छह प्रमुख दर्शन (षड्दर्शन)—न्याय, वैशेषिक, सांख्य, योग, मीमांसा और वेदांत आते हैं।
- **सांख्य दर्शन (द्वैतवाद):**महर्षि कपिल द्वारा प्रतिपादित यह दर्शन ब्रह्मांड के निर्माण की व्याख्या दो अनादि एवं स्वतंत्र तत्वों—**पुरुष** (चेतना) और**प्रकृति** (जड़/पदार्थ)—के द्वैतवादी सिद्धांत द्वारा करता है। प्रकृति तीन गुणों (सत्व, रज, तम) की साम्यावस्था है। पुरुष के सानिध्य से त्रिगुणों का संतुलन बिगड़ता है और सृष्टि का विकास (25 तत्वों के रूप में) आरंभ होता है। सांख्य तीन प्रमाणों (प्रत्यक्ष, अनुमान, शब्द) को स्वीकार करता है।
- **वेदांत दर्शन (अद्वैतवाद):**उपनिषदों पर आधारित वेदांत दर्शन का सर्वोच्च रूप आदि शंकराचार्य का अद्वैत वेदांत है। यह**"ब्रह्म सत्यं जगन्मिथ्या जीवो ब्रह्मैव नापरः"**के सिद्धांत पर आधारित है। ब्रह्म एकमात्र परम सत्य है, जबकि दृश्य जगत 'माया' के कारण सत्य प्रतीत होता है। अविद्या (अज्ञान) ही जीव के बंधन का कारण है और अद्वैत ज्ञान (आत्म-साक्षात्कार) से ही मोक्ष संभव है।
- **तुलनात्मक निष्कर्ष:**सांख्य दर्शन जहाँ तात्विक विश्लेषण (प्रकृति-पुरुष द्वैत) और वैज्ञानिक विकासवाद (परिणामवाद) पर बल देता है, वहीं वेदांत दर्शन एकत्व (अद्वैत) और विवर्तवाद (माया का आभास) पर आधारित है।
- **शैक्षिक निहितार्थ:**दोनों दर्शन शिक्षा को केवल सूचना प्राप्ति का साधन न मानकर मानव चेतना के रूपांतरण का मार्ग मानते हैं। सांख्य इंद्रिय प्रशिक्षण, विवेक ज्ञान और व्यावहारिक विषयों पर बल देता है, जबकि वेदांत आत्म-साक्षात्कार, एकाग्रता, नैतिक चरित्र और 'श्रवण-मनन-निदिध्यासन' जैसी चिंतनशील शिक्षण विधियों को प्राथमिकता देता है।

6.8 पारिभाषिक शब्दावली (Glossary)

- **आस्तिक दर्शन (Orthodox Philosophy):**वे दार्शनिक संप्रदाय जो वेदों को परम प्रमाण और सर्वोच्च ज्ञान का स्रोत स्वीकार करते हैं।

नोट

- **षड्दर्शन (Six Systems):**वेदों पर आधारित छह आस्तिक दर्शन—न्याय, वैशेषिक, सांख्य, योग, पूर्व मीमांसा और उत्तर मीमांसा (वेदांत)।
- **पुरुष (Purusha):**सांख्य दर्शन के अनुसार नित्य, असीम, अकर्ता और केवल साक्षी रूप शुद्ध चेतना।
- **प्रकृति (Prakriti):**सांख्य दर्शन के अनुसार जड़, अचेतन, त्रिगुणात्मक और सृष्टि का मूल भौतिक उपादान कारण।
- **त्रिगुण (Three Gunas):**प्रकृति के तीन सूक्ष्म गुण—
    - **सत्व (Sattva):**ज्ञान, प्रकाश, सुख और पवित्रता का प्रतीक।
    - **रजस (Rajas):**गति, क्रियाशीलता, उत्तेजना और दुःख का प्रतीक।
    - **तमास (Tamas):**अज्ञान, अंधकार, आलस्य और अवरोध का प्रतीक।
- **ब्रह्म (Brahman):**वेदांत दर्शन के अनुसार संपूर्ण ब्रह्मांड का नित्य, सर्वव्यापी, एकमात्र अंतिम सत्य और सच्चिदानंद स्वरूप।
- **माया (Maya):**ब्रह्म की वह अनिर्वचनीय शक्ति जिसके कारण निर्गुण ब्रह्म अनेक रूपों वाले संसार के रूप में आभासित होता है।
- **सच्चिदानंद (Sat-Chit-Ananda):**ब्रह्म का मौलिक स्वरूप—सत (परम सत्य), चित (परम चेतना), और आनंद (परम सुख)।
- **प्रस्थानत्रयी (Prasthanatrayi):**वेदांत दर्शन के तीन मुख्य आधार स्तंभ ग्रंथ—उपनिषद, भगवद्गीता और ब्रह्मसूत्र।
- **परा एवं अपरा विद्या (Higher and Lower Knowledge):**
    - **परा विद्या:**आत्मा, ब्रह्म और मोक्ष से संबंधित आध्यात्मिक परम ज्ञान।
    - **अपरा विद्या:**संसार, विज्ञान, समाज और व्यावहारिक जीवन से संबंधित भौतिक ज्ञान।
- **श्रवण-मनन-निदिध्यासन:**वेदांत में ज्ञान प्राप्ति की तीन-स्तरीय प्रणाली—

नोट

1. **श्रवण:**ध्यानपूर्वक सुनना,
2. **मनन:**तार्किक चिंतन एवं विश्लेषण करना,
3. **निदिध्यासन:**प्राप्त ज्ञान को ध्यान और आचरण द्वारा आत्मसात करना।

6.9 बोध प्रश्नों के उत्तर

उत्तर: (A) महर्षि कपिल

उत्तर: (A) पुरुष और प्रकृति

उत्तर: (B) आदि शंकराचार्य

उत्तर: (A) जीव और ब्रह्म अभिन्न (एक) हैं

उत्तर: (A) सत्, रज, तम

6.10 सुझावित अध्ययन सामग्री – मुक्त शैक्षिक संसाधन

1. eGyanKosh: Samkhya and Vedanta Systems of Philosophy (IGNOU)
2. Stanford Encyclopedia of Philosophy: Sankhya Philosophy
3. Stanford Encyclopedia of Philosophy: Advaita Vedanta
4. Internet Encyclopedia of Philosophy: Samkhya
5. OER Commons: Orthodox Systems of Indian Philosophy

6.11 संदर्भ एवं संदर्भ ग्रंथ सूची (References & Suggested Readings)

इस इकाई के अध्ययन और गहन शोध के लिए निम्नलिखित प्रमाणिक पुस्तकों, संदर्भ ग्रंथों एवं अध्ययन सामग्रियों की सहायता ली जा सकती है:

1. प्रमुख संदर्भ ग्रंथ (Reference Books in Hindi)

नोट

- **द्विवेदी, डॉ. कपिलदेव (2018):** *भारतीय दर्शन,* विश्वविद्यालय प्रकाशन,वाराणसी।
- **पाण्डेय, डॉ. संगमलाल (2015):** *भारतीय दर्शन का सर्वेक्षण,* सेंट्रल पब्लिशिंग हाउस, इलाहाबाद।
- **शर्मा, डॉ. चंद्रधर (2020):** *भारतीय दर्शन: आलोचनात्मक सर्वेक्षण,* मोतीलाल बनारसीदास पब्लिशर्स, दिल्ली।
- **निगम, डॉ. शोभनाथ (2017):** *भारतीय दर्शन,* मोतिलाल बनारसीदास, दिल्ली।
- **उपाध्याय, बलदेव (2012):** *भारतीय दर्शन,* शारदा निकेतन, वाराणसी।

2. शिक्षाशास्त्र एवं शैक्षिक दर्शन संबंधी ग्रंथ (Books on Educational Philosophy)

- **गुप्ता, एस. पी. (2019):** *भारतीय शिक्षा के दार्शनिक एवं समाजशास्त्रीय आधार,* शारदा पुस्तक भवन, प्रयागराज।
- **पाण्डेय, डॉ. राम शकल (2018):** *शिक्षा के दार्शनिक एवं समाजशास्त्रीय आधार,* विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा।
- **सक्सेना, एन. आर. स्वरूप (2016):** *शिक्षा के दार्शनिक एवं समाजशास्त्रीय सिद्धांत,* आर. लाल बुक डिपो, मेरठ।

3. अंग्रेजी ग्रंथ एवं अनुवाद (Books in English)

- **Hiriyanna, M. (2014):** *Outlines of Indian Philosophy*, Motilal Banarsidass Publishers, New Delhi.
- **Radhakrishnan, S. (2009):** *Indian Philosophy (Vol. 1 & 2)*, Oxford University Press, New Delhi.
- **Sharma, C. D. (2016):** *A Critical Survey of Indian Philosophy*, Motilal Banarsidass, New Delhi.

नोट

- **Chatterjee, S. & Datta, D. (2018):** *An Introduction to Indian Philosophy*, Rupa Publications, New Delhi.

4. मूल दार्शनिक पाठ (Original Classical Texts)

- **कपिल (संपादित: ईश्वरकृष्ण):** *सांख्यकारिका* (संस्कृत मूल एवं हिंदी अनुवाद)।
- **वादरायण:** *ब्रह्मसूत्र* (आदि शंकराचार्य कृत भाष्य सहित)।
- **स्वामी विवेकानंद:** *ज्ञानयोग एवं शिक्षा* (एडुकैशनल वर्क्स), रामकृष्ण मठ, नागपुर।

6.12 अभ्यास कार्य एवं प्रश्न (Exercises and Questions)

6.12.1 स्व-मूल्यांकन प्रश्न (Self-Assessment Questions)

1. भारतीय दर्शन में 'आस्तिक' शब्द का पारिभाषिक अर्थ क्या है?
2. सांख्य दर्शन के अनुसार प्रकृति के तीन गुण कौन-कौन से हैं?
3. अद्वैत वेदांत के अनुसार 'सच्चिदानंद' का क्या अर्थ है?
4. वेदांत में ज्ञान के किन दो स्तरों (विद्याओं) का उल्लेख किया गया है?
5. सांख्य दर्शन द्वारा स्वीकार किए गए तीन प्रमाणों के नाम लिखिए।

6.12.2 वस्तुनिष्ठ प्रश्न (Multiple Choice Questions - MCQs)

1. भारतीय दर्शन की आस्तिक धारा का मुख्य आधार क्या है?

(क) ईश्वर में विश्वास

(ख) वेदों की प्रामाणिकता

(ग) आत्मा की अनित्यशीलता

(घ) मंदिर पूजा

उत्तर: (ख) वेदों की प्रामाणिकता

2. सांख्य दर्शन के मूल प्रवर्तक कौन हैं?

नोट

(क) महर्षि पतंजलि

(ख) महर्षि कणाद

(ग) महर्षि कपिल

(घ) महर्षि वादरायण

उत्तरः (ग) महर्षि कपिल

3. "ब्रह्म सत्यं जगन्मिथ्या जीवो ब्रह्मैव नापरः" यह कथन किस दर्शन का है?

(क) सांख्य दर्शन

(ख) अद्वैत वेदांत

(ग) विशिष्टाद्वैत वेदांत

(घ) न्याय दर्शन

उत्तरः (ख) अद्वैत वेदांत

4. सांख्य दर्शन के अनुसार संपूर्ण ब्रह्मांड का निर्माण किन दो तत्वों से हुआ है?

(क) ब्रह्म और जीव

(ग) पुरुष और प्रकृति

(ख) ईश्वर और माया

(घ) सत्व और तम

उत्तरः (ग) पुरुष और प्रकृति

5. स्वामी विवेकानंद के अनुसार शिक्षा की परिभाषा का मुख्य आधार कौन सा दर्शन है?

(क) चार्वाक दर्शन

(ख) वेदांत दर्शन

(ग) जैन दर्शन

नोट

(घ) बौद्ध दर्शन

उत्तर: (ख) वेदांत दर्शन

6.12.3 लघु उत्तरीय प्रश्न (Short Answer Questions)

1. सांख्य दर्शन के द्वैतवादी सिद्धांत (पुरुष एवं प्रकृति) को संक्षेप में समझाइए।
2. सांख्य के त्रिगुण सिद्धांत (सत्व, रज, तम) की मुख्य विशेषताएँ क्या हैं?
3. वेदांत दर्शन के अनुसार 'माया' की अवधारणा और उसकी दो शक्तियों (आवरण एवं विक्षेप) को स्पष्ट कीजिए।
4. वेदांत में वर्णित 'श्रवण, मनन एवं निदिध्यासन' शिक्षण विधि की व्याख्या कीजिए।
5. सांख्य और वेदांत दर्शन के अनुसार शिक्षा के मुख्य उद्देश्यों में क्या अंतर है?

6.12.4 दीर्घ उत्तरीय प्रश्न (Long Answer / Essay Type Questions)

1. सांख्य दर्शन के मूल सिद्धांतों का विस्तार से वर्णन कीजिए तथा इसके शैक्षिक निहितार्थों (उद्देश्य, पाठ्यक्रम, शिक्षण विधियाँ) की विवेचना कीजिए।
2. आदि शंकराचार्य के अद्वैत वेदांत के अनुसार ब्रह्म, जीव तथा माया के संबंधों की व्याख्या करते हुए आधुनिक शिक्षा में वेदांत दर्शन की प्रासंगिकता सिद्ध कीजिए।
3. सांख्य एवं वेदांत दर्शन का तुलनात्मक अध्ययन कीजिए। तात्विक दृष्टिकोण, सृष्टि सिद्धांत, और शिक्षण विधियों के आधार पर दोनों के अंतर एवं समानताओं को स्पष्ट कीजिए।

नोट

इकाई 7
भारतीय दर्शन की नास्तिक/हेटरोडॉक्स धाराएँ (बौद्ध एवं जैन)

इकाई संरचना (Unit Structure)

7.1 प्रस्तावना (Introduction)
7.2 उद्देश्य (Objectives)
7.3 भारतीय दर्शन में नास्तिक/हेटरोडॉक्स परंपरा का अर्थ एवं स्वरूप
7.4 बौद्ध दर्शन (Buddhist Philosophy)
7.4.1 बौद्ध दर्शन का परिचय एवं मूल सिद्धांत
7.4.2 चार आर्य सत्य (Four Noble Truths)
7.4.3 अष्टांगिक मार्ग (Eightfold Path)
7.4.4 क्षणिकवाद, अनित्यवाद एवं अनात्मवाद
7.4.5 बौद्ध दर्शन के प्रमुख संप्रदाय (हीनयान एवं महायान)
7.4.6 बौद्ध दर्शन के शैक्षिक निहितार्थ (उद्देश्य, पाठ्यक्रम, शिक्षण विधियाँ एवं अनुशासन)
7.5 जैन दर्शन (Jain Philosophy)
7.5.1 जैन दर्शन का परिचय एवं मूल सिद्धांत
7.5.2 जीव, अजीव एवं पंच महाव्रत
7.5.3 अनेकांतवाद एवं स्याद्वाद का सिद्धांत
7.5.4 जैन दर्शन के प्रमुख संप्रदाय (दिगंबर एवं श्वेतांबर)
7.5.5 जैन दर्शन के शैक्षिक निहितार्थ (उद्देश्य, पाठ्यक्रम, शिक्षण विधियाँ एवं शिक्षक-शिक्षार्थी संबंध)
7.6 बौद्ध एवं जैन दर्शन का तुलनात्मक अध्ययन
7.7 बौद्ध एवं जैन दर्शन की आधुनिक शिक्षा में प्रासंगिकता
7.8 सारांश (Summary)
7.9 पारिभाषिक शब्दावली (Glossary)
7.10 बोध प्रश्नों के उत्तर
7.11 सुझावित अध्ययन सामग्री – मुक्त शैक्षिक संसाधन

नोट

7.12 संदर्भ एवं विस्तृत अध्ययन हेतु पुस्तकें (References & Further Reading)

7.13 अभ्यास प्रश्न (Exercises / Questions for Practice)

7.12.1 वस्तुनिष्ठ प्रश्न (Objective Questions)

7.12.2 लघु उत्तरीय प्रश्न (Short Answer Questions)

7.12.3 दीर्घ उत्तरीय प्रश्न (Long Answer / Essay Type Questions)

7.1 प्रस्तावना (Introduction)

भारतीय दर्शन परंपरा अत्यंत समृद्ध, वैविध्यपूर्ण और गहन विचारों से परिपूर्ण है। प्राचीन काल से ही भारतीय चिंतकों ने सत्य, जीवन, आत्मा, ईश्वर और जगत के स्वरूप को समझने के लिए निरंतर चिंतन किया है। इस चिंतन परंपरा को मुख्य रूप से दो प्रमुख धाराओं में विभाजित किया जाता है—**आस्तिक (Orthodox)**और**नास्तिक (Heterodox)**।

सामान्यतः जनसाधारण में 'नास्तिक' शब्द का अर्थ ईश्वर में विश्वास न रखने वाले व्यक्ति से लिया जाता है, परंतु भारतीय दर्शन के संदर्भ में 'नास्तिक' शब्द का अर्थ भिन्न और विशिष्ट है। भारतीय दार्शनिक परंपरा में नास्तिक उन दर्शनों को कहा गया है जो **वेदों की प्रामाणिकता (Authority of Vedas) को स्वीकार नहीं करते**हैं और न ही वेदों को अंतिम सत्य मानते हैं। इस वर्ग के अंतर्गत मुख्य रूप से तीन दर्शन आते हैं—चार्वाक दर्शन, बौद्ध दर्शन और जैन दर्शन। प्रस्तुत इकाई में हम नास्तिक धारा के दो अत्यंत प्रभावशाली एवं महान दर्शनों—**बौद्ध दर्शन (Buddhist Philosophy)**तथा**जैन दर्शन (Jain Philosophy)**—का अध्ययन करेंगे।

छठी शताब्दी ईसा पूर्व (6th Century BCE) भारतीय इतिहास और दर्शन के क्षेत्र में एक महान क्रांति का काल था। इस युग में वैदिक कर्मकांडों की जटिलता, पशुबलि, सामाजिक विषमता और जातिगत कठोरता के विरुद्ध एक वैचारिक क्रांति उत्पन्न हुई। इसी वातावरण में महात्मा बुद्ध और भगवान महावीर ने अपने व्यावहारिक एवं करुणामय विचारों से समाज को एक नया मार्ग दिखाया।

- **बौद्ध दर्शन**, जिसके प्रवर्तक**गौतम बुद्ध**थे, ने जीवन के दुःखों की व्यावहारिक समझ और उनके निवारण के लिए 'मध्यम मार्ग' (Middle Path) तथा 'अष्टांगिक मार्ग' पर बल दिया।
- **जैन दर्शन**, जिसे**24वें तीर्थंकर भगवान महावीर**ने पुनर्गठित एवं प्रसारित किया, ने 'अहिंसा', 'सत्य', 'अनेकांतवाद' (दृष्टिकोणों की बहुलता) और 'स्याद्वाद' के माध्यम से सत्य को समझने का एक अद्वितीय दार्शनिक दृष्टिकोण प्रस्तुत किया।

यह इकाई न केवल बौद्ध एवं जैन दर्शन के मूल सिद्धांतों, नैतिक मूल्यों और संप्रदायों का विश्लेषणात्मक अध्ययन प्रस्तुत करती है, बल्कि यह भी स्पष्ट करती है कि इन दर्शनों ने

नोट

प्राचीन भारतीय शिक्षा प्रणाली को किस प्रकार दिशा दी और आज की आधुनिक शिक्षा में इनका क्या व्यावहारिक योगदान है।

7.2 उद्देश्य (Objectives)

इस इकाई का सफलतापूर्वक अध्ययन करने के पश्चात् आप:

1. **स्पष्ट कर सकेंगे**कि भारतीय दर्शन में 'नास्तिक/हेटरोडॉक्स' धारा का वास्तविक अर्थ क्या है तथा यह किस प्रकार आस्तिक धारा से भिन्न है।
2. **व्याख्या कर सकेंगे**बौद्ध दर्शन के मूल सिद्धांतों—चार आर्य सत्य (Four Noble Truths), अष्टांगिक मार्ग, क्षणिकवाद तथा अनात्मवाद का स्वरूप।
3. **विश्लेषण कर सकेंगे**जैन दर्शन के प्रमुख सिद्धांतों—जीव-अजीव, पंच महाव्रत, अनेकांतवाद तथा स्याद्वाद की अवधारणाओं का।
4. **अंतर स्पष्ट कर सकेंगे**बौद्ध दर्शन के प्रमुख संप्रदायों (हीनयान व महायान) तथा जैन दर्शन के प्रमुख संप्रदायों (दिगंबर व श्वेतांबर) के विचारों में।
5. **मूल्यांकन कर सकेंगे**बौद्ध और जैन दर्शन के शैक्षिक निहितार्थों का—जैसे कि उनके अनुसार शिक्षा के उद्देश्य, पाठ्यचर्या, शिक्षण विधियाँ और अनुशासन का स्वरूप।
6. **पहचान कर सकेंगे**आधुनिक शिक्षा, शांति, नैतिक मूल्यों और समावेशी शिक्षण में बौद्ध एवं जैन दर्शन की प्रासंगिकता और उपयोगिता की।

7.3 भारतीय दर्शन में नास्तिक/हेटरोडॉक्स परंपरा का अर्थ एवं स्वरूप

भारतीय दर्शन की वैचारिक एवं तात्विक परंपरा विश्व की सबसे प्राचीन, समृद्ध और विविधतापूर्ण विचार-सरणियों में से एक मानी जाती है। इसमें विचारों की स्वतंत्रता और सत्य की खोज के अनेक मार्ग एक साथ अस्तित्व में रहे हैं। भारतीय दार्शनिक साहित्य को अध्ययन और अध्ययन-अध्यापन की दृष्टि से मुख्य रूप से दो प्रमुख वर्गों में विभाजित किया गया है—**आस्तिक (Orthodox / Vedic)**तथा**नास्तिक (Heterodox / Non-Vedic)**परंपरा।

सामान्य समाज और आधुनिक बोलचाल की भाषा में 'नास्तिक' शब्द का प्रयोग उस व्यक्ति के लिए किया जाता है जो ईश्वर या किसी सर्वशक्तिमान परम सत्ता के अस्तित्व में विश्वास नहीं रखता। परंतु, भारतीय दर्शनशास्त्र की पारिभाषिक और शास्त्रीय शब्दावली में 'नास्तिक' शब्द का अर्थ अत्यधिक भिन्न, विशिष्ट और व्यापक है।

1. नास्तिक (हेटरोडॉक्स) शब्द की शास्त्रीय व्युत्पत्ति एवं अर्थ

भारतीय दार्शनिक परंपरा में 'नास्तिक' शब्द का आधार ईश्वर का अस्तित्व न होकर**'वेदों की प्रामाणिकता' (Authority of the Vedas)**है।

नोट

- **शास्त्रीय लक्षण:**महर्षि पाणिनि के व्याकरण-सूत्र एवं भारतीय दर्शन ग्रंथ *सर्वदर्शनसंग्रह*के अनुसार—

"नास्तिको वेदनिंदकः"

अर्थात, जो वेदों की प्रामाणिकता को स्वीकार नहीं करता, जो वेदों के ज्ञान, विधि-विधानों और कर्मकांडों की आलोचना करता है या उन्हें अंतिम सत्य मानने से इनकार करता है, उसे 'नास्तिक' (Heterodox) कहा गया है।

- **आस्तिक और नास्तिक में मौलिक अंतर:**
    - **आस्तिक दर्शन (Orthodox Schools):**वे दर्शन जो वेदों को अपौरुषेय (किसी मनुष्य द्वारा न रचा गया), स्वतःप्रमाणित और परम सत्य मानते हैं। इसके अंतर्गत छः दर्शन आते हैं—सांख्य, योग, न्याय, वैशेषिक, मीमांसा और वेदांत (जिन्हें षड्दर्शन कहा जाता है)।
    - **नास्तिक दर्शन (Heterodox Schools):**वे दर्शन जो वेदों की अपौरुषेयता तथा उनके प्रामाण्य को अस्वीकार करते हैं। वे ज्ञान प्राप्ति के लिए केवल मनुष्य के प्रत्यक्ष अनुभव, विवेक, तर्क और नैतिक आचरण को ही आधार बनाते हैं। इस धारा के अंतर्गत मुख्य रूप से तीन दर्शन परिगणित हैं—**चार्वाक दर्शन**, **बौद्ध दर्शन**तथा**जैन दर्शन**।

2. नास्तिक/हेटरोडॉक्स परंपरा का ऐतिहासिक एवं सामाजिक पृष्ठभूमि

नास्तिक धारा का उदय और विकास भारतीय इतिहास के अत्यंत महत्त्वपूर्ण मोड़—ईसा पूर्व छठी शताब्दी (6th Century BCE)—में हुआ। यह युग भारतीय सांस्कृतिक एवं सामाजिक इतिहास में वैचारिक क्रांति का काल माना जाता है। इसके उदय के प्रमुख कारण निम्नलिखित थे:

- **वैदिक कर्मकांडों की जटिलता एवं व्ययसाध्यता:**उत्तर-वैदिक काल तक आते-आते समाज में यज्ञ, बलि, तंत्र-मंत्र और कर्मकांड अत्यधिक जटिल, खर्चीले और सामान्य जनमानस की पहुँच से बाहर हो गए थे।
- **सामाजिक विषमता एवं जाति व्यवस्था:**समाज में वर्ण-व्यवस्था का स्वरूप कठोर हो चुका था, जिससे समाज के एक बड़े वर्ग को ज्ञान, शिक्षा और धार्मिक अधिकारों से वंचित होना पड़ रहा था।
- **पशुबलि एवं अहिंसा की आवश्यकता:**यज्ञों में दी जाने वाली पशुबलि के कारण समाज में एक नैतिक असंतोष पैदा हो रहा था। तत्कालीन कृषि-आधारित अर्थव्यवस्था में पशुधन का विशेष महत्त्व था।
- **जनभाषा का प्रयोग:**वैदिक साहित्य क्लिष्ट संस्कृत भाषा में था, जो केवल विद्वानों तक सीमित था। इसके विपरीत नास्तिक परंपरा के विचारकों (विशेषकर बुद्ध और महावीर) ने जनसाधारण की व्यावहारिक भाषाओं (पालि और प्राकृत) में अपने उपदेश दिए, जिससे यह धारा जन-जन तक पहुँची।

नोट

3. नास्तिक धारा की तीन प्रमुख शाखाएँ

नास्तिक परंपरा में वैचारिक भिन्नता के आधार पर तीन प्रमुख दर्शन विकसित हुए:

1. **चार्वाक दर्शन (Charvaka / Lokayata):**

यह पूर्णतः जड़वादी (Materialistic) और सुखवादी दर्शन है। चार्वाक केवल 'प्रत्यक्ष' (Perception) को ही प्रमाण मानते हैं। इनका मानना है कि जो प्रत्यक्ष दिखता है वही सत्य है। वे ईश्वर, आत्मा, स्वर्ग, नरक, पुनर्जन्म और वेदों को पूरी तरह अस्वीकार करते हैं। इनका प्रसिद्ध कथन है कि जब तक जियो सुख से जियो।

2. **बौद्ध दर्शन (Buddhist Philosophy):**

महात्मा बुद्ध द्वारा संस्थापित यह दर्शन अत्यंत व्यावहारिक और नैतिक है। बुद्ध ने अतिवादी दृष्टिकोण (अत्यधिक भोग या अत्यधिक काय-क्लेश) को त्यागकर**मध्यम मार्ग (Middle Path)**अपनाया। यह दर्शन ईश्वर और आत्मा की अचल सत्ता को स्वीकार नहीं करता (अनात्मवाद), परंतु यह**कर्म, पुनर्जन्म, अनित्यवाद और मोक्ष (निर्वाण)**में गहरा विश्वास रखता है।

3. **जैन दर्शन (Jain Philosophy):**

भगवान महावीर द्वारा पुनर्गठित यह दर्शन अत्यंत नैतिक, कठोर आचार-संहिता और अहिंसावादी है। जैन दर्शन भी ईश्वर को सृष्टि का रचयिता नहीं मानता, किंतु यह आत्मा के अस्तित्व, कर्म सिद्धांत, पुनर्जन्म और आत्मा के अनंत सामर्थ्य में पूर्ण विश्वास रखता है। इसमें**अनेकांतवाद** (दृष्टिकोणों की बहुलता) और**स्याद्वाद** (सापेक्षता का सिद्धांत) जैसे महान दार्शनिक सिद्धांत शामिल हैं।

4. नास्तिक/हेटरोडॉक्स धारा की मुख्य दार्शनिक विशेषताएँ

भारतीय दर्शन की नास्तिक धारा की मौलिक विशेषताएँ इसे आस्तिक धारा से पृथक और विशिष्ट बनाती हैं:

- **वेद-प्रामाण्य का खंडन:**यह परंपरा किसी भी ज्ञान को केवल इसलिए स्वीकार नहीं करती कि वह किसी पवित्र ग्रंथ या वेद में लिखा है। यह ज्ञान की कसौटी 'तर्क' और 'अनुभव' को मानती है।
- **ईश्वर-निरपेक्षता (Non-theistic / Atheistic Approach):**इस धारा के दर्शन सृष्टि के संचालन के लिए किसी अलौकिक, सर्वशक्तिमान ईश्वर को रचयिता नहीं मानते। इनके अनुसार यह संसार प्राकृतिक नियमों, कर्म-सिद्धान्तों या परमाणुओं के संयोजन से स्वचालित रूप से संचालित होता है।
- **मानव- केंद्रित दृष्टिकोण (Human-centric View):**नास्तिक धारा ने धर्म और दर्शन के केंद्र में ईश्वर के स्थान पर 'मनुष्य' और 'उसके दुःखों' को रखा।

नोट

मनुष्य अपने कर्मों के लिए स्वयं उत्तरदायी है और वह स्वयं अपने प्रयास से दुःखों से मुक्ति प्राप्त कर सकता है।

- **व्यावहारिक एवं नैतिक बल:**विशेष रूप से बौद्ध एवं जैन दर्शन ने अमूर्त दार्शनिक उलझनों (जैसे—ईश्वर कौन है, संसार किसने बनाया) के स्थान पर व्यावहारिक जीवन के दुःखों के निवारण, अहिंसा, सदाचार, सत्य और आचरण की शुद्धि पर बल दिया।
- **वैज्ञानिक एवं तार्किक प्रवृत्ति:**यह परंपरा 'अंधविश्वास' और 'अंधश्रद्धा' का विरोध करती है। महात्मा बुद्ध का प्रसिद्ध कथन है—*"मेरी बात को केवल इसलिए मत मानो कि मैं तुम्हारा गुरु हूँ, बल्कि इसे स्वयं अपनी बुद्धि और कसौटी पर कसकर देखो।"*

5. नास्तिक परंपरा का शिक्षा और समाज पर प्रभाव

नास्तिक धारा ने केवल दर्शन को ही नहीं, बल्कि भारतीय शिक्षा प्रणाली और सामाजिक संरचना को भी गहराई से प्रभावित किया:

- **शिक्षा का लोकतंत्रीकरण:**इसने जाति, लिंग या सामाजिक स्थिति के भेदभाव के बिना सभी के लिए शिक्षा के द्वार खोले। स्त्री और शूद्रों को भी ज्ञान प्राप्त करने का अधिकार मिला।
- **संस्थागत शिक्षा का विकास:**बौद्ध और जैन परंपराओं ने ही भारत में प्रथम विश्वस्तरीय आवासीय विश्वविद्यालयों—जैसे**नालंदा, तक्षशिला, वल्लभी और विक्रमशिला**—की स्थापना की नींव रखी।
- **भाषा एवं साहित्य का समृद्धि-करण:**पालि, प्राकृत, अपभ्रंश और प्रादेशिक भाषाओं में विशाल साहित्य की रचना हुई, जिससे सामान्य जनभाषाओं का सर्वांगीण विकास हुआ।
- **सामाजिक सुधार:**जाति-प्रथा, अंधविश्वास, अनावश्यक कर्मकांडों और हिंसात्मक प्रवृत्तियों पर कड़ा प्रहार कर समाज में समता, भ्रातृत्व और करुणा के भाव का प्रसार किया।

निष्कर्ष

संक्षेप में, भारतीय दर्शन में 'नास्तिक/हेटरोडॉक्स' धारा केवल वेदों के विरोध का नाम नहीं है, बल्कि यह स्वतंत्र चिंतन, तार्किकता, नैतिक आचरण और मानव-कल्याण की एक अत्यंत जीवंत परंपरा है। इसने ईश्वरवादी मान्यताओं से हटकर मानव विवेक, कर्म और अहिंसा को जीवन का सर्वोच्च आधार बनाया। बौद्ध और जैन दर्शन ने इसी नास्तिक परंपरा को एक उच्च दार्शनिक और नैतिक ऊँचाई प्रदान की, जिसने न केवल भारत बल्कि संपूर्ण विश्व की चिंतन धारा को आलोकित किया।

नोट

7.4 बौद्ध दर्शन (Buddhist Philosophy)

भारतीय दार्शनिक चिंतन की नास्तिक धारा में**बौद्ध दर्शन**एक अत्यंत महत्त्वपूर्ण, व्यावहारिक एवं क्रांतिकारी स्थान रखता है। छठी शताब्दी ईसा पूर्व में जब समाज कर्मकांडों, अंधविश्वासों और सामाजिक विषमताओं से ग्रसित था, तब**महात्मा गौतम बुद्ध** (563 ई.पू. – 483 ई.पू.) ने जीवन के व्यावहारिक दुःखों के निवारण हेतु एक नए मार्ग का प्रवर्तन किया। बौद्ध दर्शन अमूर्त दार्शनिक उलझनों के स्थान पर मानव जीवन की प्रत्यक्ष समस्याओं, दुःखों के कारणों और उनके व्यावहारिक समाधान पर केंद्रित है।

7.4.1 बौद्ध दर्शन का परिचय एवं मूल सिद्धांत

बौद्ध दर्शन का मूल आधार महात्मा बुद्ध के उपदेश हैं, जो कालान्तर में**'त्रिपिटक' (सुत्त पिटक, विनय पिटक, अभिधम्म पिटक)**नामक ग्रंथों में संकलित किए गए। बुद्ध का दार्शनिक दृष्टिकोण 'अतिवाद' का विरोधी था; उन्होंने अत्यधिक भोग-विलास और अत्यधिक शारीरिक कष्ट (काय-क्लेश) दोनों को त्यागकर**'मध्यम मार्ग' (Middle Path)**का प्रतिपादन किया।

बौद्ध दर्शन के मूल सिद्धांतों को निम्नलिखित बिंदुओं में समझा जा सकता है:

1. **प्रतीत्यसमुत्पाद (Theory of Dependent Origination):**

यह बौद्ध दर्शन का सबसे केंद्रीय सिद्धांत है। इसका अर्थ है—*"किसी वस्तु (कार्य) की उत्पत्ति किसी कारण पर निर्भर करती है।"* (कार्य-कारण नियम)। इस संसार में कोई भी घटना बिना कारण के नहीं घटती। यदि कारण मौजूद है, तो कार्य अवश्य होगा; और यदि कारण को समाप्त कर दिया जाए, तो कार्य भी स्वतः समाप्त हो जाएगा।

2. **ईश्वर-निरपेक्षता (Non-theism):**

बौद्ध दर्शन सृष्टि के रचयिता, पालक या संहारक के रूप में किसी ईश्वर की सत्ता को स्वीकार नहीं करता। बुद्ध के अनुसार यह संसार किसी अलौकिक शक्ति द्वारा निर्मित नहीं, बल्कि प्राकृतिक नियमों और प्रतीत्यसमुत्पाद के सिद्धांत से संचालित है।

3. **कर्म एवं पुनर्जन्म का सिद्धांत:**

ईश्वर को न मानते हुए भी बौद्ध दर्शन कर्म के सिद्धांत में गहरा विश्वास रखता है। मनुष्य जैसा कर्म करता है, वैसा ही फल पाता है। कर्म का फल भुगतने के लिए ही पुनर्जन्म होता है। यहाँ पुनर्जन्म आत्मा का नहीं, बल्कि 'कर्म-चेतना' का होता है।

4. **व्यावहारिक एवं तार्किक दृष्टिकोण:**

बुद्ध ने अंधश्रद्धा का पूर्ण खंडन किया। उन्होंने कहा—*"मेरे वचनों को केवल इसलिए स्वीकार मत करो कि वे मेरे हैं, बल्कि उनकी परीक्षा उसी प्रकार करो जैसे सुनार सोने की कसौटी पर करता है।"*

7.4.2 चार आर्य सत्य (Four Noble Truths)

नोट

बुद्ध का संपूर्ण दर्शन चार बुनियादी सत्यों पर आधारित है, जिन्हें**'चार आर्य सत्य'**कहा जाता है:

1. **दुःख (Life is full of suffering):**संसार में जन्म, जरा, व्याधि, मृत्यु, प्रिय का वियोग, अप्रिय का योग—सब कुछ दुःखमय है।
2. **दुःख समुदाय (There is a cause of suffering):**प्रत्येक दुःख का कोई न कोई कारण होता है। इस दुःख का मूल कारण**'अविद्या' (ज्ञान का अभाव)**और**'तृष्णा' (अत्यधिक लालसा)**है। इस कारण-श्रृंखला को 'द्वादश निदान' (12 कड़ियाँ) कहा जाता है।
3. **दुःख निरोध (Suffering can be ended):**दुःखों का अंत संभव है। तृष्णा और अविद्या का नाश करने से दुःखों से मुक्ति मिल सकती है, जिसे**'निर्वाण'** (Paramount Peace) कहते हैं।
4. **दुःख निरोध गामिनी प्रतिपद (There is a path to end suffering):**दुःखों के निवारण का एक निश्चित मार्ग है, जिसे**'अष्टांगिक मार्ग'**कहते हैं।

7.4.3 अष्टांगिक मार्ग (Eightfold Path)

दुःखों से पूर्ण मुक्ति (निर्वाण) प्राप्त करने के लिए बुद्ध ने आठ अंगों वाले जिस मार्ग का उपदेश दिया, उसे अष्टांगिक मार्ग कहा जाता है। यह मध्यम मार्ग का व्यावहारिक रूप है:

अष्टांगिक मार्ग के अंग	अर्थ एवं स्वरूप
1. सम्यक् दृष्टि	चार आर्य सत्यों और वस्तु स्थिति का सही एवं सम्यक् ज्ञान रखना।
2. सम्यक् संकल्प	हिंसा, द्वेष और भोग-विलास से मुक्त रहने का पवित्र निश्चय करना।
3. सम्यक् वाक्	सदैव सत्य, मृदु, प्रिय और कल्याणकारी वाणी का प्रयोग करना।
4. सम्यक् कर्मांत	अहिंसा और सदाचार पर आधारित श्रेष्ठ कर्म करना।
5. सम्यक् आजीव	ईमानदारी और नैतिक साधनों से जीवन-यापन (जीविका) चलाना।
6. सम्यक् व्यायाम	मन में शुभ विचारों को लाने और अशुभ विचारों को रोकने हेतु निरंतर प्रयास करना।
7. सम्यक् स्मृति	अपने मन, शरीर और कर्मों के प्रति निरंतर सजग और जागरूक (Mindful) रहना।
8. सम्यक् समाधि	चित्त की एकाग्रता प्राप्त कर निर्वाण की स्थिति में पहुँचना।

*(इन आठ मार्गों को तीन प्रमुख सोपानों में बाँटा जाता है:**प्रज्ञा** (दृष्टि, संकल्प), **शील** (वाक्, कर्मांत, आजीव) तथा**समाधि** (व्यायाम, स्मृति, समाधि)।)*

नोट

7.4.4 क्षणिकवाद, अनित्यवाद एवं अनात्मवाद

बौद्ध दर्शन की तात्विक (Metaphysical) मान्यताओं को व्यक्त करने वाले तीन प्रमुख स्तंभ हैं:

- **अनित्यवाद (Impermanence):**इस संसार में कुछ भी नित्य, स्थायी या शाश्वत नहीं है। जो कुछ भी उत्पन्न हुआ है, उसका विनाश निश्चित है।
- **क्षणिकवाद (Momentariness):**अनित्यवाद की चरम परिणति क्षणिकवाद है। इसके अनुसार, संसार की प्रत्येक वस्तु प्रति क्षण बदल रही है। कोई भी वस्तु दो क्षण तक एक समान नहीं रहती। नदी का जल जैसे निरंतर बहता रहता है, वैसे ही संपूर्ण जगत परिवर्तनों का एक सतत प्रवाह है।
- **अनात्मवाद (No-Self / Anatta):**बुद्ध ने उपनिषदों की 'अचल और नित्य आत्मा' की अवधारणा का खंडन किया। बौद्ध दर्शन के अनुसार, जिसे हम 'आत्मा' या 'मैं' कहते हैं, वह वस्तुतः**'पंच स्कंधों'** (रूप, वेदना, संज्ञा, संस्कार और विज्ञान) का एक परिवर्तनशील संघात (मिश्रण) मात्र है।

7.4.5 बौद्ध दर्शन के प्रमुख संप्रदाय

बुद्ध के महापरिनिर्वाण के पश्चात् मतभेदों के कारण बौद्ध दर्शन मुख्य रूप से दो संप्रदायों में विभाजित हो गया:

- **हीनयान (Theravada / Lesser Vehicle):**

यह बौद्ध धर्म का रूढ़िवादी और मूल रूप है। यह बुद्ध को एक महापुरुष और मार्गदर्शक मानता है, ईश्वर नहीं। यह आत्म-मुक्ति (अरहत् पद) पर बल देता है। इसका साहित्य**पालि भाषा**में है।

- **महायान (Greater Vehicle):**

यह बौद्ध धर्म का परिवर्तनशील और उदार रूप है। इसने बुद्ध को ईश्वर या अवतार मानकर उनकी मूर्ति-पूजा आरंभ की। यह स्वयं की मुक्ति के स्थान पर 'बोधिसत्व' के रूप में संपूर्ण मानव समाज के कल्याण (सर्व-मुक्ति) पर बल देता है। इसका साहित्य**संस्कृत भाषा**में रचा गया।

7.4.6 बौद्ध दर्शन के शैक्षिक निहितार्थ

बौद्ध दर्शन ने प्राचीन भारत की शिक्षा व्यवस्था में एक क्रांतिकारी परिवर्तन किया। इसने शिक्षा को आश्रमों से निकालकर 'मठों और विहारों' में संस्थागत रूप प्रदान किया।

- **शिक्षा के उद्देश्य:**
    - **व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास:**बालक का शारीरिक, मानसिक और नैतिक विकास करना।

नोट

- **नैतिक एवं चारित्रिक संवर्धन:**शील, अहिंसा, करुणा, सत्य और अनुशासन का निर्माण करना।
- **दुःखों से मुक्ति एवं निर्वाण:**शिक्षा का अंतिम उद्देश्य जीवन के दुःखों को समझकर निर्वाण की प्राप्ति हेतु तैयार करना था।

- **पाठ्यचर्या (Curriculum):**

पाठ्यचर्या व्यापक थी। इसमें धार्मिक साहित्य (त्रिपिटक) के साथ-साथ व्यावहारिक विषयों जैसे—व्याकरण, तर्कशास्त्र, चिकित्सा विज्ञान, धातु विज्ञान, हस्तकला, स्पिनिंग/बुनाई और कानून को शामिल किया गया था।

- **शिक्षण विधियाँ:**
  - **मौखिक एवं व्याख्यान विधि:**गुरु द्वारा उपदेश एवं शिष्यों द्वारा कण्ठस्थीकरण।
  - **शास्त्रार्थ एवं विचार-विमर्श (Debate & Discussion):**तार्किक चिंतन के विकास के लिए प्रश्नों और वाद-विवाद को प्रोत्साहन दिया जाता था।
  - **भ्रमण एवं सम्मेलन विधि:**व्यावहारिक अनुभव हेतु पर्यटन तथा समय-समय पर दार्शनिक सभाओं का आयोजन।

- **अनुशासन एवं शिक्षक-शिक्षार्थी संबंध:**
  - **अनुशासन:** 'पब्बज्जा' और 'उपसंपदा' संस्कारों के माध्यम से संघ के कठोर नियमों का पालन (अहिंसा, सत्य, अस्तेय आदि)। यह बाहरी न होकर 'स्व-अनुशासन' (Self-discipline) पर आधारित था।
  - **संबंध:** 'उपज्झाय' (शिक्षक) और 'सद्धिविहारिक' (छात्र) के मध्य अत्यंत पवित्र, स्नेहपूर्ण और पिता-पुत्र जैसा आत्मीय संबंध था।

निष्कर्ष

बौद्ध दर्शन केवल एक दार्शनिक सिद्धांत नहीं, बल्कि जीवन जीने की एक अत्यंत व्यावहारिक, तार्किक और करुणामयी कला है। इसने अंधविश्वासों और सामाजिक विषमताओं को समाप्त कर मनुष्य को अपने भाग्य का निर्माता स्वयं बनाया। नालंदा और तक्षशिला जैसे अंतर्राष्ट्रीय विश्वविद्यालयों की स्थापना कर बौद्ध दर्शन ने भारत को विश्व-गुरु के रूप में स्थापित करने में केंद्रीय भूमिका निभाई।

7.5 जैन दर्शन (Jain Philosophy)

भारतीय दर्शन की नास्तिक/हेटरोडॉक्स धारा में**जैन दर्शन**एक अत्यंत प्राचीन, समृद्ध और उच्च नैतिक मूल्यों पर आधारित दर्शन है। यह दर्शन वेदों की अपौरुषेयता को

नोट

स्वीकार न करने के कारण नास्तिक परंपरा में आता है, किंतु यह आत्मा के अस्तित्व, कर्म के सिद्धांत, पुनर्जन्म और मोक्ष में दृढ विश्वास रखता है।

जैन परंपरा के अनुसार, इस दर्शन के प्रवर्तक प्रथम तीर्थंकर**ऋषभदेव (आदिनाथ)**थे। इस परंपरा में कुल**24 तीर्थंकर**हुए, जिनमें 23वें तीर्थंकर**भगवान पार्श्वनाथ**तथा 24वें एवं अंतिम तीर्थंकर**भगवान महावीर** (599 ई.पू. – 527 ई.पू.) थे। भगवान महावीर ने जैन दर्शन को एक सुदृढ़ दार्शनिक आधार, व्यवस्थित आचार-संहिता और व्यापक स्वरूप प्रदान किया।

7.5.1 जैन दर्शन का परिचय एवं मूल सिद्धांत

जैन दर्शन की मौलिक विशेषता इसकी**ईश्वर-निरपेक्षता, आत्म-केंद्रीयता और अतिशय अहिंसा** है।

1. **ईश्वर-निरपेक्षता (Non-creationism):**

जैन दर्शन के अनुसार यह संसार अनन्त है और किसी ईश्वर या अलौकिक सत्ता ने इसका निर्माण नहीं किया है। यह जगत अपने स्वाभाविक नियमों और शाश्वत द्रव्यों (Substances) के परिवर्तन से संचालित होता है। जैन दर्शन में तीर्थंकरों (मुक्त आत्माओं) को ही सर्वोच्च माना गया है।

2. **आत्मा की बहुलता (Plurality of Souls):**

जैन दर्शन प्रत्येक जीव में स्वतंत्र आत्मा के अस्तित्व को स्वीकार करता है। चींटी से लेकर हाथी तक और वनस्पति से लेकर मानव तक—प्रत्येक जीव में आत्मा का निवास है।

3. **कर्म का भौतिक सिद्धांत (Physical Theory of Karma):**

अन्य भारतीय दर्शनों की तुलना में जैन दर्शन में कर्म को केवल 'मानसिक या अदृश्य भाव' न मानकर'**सूक्ष्म पुद्गल' (महीन भौतिक कण)**माना गया है। जब मनुष्य राग-द्वेष युक्त कर्म करता है, तो ये कर्म-पुद्गल आत्मा की ओर आकर्षित होकर उससे चिपक जाते हैं, जिससे आत्मा बंधन में पड़ जाती है।

4. **पुरुषार्थ एवं स्वावलंबन:**

जैन दर्शन के अनुसार मनुष्य अपने भाग्य का निर्माता स्वयं है। सही साधना, कठोर तपस्या और आचरण की शुद्धि के द्वारा वह कर्मों के बंधन को काटकर स्वयं 'जिन' (विजेता) या परमात्मा बन सकता है।

7.5.2 जीव, अजीव एवं पंच महाव्रत

जैन तत्वमीमांसा (Metaphysics) के अनुसार संपूर्ण ब्रह्मांड दो मूल द्रव्यों से मिलकर बना है:**जीव (Living / Consciousness)**और**अजीव (Non-living / Matter)**।

नोट

- **जीव (Soul):**जिसमें चेतना (Knowledge/Consciousness) होती है, वह जीव है। मूल रूप से प्रत्येक आत्मा में अनंत ज्ञान, अनंत दर्शन, अनंत वीर्य (शक्ति) और अनंत सुख होता है, जिसे'**अनंत चतुष्टय**'कहते हैं। किंतु कर्मों के आवरण के कारण यह शक्ति ढकी रहती है।

- **अजीव (Non-living):**चेतना-रहित द्रव्य को अजीव कहा जाता है। इसके पाँच भेद हैं—**पुद्गल (Matter), धर्म (Medium of Motion), अधर्म (Medium of Rest), आकाश (Space), और काल (Time)**।

जीव के मोक्ष हेतु 'त्रिरत्न' और 'पंच महाव्रत':

मोक्ष प्राप्ति के लिए जैन दर्शन तीन साधनों पर बल देता है, जिन्हें'**त्रिरत्न**'कहते हैं:**सम्यक् दर्शन (सही श्रद्धा), सम्यक् ज्ञान (सही जानकारी), और सम्यक् चरित्र (सही आचरण)**।

सम्यक् चरित्र के पालन हेतु जैन गृहस्थों के लिए 'अणुव्रत' और साधुओं के लिए'**पंच महाव्रत**'का विधान है:

पंच महाव्रत	अर्थ एवं स्वरूप
1. अहिंसा (Ahimsa)	मन, वचन और कर्म से किसी भी जीव को तनिक भी कष्ट न पहुँचाना।
2. सत्य (Satya)	सदैव प्रिय, हितकारी और यथार्थ सत्य बोलना।
3. अस्तेय (Asteya)	बिना अनुमति के किसी की भी वस्तु को न ग्रहण करना (चोरी न करना)।
4.ब्रह्मचर्य (Brahmacharya)	मन, वचन और कर्म से संयम रखना और विषय-वासनाओं का त्याग करना।
5. अपरिग्रह (Aparigraha)	आवश्यकता से अधिक धन, संपत्ति या वस्तुओं का संग्रह न करना।

7.5.3 अनेकांतवाद एवं स्याद्वाद का सिद्धांत

जैन ज्ञानमीमांसा (Epistemology) की सबसे बड़ी और मौलिक देन'**अनेकांतवाद**'और'**स्याद्वाद**'हैं, जो विचार-स्वातंत्र्य और सहिष्णुता के शिखर हैं।

- **अनेकांतवाद (Doctrine of Manyness / Pluralism):**

जैन दर्शन के अनुसार किसी भी वस्तु या सत्य के अनन्त पहलू (गुण) होते हैं। एक साधारण मनुष्य अपनी सीमित बुद्धि से वस्तु के केवल कुछ ही पहलुओं को देख पाता है, पूरे सत्य को नहीं। इसलिए किसी एक दृष्टिकोण को ही अंतिम सत्य मान लेना 'एकांतवाद' (कट्टरता) है, जबकि सभी दृष्टिकोणों को आंशिक सत्य मानना**अनेकांतवाद**है।*(इसे 'अंधे और हाथी' के प्रसिद्ध उदाहरण से समझा जाता है)*।

- **स्याद्वाद (Theory of Relativity of Knowledge):**

नोट

अनेकांतवाद का भाषाई और व्यावहारिक अभिव्यक्ति ही 'स्याद्वाद' है। स्याद्वाद का अर्थ है कि हमारा प्रत्येक कथन किसी विशेष दृष्टिकोण (Relativity) से ही सही होता है, इसलिए अपने कथन के आगे**'स्यात्' (शायद / किसी अपेक्षा से)**शब्द जोड़ना चाहिए। इसके आधार पर जैन दर्शन ने ज्ञान के**'सप्तभंगी नय' (Seven-fold Judgements)**का प्रतिपादन किया।

7.5.4 जैन दर्शन के प्रमुख संप्रदाय

भगवान महावीर के पश्चात् कालान्तर में आचार-संहिता के नियमों को लेकर जैन धर्म दो प्रमुख संप्रदायों में विभाजित हो गया:

1. **दिगंबर (Digambara):**

यह परंपरा अति-रूढ़िवादी और कठोर नियमों वाली है। 'दिगंबर' का अर्थ है—दिशायें ही जिनके वस्त्र हैं। इस संप्रदाय के साधु पूर्ण नग्न रहते हैं, संपत्ति का पूर्ण त्याग करते हैं और मोक्ष हेतु नग्नता को अनिवार्य मानते हैं।

2. **श्वेतांबर (Svetambara):**

यह परंपरा अपेक्षाकृत उदार और लचीली है। इस संप्रदाय के साधु श्वेत (सफेद) वस्त्र धारण करते हैं। इनका मानना है कि वस्त्र धारण करते हुए भी मोक्ष प्राप्त किया जा सकता है।

7.4.5 जैन दर्शन के शैक्षिक निहितार्थ

जैन दर्शन ने भारतीय शिक्षा प्रणाली को आचरण-प्रधान और मूल्य-निष्ठ स्वरूप प्रदान किया:

- **शिक्षा के उद्देश्य:**
    - **चारित्रिक एवं नैतिक निर्माण:**अहिंसा, सत्य और अपरिग्रह जैसे मूल्यों को जीवन में उतारना।
    - **आत्मानुशासन एवं आत्म-संयम:**इंद्रियों पर विजय प्राप्त कर स्व-नियंत्रण सीखना।
    - **अनंत चतुष्टय का विकास:**बालक के भीतर छिपे अनंत ज्ञान और शक्ति को प्रकट करना।
- **पाठ्यचर्या (Curriculum):**

पाठ्यचर्या में अध्यात्म और धर्मशास्त्र के साथ-साथ गणित, ज्योतिष, तर्कशास्त्र, व्याकरण, दर्शन, और जीव-विज्ञान (पर्यावरण एवं सूक्ष्मजीवों का अध्ययन) को प्रमुख स्थान दिया गया।

- **शिक्षण विधियाँ:**

नोट

- **स्याद्वाद आधारित शिक्षण विधि:**विद्यार्थियों में यह दृष्टिकोण विकसित करना कि वे दूसरों के विचारों का सम्मान करें और एकांगी न सोचें।
- **स्वाध्याय एवं चिंतन:**स्वयं पढ़ने, विचार करने और ध्यान लगाने की विधि।
- **कथा एवं उदाहरण विधि:**धार्मिक और नैतिक कहानियों के माध्यम से नैतिक मूल्यों का विकास।

- **शिक्षक-शिक्षार्थी संबंध एवं अनुशासन:**
  - **अनुशासन:**इसमें बाह्य दंड का पूर्ण निषेध है। अनुशासन का अर्थ कठोर काय-क्लेश, उपवास और आत्म-संयम के द्वारा 'स्व-अनुशासन' (Self-discipline) स्थापित करना है।
  - **शिक्षक-शिक्षार्थी संबंध:**शिक्षक (आचार्य) को स्वयं पंच महाव्रतों का पालन करने वाला आदर्श व्यक्तित्व होना चाहिए। शिक्षार्थी (शिष्य) गुरु के प्रति विनम्र, आज्ञाकारी और जिज्ञासु भाव रखता है।

निष्कर्ष

संक्षेप में, जैन दर्शन केवल एक दार्शनिक सिद्धांत न होकर जीवन जीने की एक अत्यंत अनुशासित और नैतिक शैली है। इसके 'अनेकांतवाद' और 'स्याद्वाद' के सिद्धांत आज के दौर में वैचारिक मतभेदों, कट्टरता और युद्धों को समाप्त कर वैश्विक शांति स्थापित करने में अत्यंत प्रासंगिक हैं। शिक्षा के क्षेत्र में जैन दर्शन ने चारित्रिक शुद्धि, पर्यावरण-संरक्षण और सहिष्णुता का जो पाठ पढ़ाया है, वह आधुनिक युग के लिए भी अत्यंत प्रेरणादायी है।

7.6 बौद्ध एवं जैन दर्शन का तुलनात्मक अध्ययन (Comparative Study of Buddhist and Jain Philosophy)

भारतीय दर्शन की नास्तिक/हेटरोडॉक्स धारा के अंतर्गत बौद्ध एवं जैन दर्शन दो ऐसे मुख्य स्तंभ हैं जिन्होंने ईसा पूर्व छठी शताब्दी की सामाजिक और वैचारिक क्रांति का नेतृत्व किया। दोनों दर्शनों का जन्म वैदिक कर्मकांडों, सामाजिक विषमताओं और जटिल यज्ञीय परंपराओं के विरोध स्वरूप हुआ। दोनों ने ही तत्कालीन समाज को एक नया, व्यावहारिक और नैतिक मार्ग दिखाया।

यद्यपि दोनों दर्शनों में अनेक समानताएँ हैं, फिर भी उनकी तात्विक मान्यताओं, साधनात्मक मार्गों और व्यावहारिक दृष्टिकोणों में मौलिक अंतर विद्यमान हैं।

1. बौद्ध एवं जैन दर्शन में समानताएँ (Similarities)

- **वेदों की अपौरुषेयता का खंडन:**दोनों ही दर्शन वेदों को अंतिम प्रमाण या अपौरुषेय नहीं मानते। वे ज्ञान और सत्य की कसौटी के रूप में मनुष्य के विवेक, अनुभव और तर्क को स्थान देते हैं।

नोट

- **यज्ञीय हिंसा एवं कर्मकांडों का विरोध:**दोनों दर्शनों ने यज्ञों में दी जाने वाली पशुबलि, व्ययसाध्य अनुष्ठानों और अंधविश्वासों का कड़ा विरोध किया तथा जीवन में नैतिक शुद्धता पर बल दिया।
- **ईश्वर-निरपेक्ष दृष्टिकोण:**दोनों दर्शनों में सृष्टि के रचयिता, संहारक या पालक के रूप में किसी अलौकिक ईश्वर की अवधारणा नहीं है। दोनों के अनुसार संसार प्राकृतिक नियमों और कर्म-विधान से संचालित होता है।
- **कर्म, पुनर्जन्म एवं मोक्ष में विश्वास:**दोनों ही परंपराएँ मानती हैं कि मनुष्य अपने कर्मों के अनुसार ही सुख-दुःख भोगता है और कर्मों का फल भुगतने के लिए पुनर्जन्म होता है। दोनों दर्शनों का अंतिम लक्ष्य दुःखों से पूर्ण मुक्ति (मोक्ष/निर्वाण) प्राप्त करना है।
- **जाति-व्यवस्था का विरोध एवं लोकभाषा का प्रयोग:**दोनों दर्शनों ने जन्म आधारित वर्ण-व्यवस्था का खंडन किया तथा समाज के सभी वर्गों (स्त्रियों और शूद्रों सहित) के लिए धर्म और शिक्षा के द्वार खोले। अपने उपदेशों के प्रसार हेतु दोनों ने क्लिष्ट संस्कृत के स्थान पर जनभाषाओं (बौद्ध धर्म ने पालि तथा जैन धर्म ने प्राकृत) का प्रयोग किया।
- **संघ और भिक्षु परंपरा:**दोनों दर्शनों ने आचरण की शुद्धि हेतु संगठित संघों, मठों और भिक्षु-भिक्षुणी परंपरा की स्थापना की।

2. बौद्ध एवं जैन दर्शन में असमानताएँ/अंतर (Differences)

यद्यपि दोनों दर्शनों की पृष्ठभूमि एक समान थी, किंतु उनकी तात्विक और साधनात्मक पद्धतियों में निम्नलिखित प्रमुख अंतर हैं:

तुलना का आधार	बौद्ध दर्शन (Buddhist Philosophy)	जैन दर्शन (Jain Philosophy)
मार्ग का स्वरूप	इसमें अतिवादी मार्गों का त्याग करके**'मध्यम मार्ग' (Middle Path)**अपनाया गया।	इसमें कठोर तपस्या, साधना और अतिशय काय-क्लेश पर बल दिया गया।
अहिंसा की अवधारणा	अहिंसा एक प्रमुख सिद्धांत है, किंतु यह व्यावहारिक है। इसमें अति-कठोर नियमों का आग्रह नहीं है।	अहिंसा का स्वरूप अत्यंत कठोर और सूक्ष्म है। सूक्ष्म से सूक्ष्म जीव (जैसे जल, वायु, वनस्पति) की रक्षा को अनिवार्य माना गया है।
आत्मा की अवधारणा	**अनात्मवादी:**बुद्ध ने शाश्वत आत्मा के अस्तित्व को स्वीकार नहीं किया। उनके अनुसार आत्मा 'पंच-स्कंधों' का एक क्षणिक और परिवर्तनशील प्रवाह है।	**आत्मवादी:**जैन दर्शन में आत्मा को शाश्वत, अमर और अचल माना गया है। इसमें प्रत्येक जीव में स्वतंत्र आत्मा का अस्तित्व स्वीकार किया गया है।
जगत एवं वस्तु का स्वरूप	**क्षणिकवादी:**संसार की प्रत्येक वस्तु अनित्य और क्षणिक है; कोई भी वस्तु दो क्षण स्थिर नहीं रहती।	**शाश्वत-अशाश्वतवादी:**वस्तु के गुण बदलते रहते हैं, किंतु उसका द्रव्य शाश्वत रहता है। इसे

नोट

		'अनेकांतवाद' के द्वारा समझा जाता है।
कर्म की अवधारणा	कर्म को मुख्यतः मानसिक एवं चेतना सम्बंधी क्रिया माना गया है।	कर्म को केवल मानसिक न मानकर**'सूक्ष्म भौतिक कण' (कर्म-पुद्गल)**माना गया है जो आत्मा से चिपक जाते हैं।
मोक्ष का स्वरूप	**निर्वाण:**इसका अर्थ है तृष्णा और वासनाओं का पूर्ण विनाश हो जाना (दीपक का बुझ जाना)। निर्वाण इसी जीवन में प्राप्त हो सकता है।	**मोक्ष:**इसका अर्थ है आत्मा का कर्म-पुद्गलों से पूर्णतः मुक्त होकर अपने मूल रूप (अनंत चतुष्टय) को प्राप्त कर लेना।
नग्नता एवं सन्यास	वस्त्र त्याग या शारीरिक क्लेश को मोक्ष हेतु अनिवार्य नहीं माना गया।	दिगंबर संप्रदाय में वस्त्रों का पूर्ण त्याग और कठोर तपस्या मोक्ष हेतु आवश्यक मानी गई है।

3. शैक्षिक निहितार्थों का तुलनात्मक विश्लेषण

- **दृष्ट दृष्टिकोण:**बौद्ध शिक्षा व्यवस्था अधिक संस्थागत, संगठित (मठों एवं विश्वविद्यालयों जैसे नालंदा/तक्षशिला पर आधारित) और व्यापक थी, जबकि जैन शिक्षा का ध्यान आचरण की व्यक्तिगत शुद्धि, स्व-अध्ययन (स्वाध्याय) और गुरु-शिष्य की व्यक्तिगत साधना पर अधिक केंद्रित रहा।
- **सहिष्णुता एवं ज्ञानमीमांसा:**जैन दर्शन ने अपने 'अनेकांतवाद' और 'स्याद्वाद' के माध्यम से विद्यार्थियों में बहु-दृष्टिकोण और वैचारिक सहिष्णुता विकसित करने का अनूठा तरीका दिया, जबकि बौद्ध दर्शन ने 'अष्टांगिक मार्ग' के माध्यम से व्यावहारिक आचार और ध्यान (सम्यक् समाधि) पर अधिक बल दिया।

निष्कर्ष

संक्षेप में, बौद्ध और जैन दर्शन दोनों ही भारतीय चिंतन परंपरा की ऐसी दो अनमोल मणियाँ हैं जिन्होंने मानव जाति को विवेक, करुणा और आचरण की शुद्धता का मार्ग दिखाया। जहाँ बौद्ध दर्शन ने अपने 'मध्यम मार्ग' और व्यावहारिक सिद्धांतों से एक वैश्विक आकर्षण प्राप्त किया, वहीं जैन दर्शन ने अपनी 'अहिंसा', 'अनेकांतवाद' और कठोर नैतिक साधना के बल पर भारतीय संस्कृति और जीवन-शैली को गहराई से प्रभावित किया। दोनों दर्शनों का यह तुलनात्मक अध्ययन यह सिद्ध करता है कि भिन्न तात्विक मान्यताओं के बावजूद दोनों का अंतिम उद्देश्य मानव को दुःखों से मुक्त कर परम शांति की ओर ले जाना था।

7.7 बौद्ध एवं जैन दर्शन की आधुनिक शिक्षा में प्रासंगिकता (Relevance of Buddhist and Jain Philosophy in Modern Education)

21वीं सदी का आधुनिक समाज जहाँ एक ओर प्रौद्योगिकी, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और आर्थिक समृद्धि के शिखर पर पहुँच रहा है, वहीं दूसरी ओर मानसिक तनाव, मूल्यहीनता, हिंसा, पर्यावरण-विनाश, उपभोक्तावाद और वैचारिक कट्टरता जैसी गंभीर

नोट

चुनौतियों का सामना कर रहा है। ऐसे दौर में प्राचीन भारतीय नास्तिक दर्शनों—बौद्ध और जैन दर्शन—की व्यावहारिक शिक्षाएँ केवल ऐतिहासिक महत्त्व की वस्तु न होकर आधुनिक शिक्षा प्रणाली के लिए अत्यधिक प्रासंगिक, प्रकाशपुंज और मार्गदर्शक सिद्ध होती हैं।

आधुनिक शैक्षिक संदर्भों में इन दोनों दर्शनों की प्रासंगिकता को निम्नलिखित प्रमुख आयामों में समझा जा सकता है:

1. मूल्य शिक्षा एवं चरित्र निर्माण (Value Education and Character Building)

आज की आधुनिक शिक्षा प्रणाली मुख्य रूप से केवल सूचनात्मक, अंक- केंद्रित और व्यावसायिक (Job-oriented) बनकर रह गई है। यह बालक को 'कुशल पेशेवर' तो बना रही है, किंतु एक 'संवेदनशील मानव' बनाने में पीछे छूट रही है।

- **बौद्ध दर्शन की देन:**बुद्ध का**अष्टांगिक मार्ग**—विशेषकर सम्यक् वाक् (सत्य एवं प्रिय बोलना), सम्यक् कर्मांत (नैतिक कार्य) और सम्यक् आजीव (नैतिक जीविका)—शिक्षा में व्यावसायिक नैतिकता (Professional Ethics) का आधार बन सकता है। बौद्ध दर्शन की 'करुणा' (Compassion) और 'मैत्री' (Loving-kindness) की भावना शिक्षार्थियों में सामाजिक उत्तरदायित्व विकसित करती है।
- **जैन दर्शन की देन:**जैन दर्शन के**पंच महाव्रत** (अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह) विद्यार्थियों में आत्म-संयम और नैतिक दृढता का विकास करते हैं। विशेष रूप से**'अपरिग्रह'** (अनावश्यक संग्रह न करना) का सिद्धांत आधुनिक समाज में तेजी से बढ़ते 'उपभोक्तावाद' (Consumerism) और मानसिक असंतोष को नियंत्रित करने की कुंजी है।

2. शांति शिक्षा और हिंसा-मुक्त समाज (Peace Education and Non-violence)

आधुनिक विश्व में बढ़ती आक्रामकता, बदमाशी (Bullying), वैचारिक हिंसा और युद्धों के माहौल में शिक्षा का सबसे बड़ा उत्तरदायित्व शांति स्थापित करना है।

- **अहिंसा का सिद्धांत:**बौद्ध और जैन दोनों दर्शनों का सबसे केंद्रीय स्तंभ 'अहिंसा' है। जैन दर्शन सूक्ष्म से सूक्ष्म जीवों के प्रति हिंसा न करने का पाठ पढ़ाता है, जबकि बौद्ध दर्शन मन, वचन और कर्म से हिंसा का त्यागी बनने का उपदेश देता है।
- **आधुनिक विद्यालय वातावरण:**यदि इन दर्शनों के अहिंसा और करुणा के मूल्यों को विद्यालयी संस्कृति (School Culture) में शामिल किया जाए, तो यह विद्यार्थियों में दूसरों के प्रति सहानुभूति, दया और सह-अस्तित्व की भावना पैदा करेगा, जिससे विद्यालयों में हिंसा और तनाव में कमी आएगी।

3. पर्यावरण शिक्षा और पारिस्थितिकी संतुलन (Environmental Education & Ecology)

नोट

वर्तमान में वैश्विक तापन (Global Warming), जलवायु परिवर्तन और प्राकृतिक संसाधनों का दोहन पूरी मानव जाति के लिए संकट बना हुआ है।

- **बौद्ध दर्शन का प्रतीत्यसमुत्पाद:**बुद्ध का 'प्रतीत्यसमुत्पाद' (कार्य-कारण नियम) हमें सिखाता है कि इस संसार में सब कुछ एक-दूसरे पर निर्भर है। मनुष्य प्रकृति से अलग नहीं है; यदि हम प्रकृति का विनाश करेंगे, तो हमारा अपना विनाश निश्चित है।
- **जैन दर्शन और जीव-रक्षा:**जैन दर्शन ने हजारों वर्ष पूर्व ही यह स्थापित किया था कि मिट्टी, जल, वायु, अग्नि और वनस्पतियों में भी चेतना (जीव) का निवास है। यह दृष्टिकोण आधुनिक**'दीप इकोलॉजी' (Deep Ecology)**का आधार है। पर्यावरण शिक्षा में जैन दर्शन की यह दृष्टि प्रकृति के सम्मान और विवेकपूर्ण उपयोग की प्रेरणा देती है।

4. वैचारिक सहिष्णुता और समावेशी शिक्षा (Democratic Thinking & Inclusive Education)

आज का समाज वैचारिक कट्टरता, ध्रुवीकरण और असहिष्णुता की समस्या से जूझ रहा है।

- **जैन दर्शन का 'अनेकांतवाद' एवं 'स्याद्वाद':**अनेकांतवाद सिखाता है कि सत्य के अनेक पहलू होते हैं और कोई भी एक व्यक्ति या विचारधारा पूर्ण सत्य का एकाधिकार नहीं रखती। स्याद्वाद हमें दूसरों के दृष्टिकोण (Diverse Perspectives) का सम्मान करना सिखाता है।
- **कक्षा में प्रासंगिकता:**आधुनिक समावेशी कक्षा (Inclusive Classroom) में जहाँ विभिन्न पृष्ठभूमियों, क्षमताओं और विचारों के बच्चे एक साथ पढ़ते हैं, वहाँ अनेकांतवाद और स्याद्वाद का सिद्धांत विद्यार्थियों में लोकतांत्रिक भावना, विचार-स्वातंत्र्य, सहिष्णुता और रचनात्मक बहस (Constructive Dialogue) को बढ़ावा देता है।

5. मानसिक स्वास्थ्य, ध्यान और माइंडफुलनेस (Mental Health and Mindfulness)

आधुनिक जीवन-शैली के कारण विद्यार्थियों में अवसाद, तनाव, एकाग्रता की कमी और मानसिक असंतुलन की समस्याएँ तेजी से बढ़ रही हैं।

- **बौद्ध दर्शन की 'सम्यक् स्मृति' एवं 'विपश्यना':**बौद्ध दर्शन का अष्टांगिक मार्ग मन को नियंत्रित करने के लिए **'सम्यक् स्मृति' (Mindfulness)**और**'सम्यक् समाधि' (Meditation)**पर विशेष बल देता है।
- **आधुनिक अनुप्रयोग:**आज दुनिया भर के शीर्ष विश्वविद्यालयों और शैक्षिक संस्थानों में तनाव प्रबंधन (Stress Management) तथा एकाग्रता बढ़ाने के लिए 'माइंडफुलनेस' और 'विपश्यना ध्यान' को अपनाया जा रहा है। यह तकनीक

नोट

विद्यार्थियों में संवेगात्मक बुद्धिमत्ता (Emotional Intelligence) और आत्म-जागरूकता विकसित करती है।

6. तार्किक और वैज्ञानिक सोच का विकास (Scientific Temper and Critical Thinking)

आधुनिक शिक्षा का एक प्रमुख उद्देश्य बालकों में वैज्ञानिक दृष्टिकोण विकसित करना है।

- **अंधश्रद्धा का खंडन:**दोनों ही दर्शनों ने अंधी आस्था और अंधविश्वासों का विरोध किया। महात्मा बुद्ध ने अपने शिष्यों से कहा कि किसी भी बात को केवल इसलिए स्वीकार न करें कि वह किसी शास्त्र में लिखी है या किसी गुरु ने कही है, बल्कि स्वयं अपनी बुद्धि की कसौटी पर परखकर ही उसे स्वीकार करें।
- **शिक्षा में स्थान:** यह दृष्टिकोण आधुनिक शिक्षा शास्त्र की**'समीक्षात्मक सोच' (Critical Thinking)**और वैज्ञानिक जांच-पड़ताल (Scientific Inquiry) की भावना से पूर्णतः मेल खाता है।

निष्कर्ष

संक्षेप में, बौद्ध एवं जैन दर्शन की प्राचीन भारतीय परंपराएँ आधुनिक शिक्षा व्यवस्था की कई बड़ी कमियों का व्यावहारिक समाधान प्रस्तुत करती हैं। यह शिक्षा को केवल जीवन यापन (Livelihood) का साधन बनाने के बजाय जीवन जीने (Life Skills) की एक कला बनाती हैं।

यदि राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP 2020) के संदर्भ में देखा जाए, तो बौद्ध और जैन दर्शन के मूल्य—जैसे कि नैतिक शिक्षा, पर्यावरणीय चेतना, आलोचनात्मक सोच, अनुभवात्मक अधिगम और शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व—आधुनिक भारत की शिक्षा को अधिक मानवीय, वैज्ञानिक, समावेशी और प्रासंगिक बनाने में अमूल्य योगदान दे सकते हैं।

1. भारतीय दर्शन में 'नास्तिक' दर्शन किसे कहा जाता है?

(A) जो ईश्वर को न माने
(B) जो वेदों की प्रामाणिकता को स्वीकार न करे
(C) जो पुनर्जन्म को न माने
(D) जो मंदिर न जाए

2. बौद्ध दर्शन में 'चार आर्य सत्य' में प्रथम सत्य क्या है?

(A) दुख का कारण है
(B) संसार दुखमय है (सब्बं दुःखं)
(C) दुख निरोध का मार्ग है
(D) दुख निरोध संभव है

नोट

3. जैन दर्शन का 'स्याद्वाद' (Anekantavada / Syadvada) सिद्धांत क्या व्यक्त करता है?

(A) ज्ञान की सापेक्षता (अनेक दृष्टिकोणों की संभावना)
(B) केवल एक ही सत्य का होना
(C) ईश्वर की सर्वव्यापकता
(D) वेदों की नित्यता

4. बौद्ध दर्शन का 'अष्टांगिक मार्ग' किस आर्य सत्य से संबंधित है?

(A) प्रथम
(B) द्वितीय
(C) तृतीय
(D) चतुर्थ (दुख निरोध गामिनी प्रतिपदा)

5. जैन धर्म के 'त्रिगुण/त्रिरत्न' कौन से हैं?

(A) सम्यक दर्शन, सम्यक ज्ञान, सम्यक चरित्र
(B) सत्य, अहिंसा, अस्तेय
(C) बुद्ध, धर्म, संघ
(D) तप, स्वाध्याय, ईश्वरप्रणिधान

7.8 सारांश (Summary)

- **नास्तिक परंपरा का अर्थ:**भारतीय दर्शन में 'नास्तिक' शब्द का अर्थ ईश्वर विरोधी न होकर**वेदों की प्रामाणिकता को अस्वीकार करना**है। इस धारा के अंतर्गत चार्वाक, बौद्ध तथा जैन दर्शन आते हैं।
- **बौद्ध दर्शन के मूल स्तंभ:**महात्मा बुद्ध द्वारा प्रवर्तित बौद्ध दर्शन दुःखों के व्यावहारिक समाधान पर आधारित है। इसके मुख्य सिद्धांत**चार आर्य सत्य**, **अष्टांगिक मार्ग** (सम्यक् दृष्टि से समाधि तक), **प्रतीत्यसमुत्पाद** (कार्य-कारण नियम), **अनित्यवाद**, **क्षणिकवाद**तथा**अनात्मवाद**हैं।
- **बौद्ध संप्रदाय एवं शिक्षा:**बौद्ध धर्म मुख्य रूप से दो संप्रदायों—**हीनयान** (मूल/कठोर) तथा**महायान** (उदार/सर्व-मुक्ति) में विभाजित हुआ। बौद्ध दर्शन ने शिक्षा को मठों/विहारों में संस्थागत रूप दिया तथा नालंदा एवं तक्षशिला जैसे अंतर्राष्ट्रीय विश्वविद्यालयों की स्थापना की नींव रखी।
- **जैन दर्शन के मूल स्तंभ:**प्रथम तीर्थंकर ऋषभदेव एवं 24वें तीर्थंकर भगवान महावीर द्वारा स्थापित जैन दर्शन अतिशय**अहिंसा**, **आत्म-बहुलता**तथा**कठोर तपस्या**पर बल देता है। इसके मूल तत्त्व**जीव और अजीव**, **त्रिरत्न** (सम्यक् दर्शन, ज्ञान, चरित्र) तथा**पंच महाव्रत** (अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह) हैं।

नोट

- **जैन ज्ञानमीमांसा:**जैन दर्शन की सबसे महत्त्वपूर्ण देन**अनेकांतवाद** (दृष्टिकोणों की बहुलता) और**स्याद्वाद** (सापेक्ष ज्ञान का सिद्धांत) हैं, जो वैचारिक सहिष्णुता के शिखर हैं। इसके दो प्रमुख संप्रदाय**दिगंबर**और**श्वेतांबर**हैं।
- **आधुनिक प्रासंगिकता:**आधुनिक युग में बढ़ते तनाव, हिंसा, उपभोक्तावाद, वैचारिक असहिष्णुता और पर्यावरण संकट के समाधान हेतु बौद्ध एवं जैन दर्शन के अहिंसा, करुणा, अपरिग्रह, माइंडफुलनेस (ध्यान), अनेकांतवाद और प्रतीत्यसमुत्पाद के सिद्धांत अत्यंत प्रासंगिक हैं।

7.9 पारिभाषिक शब्दावली (Glossary)

- **हेटरोडॉक्स / नास्तिक (Heterodox):**भारतीय दर्शन की वह धारा जो वेदों को परम सत्य या अपौरुषेय स्वीकार नहीं करती।
- **प्रतीत्यसमुत्पाद (Dependent Origination):**कार्य-कारण का बौद्ध सिद्धांत, जिसके अनुसार प्रत्येक घटना किसी न किसी कारण पर निर्भर करती है।
- **अनात्मवाद (Anatta / No-Self):**बौद्ध दर्शन की वह अवधारणा जिसके अनुसार कोई स्थायी या शाश्वत आत्मा नहीं है, बल्कि व्यक्ति पंच-स्कंधों का प्रवाह मात्र है।
- **निर्वाण (Nirvana):**अविद्या और तृष्णा के पूर्ण विनाश से प्राप्त होने वाली दुःखों से मुक्ति की अवस्था।
- **अनेकांतवाद (Anekantavada):**जैन दर्शन का वह सिद्धांत जिसके अनुसार वस्तु या सत्य के अनंत गुण/पहलू होते हैं।
- **स्याद्वाद (Syadvada):**अनेकांतवाद की भाषाई अभिव्यक्ति, जिसके अनुसार प्रत्येक ज्ञान सापेक्ष (Relational) होता है और कथन में 'स्यात्' (शायद/किसी अपेक्षा से) जोड़ना अनिवार्य है।
- **पंच महाव्रत (Five Great Vows):**जैन साधुओं हेतु निर्धारित पांच कठोर नैतिक नियम—अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह।
- **अपरिग्रह (Aparigraha):**आवश्यकता से अधिक धन, संपत्ति या वस्तुओं का संग्रह न करने का नैतिक संकल्प।

7.10 बोध प्रश्नों के उत्तर

उत्तर: (B) जो वेदों की प्रामाणिकता को स्वीकार न करे

उत्तर: (B) संसार दुखमय है (सब्बं दुःखं)

उत्तर: (A) ज्ञान की सापेक्षता (अनेक दृष्टिकोणों की संभावना)

नोट

उत्तर: (D) चतुर्थ (दुख निरोध गामिनी प्रतिपदा)

उत्तर: (A) सम्यक दर्शन, सम्यक ज्ञान, सम्यक चरित्र

7.11 सुझावित अध्ययन सामग्री – मुक्त शैक्षिक संसाधन

1. eGyanKosh: Heterodox Systems - Buddhism and Jainism (IGNOU)
2. Stanford Encyclopedia of Philosophy: Buddha and Buddhist Philosophy
3. Stanford Encyclopedia of Philosophy: Jain Philosophy
4. Internet Encyclopedia of Philosophy: Buddhist Philosophy
5. OER Commons: Jain and Buddhist Educational Values

7.12 संदर्भ एवं विस्तृत अध्ययन हेतु पुस्तकें (References & Further Reading)

1. **शर्मा, चन्द्रधर.** *भारतीय दर्शनआलोचनात्मक सर्वेक्षण :* (A Critical Survey of Indian Philosophy). मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली।
2. **उपाध्याय, बलदेव.** *भारतीय दर्शन* (Indian Philosophy). शारदा निकेतन, वाराणसी।
3. **राधाकृष्णन, सर्वपल्ली.** *भारतीय दर्शन भाग)1)* (Indian Philosophy - Vol. 1). राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।
4. **Chatterjee, S. & Datta, D.** *An Introduction to Indian Philosophy*. University of Calcutta, Kolkata.
5. **Hiriyanna, M.** *Outlines of Indian Philosophy*. Motilal Banarsidass, Delhi.

7.13 अभ्यास प्रश्न (Exercises / Questions for Practice)

वस्तुनिष्ठ प्रश्न (Objective Questions)निर्देश:सही विकल्प का चयन कीजिए:

1. **भारतीय दर्शन में 'नास्तिक' शब्द का शास्त्रीय अर्थ क्या है?**

(क) जो ईश्वर में विश्वास न रखे

(ख) जो वेदों की प्रामाणिकता को न माने

(ग) जो पुनर्जन्म को न माने

(घ) जो मोक्ष को न माने

उत्तर: (ख) जो वेदों की प्रामाणिकता को न माने

नोट

2. **बौद्ध दर्शन में 'कार्य-कारण नियम' को किस नाम से जाना जाता है?**

(क) स्याद्वाद

(ख) अनेकांतवाद

(ग) प्रतीत्यसमुत्पाद

(घ) अनात्मवाद

उत्तर: (ग) प्रतीत्यसमुत्पाद

3. **निम्नलिखित में से कौन-सा सिद्धांत जैन दर्शन से संबंधित नहीं है?**

(क) अष्टांगिक मार्ग

(ख) स्याद्वाद

(ग) अनेकांतवाद

(घ) पंच महाव्रत

उत्तर: (क) अष्टांगिक मार्ग

4. **बौद्ध दर्शन के अनुसार दुःखों का मूल कारण क्या है?**

(क) कर्मकांड

(ख) अविद्या एवं तृष्णा

(ग) ईश्वर की इच्छा

(घ) जाति-व्यवस्था

उत्तर: (ख) अविद्या एवं तृष्णा

5. **ज्ञान की सापेक्षता का सिद्धांत 'स्याद्वाद' किस दर्शन की देन है?**

(क) सांख्य दर्शन

(ख) बौद्ध दर्शन

(ग) वेदांत दर्शन

(घ) जैन दर्शन

उत्तर: (घ) जैन दर्शन

लघु उत्तरीय प्रश्न (Short Answer Questions)

1. भारतीय दर्शन की आस्तिक और नास्तिक धाराओं में मुख्य अंतर स्पष्ट कीजिए।
2. बौद्ध दर्शन के 'चार आर्य सत्यों' का संक्षिप्त उल्लेख कीजिए।

नोट

3. जैन दर्शन के 'पंच महाव्रतों' के नाम लिखकर किसी एक की व्याख्या कीजिए।
4. बौद्ध दर्शन के अनुसार 'अनात्मवाद' और 'क्षणिकवाद' से आप क्या समझते हैं?
5. बौद्ध और जैन दर्शन के संप्रदायों (हीनयान-महायान एवं दिगंबर-श्वेतांबर) के नाम लिखिए।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न (Long Answer / Essay Type Questions)

1. "बौद्ध दर्शन का अष्टांगिक मार्ग आधुनिक जीवन में नैतिक विकास और तनाव प्रबंधन का आधार है।" इस कथन की विवेचना करते हुए बौद्ध दर्शन के प्रमुख सिद्धांतों और उसके शैक्षिक निहितार्थों का वर्णन कीजिए।
2. जैन दर्शन के 'अनेकांतवाद' और 'स्याद्वाद' के सिद्धांतों की विस्तृत व्याख्या कीजिए। ये सिद्धांत आधुनिक लोकतांत्रिक समाज और समावेशी शिक्षा में किस प्रकार प्रासंगिक हैं?
3. बौद्ध एवं जैन दर्शन का तुलनात्मक अध्ययन कीजिए। उनकी प्रमुख समानताओं और असमानताओं को स्पष्ट करते हुए आधुनिक शिक्षा में उनके योगदान का मूल्यांकन कीजिए।

नोट

इकाई 8
पाश्चात्य दर्शन की क्लासिकल धाराएँ (प्रकृतिवाद एवं आदर्शवाद)

इकाई संरचना (Unit Structure)

8.1 प्रस्तावना (Introduction)
8.2 उद्देश्य (Objectives)
8.3 आदर्शवाद: अवधारणा, अर्थ एवं मुख्य सिद्धांत
8.3.1 आदर्शवाद का दार्शनिक स्वरूप
8.3.2 आदर्शवाद एवं शिक्षा के उद्देश्य
8.3.3 आदर्शवाद के अनुसार पाठ्यक्रम एवं शिक्षण विधियाँ
8.3.4 शिक्षक, शिक्षार्थी एवं अनुशासन
8.4 प्रकृतिवाद: अवधारणा, अर्थ एवं मुख्य रूप
8.4.1 प्रकृतिवाद का दार्शनिक आधार
8.4.2 प्रकृतिवाद एवं शिक्षा के उद्देश्य
8.4.3 प्रकृतिवाद के अनुसार पाठ्यक्रम एवं शिक्षण विधियाँ
8.4.4 स्वतंत्रता, बालक की भूमिका एवं
8.5 आदर्शवाद एवं प्रकृतिवाद की तुलना
8.5.1 समानताएँ एवं अंतर
8.5.2 आधुनिक शिक्षा पर प्रभाव
8.6 सारांश (Summary)
8.7 शब्दावली (Glossary)
8.8 बोध प्रश्नों के उत्तर
8.9 सुझावित अध्ययन सामग्री – मुक्त शैक्षिक संसाधन
8.10 सन्दर्भ
8.11 अभ्यास प्रश्न एवं उत्तर (Exercises Questions)

8.1 प्रस्तावना (Introduction)

शिक्षा और दर्शन का गहरा अंतरसंबंध रहा है। दर्शन जहाँ जीवन के अंतिम सत्य, मूल्यों और ज्ञान के स्वरूप की व्याख्या करता है, वहीं शिक्षा उन विचारों को व्यवहार में उतारने का माध्यम बनती है। पाश्चात्य दार्शनिक परंपरा में कई चिंतन धाराओं का विकास हुआ है, जिन्होंने समय-समय पर शैक्षणिक व्यवस्था और मानव चिंतन को दिशा दी है। इन

नोट

धाराओं में 'आदर्शवाद' (Idealism) और 'प्रकृतिवाद' (Naturalism) को क्लासिकल (शास्त्रीय) धाराओं के रूप में जाना जाता है।

आदर्शवाद मानव जीवन में आध्यात्मिक मूल्यों, विचारों और आत्मा के विकास को सर्वोपरि मानता है। इसके अनुसार दृश्यमान भौतिक संसार क्षणभंगुर है और अंतिम सत्य विचार (Ideas) तथा ईश्वर हैं। इसके विपरीत, प्रकृतिवाद किसी भी अति-प्राकृतिक (Supernatural) या आध्यात्मिक सत्ता को नकारते हुए केवल 'प्रकृति' को ही अंतिम सत्य स्वीकार करता है। प्रकृतिवाद के अनुसार बालक को प्रकृति की गोद में, स्वतंत्रतापूर्वक अपनी सहज प्रवृत्तियों के अनुसार सीखने का अवसर मिलना चाहिए।

इस इकाई में हम इन दोनों प्रमुख क्लासिकल धाराओं के मूलभूत सिद्धांतों, उनके दार्शनिक आधारों तथा शिक्षा के विभिन्न आयामों पर पड़े उनके प्रभावों का क्रमबद्ध अध्ययन करेंगे।

8.2 उद्देश्य (Objectives)

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात आप:

- पाश्चात्य दर्शन की क्लासिकल धाराओं—आदर्शवाद एवं प्रकृतिवाद—की मूल अवधारणाओं और सिद्धांतों को स्पष्ट कर सकेंगे।
- आदर्शवाद और प्रकृतिवाद के दार्शनिक स्वरूप तथा उनके बुनियादी अंतरों को समझ सकेंगे।
- शिक्षा के क्षेत्र में आदर्शवादी एवं प्रकृतिवादी दृष्टिकोणों (शिक्षण विधियों, पाठ्यक्रम, और शिक्षक की भूमिका) का विश्लेषण कर सकेंगे।
- आधुनिक शैक्षणिक व्यवस्था में इन दोनों दर्शनों की प्रासंगिकता और उनके व्यावहारिक प्रभावों का मूल्यांकन कर सकेंगे।

8.3 आदर्शवाद: अवधारणा, अर्थ एवं मुख्य सिद्धांत (Idealism: Concept, Meaning and Main Principles)

नोट

आदर्शवाद (Idealism) पाश्चात्य दर्शन की सबसे प्राचीन और प्रभावशाली क्लासिकल धाराओं में से एक है। 'Idealism' शब्द की उत्पत्ति ग्रीक भाषा के शब्द**'Idea' (विचार)**से हुई है। तात्विक दृष्टि से इसे 'विचारवाद' (Idea-ism) कहा जाना अधिक उपयुक्त है, किंतु उच्चारण की सुगमता और सौंदर्यबोध के लिए 'I' और 'ism' के बीच 'l' अक्षर जोड़कर इसे 'Idealism' कहा गया।

यह दर्शन भौतिक जगत की तुलना में विचारों, आध्यात्मिक मूल्यों, और आत्मा को अधिक सत्य और चिरंतन मानता है। प्लेटो, सुकरात, कांट, हेगेल, बर्कले, और फिक्टे जैसे दार्शनिकों ने आदर्शवादी चिंतनधारा को समृद्ध किया है। प्लेटो के अनुसार, "विचार ही अंतिम सत्य हैं और वे अपरिवर्तनशील हैं, जबकि दृश्यमान जगत केवल इन विचारों की छाया या अनुकृति है।"

8.3.1 आदर्शवाद का दार्शनिक स्वरूप (Philosophical Aspects of Idealism)

आदर्शवाद का दार्शनिक स्वरूप तीन मुख्य दार्शनिक स्तंभों—तत्वमीमांसा, ज्ञानमीमांसा, और मूल्यमीमांसा—पर आधारित है:

- **तत्वमीमांसा (Metaphysics):**आदर्शवाद दो प्रकार के संसार स्वीकार करता है—एक 'आध्यात्मिक संसार' और दूसरा 'भौतिक संसार'। भौतिक संसार नश्वर, परिवर्तनशील और क्षणभंगुर है, जबकि आध्यात्मिक संसार अंतिम, चिरंतन और सत्य है। इस धारा के अनुसार, संपूर्ण सृष्टि का मूल तत्व 'चेतना' (Consciousness) या 'विचार' (Idea) है, न कि पदार्थ (Matter)।
- **ज्ञानमीमांसा (Epistemology):**आदर्शवाद के अनुसार वास्तविक ज्ञान वह है जो हमारी इंद्रियों के माध्यम से नहीं, बल्कि हमारी आत्मा और बुद्धि के द्वारा प्राप्त होता है। इंद्रियजन्य ज्ञान अनिश्चित और भ्रमपूर्ण हो सकता है, परंतु बुद्धिजन्य और विवेकपूर्ण विचार ही शुद्ध और परम सत्य ज्ञान का निर्माण करते हैं।
- **मूल्य एवं नीतिमीमांसा (Axiology and Ethics):**आदर्शवाद मानव जीवन का सर्वोच्च लक्ष्य**'सत्यम, शिवम, सुंदरम' (Truth, Goodness, and Beauty)**की प्राप्ति मानता है। ये तीन शाश्वत मूल्य (Eternal Values) हैं। इन

नोट

मूल्यों को प्राप्त करना ही मनुष्य का परम धर्म है, जिसके लिए नैतिक आचरण और आत्म-नियंत्रण आवश्यक है।

8.3.2 आदर्शवाद एवं शिक्षा के उद्देश्य (Idealism and Educational Objectives)

आदर्शवादी दर्शन शिक्षा को बालक के सर्वांगीण और आध्यात्मिक विकास का मुख्य साधन स्वीकार करता है। इसके अनुसार शिक्षा के प्रमुख उद्देश्य निम्नलिखित हैं:

- **व्यक्तित्व का पूर्ण विकास या आत्म-साक्षात्कार (Self-Realization):**आदर्शवाद के अनुसार शिक्षा का सबसे मुख्य उद्देश्य बालक को अपनी आत्मा और अंतर्निहित शक्तियों का बोध कराना है, जिससे वह अपने उच्चतम स्वरूप को प्राप्त कर सके।
- **शाश्वत मूल्यों की प्राप्ति:**बालक को सत्य, शिव और सुंदर के प्रति निष्ठावान बनाना ताकि वह जीवन में नैतिक और चरित्रवान बन सके।
- **सांस्कृतिक विरासत का संरक्षण एवं हस्तांतरण:**मानव जाति ने ज्ञान, कला, साहित्य और मूल्यों के रूप में जो सांस्कृतिक निधि संचित की है, शिक्षा का दायित्व उसे भावी पीढ़ी को सौंपना और उसमें संवर्धन करना है।
- **आध्यात्मिक चेतना का विकास:**बालक को भौतिक सुख-सुविधाओं से ऊपर उठाकर उसमें आध्यात्मिक जागरूकता विकसित करना, जिससे वह संपूर्ण ब्रह्मांड के साथ अपना संबंध समझ सके।
- **चारित्रिक एवं नैतिक विकास:**केवल बौद्धिक विकास पर्याप्त नहीं है; बालक में सत्यनिष्ठा, दया, करुणा, कर्तव्यपालन और अनुशासन जैसे नैतिक गुणों का विकास करना शिक्षा का अभिन्न अंग है।

8.3.3 आदर्शवाद के अनुसार पाठ्यक्रम एवं शिक्षण विधियाँ (Curriculum and Teaching Methods)

पाठ्यक्रम (Curriculum):

नोट

आदर्शवादी पाठ्यक्रम बालक की रुचियों की बजाय मानव जाति के समग्र अनुभवों, विचारों और आध्यात्मिक मूल्यों पर केंद्रित होता है। इसे दो मुख्य भागों में विभाजित किया गया है:

1. **मानविकी या आध्यात्मिक विषय:**इसमें भाषा, साहित्य, इतिहास, दर्शन, धर्मशास्त्र, नीतिशास्त्र, कला और संगीत को प्रमुख स्थान दिया जाता है, क्योंकि ये मानव चेतना और मूल्यों का संवर्धन करते हैं।
2. **भौतिक या वैज्ञानिक विषय:**इसमें गणित, विज्ञान, और भूगोल जैसे विषयों को गौण (द्वितीयक) स्थान दिया जाता है, जो जीवन की व्यावहारिक आवश्यकताओं की पूर्ति करते हैं।

शिक्षण विधियाँ (Teaching Methods):

आदर्शवाद किसी एक निश्चित शिक्षण विधि का समर्थन नहीं करता; यह विषय-वस्तु और दार्शनिक के अनुसार विविध विधियों को अपनाता है:

- **प्रश्न उत्तर विधि (Question-Answer Method):**सुकरात द्वारा विकसित, जिसमें प्रश्नों के माध्यम से बालक के भीतर छुपे ज्ञान को बाहर लाया जाता है।
- **संवाद विधि (Dialogue Method):**प्लेटो द्वारा प्रतिपादित, जो तार्किक चिंतन और विचार-विमर्श पर बल देती है।
- **आगमन एवं निगमन विधि (Inductive and Deductive Method):**अरस्तू द्वारा प्रतिपादित विधियाँ।
- **व्याख्यान एवं वाद-विवाद विधि (Lecture and Debate Method):**उच्च स्तरीय अमूर्त विचारों को समझने के लिए।
- **खेल विधि (Play-way Method):**फ्रोबेल की किंडरगार्टन प्रणाली, जो खेल और गतिविधियों के माध्यम से आध्यात्मिक विकास पर बल देती है।

8.3.4 शिक्षक, शिक्षार्थी एवं अनुशासन (Teacher, Learner and Discipline)

घटक	आदर्शवादी दृष्टिकोण

नोट

शिक्षक की भूमिका (Role of Teacher)	आदर्शवाद में शिक्षक का स्थान**सर्वोपरी एवं केंद्रीय**है। शिक्षक को एक 'माली' (Gardener) के समान माना गया है, जो बालक रूपी पौधे का पोषण करता है। शिक्षक केवल ज्ञान का दाता नहीं, बल्कि एक आदर्श व्यक्तित्व, मार्गदर्शक और आध्यात्मिक गुरु होता है जिसके आचरण का अनुकरण बालक करता है।
शिक्षार्थी की भूमिका (Role of Learner)	बालक को एक आध्यात्मिक प्राणी माना जाता है जिसके भीतर अपार क्षमताएँ विद्यमान हैं। बालक का कार्य शिक्षक के मार्गदर्शन में अपने व्यक्तित्व और चरित्र का परिष्कार करना है।
अनुशासन की अवधारणा (Concept of Discipline)	आदर्शवाद'**प्रभावात्मक अनुशासन' (Impressive Discipline)**और'**स्व-अनुशासन' (Self-Discipline)**का समर्थन करता है। यह कठोर शारीरिक दंड का विरोध करता है, लेकिन साथ ही अत्यधिक छूट या स्वतंत्रता के पक्ष में भी नहीं है। शिक्षक अपने उच्च चरित्र और आदर्श आचरण से बालक में आत्म-नियंत्रण और मर्यादा की भावना जागृत करता है।

8.4 प्रकृतिवाद: अवधारणा, अर्थ एवं मुख्य रूप (Naturalism: Concept, Meaning and Types)

प्रकृतिवाद (Naturalism) पाश्चात्य दर्शन की एक अत्यंत महत्वपूर्ण और प्रभावशाली धारा है। यह दर्शन आदर्शवाद के पूर्णतः विपरीत दृष्टिकोण प्रस्तुत करता है। जहाँ आदर्शवाद विचार, आत्मा और ईश्वर को अंतिम सत्य मानता है, वहीं प्रकृतिवाद केवल'**प्रकृति' (Nature)**को ही एकमात्र और अंतिम सत्ता स्वीकार करता है।

'Naturalism' शब्द की उत्पत्ति 'Nature' (प्रकृति) से हुई है। दार्शनिक दृष्टि से प्रकृतिवाद वह विचारधारा है जो भौतिक संसार को ही सत्य मानती है और किसी भी प्रकार की आध्यात्मिक या अति-प्राकृतिक (Supernatural) सत्ता को पूर्णतः नकारती है। थॉमस हॉब्स, जॉन लॉक, जीन-जैक्स रूसो, हर्बर्ट स्पेंसर, और डेमोक्रिटस इसविचारधारा के प्रमुख प्रवर्तक रहे हैं। रूसो ने प्रकृतिवाद को शिक्षा के क्षेत्र में व्यावहारिक रूप दिया और नारा दिया—**"प्रकृति की ओर लौटें" (Back to Nature)**।

नोट

8.4.1 प्रकृतिवाद का दार्शनिक आधार (Philosophical Base of Naturalism)

प्रकृतिवाद के दार्शनिक स्वरूप को इसके तीन प्रमुख आयामों के माध्यम से समझा जा सकता है:

- **तत्वमीमांसा (Metaphysics):**प्रकृतिवाद के अनुसार भौतिक जगत ही एकमात्र सत्य है। सृष्टि की रचना किसी ईश्वर या अलौकिक शक्ति ने नहीं की है, बल्कि इसका निर्माण प्राकृतिक तत्वों और नियमों के द्वारा हुआ है। मन या चेतना भी पदार्थ (Matter) की ही एक जटिल संरचना का परिणाम है। प्रकृति से परे कुछ भी नहीं है—न कोई स्वर्ग है, न नरक, और न ही कोई परलोक।
- **ज्ञानमीमांसा (Epistemology):**प्रकृतिवाद के अनुसार सच्चा ज्ञान केवल इंद्रियों (Senses) के माध्यम से ही प्राप्त किया जा सकता है। इंद्रियाँ ज्ञान के द्वार हैं (**"Senses are the gateways of knowledge"**)। प्रत्यक्ष अनुभव, अवलोकन और वैज्ञानिक विधियों से प्राप्त ज्ञान ही प्रामाणिक है। अमूर्त चिंतन या दार्शनिक कल्पनाओं को यह ज्ञान की श्रेणी में स्वीकार नहीं करता।
- **मूल्य एवं नीतिमीमांसा (Axiology and Ethics):**प्रकृतिवाद किसी पूर्व-निर्धारित या शाश्वत नैतिक मूल्यों (जैसे सत्यम, शिवम, सुंदरम) को स्वीकार नहीं करता। इसके अनुसार मूल्य परिवर्तनशील हैं और मनुष्य की प्राकृतिक आवश्यकताओं एवं सुख-दुख के अनुभवों से निर्मित होते हैं। जो कार्य प्रकृति के नियमों के अनुकूल है, वही नैतिक है।

प्रकृतिवाद के मुख्य रूप (Types of Naturalism):

1. **पदार्थवादी प्रकृतिवाद (Physical Naturalism):**यह रूप बाह्य प्रकृति और भौतिक विज्ञान के नियमों पर बल देता है। इसके अनुसार संपूर्ण ब्रह्मांड एक विशाल यंत्र (Machine) है।
2. **यांत्रिक प्रकृतिवाद (Mechanical Naturalism):**यह मनुष्य को भी एक जटिल जैविक यंत्र मानता है, जो पर्यावरण के उद्दीपकों (Stimuli) के प्रति अनुक्रिया (Response) करता है।

नोट

3. **जैविक प्रकृतिवाद (Biological Naturalism):**यह डार्विन के विकासवाद के सिद्धांत (Evolution Theory) पर आधारित है। यह 'जीवन संघर्ष' (Struggle for Existence) और 'योग्यतम की उत्तरजीविता' (Survival of the Fittest) के सिद्धांतों के आधार पर मानव विकास की व्याख्या करता है।

8.4.2 प्रकृतिवाद एवं शिक्षा के उद्देश्य (Naturalism and Educational Objectives)

प्रकृतिवादी शिक्षा प्रणाली बाल-केंद्रित (Child-Centric) है। यह बालक को शिक्षा की प्रक्रिया का केंद्र मानती है, न कि विषय-वस्तु या शिक्षक को। इसके प्रमुख शैक्षणिक उद्देश्य निम्नलिखित हैं:

- **आत्म-अभिव्यक्ति एवं आत्म-संरक्षण (Self-Expression and Self-Preservation):**शिक्षा का मुख्य उद्देश्य बालक को अपनी स्वाभाविक प्रवृत्तियों और क्षमताओं को स्वतंत्र रूप से अभिव्यक्त करने का अवसर देना है, जिससे वह अपना अस्तित्व बनाए रख सके।
- **जीवन संघर्ष के लिए अनुकूलन (Adaptation to Environment):**बालक में ऐसी क्षमताओं का विकास करना जिससे वह अपने भौतिक एवं सामाजिक वातावरण के साथ सफलतापूर्वक अनुकूलन कर सके।
- **स्वाभाविक विकास (Natural Development):**बालक का शारीरिक, मानसिक और संवेगात्मक विकास उसकी प्राकृतिक क्षमताओं और गति के अनुसार होने देना। शिक्षा का काम बालक के प्राकृतिक विकास में बाधा न डालना है।
- **सुखमय जीवन की प्राप्ति:**जीवन में दुखों को कम करके प्राकृतिक आनंद और सुख की अनुभूति कराना।
- **व्यक्तिगत स्वतंत्रता का संवर्धन:**बालक को सामाजिक बंधनों, रूढ़ियों और कृत्रिम नियमों से मुक्त रखकर उसकी वैयक्तिकता (Individuality) का विकास करना।

नोट

8.4.3 प्रकृतिवाद के अनुसार पाठ्यक्रम एवं शिक्षण विधियाँ (Curriculum and Teaching Methods)

पाठ्यक्रम (Curriculum):

प्रकृतिवादी पाठ्यक्रम बालक की आयु, रुचियों, आवश्यकताओं और विकास की अवस्थाओं पर आधारित होता है। इसमें पुस्तकीय ज्ञान की तुलना में प्रत्यक्ष अनुभवों को प्राथमिकता दी जाती है:

- **प्राथमिक स्तर:**खेलकूद, प्रकृति निरीक्षण, शारीरिक शिक्षा, और हस्तकला।
- **माध्यमिक स्तर:**प्राकृतिक विज्ञान (भौतिकी, रसायन, जीव विज्ञान), भूगोल, गणित, और भाषा।
- **बहिष्कार:**धार्मिक शिक्षा, आध्यात्मिक विषय, और अमूर्त दर्शनशास्त्र को पाठ्यक्रम से पूरी तरह बाहर रखा जाता है।

शिक्षण विधियाँ (Teaching Methods):

प्रकृतिवाद पारंपरिक रटने और व्याख्यान देने की विधियों का कड़ा विरोध करता है। यह निम्नलिखित प्रयोगात्मक विधियों का समर्थन करता है:

- **अनुभव द्वारा सीखना (Learning by Doing):**बालक स्वयं कार्य करके और प्रत्यक्ष अनुभवों से सीखता है।
- **खेल विधि (Play-way Method):**शिक्षा को खेल के समान आनंददायक और सहज बनाना।
- **निरीक्षण एवं भ्रमण विधि (Observation and Excursion Method):**बालक को प्रकृति के बीच ले जाकर स्वयं अवलोकन करने का अवसर देना।
- **ह्यूरिस्टिक विधि (Heuristic Method):**बालक को एक खोजकर्ता (Explorer) के रूप में स्थापित करना जहाँ वह स्वयं समस्याओं का समाधान ढूंढता है।

नोट

- **डाल्टन योजना एवं मोंटेसरी विधि:**स्व-अधिगम और व्यक्तिगत गति से सीखने पर बल।

8.4.4 स्वतंत्रता, बालक की भूमिका एवं अनुशासन (Freedom, Role of Child and Discipline)

घटक	प्रकृतिवादी दृष्टिकोण
बालक की भूमिका (Role of Child)	शिक्षा प्रक्रिया में बालक का स्थान**केंद्रीय एवं सर्वोपरि**है। प्रकृतिवाद के अनुसार "बालक शिक्षा के लिए नहीं बना है, बल्कि शिक्षा बालक के लिए बनी है।" बालक को वयस्क के दृष्टिकोण से नहीं, बल्कि उसकी अपनी स्वाभाविक दृष्टि से देखा जाना चाहिए।
शिक्षक की भूमिका (Role of Teacher)	प्रकृतिवाद में शिक्षक की भूमिका**गौण (Secondary) एवं पर्दे के पीछे (Behind the Stage)**की होती है। शिक्षक केवल एक मंच तैयार करता है और पर्यावरण का निर्माण करता है। वह बालक के विकास में हस्तक्षेप नहीं करता, बल्कि एक मूक दर्शक (Observer) और मार्गदर्शक के रूप में कार्य करता है।
अनुशासन एवं स्वतंत्रता (Discipline and Freedom)	प्रकृतिवाद बालक को**पूर्ण स्वतंत्रता**देने का पक्षधर है। यह किसी भी प्रकार के बाह्य नियंत्रण या शारीरिक दंड का पूर्ण विरोध करता है। यह'**प्राकृतिक परिणामों द्वारा अनुशासन' (Discipline by Natural Consequences)**का सिद्धांत देता है—अर्थात यदि बालक कोई गलती करता है, तो प्रकृति स्वयं उसे दंडित करके सही मार्ग सिखाती है (जैसे आग को छूने पर हाथ जलना)।

8.5 आदर्शवाद एवं प्रकृतिवाद की तुलना (Comparison between Idealism and Naturalism)

नोट

आदर्शवाद (Idealism) और प्रकृतिवाद (Naturalism) पाश्चात्य दर्शन की दो ऐसी मौलिक धाराएँ हैं, जो एक-दूसरे के विपरीत ध्रुवों पर स्थित मानी जाती हैं। जहाँ आदर्शवाद ब्रह्मांड की व्याख्या विचारों, चेतना और आध्यात्मिक मूल्यों के आधार पर करता है, वहीं प्रकृतिवाद भौतिक जगत, विज्ञान और प्रकृति के नियमों को ही सर्वोपरि स्वीकार करता है।

आधुनिक शैक्षिक चिंतन में इन दोनों धाराओं के बीच के सूक्ष्म अंतरों, कुछ अंतर्निहित समानताओं और शिक्षा प्रणाली पर पड़े उनके संयुक्त प्रभाव का अध्ययन करना अत्यंत आवश्यक है।

8.5.1 समानताएँ एवं अंतर (Similarities and Differences)

समानताएँ (Similarities):

यद्यपि दोनों दर्शन एक-दूसरे के विरोधी प्रतीत होते हैं, फिर भी कुछ बिंदुओं पर इनमें समानताएँ पाई जाती हैं:

1. **मानव कल्याण की भावना:**दोनों ही दर्शनों का अंतिम लक्ष्य मनुष्य के जीवन को बेहतर बनाना और उसकी अंतर्निहित क्षमताओं को विकसित करना है।
2. **पारंपरिक रूढ़ियों का विरोध:**दोनों धाराओं ने अपने-अपने समय में प्रचलित अंधविश्वासों, अर्थहीन सामाजिक कुरीतियों और जड़वत हो चुकी परंपराओं का खंडन किया।
3. **शिक्षा का महत्व:**दोनों ही विचारधाराएँ शिक्षा को मानव विकास के लिए एक अनिवार्य और शक्तिशाली साधन मानती हैं।
4. **अनुशासन पर बल:**यद्यपि दोनों के अनुशासन की विधियाँ भिन्न हैं, किंतु दोनों ही बाह्य दमनकारी या क्रूर शारीरिक दंड का कड़ा विरोध करते हैं और आंतरिक/स्व-अनुशासन का समर्थन करते हैं।

अंतर (Differences):

दार्शनिक एवं शैक्षणिक आयाम	आदर्शवाद (Idealism)	प्रकृतिवाद (Naturalism)

नोट

मूल तत्व (Core Reality)	विचार (Ideas), आत्मा और ईश्वर ही अंतिम सत्य हैं। भौतिक संसार क्षणभंगुर है।	पदार्थ (Matter) और बाह्य प्रकृति ही अंतिम सत्य है। ईश्वर या परलोक का कोई अस्तित्व नहीं है।
ज्ञान का स्रोत (Source of Knowledge)	बुद्धि, विवेक और अंतरात्मा से प्राप्त अमूर्त ज्ञान ही प्रामाणिक है।	इंद्रियजन्य अनुभव (Sense experience) और वैज्ञानिक अवलोकन ही सच्चा ज्ञान है।
मूल्य (Values)	शाश्वत एवं अपरिवर्तनशील मूल्य ('सत्यम, शिवम, सुंदरम') पूर्व-निर्धारित हैं।	मूल्य परिवर्तनशील हैं, जो मनुष्य के अनुभवों और आवश्यकताओं से बनते हैं।
शिक्षा का केंद्र (Center of Education)	**शिक्षक एवं पाठ्यक्रम-केंद्रित:**शिक्षक का स्थान सर्वोच्च और केंद्रीय होता है।	**बाल-केंद्रित:**बालक का स्थान सर्वोच्च है, शिक्षक केवल एक मूक दर्शक है।
शिक्षा का उद्देश्य (Educational Objectives)	आत्म-साक्षात्कार (Self-Realization), आध्यात्मिक विकास और चरित्र निर्माण।	आत्म-अभिव्यक्ति (Self-Expression), पर्यावरण से अनुकूलन और प्राकृतिक विकास।
पाठ्यक्रम (Curriculum)	आध्यात्मिक, नैतिक और मानवीय विषयों (भाषा, दर्शन, साहित्य, इतिहास) को प्राथमिकता।	प्राकृतिक विज्ञान, भूगोल, गणित, और व्यावहारिक/शारीरिक गतिविधियों को प्राथमिकता।
शिक्षण विधियाँ (Teaching Methods)	संवाद, प्रश्नोत्तर, व्याख्यान, और चिंतन-मनन जैसी अमूर्त विधियाँ।	प्रत्यक्ष अनुभव, अनुभव द्वारा सीखना (Learning by Doing), और खेल विधि।
अनुशासन (Discipline)	प्रभावात्मक अनुशासन (Impressive	प्राकृतिक परिणामों द्वारा अनुशासन (Discipline by

नोट

	Discipline) एवं आत्म-नियंत्रण।	Natural Consequences) एवं पूर्ण स्वतंत्रता।

8.5.2 आधुनिक शिक्षा पर प्रभाव (Impact on Modern Education)

आधुनिक शिक्षा प्रणाली किसी एक दर्शन की एकांकी देन नहीं है, बल्कि यह आदर्शवाद और प्रकृतिवाद के व्यावहारिक समन्वय का परिणाम है। इन दोनों धाराओं ने समकालीन शिक्षा के स्वरूप को गहराई से प्रभावित किया है:

1. बाल-केंद्रित शिक्षा का उद्भव (Child-Centric Education):

प्रकृतिवाद के प्रभाव के कारण ही आधुनिक शिक्षा में बालक की रुचियों, क्षमताओं, आयु और सीखने की गति को प्राथमिकता दी गई। आज का पाठ्यक्रम 'बालक के लिए' बनता है, न कि बालक को 'पाठ्यक्रम के ढाँचे' में जबरन ढाला जाता है। मोंटेसरी, किंडरगार्टन, और बाल-वाटिका जैसी आधुनिक प्रणालियाँ प्रकृतिवाद की ही देन हैं।

2. नैतिक शिक्षा और मूल्य-आधारित शिक्षण (Value-Based Education):

केवल भौतिक ज्ञान और तकनीकी दक्षता मनुष्य को पूर्ण नहीं बना सकती। आज की वैश्विक शिक्षा व्यवस्था में जो चरित्र निर्माण, मानवीय मूल्यों, सहानुभूति, और नैतिक शिक्षा (Moral Education) पर बल दिया जाता है, वह आदर्शवाद का सीधा प्रभाव है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP 2020) में भी मानवीय और संवैधानिक मूल्यों के समावेश का आधार आदर्शवादी चिंतन ही है।

3. प्रयोगात्मक एवं अनुभवजन्य अधिगम (Experiential Learning):

आधुनिक शिक्षण में रटंत प्रणाली (Rote Learning) को समाप्त करके 'अनुभव द्वारा सीखने' (Experiential Learning), प्रोजेक्ट कार्य, प्रयोगशाला परीक्षण और व्यावहारिक गतिविधियों पर जो जोर दिया जा रहा है, वह प्रकृतिवादी शिक्षण विधियों की देन है। STEM (Science, Technology, Engineering, Math) शिक्षा का आधार प्रकृतिवादी और वैज्ञानिक दृष्टिकोण ही है।

4. शिक्षक की संतुलित भूमिका:

नोट

आधुनिक शिक्षा ने शिक्षक की भूमिका के संबंध में दोनों दर्शनों का संतुलन अपनाया है। शिक्षक न तो आदर्शवाद की तरह पूरी तरह कठोर या एकाधिकारवादी (Authoritarian) है और न ही प्रकृतिवाद की तरह पूरी तरह निष्क्रिय। आज शिक्षक एक**सुगमकर्ता (Facilitator)**और मार्गदर्शक के रूप में कार्य करता है, जो आदर्शवाद से प्रेरणा और प्रकृतिवाद से लचकता लेता है।

5. समावेशी और पर्यावरण शिक्षा (Inclusive and Environmental Education):

प्रकृतिवाद ने मनुष्य को प्रकृति से जोड़ने और प्राकृतिक पर्यावरण के संरक्षण की प्रेरणा दी, जिससे आधुनिक समय में 'पर्यावरण शिक्षा' (Environmental Studies) एक अनिवार्य विषय बना। वहीं दूसरी ओर, आदर्शवाद के 'प्रत्येक आत्मा में ईश्वर का अंश' मानने के विचार ने सभी बालकों की समानता और 'समावेशी शिक्षा' (Inclusive Education) का दार्शनिक आधार तैयार किया।

निष्कर्षतः, आधुनिक शिक्षा आदर्शवाद के**"उद्देश्यों"** (उच्च चरित्र, मूल्य और उद्देश्यपूर्ण जीवन) तथा प्रकृतिवाद की**"विधियों"** (बाल-केंद्रितता, स्वतंत्रता और प्रत्यक्ष अनुभव) के सुंदर सम्मिश्रण पर आधारित है।

1. प्रकृतिवाद (Naturalism) का मूल नारा क्या था?

(A) 'प्रकृति की ओर लौटें' (Back to Nature)

(B) 'विचार ही सत्य हैं'

(C) 'अनुभव ही सब कुछ है'

(D) 'पुस्तकीय ज्ञान ही श्रेष्ठ है'

2. आदर्शवाद (Idealism) के अनुसार अंतिम सत्य क्या है?

(A) भौतिक पदार्थ

(B) विचार, मन और आध्यात्मिक मूल्य

(C) केवल वैज्ञानिक तथ्य

(D) प्रकृति के नियम

3. 'रूसो' (Rousseau) किस दार्शनिक विचारधारा के मुख्य समर्थक थे?

नोट

(A) आदर्शवाद

(B) प्रकृतिवाद

(C) प्रयोजनवाद

(D) यथार्थवाद

4. आदर्शवादी शिक्षा का मुख्य उद्देश्य क्या है?

(A) आत्मानुभूति (Self-Realization)

(B) केवल भौतिक सुख पाना

(C) इंद्रिय प्रशिक्षण

(D) प्राकृतिक स्वतंत्रता

5. 'नेगेटिव एजुकेशन' (निषेधात्मक शिक्षा) की अवधारणा किसने दी?

(A) प्लेटो

(B) रूसो

(C) फ्रोबेल

(D) सुकरात

8.6 सारांश (Summary)

- **दार्शनिक भिन्नता:**आदर्शवाद चेतना, विचारों, आत्मा और 'सत्यम, शिवम, सुंदरम' जैसे शाश्वत आध्यात्मिक मूल्यों को अंतिम सत्य स्वीकार करता है, जबकि प्रकृतिवाद केवल भौतिक जगत और बाह्य प्रकृति को ही एकमात्र सत्य मानता है।
- **शैक्षणिक भिन्नता:**आदर्शवाद 'शिक्षक एवं पाठ्यक्रम-केंद्रित' है जिसका मुख्य लक्ष्य आत्म-साक्षात्कार एवं चरित्र निर्माण है। इसके विपरीत, प्रकृतिवाद 'बाल-केंद्रित' है, जहाँ बालक की पूर्ण स्वतंत्रता, उसकी स्वाभाविक प्रवृत्तियों और इंद्रियजन्य अनुभवों पर बल दिया जाता है।
- **समकालीन प्रासंगिकता:**आधुनिक शिक्षा प्रणाली (विशेषकर NEP 2020) इन दोनों धाराओं के समन्वय पर आधारित है—यह प्रकृतिवाद से प्रयोगात्मक व

नोट

बाल-केंद्रित विधियाँ (Experiential Learning) और आदर्शवाद से मानवीय व नैतिक मूल्य ग्रहण करती है।

8.7 शब्दावली (Glossary)

इकाई 8 में प्रयुक्त पाश्चात्य दर्शन, आदर्शवाद और प्रकृतिवाद से संबंधित महत्वपूर्ण दार्शनिक एवं शैक्षणिक पारिभाषिक शब्दों के अर्थ नीचे दिए गए हैं:

- **आदर्शवाद (Idealism):**पाश्चात्य दर्शन की वह क्लासिकल धारा जो भौतिक जगत की तुलना में विचारों, आत्मा, चेतना और आध्यात्मिक मूल्यों को सर्वोपरि एवं अंतिम सत्य स्वीकार करती है।
- **प्रकृतिवाद (Naturalism):**वह दार्शनिक विचारधारा जो किसी भी अति-प्राकृतिक या अलौकिक सत्ता को नकारते हुए केवल 'प्रकृति' और भौतिक जगत को ही एकमात्र एवं अंतिम सत्य मानती है।
- **तत्वमीमांसा (Metaphysics):**दर्शनशास्त्र की वह शाखा जो ब्रह्मांड के मूल तत्व, परम सत्य, ईश्वर, आत्मा और अस्तित्व की वास्तविक प्रकृति का अध्ययन करती है।
- **ज्ञानमीमांसा (Epistemology):**दर्शनशास्त्र की वह शाखा जो ज्ञान के स्वरूप, स्रोतों, सीमाओं, प्रामाणिकता और ज्ञान प्राप्त करने की विधियों का विवेचन करती है।
- **मूल्य एवं नीतिमीमांसा (Axiology and Ethics):**दर्शन की वह शाखा जो मानवीय मूल्यों, आचरण के सिद्धांतों, नीति, और 'सत्यम, शिवम, सुंदरम' जैसे शाश्वत आदर्शों का अध्ययन करती है।
- **आत्म-साक्षात्कार (Self-Realization):**आदर्शवाद के अनुसार शिक्षा का सर्वोच्च उद्देश्य, जिसमें व्यक्ति अपनी अंतर्निहित शक्तियों, आत्मा के स्वरूप और उच्चतम व्यक्तित्व की पहचान करता है।

नोट

- **शाश्वत मूल्य (Eternal Values):**वे मूल्य जो काल और परिस्थिति से परे सदैव सत्य रहते हैं; जैसे—सत्य (Truth), शिव (Goodness), और सुंदर (Beauty)।
- **बाल-केंद्रित शिक्षा (Child-Centric Education):**वह शैक्षणिक दृष्टिकोण जिसमें बालक की रुचियों, क्षमताओं, आवश्यकताओं और स्वाभाविक विकास को शिक्षा प्रक्रिया के केंद्र में रखा जाता है।
- **प्राकृतिक परिणामों द्वारा अनुशासन (Discipline by Natural Consequences):**प्रकृतिवादी दार्शनिक रूसो द्वारा प्रतिपादित सिद्धांत, जिसके अनुसार बालक को बाह्य दंड देने के बजाय उसकी गलतियों के प्राकृतिक परिणामों के माध्यम से सीखने और सुधरने का अवसर दिया जाता है।
- **इंद्रियजन्य अनुभव (Sense Experience):**प्रकृतिवाद के अनुसार ज्ञान प्राप्ति का मुख्य साधन, जहाँ मनुष्य अपनी पाँचों ज्ञानेंद्रियों (आँख, कान, नाक, जीभ, त्वचा) के प्रत्यक्ष अवलोकन द्वारा ज्ञान अर्जित करता है।
- **अनुभव द्वारा सीखना (Learning by Doing):**प्रकृतिवादी शिक्षण विधि, जिसमें बालक केवल सुनकर या पढ़कर नहीं, बल्कि स्वयं गतिविधियों और कार्यों को व्यावहारिक रूप से करके सीखता है।
- **प्रभावात्मक अनुशासन (Impressive Discipline):**आदर्शवादी अनुशासन का रूप, जहाँ शिक्षक अपने उच्च चरित्र, आदर्श आचरण और व्यक्तित्व के प्रभाव से बालक में स्व-अनुशासन जागृत करता है।
- **मानविकी (Humanities):**वे अध्ययन विषय जो मानव संस्कृति, विचारों और मूल्यों से संबंधित हैं; जैसे—साहित्य, दर्शन, इतिहास, कला और नीतिशास्त्र (आदर्शवादी पाठ्यक्रम का मुख्य अंग)।
- **जैविक प्रकृतिवाद (Biological Naturalism):**डार्विन के विकासवाद पर आधारित प्रकृतिवाद का रूप, जो जीवन संघर्ष, योग्यतम की उत्तरजीविता और वातावरण के साथ अनुकूलन पर बल देता है।

8.8 बोध प्रश्नों के उत्तर

नोट

उत्तर: (A) 'प्रकृति की ओर लौटें' (Back to Nature)

उत्तर: (B) विचार, मन और आध्यात्मिक मूल्य

उत्तर: (B) प्रकृतिवाद

उत्तर: (A) आत्मानुभूति (Self-Realization)

उत्तर: (B) रूसो

8.9 सुझावित अध्ययन सामग्री – मुक्त शैक्षिक संसाधन

1. eGyanKosh: Idealism and Naturalism in Education (IGNOU)
2. Stanford Encyclopedia of Philosophy: Idealism
3. Stanford Encyclopedia of Philosophy: Naturalism in Philosophy
4. Internet Encyclopedia of Philosophy: Idealism
5. OER Commons: Western Philosophies of Education
6.

8.10 संदर्भ ग्रंथ सूची (References / Bibliography)

इस इकाई के अध्ययन एवं सामग्री निर्माण हेतु निम्नलिखित संदर्भ ग्रंथों का उपयोग किया जा सकता है:

1. **चौबे, एस. पी. एवं चौबे, अखिलेश.** (2018). *शिक्षा के दार्शनिक एवं समाजशास्त्रीय आधार.* अग्रवाल पब्लिकेशंस, आगरा।
2. **गुप्त, आर. सी.** (2015). *पाश्चात्य शैक्षिक चिंतन का इतिहास.* राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकादमी, जयपुर।
3. **पाण्डेय, रामशकल.** (2020). *उदीयमान भारतीय समाज में शिक्षक और शिक्षा.* विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा।
4. **सक्सैना, एन. आर. स्वरूप.** (2017). *शिक्षा दर्शन एवं शिक्षा समाजशास्त्र.* आर. लाल बुक डिपो, मेरठ।

नोट

5. **Rusk, R. R., & Scotland, J.** (1979). *Doctrines of the Great Educators*. Macmillan International Higher Education.

6. **Rousseau, J. J.** (1762). *Emile: Or, On Education*. (Translated by Allan Bloom, Basic Books, 1979).

7. **Plato.** (c. 375 BCE). *The Republic*. (Translated by Benjamin Jowett, Oxford University Press).

8.11 अभ्यास प्रश्न एवं उत्तरमाला (Exercises and Self-Assessment Questions)

8.11.1 वस्तुनिष्ठ प्रश्न (Objective Questions)

प्रश्न 1. 'Idealism' शब्द की उत्पत्ति ग्रीक भाषा के किस मूल शब्द से हुई है?

(क) Idea

(ख) Ideal

(ग) Idology

(घ) Identity

प्रश्न 2. "प्रकृति की ओर लौटें" (Back to Nature) का प्रसिद्ध नारा किस दार्शनिक ने दिया था?

(क) प्लेटो

(ख) सुकरात

(ग) जीन-जैक्स रूसो

(घ) कांट

प्रश्न 3.आदर्शवाद के अनुसार मानव जीवन के तीन शाश्वत मूल्य (Eternal Values) कौन-से हैं?

नोट

(क) धर्म, अर्थ, काम

(ख) सत्यम, शिवम, सुंदरम

(ग) स्वतंत्रता, समानता, बंधुत्व

(घ) ज्ञान, कर्म, भक्ति

प्रश्न 4.प्रकृतिवाद के अनुसार ज्ञान प्राप्ति का मुख्य द्वार (Gateways of Knowledge) किसे माना गया है?

(क) बुद्धि

(ख) अंतरात्मा

(ग) इंद्रियाँ (Senses)

(घ) धार्मिक ग्रंथ

प्रश्न 5. 'प्राकृतिक परिणामों द्वारा अनुशासन' (Discipline by Natural Consequences) की अवधारणा किस दर्शन की देन है?

(क) आदर्शवाद

(ख) यथार्थवाद

(ग) अस्तित्ववाद

(घ) प्रकृतिवाद

8.11.2 लघु उत्तरीय प्रश्न (Short Answer Questions)

1. आदर्शवाद के अनुसार शिक्षा के किन्हीं तीन प्रमुख उद्देश्यों का संक्षेप में वर्णन कीजिए।
2. प्रकृतिवाद की प्रमुख सीमाओं या कमियों का उल्लेख कीजिए।
3. सुकराती विधि (प्रश्न-उत्तर विधि) और आगमन-निगमन विधि का आदर्शवादी शिक्षा में क्या महत्व है?

नोट

4. प्रकृतिवाद में शिक्षक की भूमिका को 'पर्दे के पीछे' (Behind the Stage) क्यों माना गया है?
5. आदर्शवाद और प्रकृतिवाद के अनुसार पाठ्यक्रम निर्माण के मुख्य अंतरों को स्पष्ट कीजिए।

8.11.3 दीर्घ उत्तरीय प्रश्न (Long Answer Questions)

1. "आदर्शवाद भौतिक जगत की तुलना में विचार और आत्मा को अंतिम सत्य स्वीकार करता है।" इस कथन के आलोक में आदर्शवाद के तत्वमीमांसीय, ज्ञानमीमांसीय एवं शैक्षणिक आयामों की विस्तृत विवेचना कीजिए।
2. प्रकृतिवाद के दार्शनिक स्वरूप एवं इसके विभिन्न रूपों (पदार्थवादी, यांत्रिक एवं जैविक प्रकृतिवाद) की व्याख्या करते हुए आधुनिक शिक्षा में इसके योगदान का मूल्यांकन कीजिए।
3. आदर्शवाद एवं प्रकृतिवाद की तुलना कीजिए। आधुनिक भारतीय शिक्षा प्रणाली (विशेषकर NEP 2020) में इन दोनों क्लासिकल धाराओं का समन्वय किस प्रकार दिखाई देता है? उदाहरण सहित समझाइए।

8.11.4 उत्तरमाला / संकेत (Answers / Hints)

वस्तुनिष्ठ प्रश्नों के उत्तर:

1. **(क) Idea**
2. **(ग) जीन-जैक्स रूसो**
3. **(ख) सत्यम, शिवम, सुंदरम**
4. **(ग) इंद्रियाँ (Senses)**
5. **(घ) प्रकृतिवाद**

लघु उत्तरीय प्रश्नों के संकेत:

- **उत्तर 1:**आत्म-साक्षात्कार (Self-Realization), शाश्वत मूल्यों (सत्यम, शिवम, सुंदरम) की प्राप्ति, तथा सांस्कृतिक विरासत का संरक्षण एवं हस्तांतरण।

नोट

- **उत्तर 2:**आध्यात्मिक व नैतिक मूल्यों की उपेक्षा, अत्यधिक स्वतंत्रता से अनुशासनहीनता का जोखिम, धार्मिक/सांस्कृतिक शिक्षा का बहिष्कार, और पुस्तकीय ज्ञान की अवहेलना।
- **उत्तर 3:**सुकराती विधि अमूर्त चिंतन व तार्किक क्षमता का विकास करती है; आगमन-निगमन विधि नियम व उदाहरण के माध्यम से सत्य की खोज में सहायता करती है।
- **उत्तर 4:**क्योंकि प्रकृतिवाद बाल-केंद्रित है; यहाँ प्रकृति ही वास्तविक शिक्षक है। शिक्षक केवल अनुकूल वातावरण का निर्माण करता है और बालक के विकास में हस्तक्षेप नहीं करता।
- **उत्तर 5:**आदर्शवादी पाठ्यक्रम मानविकी, साहित्य, दर्शन व मूल्यों (मानव-केंद्रित) पर बल देता है, जबकि प्रकृतिवादी पाठ्यक्रम वैज्ञानिक विषयों, प्रत्यक्ष अनुभवों, हस्तकला व शारीरिक गतिविधियों (बाल-केंद्रित) को प्राथमिकता देता है।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्नों के संकेत:

- **उत्तर 1:**प्रस्तावना, तत्वमीमांसा (चेतना/विचार ही सत्य), ज्ञानमीमांसा (बुद्धिजन्य ज्ञान), मूल्यमीमांसा (सत्यम-शिवम-सुंदरम), तथा शिक्षण विधियों, शिक्षक व अनुशासन पर आदर्शवाद के प्रभावों का 600-800 शब्दों में क्रमबद्ध उत्तर दें।
- **उत्तर 2:**प्रकृतिवाद की परिभाषा, रूसो का योगदान, तीन रूपों का वर्गीकरण, बाल-केंद्रित शिक्षा, प्रत्यक्ष अनुभव, और खेल विधि जैसे आधुनिक शैक्षणिक योगदानों का विस्तारपूर्वक विश्लेषण करें।
- **उत्तर 3:**दोनों दर्शनों की तुलनात्मक तालिका (तत्वमीमांसा, उद्देश्य, विधियाँ, शिक्षक, अनुशासन), तथा NEP 2020 में प्रयोगात्मक अधिगम (प्रकृतिवाद) एवं नैतिक/संवैधानिक मूल्यों (आदर्शवाद) के समन्वय को उदाहरण सहित रेखांकित करें।

नोट

इकाई 9
पाश्चात्य दर्शन की आधुनिक धाराएँ (यथार्थवाद एवं अस्तित्ववाद)

इकाई संरचना (Unit Structure)

9.1 प्रस्तावना (Introduction)
9.2 उद्देश्य (Objectives)
9.3 यथार्थवाद (Realism): अर्थ एवं मूल अवधारणा
9.3.1 यथार्थवाद की प्रमुख विशेषताएँ एवं सिद्धांत
9.3.2 यथार्थवाद के मुख्य रूप/प्रकार
9.3.3 यथार्थवाद और शिक्षा (उद्देश्य, पाठ्यक्रम, शिक्षण विधियाँ एवं शिक्षक की भूमिका)
9.4 अस्तित्ववाद (Existentialism): अर्थ एवं मूल अवधारणा
9.4.1 अस्तित्ववाद की प्रमुख विशेषताएँ एवं सिद्धांत
9.4.2 प्रमुख अस्तित्ववादी विचारक (सार्त्र, किर्केगार्ड, नीत्शे)
9.4.3अस्तित्ववाद और शिक्षा (स्वतंत्रता, विकल्प, उत्तरदायित्व एवं पाठ्यक्रम
9.5 यथार्थवाद एवं अस्तित्ववाद की तुलना
9.6 सारांश (Summary)
9.7 शब्दावली (Key Terms / Glossary)
9.8 बोध प्रश्नों के उत्तर
9.9 सुझावित अध्ययन सामग्री – मुक्त शैक्षिक संसाधन
9.10 सन्दर्भ
9.11 अभ्यास प्रश्न एवं मूल्यांकन

9.1 प्रस्तावना

पाश्चात्य दर्शन के इतिहास में 19वीं और 20वीं शताब्दी का काल अत्यंत क्रांतिकारी रहा है। जहाँ प्राचीन एवं मध्यकालीन पाश्चात्य दर्शन (जैसे विचारवाद/आदर्शवाद) अमूर्त अवधारणाओं, ईश्वर और आत्मा के चिंतन पर केंद्रित थे, वहीं आधुनिक दर्शन ने मनुष्य के वास्तविक जीवन, उसकी संवेदनाओं, अस्तित्व और भौतिक जगत के प्रत्यक्ष ज्ञान को केंद्र में रखा। इस इकाई के अंतर्गत पाश्चात्य दर्शन की दो प्रमुख आधुनिक धाराओं—

नोट

यथार्थवाद)Realism) और**अस्तित्ववाद)Existentialism)**— का अध्ययन किया जाएगा।

- **यथार्थवाद)Realism):** यथार्थवाद यह मानता है कि वस्तु) जगत-Physical World) सत्य और वास्तविक है, भले ही कोई मनुष्य इसे देखे या न देखे। शिक्षा के क्षेत्र में यथार्थवाद इस बात पर बल देता है कि विद्यार्थी को काल्पनिक या अमूर्त सिद्धांतों के बजाय व्यावहारिक, वैज्ञानिकी और प्रत्यक्ष जगत की शिक्षा दी जानी चाहिए।
- **अस्तित्ववाद)Existentialism):** अस्तित्ववाद मनुष्य की व्यक्तिगत स्वतंत्रता, चयन के अधिकार और उसकी अपनी उत्तरदायित्व की भावना को सर्वोपरि मानता है। इसका मूल मंत्र है—*"अस्तित्व सार से पहले है"* (Existence precedes essence)। शिक्षा के दृष्टिकोण से यह धारा बालक की वैयक्तिकता)Individuality), आत्मअनुभूति और स्वतंत्रता को बढ़ावा देती है।-
-

यह इकाई इन दोनों दर्शनों के मुख्य सिद्धांतों, उनके समर्थकों जैसे जॉन लॉक), बर्ट्रेंड रसेल, सोरेन कीर्केगार्ड, ज्यांपॉल सार्त्र) और शिक्षा में उनके व्यावहारिक अनुप्रयोगों का - गहन विश्लेषण प्रदान करती है।

9.2 उद्देश्य (Objectives)

इस इकाई के अध्ययन के उपरांत आप:

- **पाश्चात्य दर्शन की आधुनिक धाराओं**की पृष्ठभूमि और उनके उद्भव के कारणों को समझ सकेंगे।
- **यथार्थवाद (Realism)**की मूल अवधारणा, अर्थ तथा इसके प्रमुख दार्शनिक सिद्धांतों की व्याख्या कर सकेंगे।
- **यथार्थवाद के विभिन्न प्रकारों** (जैसे- नव-यथार्थवाद, आलोचनात्मक यथार्थवाद आदि) का विश्लेषण कर सकेंगे।

नोट

- **शिक्षा में यथार्थवाद के योगदान**—जैसे कि शैक्षिक उद्देश्य, पाठ्यक्रम, शिक्षण विधियों और शिक्षक की भूमिका का मूल्यांकन कर सकेंगे।
- **अस्तित्ववाद (Existentialism)**की मूल अवधारणा, सिद्धांतों तथा इसकी केंद्रीय पंक्ति "अस्तित्व सारतत्व से पहले है" को स्पष्ट कर सकेंगे।
- **प्रमुख अस्तित्ववादी विचारकों** (जैसे- सॉरेन किर्केगार्ड, फ्रैड्रिक नीत्शे, और जीन-पॉल सार्त्र) के विचारों का अध्ययन कर सकेंगे।
- **अस्तित्ववादी शिक्षा प्रणाली**में स्वतंत्रता, व्यक्तिगत विकल्प, आत्म-उत्तरदायित्व और मानव मूल्यों के महत्व को समझ सकेंगे।
- **यथार्थवाद एवं अस्तित्ववाद**के बीच समानता और विषमता का तुलनात्मक विश्लेषण कर सकेंगे।

9.3 यथार्थवाद (Realism): अर्थ एवं मूल अवधारणा

'यथार्थवाद' शब्द अंग्रेजी भाषा के**'Realism'**का हिंदी रूपांतरण है। 'Realism' शब्द की उत्पत्ति ग्रीक शब्द**'Res'**से हुई है, जिसका अर्थ होता है — 'वस्तु' (Thing)। इस प्रकार, यथार्थवाद का शाब्दिक अर्थ है —**"वस्तुओं या भौतिक जगत से संबंधित विचारधारा।"**

दार्शनिक दृष्टिकोण से, यथार्थवाद वह विचारधारा है जो भौतिक या दृश्यमान जगत (Objective World) की वास्तविकता को स्वीकार करती है। यह दर्शन आदर्शवाद (Idealism) के विपरीत कार्य करता है। जहाँ आदर्शवाद विचारों, विचारों की दुनिया और आध्यात्मिक मूल्यों को सत्य मानता है, वहीं यथार्थवाद यह मानता है कि जो कुछ हमें अपनी ज्ञानेन्द्रियों (आँख, कान, नाक, त्वचा, जिह्वा) द्वारा प्रत्यक्ष दिखाई और महसूस होता है, वही सत्य है।

यथार्थवाद का मूल सिद्धांत यह है कि वस्तुओं का अस्तित्व मानव मस्तिष्क या विचारों पर निर्भर नहीं करता। यदि कोई मनुष्य किसी वस्तु को न भी देखे या उसके बारे में न भी सोचे, तब भी उस वस्तु का अस्तित्व बना रहता है।

9.3.1 यथार्थवाद की प्रमुख विशेषताएँ एवं सिद्धांत

नोट

1. **प्रत्यक्ष जगत ही सत्य है:**यथार्थवाद के अनुसार दृश्यमान भौतिक संसार ही एकमात्र सत्य है। कोई अप्रत्यक्ष या पारलौकिक (आध्यात्मिक) संसार नहीं है।
2. **ज्ञानेन्द्रियाँ ज्ञान का द्वार हैं:**ज्ञान की प्राप्ति इंद्रिय-अनुभवों (Sensory Experiences) पर आधारित होती है। जो ज्ञान ज्ञानेन्द्रियों द्वारा प्राप्त नहीं होता, वह प्रामाणिक नहीं है।
3. **विचारों की तुलना में वस्तु को प्राथमिकता:**वस्तु की सत्ता विचार से स्वतंत्र और पहले है।
4. **विज्ञान एवं वैज्ञानिक विधि पर बल:**यह दर्शन कार्य-कारण संबंध (Cause and Effect) और वैज्ञानिक प्रयोगों में विश्वास रखता है।
5. **वर्तमान और व्यावहारिक जीवन पर बल:**यथार्थवाद काल्पनिक या भविष्य के आध्यात्मिक जीवन के स्थान पर मानव के वर्तमान और व्यावहारिक जीवन को सुधारने पर जोर देता है।

9.3.2 यथार्थवाद के मुख्य रूप/प्रकार

1. **मानवतावादी यथार्थवाद (Humanistic Realism):**इसके समर्थकों (जैसे- इरास्मस, रेबले) का मानना था कि प्राचीन साहित्य का अध्ययन मानव जीवन को व्यावहारिक और उपयोगी बनाने के लिए किया जाना चाहिए।
2. **सामाजिक यथार्थवाद (Social Realism):**लॉर्ड मोंटेन और जॉन लॉक जैसे विचारकों ने पुस्तकीय ज्ञान के बजाय समाज के प्रत्यक्ष अनुभवों, भ्रमण और व्यावहारिक जीवन से सीखने पर बल दिया।
3. **ज्ञानेन्द्रिय यथार्थवाद (Sense Realism):**कमेनियस और फ्रांसिस बेकन जैसे विद्वानों के अनुसार वास्तविक शिक्षा वही है जो इंद्रियों के माध्यम से प्राप्त होती है। इसने शिक्षण में दृश्य-श्रव्य सामग्रियों (Audio-Visual Aids) के प्रयोग की नींव रखी।
4. **नव-यथार्थवाद (Neo-Realism):** 20वीं शताब्दी में विकसित यह रूप (बर्ट्रेंड रसेल, व्हाइटहेड) भौतिक विज्ञान और गणितीय तर्क पर आधारित है।

नोट

9.3.3 यथार्थवाद और शिक्षा

यथार्थवाद ने पारंपरिक और काल्पनिक शिक्षा प्रणाली को बदलकर उसे व्यावहारिक और जीवनोपयोगी बनाया:

- **शिक्षा के उद्देश्य:**शिक्षार्थी को वास्तविक जीवन की परिस्थितियों का सामना करने योग्य बनाना, उसकी इंद्रियों का प्रशिक्षण करना और उसे वैज्ञानिक दृष्टिकोण प्रदान करना।
- **पाठ्यक्रम:**पाठ्यक्रम में काल्पनिक विषयों के बजाय भौतिक विज्ञान, गणित, भूगोल, प्राकृतिक विज्ञान और व्यावहारिक भाषाओं को प्राथमिकता दी जाती है।
- **शिक्षण विधियाँ:**रटने की पद्धति का विरोध; निरीक्षण विधि, प्रयोग विधि, आगमन विधि (Inductive Method) और प्रत्यक्ष अनुभव द्वारा सीखने पर बल।
- **शिक्षक की भूमिका:**शिक्षक का स्थान एक मार्गदर्शक और वैज्ञानिक का होता है, जो छात्र को निष्पक्ष रूप से सत्य और तथ्यों का ज्ञान कराता है।
- **अनुशासन:**यथार्थवाद कठोर शारीरिक दंड का विरोध करता है और स्व-अनुशासन तथा वैज्ञानिक समझ पर आधारित अनुशासन का समर्थन करता है।

9.4 अस्तित्ववाद (Existentialism): अर्थ एवं मूल अवधारणा

अस्तित्ववाद (Existentialism) 20वीं शताब्दी का एक अत्यंत प्रभावशाली दार्शनिक चिंतन है। यह दर्शन पारंपरिक दार्शनिक प्रणालियों के विपरीत, जो ईश्वर, संपूर्ण सत्य या अमूर्त विचारों को केंद्र में रखती थीं, केवल**मनुष्य के व्यक्तिगत अस्तित्व (Individual Existence)**को अपने अध्ययन का केंद्र बिंदु बनाता है।

'अस्तित्व' (Existence) शब्द लैटिन भाषा के**'Ex-sistere'**से बना है, जिसका अर्थ है — **"बाहर निकलना" या "प्रकट होना" (To stand out / To emerge)**।

अस्तित्ववाद का सबसे मूल और केंद्रीय सूत्र फ्रांसीसी दार्शनिक जीन-पॉल सार्त्र ने दिया था:

"अस्तित्व सारतत्व से पहले है" (Existence precedes essence)।

नोट

इसका अर्थ यह है कि मनुष्य पहले इस संसार में जन्म लेता है (उसका अस्तित्व होता है), और उसके बाद वह अपने विचारों, विकल्पों, निर्णयों और कर्मों के माध्यम से अपने जीवन का स्वरूप और अर्थ (सारतत्व / Essence) स्वयं गढ़ता है। मनुष्य की कोई पूर्व-निर्धारित नियति या स्वरूप नहीं होता; वह जो कुछ भी बनता है, स्वयं के चयन से बनता है।

9.4.1 अस्तित्ववाद की प्रमुख विशेषताएँ एवं सिद्धांत

1. **व्यक्तिगत स्वतंत्रता (Personal Freedom):**मनुष्य पूर्णतः स्वतंत्र है। उसके पास हर परिस्थिति में अपने विकल्प चुनने की स्वतंत्रता है।
2. **उत्तरदायित्व एवं उत्तरदेयता (Responsibility):**स्वतंत्रता अपने साथ उत्तरदायित्व लाती है। मनुष्य अपने निर्णयों और उनके परिणामों के लिए स्वयं पूरी तरह जिम्मेदार है; वह ईश्वर, परिस्थिति या भाग्य को दोष नहीं दे सकता।
3. **अकेलापन और चिंता (Anguish and Alienation):**जब मनुष्य को यह अहसास होता है कि वह अपनी पसंद के लिए अकेला जिम्मेदार है, तो उसे एक प्रकार की मानसिक चिंता और अकेलेपन का अनुभव होता है।
4. **सच्चा जीवन (Authentic Life):**दूसरों की देखा-देखी या सामाजिक दबाव में जीवन जीने के बजाय अपने स्वयं के मूल्यों के अनुसार जीवन जीना ही 'प्रामाणिक या सच्चा जीवन' है।
5. **अमूर्त सिद्धांतों का विरोध:**यह दर्शन किसी बने-बनाये सार्वभौमिक सत्य या धार्मिक नियमों को थोपने का कड़ा विरोध करता है।

9.4.2 प्रमुख अस्तित्ववादी विचारक

- **सॉरेन किर्केगार्ड (Søren Kierkegaard):**इन्हें 'अस्तित्ववाद का जनक' माना जाता है। इन्होंने व्यक्तिगत आस्था, विकल्प और ईश्वर के प्रति व्यक्तिगत संबंध पर बल दिया।
- **फ्रेडरिक नीत्शे (Friedrich Nietzsche):**इन्होंने पारंपरिक नैतिक मूल्यों को चुनौती दी और मनुष्य को अपनी शक्ति पहचानकर स्व-निर्मित मूल्यों पर जीने का संदेश दिया।

नोट

- **जीन-पॉल सार्त्र (Jean-Paul Sartre):** 20वीं सदी के प्रमुख धर्मनिरपेक्ष अस्तित्ववादी, जिन्होंने मानव स्वतंत्रता, विकल्प और "अस्तित्व सारतत्व से पहले है" की अवधारणा को व्यापक रूप से स्थापित किया।

9.4.3 अस्तित्ववाद और शिक्षा

अस्तित्ववाद शिक्षा को किसी सांचे में ढालने की प्रक्रिया न मानकर 'आत्म-खोज' और 'व्यक्तिगत विकास' का साधन मानता है:

- **शिक्षा के उद्देश्य:**शिक्षार्थी में आत्म-चेतना, निर्णय लेने की क्षमता, स्वतंत्रता और अपने कर्मों के प्रति पूर्ण उत्तरदायित्व की भावना विकसित करना।
- **पाठ्यक्रम:**पाठ्यक्रम लचीला होना चाहिए जिसमें मानवीय संवेदनाओं और आत्म-अभिव्यक्ति से जुड़े विषयों जैसे—साहित्य, कला, संगीत, दर्शन और नैतिकता को प्राथमिकता दी जाए।
- **शिक्षण विधियाँ:**रटने या व्याख्यान विधि के बजाय संवाद, विचार-विमर्श और व्यक्तिगत अनुभव आधारित विधियों पर बल।
- **शिक्षक एवं छात्र की भूमिका:**छात्र शिक्षा प्रक्रिया के केंद्र में है। शिक्षक का काम छात्र पर अपने विचार थोपना नहीं, बल्कि उसे स्वतंत्रतापूर्वक सोचने और सही विकल्प चुनने में सहायता करना है।

9.5 यथार्थवाद एवं अस्तित्ववाद की तुलना (Comparative Analysis)

यद्यपि यथार्थवाद (Realism) और अस्तित्ववाद (Existentialism) दोनों ही पाश्चात्य दर्शन की आधुनिक धाराएँ हैं और दोनों ही पारंपरिक 'आदर्शवाद' (Idealism) के काल्पनिक विचारों का विरोध करती हैं, फिर भी दोनों के दृष्टिकोण, मूल सिद्धांतों और शैक्षिक मान्यताओं में मौलिक अंतर हैं।

नीचे दी गई तालिका के माध्यम से दोनों धाराओं की तुलना को सरलता से समझा जा सकता है:

नोट

तुलना के आधार	यथार्थवाद (Realism)	अस्तित्ववाद (Existentialism)
केंद्रीय विषय	वस्तु-जगत (Objective World) और उसकी भौतिक वास्तविकता।	व्यक्तिगत मनुष्य (Individual Being), उसकी स्वतंत्रता और उसका अस्तित्व।
सत्य की अवधारणा	सत्य बाहरी भौतिक जगत और नियमों में निहित है।	सत्य व्यक्तिगत अनुभव और आत्म-चयन में निहित है।
ज्ञान प्राप्ति का साधन	इंद्रिय-अनुभव (Sensory Perception) और वैज्ञानिक विधियाँ।	अंतर्दृष्टि, आत्म-चेतना और व्यक्तिगत अनुभव।
मानव स्वतंत्रता	मनुष्य प्राकृतिक और वैज्ञानिक नियमों से बंधा हुआ है।	मनुष्य पूर्णतः स्वतंत्र है और स्वयं अपने भाग्य का निर्माता है।
मूल्य (Values)	मूल्य वस्तुनिष्ठ (Objective) और प्राकृतिक नियमों पर आधारित हैं।	मूल्य व्यक्तिनिष्ठ (Subjective) हैं; मनुष्य अपने मूल्य स्वयं गढ़ता है।
शिक्षा का मुख्य उद्देश्य	शिक्षार्थी को भौतिक जगत और व्यावहारिक जीवन के अनुकूल बनाना।	शिक्षार्थी में आत्म-जागरूकता, स्व-निर्णय और उत्तरदायित्व का विकास करना।
पाठ्यक्रम का स्वरूप	विज्ञान, गणित, भूगोल और व्यावहारिक विषयों पर बल।	साहित्य, कला, संगीत, दर्शन और मानवीय संवेदनाओं पर बल।
शिक्षक की भूमिका	एक वस्तुनिष्ठ मार्गदर्शक जो तथ्यों का ज्ञान कराता है।	एक सहायक जो विद्यार्थी को स्वयं के विकल्प चुनने में स्वतंत्रता देता है।

1. यथार्थवाद (Realism) किस पर सबसे अधिक बल देता है?

नोट

(A) केवल विचारों पर

(B) प्रत्यक्ष वस्तु-जगत और वैज्ञानिक तथ्यों पर

(C) केवल ईश्वर पर

(D) काल्पनिक कथाओं पर

2. अस्तित्ववाद (Existentialism) का केंद्रीय विचार क्या है?

(A) 'अस्तित्व सार से पहले है' (Existence precedes Essence)

(B) 'ईश्वर ही सब कुछ है'

(C) 'प्रकृति ही अंतिम सत्य है'

(D) 'समाज ही सर्वोपरि है'

3. यथार्थवादी शिक्षा में किस शिक्षण विधि को प्राथमिकता दी जाती है?

(A) केवल रटना

(B) निरीक्षण, प्रयोग और प्रत्यक्ष अनुभव

(C) केवल व्याख्यान

(D) धार्मिक उपदेश

4. अस्तित्ववादी दर्शन में शिक्षक की क्या भूमिका मानी गई है?

(A) एक सत्तावादी मार्गदर्शक

(B) व्यक्तिगत स्वतंत्रता और चुनाव में सहायक/सुविधादाता

(C) कठोर अनुशासक

(D) केवल पाठ्यक्रम पूरा कराने वाला

5. ज्यां-पॉल सार्त्र (Jean-Paul Sartre) किस दर्शन के प्रमुख विचारक हैं?

(A) आदर्शवाद

(B) अस्तित्ववाद

(C) प्रकृतिवाद

(D) सांख्य दर्शन

9.6 सारांश (Summary)

नोट

- **आधुनिक धाराओं का अभ्युदय:** 19वीं और 20वीं शताब्दी में पाश्चात्य दर्शन में अमूर्त और पारलौकिक विचारों के स्थान पर भौतिक जगत, वैज्ञानिक दृष्टिकोण और व्यक्तिगत मानव जीवन पर आधारित चिंतन का विकास हुआ, जिससे यथार्थवाद और अस्तित्ववाद का जन्म हुआ।
- **यथार्थवाद (Realism):**
    - 'Realism' की उत्पत्ति ग्रीक शब्द 'Res' (वस्तु) से हुई है। यह दर्शन मानता है कि भौतिक जगत का स्वतंत्र अस्तित्व है और यह मानव विचारों पर निर्भर नहीं है।
    - यह ज्ञानेन्द्रियों को ज्ञान का द्वार, प्रत्यक्ष अनुभव तथा वैज्ञानिक विधि को सत्य की खोज का माध्यम स्वीकार करता है।
    - शिक्षा में इसने व्यावहारिक ज्ञान, विज्ञान, भूगोल, निरीक्षण विधि और प्रत्यक्ष अनुभव आधारित शिक्षण पर बल दिया।
- **अस्तित्ववाद (Existentialism):**
    - यह दर्शन व्यक्तिगत मानव के अस्तित्व, स्वतंत्रता और उत्तरदायित्व को केंद्र में रखता है।
    - इसका मूल मंत्र है—**"अस्तित्व सारतत्व से पहले है"** (Existence precedes essence), अर्थात् मनुष्य पहले जन्म लेता है और फिर अपने कर्मों व निर्णयों से अपना अर्थ स्वयं गढ़ता है।
    - सार्त्र, किर्केगार्ड और नीत्शे इसके प्रमुख विचारक हैं।
    - शिक्षा में यह शिक्षार्थी की व्यक्तिगत स्वतंत्रता, स्व-निर्णय, आत्म-खोज और मानवीय संवेदनाओं के विकास का समर्थन करता है।
- **तुलनात्मक निष्कर्ष:**जहाँ यथार्थवाद वस्तुनिष्ठ (Objective) जगत और वैज्ञानिक नियमों को सत्य मानता है, वहीं अस्तित्ववाद व्यक्तिनिष्ठ (Subjective) चेतना और व्यक्तिगत चयन को सत्य मानता है। दोनों ही धाराएँ पारंपरिक

नोट

काल्पनिक शिक्षा प्रणाली को नकार कर मानव जीवन को अर्थपूर्ण बनाने का प्रयास करती हैं।

9.7 शब्दावली (Key Terms / Glossary)

- **यथार्थवाद (Realism):**वह दार्शनिक विचारधारा जो वस्तु-जगत (Objective World) और भौतिक संसार की वास्तविक सत्ता को स्वीकार करती है तथा मानती है कि वस्तुएँ विचारों से स्वतंत्र अस्तित्व रखती हैं।
- **अस्तित्ववाद (Existentialism):** 20वीं सदी की वह दार्शनिक धारा जो मनुष्य के व्यक्तिगत अस्तित्व, उसकी स्वतंत्रता, आत्म-निर्णय और उत्तरदायित्व को दर्शन का मुख्य केंद्र मानती है।
- **"अस्तित्व सारतत्व से पहले है" (Existence precedes essence):**जीन-पॉल सार्त्र द्वारा प्रतिपादित सिद्धांत, जिसका अर्थ है कि मनुष्य पहले जन्म लेता है (अस्तित्व में आता है) और बाद में अपने कर्मों व निर्णयों से अपने जीवन का अर्थ एवं स्वरूप (सारतत्व) स्वयं गढ़ता है।
- **इंद्रिय-अनुभव (Sense Perception):**ज्ञानेन्द्रियों (आँख, कान, नाक, जीभ, त्वचा) के माध्यम से प्राप्त होने वाला प्रत्यक्ष ज्ञान, जिसे यथार्थवाद सत्य की खोज का मुख्य आधार मानता है।
- **सच्चा / प्रामाणिक जीवन (Authentic Life):**अस्तित्ववाद के अनुसार, सामाजिक दबावों या दूसरों के बहकावे में न आकर अपनी स्वतंत्रता और विवेक से चुने गए मूल्यों के अनुसार जीवन जीना।
- **ज्ञानेन्द्रिय यथार्थवाद (Sense Realism):**यथार्थवाद का वह रूप जो यह मानता है कि ज्ञान की प्राप्ति केवल इंद्रियों के प्रशिक्षण और प्रत्यक्ष अनुभव से ही संभव है।

9.8 बोध प्रश्नों के उत्तर

उत्तर: (B) प्रत्यक्ष वस्तु-जगत और वैज्ञानिक तथ्यों पर

नोट

उत्तर: (A) 'अस्तित्व सार से पहले है' (Existence precedes Essence)

उत्तर: (B) निरीक्षण, प्रयोग और प्रत्यक्ष अनुभव उत्तर: (B) प्रकृतिवाद

उत्तर: (B) व्यक्तिगत स्वतंत्रता और चुनाव में सहायक/सुविधादाता

उत्तर: (B) अस्तित्ववाद

9.9 सन्दर्भ

- गुप्त, ए. के. (2018). *शिक्षा के दार्शनिक एवं समाजशास्त्रीय आधार.* नई दिल्ली: आर्य बुक डिपो।
- पांडेय, के. पी. (2015). *शैक्षिक दर्शन के प्रमुख आयाम.* वाराणसी: विश्वविद्यालय प्रकाशन।
- Russell, B. (1945). *A History of Western Philosophy*. New York: Simon & Schuster.
- Sartre, J.-P. (1946). *Existentialism is a Humanism*. London: Methuen & Co.

9.10 अभ्यास प्रश्न एवं मूल्यांकन (Exercises & Self-Assessment)

बोध प्रश्न (Self-Assessment Questions)

1. 'यथार्थवाद' (Realism) शब्द की उत्पत्ति किस भाषा के शब्द से हुई है और इसका शाब्दिक अर्थ क्या है?
2. "अस्तित्व सारतत्व से पहले है" कथन किस अस्तित्ववादी विचारक का है?
3. यथार्थवाद के अनुसार ज्ञान प्राप्ति का सबसे मुख्य साधन क्या है?
4. किन्हीं दो प्रमुख अस्तित्ववादी विचारकों के नाम लिखिए।

निबंधात्मक प्रश्न (Long Answer Questions)

नोट

1. यथार्थवाद की मूल अवधारणा को स्पष्ट करते हुए इसके प्रमुख सिद्धांतों तथा शिक्षा (उद्देश्य, पाठ्यक्रम एवं शिक्षण विधियों) में इसके योगदान की विस्तृत चर्चा कीजिए।
2. अस्तित्ववाद से आप क्या समझते हैं? अस्तित्ववादी दर्शन किस प्रकार शिक्षार्थी की स्वतंत्रता और उत्तरदायित्व पर बल देता है? व्याख्या कीजिए।
3. यथार्थवाद और अस्तित्ववाद के मध्य प्रमुख अंतरों और समानताओं का तुलनात्मक विश्लेषण कीजिए।

नोट

इकाई 10
भारतीय विचारक: महात्मा गांधी

इकाई संरचना (Unit Structure)

10.1 प्रस्तावना (Introduction)
10.2 उद्देश्य (Objectives)
10.3 महात्मा गांधी का जीवन परिचय एवं दार्शनिक पृष्ठभूमि
10.3.1 सत्य और अहिंसा का सिद्धांत
10.3.2 सर्वोदय की अवधारणा
10.4 महात्मा गांधी का शैक्षिक दर्श
10.4.1 शिक्षा का अर्थ और परिभाषा
10.4.2 शिक्षा के प्रमुख उद्देश्य (तात्कालिक एवं अंतिम)
10.5 बुनियादी शिक्षा (बेसिक शिक्षा / वर्धा योजना - 1937)
10.5.1 बुनियादी शिक्षा की प्रमुख विशेषताएँ
10.5.2 हस्तशिल्प केंद्रित शिक्षा और स्वावलंबन
10.5.3 मातृभाषा के माध्यम से शिक्षण
10.6 पाठ्यक्रम, शिक्षण विधियाँ एवं अनुशासन
10.6.1 गांधी जी के अनुसार पाठ्यक्रम (Curriculum)
10.6.2 शिक्षण विधियाँ (Methods of Teaching)
10.6.3 गांधी जी की अनुशासन की अवधारणा (Self-Discipline)
10.7 शिक्षक एवं शिक्षार्थी की भूमिका
10.8 महात्मा गांधी के शैक्षिक विचारों की प्रासंगिकता (आधुनिक संदर्भ में)
10.9 **सारांश (Summary)**
10.10 **मुख्य शब्द / पारिभाषिक शब्दावली (Key Words)**
10.11 बोध प्रश्नों के उत्तर
10.12 सुझावित अध्ययन सामग्री – मुक्त शैक्षिक संसाधन
10.13 संदर्भ ग्रन्थ
10.14 अभ्यास प्रश्न (Exercises & Questions)
10.14.1 बोध प्रश्न (Self-Assessment Questions)
10.14.2 लघु उत्तरीय प्रश्न (Short Answer Questions)
10.14.3 निबंधात्मक प्रश्न (Long Answer / Essay Questions)

10.1 प्रस्तावना (Introduction)

नोट

महात्मा गांधी (मोहनदास कर्मचंद गांधी) केवल एक महान राजनीतिक नेता और स्वतंत्रता सेनानी ही नहीं थे, बल्कि वे एक मौलिक दार्शनिक, समाज सुधारक और महान शिक्षाविद् भी थे। उन्होंने भारतीय समाज की आवश्यकताओं, संस्कृति और धरातलीय सच्चाइयों को ध्यान में रखते हुए एक व्यावहारिक जीवन-दर्शन विकसित किया, जिसका मुख्य आधार 'सत्य' और 'अहिंसा' था।

गांधी जी का मानना था कि किसी भी देश की उन्नति और चरित्र निर्माण की नींव उसकी शिक्षा प्रणाली पर निर्भर करती है। तत्कालीन ब्रिटिश कालीन शिक्षा प्रणाली की आलोचना करते हुए उन्होंने स्पष्ट किया कि वह शिक्षा केवल क्लर्क तैयार करने वाली और भारतीय संस्कृति से कटी हुई है। इसके विकल्प के रूप में उन्होंने 'बेसिक शिक्षा' (वर्धा योजना) का विचार प्रस्तुत किया, जो बालक के शारीरिक, मानसिक और आत्मिक विकास पर बल देती है। गांधी जी के अनुसार, सच्चा ज्ञान वही है जो व्यक्ति को स्वावलंबी बनाए, उसमें नैतिक मूल्यों का विकास करे और समाज कल्याण (सर्वोदय) की भावना जगाए। इस इकाई में हम महात्मा गांधी के इन्हीं शैक्षिक विचारों, सिद्धांतों और उनकी व्यावहारिक उपयोगिता का विस्तृत अध्ययन करेंगे।

10.2 उद्देश्य (Objectives)

इस इकाई को पढ़ने के बाद आप:

- महात्मा गांधी के जीवन दर्शन और उनकी वैचारिक पृष्ठभूमि को समझ सकेंगे।
- गांधी जी के 'सत्य', 'अहिंसा' और 'सर्वोदय' के सिद्धांतों की दार्शनिक व्याख्या कर सकेंगे।
- गांधी जी के अनुसार शिक्षा की अवधारणा, अर्थ और उसके मुख्य उद्देश्यों का विश्लेषण कर सकेंगे।
- बुनियादी शिक्षा (बेसिक शिक्षा / वर्धा योजना, 1937) की मूल विशेषताओं और इसकी कार्यप्रणाली का मूल्यांकन कर सकेंगे।
- गांधीवादी शिक्षण विधियों, पाठ्यक्रम, मातृभाषा के महत्व और स्वावलंबन के सिद्धांत की व्याख्या कर सकेंगे।

नोट

- समकालीन एवं आधुनिक शैक्षिक संदर्भ में महात्मा गांधी के विचारों की प्रासंगिकता को रेखांकित कर सकेंगे।

10.3 महात्मा गांधी का जीवन परिचय एवं दार्शनिक पृष्ठभूमि

10.3.1 महात्मा गांधी का संक्षिप्त जीवन परिचय

मोहनदास कर्मचंद गांधी का जन्म 2 अक्टूबर 1869 को गुजरात के पोरबंदर नामक स्थान पर हुआ था। उनकी प्रारंभिक शिक्षा भारत में हुई तथा उच्च कानूनी शिक्षा (बैरिस्टरी) के लिए वे इंग्लैंड गए। दक्षिण अफ्रीका में प्रवास के दौरान उन्होंने रंगभेद और अन्याय के विरुद्ध अपने पहले 'सत्याग्रह' का प्रयोग किया।

1915 में भारत लौटने के बाद उन्होंने भारतीय स्वतंत्रता संग्राम का नेतृत्व किया। गांधी जी के विचार केवल राजनीतिक स्वतंत्रता तक सीमित नहीं थे; उनका मुख्य लक्ष्य समाज का नैतिक, सांस्कृतिक और शैक्षिक उत्थान था। 30 जनवरी 1948 को उनका देहावसान हुआ, परंतु उनके विचार आज भी संपूर्ण विश्व का मार्गदर्शक बने हुए हैं।

10.3.2 दार्शनिक पृष्ठभूमि एवं मूल सिद्धांत

गांधी जी का दर्शन किसी एक ग्रंथ या पुस्तकीय ज्ञान तक सीमित नहीं है, बल्कि यह उनके जीवन के अनुभवों और प्रयोगों का परिणाम है। उनके दार्शनिक चिंतन के मुख्य स्तंभ निम्नलिखित हैं:

- **सत्य (Truth):**गांधी जी के अनुसार 'सत्य' ही परमेश्वर है। वे मानते थे कि जीवन का अंतिम लक्ष्य सत्य की खोज और उसकी अनुभूति करना है। शिक्षा का मुख्य उद्देश्य बालक को सत्य के मार्ग पर चलना सिखाना होना चाहिए।
- **अहिंसा (Non-Violence):**अहिंसा केवल शारीरिक हिंसा न करना मात्र नहीं है, बल्कि मन, वचन और कर्म से किसी को दुःखी न करना है। गांधी जी के अनुसार, अहिंसा का अर्थ कायरता नहीं बल्कि आत्मबल (Moral Power) है।

नोट

- **सत्याग्रह (Satyagraha):**सत्य के प्रति आग्रह रखना और अन्याय का अहिंसक विरोध करना। शिक्षा के माध्यम से बालकों में अन्याय के खिलाफ खड़े होने का नैतिक साहस विकसित किया जाना चाहिए।
- **सर्वोदय (Sarvodaya):** 'सर्वोदय' का शाब्दिक अर्थ है - 'सबका उदय' या 'सबकी प्रगति'। गांधी जी एक ऐसे समाज की कल्पना करते थे जहाँ वर्गभेद न हो और समाज के अंतिम व्यक्ति तक का कल्याण संभव हो सके।
- **साध्य और साधन की पवित्रता (Purity of Means and Ends):**गांधी जी का स्पष्ट मानना था कि जिस प्रकार बीज से पेड़ बनता है, उसी प्रकार साधन से साध्य तय होता है। यदि उद्देश्य (साध्य) अच्छा है, तो उसे प्राप्त करने का मार्ग (साधन) भी पवित्र होना चाहिए।

10.4 महात्मा गांधी का शैक्षिक दर्शन

महात्मा गांधी के अनुसार शिक्षा का अर्थ केवल साक्षरता (Literacy) नहीं है। उनका मानना था कि साक्षरता न तो शिक्षा का अंत है और न ही उसकी शुरुआत, यह केवल एक साधन है जिसके द्वारा पुरुषों और महिलाओं को शिक्षित किया जा सकता है।

10.4.1 शिक्षा का अर्थ और परिभाषा

गांधी जी ने शिक्षा को बालक के सर्वांगीण विकास का माध्यम माना। उनकी प्रसिद्ध परिभाषा के अनुसार:

"शिक्षा से मेरा तात्पर्य बालक और मनुष्य के शरीर, मन और आत्मा में निहित सर्वोत्तम गुणों को सर्वतोमुखी (सर्वांगीण) रूप से बाहर निकालना है।"

— **महात्मा गांधी**

गांधी जी ने शिक्षा के संदर्भ में**'3Rs'** (Reading, Writing, Arithmetic) के स्थान पर**'3Hs'**के विकास पर बल दिया:

- **Head (मस्तिष्क):**बौद्धिक एवं मानसिक विकास।
- **Heart (हृदय):**नैतिक एवं आत्मिक विकास।

नोट

- **Hand (हाथ):**शारीरिक एवं क्रियात्मक/शारीरिक कौशल विकास (हस्तशिल्प)।

10.4.2 शिक्षा के प्रमुख उद्देश्य

गांधी जी ने शिक्षा के उद्देश्यों को दो मुख्य भागों में विभाजित किया है:

1. तात्कालिक उद्देश्य (Immediate Objectives):

- **स्वावलंबन एवं जीविकोपार्जन का उद्देश्य (Self-reliance / Bread and Butter Aim):**शिक्षा ऐसी होनी चाहिए जो बालक को आत्मनिर्भर बनाए ताकि वह भविष्य में अपनी आजीविका स्वयं कमा सके।
- **सांस्कृतिक उद्देश्य:**शिक्षा द्वारा बालकों में अपनी संस्कृति, परंपराओं और नैतिक मूल्यों के प्रति सम्मान की भावना विकसित होना।
- **चारित्रिक एवं नैतिक विकास:**गांधी जी के अनुसार ज्ञान बिना चरित्र के व्यर्थ है। शिक्षा का मुख्य कार्य बालक में सत्य, अहिंसा और सदाचार जैसे गुणों का विकास करना है।
- **सर्वांगीण विकास का उद्देश्य:**शारीरिक, मानसिक, भावनात्मक और आध्यात्मिक शक्तियों का संतुलित विकास।

2. अंतिम उद्देश्य (Ultimate Objective):

- **आत्म-साक्षात्कार एवं परम सत्य की प्राप्ति (Self-Realization):**गांधी जी के अनुसार शिक्षा का अंतिम और सर्वोच्च उद्देश्य ईश्वर या परम सत्य की अनुभूति करना तथा आत्मा का उत्थान करना है।

10.5 बुनियादी शिक्षा (बेसिक शिक्षा / वर्धा योजना - 1937)

महात्मा गांधी द्वारा प्रस्तुत 'बुनियादी शिक्षा' (Basic Education या 'नई तालीम') भारतीय शिक्षा के इतिहास में एक युगकारी एवं क्रांतिकारी पहल थी। गांधी जी ने पाया कि तत्कालीन ब्रिटिश शिक्षा प्रणाली न केवल भारतीय संस्कृति, समाज और आवश्यकताओं

नोट

से पूरी तरह कटी हुई थी, बल्कि वह केवल क्लर्क (Ckerks) पैदा करने और युवाओं को श्रम से दूर करने का काम कर रही थी। इसके विकल्प के रूप में गांधी जी ने एक ऐसी शिक्षा प्रणाली की संकल्पना की, जो भारत के ग्रामीण जीवन, स्वावलंबन और व्यावहारिक कौशलों पर आधारित हो।

22-23 अक्टूबर 1937 को वर्धा (महाराष्ट्र) में आयोजित अखिल भारतीय राष्ट्रीय शिक्षा सम्मेलन में गांधी जी ने अपनी इस योजना को देश के सामने रखा। इसी कारण इसे**'वर्धा योजना' (Wardha Scheme of Education)**भी कहा जाता है। इस सम्मेलन के बाद डॉ. ज़ाकिर हुसैन की अध्यक्षता में एक समिति का गठन किया गया, जिसने इस योजना का विस्तृत पाठ्यक्रम और रूपरेखा तैयार की।

10.5.1 बुनियादी शिक्षा की प्रमुख एवं मौलिक विशेषताएँ

गांधी जी की बुनियादी शिक्षा केवल पाठ्यपुस्तकों का संकलन नहीं थी, बल्कि यह जीवन जीने की एक कला और सामाजिक परिवर्तन का साधन थी। इसकी प्रमुख विशेषताएँ निम्नलिखित हैं:

- **7 से 14 वर्ष तक निःशुल्क एवं अनिवार्य शिक्षा:**

गांधी जी का मानना था कि एक स्वतंत्र और लोकतांत्रिक राष्ट्र के निर्माण के लिए देश के प्रत्येक बच्चे को प्राथमिक स्तर पर निःशुल्क और अनिवार्य शिक्षा मिलनी चाहिए। यह शिक्षा 7 वर्षों की निरंतर अवधि (7 से 14 वर्ष तक की आयु) के लिए प्रस्तावित की गई थी।

- **शिक्षा का माध्यम मातृभाषा:**

गांधी जी अंग्रेजी भाषा के प्रभुत्व और विदेशी माध्यम से दी जाने वाली शिक्षा के सख्त विरोधी थे। उनका स्पष्ट मानना था कि विदेशी भाषा में शिक्षा ग्रहण करने से बालक की मौलिक सोच और रचनात्मकता कुंठित हो जाती है तथा वह अपनी ही संस्कृति से कट जाता है। इसलिए बुनियादी शिक्षा में यह अनिवार्य किया गया कि शिक्षण का माध्यम केवल बालक की मातृभाषा होगी।

- **हस्तशिल्प / उद्योग केंद्रित शिक्षा (Craft-Centered Education):**

नोट

बुनियादी शिक्षा का सबसे केंद्रीय और क्रांतिकारी सिद्धांत यह था कि सभी विषय किसी न किसी उत्पादक हस्तशिल्प (Craft) के माध्यम से पढ़ाए जाएँ। शिक्षा केवल किताबों तक सीमित न होकर किसी न किसी उपयोगी हस्तकला (जैसे- कताई-बुनाई, कृषि, लकड़ी का काम, मिट्टी के बर्तन बनाना, धातु कर्म आदि) से जुड़ी होनी चाहिए।

- **समवाय/संबद्धता का सिद्धांत (Principle of Correlation):**

गांधी जी के अनुसार हस्तशिल्प को एक अलग विषय की तरह नहीं पढ़ाया जाना चाहिए, बल्कि इतिहास, भूगोल, गणित, विज्ञान और नागरिकशास्त्र जैसे सभी सैद्धांतिक विषयों को उसी हस्तशिल्प और बालक के प्राकृतिक व सामाजिक पर्यावरण से जोड़कर (Correlate करके) पढ़ाया जाना चाहिए।

- **आत्मनिर्भरता एवं स्वावलंबन (Self-Supporting Aspect):**

बुनियादी शिक्षा को स्वावलंबी होना चाहिए। बालक द्वारा तैयार की गई वस्तुओं को बेचकर जो आय प्राप्त हो, उससे शिक्षकों के वेतन और स्कूल के अन्य परिचालन व्यय निकाले जा सकें। गांधी जी का मानना था कि इससे शिक्षा राज्य के वित्तीय अनुदानों पर पूरी तरह निर्भर नहीं रहेगी और बालक भी आत्मनिर्भर बनना सीखेंगे।

- **अहिंसक एवं शोषण-मुक्त समाज का निर्माण:**

बुनियादी शिक्षा का उद्देश्य बालकों में अहिंसा, सहकारिता, श्रम के प्रति सम्मान (Dignity of Labour) और नागरिक कर्तव्यों की भावना भरना था, ताकि एक वर्गहीन और शोषण-मुक्त 'सर्वोदय' समाज की स्थापना हो सके।

10.5.2 हस्तशिल्प केंद्रित शिक्षा और स्वावलंबन की अवधारणा

गांधी जी की बुनियादी शिक्षा में हस्तशिल्प केंद्रित शिक्षा और स्वावलंबन दो ऐसे स्तंभ हैं जो इसे पारंपरिक शिक्षा प्रणाली से पूरी तरह अलग करते हैं।

1. हस्तशिल्प का महत्व एवं चयन:

नोट

गांधी जी ने हस्तशिल्प को शिक्षा का केंद्र बनाने का सुझाव केवल व्यावसायिक प्रशिक्षण के रूप में नहीं दिया था, बल्कि इसके पीछे एक गहरा शैक्षिक और मनोवैज्ञानिक दर्शन था।

- **मनोवैज्ञानिक आधार:**बच्चे स्वभाव से सक्रिय होते हैं। खेल-कूद और हाथों से काम करने में उनकी स्वाभाविक रुचि होती है। हस्तशिल्प के माध्यम से सीखने पर उनकी शारीरिक और मानसिक शक्तियों का संतुलित विकास (Hand and Head Coordination) होता है।
- **श्रम का सम्मान (Dignity of Labour):**भारतीय समाज में शारीरिक श्रम को हेय दृष्टि से देखने की प्रवृत्ति को समाप्त करने के लिए हस्तशिल्प को अनिवार्य बनाया गया। जब समृद्ध और गरीब परिवार के बच्चे एक साथ बैठकर सूत कातते हैं या मिट्टी के बर्तन बनाते हैं, तो उनमें श्रम के प्रति सम्मान और समानता की भावना जागृत होती है।
- **स्थानीय आवश्यकताओं के अनुकूल चयन:**हस्तशिल्प का चयन किसी क्षेत्र की स्थानीय परिस्थितियों, कच्चे माल की उपलब्धता और सामुदायिक आवश्यकताओं के आधार पर किया जाना था (जैसे- ग्रामीण क्षेत्रों में कताई-बुनाई या कृषि, और तटीय क्षेत्रों में मत्स्य पालन या हस्तकला)।

2. स्वावलंबन (Self-Reliance) की अवधारणा:

गांधी जी के अनुसार स्वावलंबन के दो पहलू थे:

- **व्यक्तिगत स्वावलंबन:**बालक शिक्षा पूरी करने के बाद बेरोजगार न रहे। हस्तशिल्प में दक्षता प्राप्त कर लेने से वह आत्मनिर्भर बनता है और अपनी आजीविका स्वयं कमाने में सक्षम होता है।
- **शैक्षिक/आर्थिक स्वावलंबन:**स्कूल स्वयं अपनी उत्पादक गतिविधियों द्वारा अर्जित धन से अपने शिक्षकों का वेतन निकाल सके। यद्यपि इस पहलू की उस समय काफी आलोचना भी हुई, लेकिन गांधी जी का मुख्य उद्देश्य राज्य के नियंत्रण से शिक्षा को मुक्त रखना और बालकों में जिम्मेदारी का भाव पैदा करना था।

10.5.3 मातृभाषा के माध्यम से शिक्षण का महत्व

गांधी जी ने मातृभाषा के माध्यम से शिक्षा देने पर अत्यधिक बल दिया। उनके अनुसार, मातृभाषा बालक के मानसिक और संवेगात्मक विकास का प्राकृतिक माध्यम है।

- **प्राकृतिक एवं सहज अधिगम:**जिस प्रकार माँ का दूध बालक के शारीरिक पोषण के लिए सर्वोत्तम होता है, उसी प्रकार मातृभाषा बालक के मानसिक पोषण के लिए स्वाभाविक और सर्वोत्तम माध्यम है।
- **रचनात्मकता और मौलिक चिंतन का विकास:**जब कोई बालक अपनी मातृभाषा में सीखता है, तो वह ज्ञान को रटने के बजाय उसे समझता है। विदेशी भाषा का माध्यम बालकों की विचार शक्ति को दबा देता है और उन्हें केवल रट्टू तोता बनाता है।
- **सांस्कृतिक जुड़ाव:**भाषा केवल संवाद का साधन नहीं है, बल्कि वह संस्कृति की वाहक होती है। मातृभाषा के माध्यम से शिक्षा प्राप्त करने पर बालक अपनी लोक-संस्कृति, साहित्य और सामाजिक परंपराओं से जुड़ा रहता है।
- **जन-सामान्य तक शिक्षा का प्रसार:**ब्रिटिश काल में अंग्रेजी शिक्षा केवल एक उच्च वर्ग (Elitist class) तक सीमित होकर रह गई थी। गांधी जी चाहते थे कि शिक्षा का लाभ समाज के अंतिम व्यक्ति तक पहुँचे, और यह केवल मातृभाषा के प्रयोग से ही संभव था।

10.5.4 बुनियादी शिक्षा के गुण एवं सीमाएँ (मूल्यांकन)

यद्यपि बुनियादी शिक्षा एक अत्यंत व्यावहारिक और प्रगतिशील विचार था, फिर भी इसके कुछ व्यावहारिक गुण और सीमाएँ थीं:

गुण (Merits):

1. **बाल-केंद्रित एवं क्रिया-प्रधान:**यह शिक्षा प्रणाली बालकों की क्रियाशीलता और स्वाभाविक रुचियों पर आधारित थी।

नोट

2. **व्यावहारिक एवं उपयोगी:**यह शिक्षा व्यक्ति को केवल किताबी कीड़ा न बनाकर वास्तविक जीवन की चुनौतियों का सामना करने के योग्य बनाती थी।
3. **शारीरिक और मानसिक विकास का समन्वय:**इसने 3Rs और 3Hs का बेहतरीन समन्वय प्रस्तुत किया।
4. **सामूहिक भावना एवं नागरिकता:**इससे बालकों में सामाजिक उत्तरदायित्व, सहयोग और समानता के मूल्यों का विकास हुआ।

सीमाएँ एवं व्यावहारिक कठिनाइयाँ (Limitations):

1. **अत्यधिक आर्थिक आत्मनिर्भरता पर बल:**आलोचकों का मानना था कि स्कूलों को पूरी तरह आत्म-पोषित बनाने के प्रयास से स्कूल "बाल-श्रम के कारखाने" (Factories) बन सकते हैं और पढ़ाई का स्तर गिर सकता है।
2. **आधुनिक औद्योगिक एवं वैज्ञानिक युग की उपेक्षा:**बुनियादी शिक्षा में हस्तशिल्प और कुटीर उद्योगों पर इतना अधिक बल दिया गया कि आधुनिक विज्ञान, प्रौद्योगिकी और मशीनीकरण के लिए इसमें बहुत कम स्थान बचा।
3. **समवाय (Correlation) की जटिलता:**सभी विषयों को केवल एक हस्तशिल्प से जोड़कर पढ़ाना व्यावहारिक रूप से अत्यंत कठिन था; कई बार शिक्षक जबरन और अप्राकृतिक संबंध बनाने की कोशिश करते थे।
4. **योग्य शिक्षकों का अभाव:**इस क्रांतिकारी प्रणाली को लागू करने के लिए जिस प्रकार के प्रशिक्षित, समर्पित और बहुमुखी प्रतिभा वाले शिक्षकों की आवश्यकता थी, उनका देश में भारी अभाव था।

निष्कर्ष (Conclusion)

तमाम सीमाओं और व्यावहारिक कठिनाइयों के बावजूद, महात्मा गांधी की बुनियादी शिक्षा भारतीय परिस्थितियों के अनुकूल तैयार की गई एक अनुपम शैक्षिक देन थी। इसने शिक्षा को समाज, श्रम और नैतिकता से जोड़ा। आज की आधुनिक शिक्षा नीतियों (जैसे**NEP 2020**) में 'व्यावसायिक शिक्षा' (Vocational Education), 'मातृभाषा में प्राथमिक शिक्षण' और 'अनुभवात्मक अधिगम' (Experiential Learning) पर जो बल

नोट

दिया जा रहा है, वह वास्तव में महात्मा गांधी की इसी 'बेसिक शिक्षा' की मूल भावना का ही आधुनिक पुनरुत्थान है।

10.6 पाठ्यक्रम, शिक्षण विधियाँ एवं अनुशासन

महात्मा गांधी का मानना था कि शिक्षा का वास्तविक उद्देश्य केवल पुस्तकीय ज्ञान प्रदान करना नहीं है, बल्कि बालक का चरित्र निर्माण और उसका सर्वांगीण विकास करना है। इसी दार्शनिक सोच के आधार पर उन्होंने बुनियादी शिक्षा के लिए एक व्यावहारिक पाठ्यक्रम, बाल-केंद्रित शिक्षण विधियों और आत्म-अनुशासन की अवधारणा को प्रस्तुत किया।

10.6.1 गांधी जी के अनुसार पाठ्यक्रम (Curriculum)

गांधी जी ने पारंपरिक ब्रिटिश कालीन पाठ्यक्रम को निरस, संकुचित और भारतीय जीवन की वास्तविकताओं से परे माना। उनके द्वारा प्रस्तावित पाठ्यक्रम की मुख्य विशेषताएँ निम्नलिखित हैं:

- **व्यावहारिक एवं जीवनोपयोगी विषय:**पाठ्यक्रम में उन विषयों को प्राथमिकता दी गई जो बालक को स्वावलंबी बनाएँ और उसके दैनिक जीवन से सीधे जुड़े हों।
- **पाठ्यक्रम का लचीलापन:**पाठ्यक्रम कठोर न होकर बालक और स्थानीय समुदाय की आवश्यकताओं के अनुसार परिवर्तनशील था।
- **लड़कियों के लिए विशेष ध्यान:**पाठ्यक्रम में बालकों और बालिकाओं दोनों के लिए समान प्राथमिक शिक्षा का प्रावधान था, साथ ही गृह-विज्ञान (Home Science) जैसे व्यावहारिक विषयों को भी शामिल किया गया।

पाठ्यक्रम की मुख्य विषय-वस्तु:

1. **आधारभूत हस्तशिल्प (Basic Craft):**कताई-बुनाई (खादी), कृषि, बागवानी, मिट्टी के बर्तन बनाना, लकड़ी का काम (बढ़ईगीरी), धातु कार्य आदि।

नोट

2. **मातृभाषा (Mother Tongue):**अभिव्यक्ति, विचार-विमर्श और समस्त विषयों को सीखने के प्राथमिक माध्यम के रूप में।

3. **व्यवहारिक गणित (Practical Mathematics):**दैनिक जीवन का हिसाब-किताब, नाप-तौल, हस्तशिल्प की लागत एवं बिक्री से संबंधित अंकगणित व रेखागणित।

4. **सामाजिक अध्ययन (Social Studies):**इतिहास, भूगोल, नागरिकशास्त्र और समाजशास्त्र को एक एकीकृत रूप में पढ़ाया जाए, जिससे राष्ट्रीयता और विश्व बंधुत्व की भावना विकसित हो।

5. **सामान्य विज्ञान (General Science):**प्रकृति अध्ययन, जीवविज्ञान, रसायन शास्त्र का बुनियादी ज्ञान, स्वास्थ्य एवं स्वच्छता (Health & Hygiene)।

6. **कला एवं संगीत (Art & Music):**बालकों की रचनात्मकता और सौंदर्यात्मक बोध (Aesthetic sense) को बढ़ाने के लिए चित्रकला और संगीत।

7. **शारीरिक शिक्षा (Physical Education):**खेल-कूद, व्यायाम और योग।

10.6.2 शिक्षण विधियाँ (Methods of Teaching)

गांधी जी ने बालकों को रटंत विद्या (Rote Learning) से दूर रखने के लिए व्यावहारिक और क्रिया-प्रधान शिक्षण विधियों पर बल दिया:

- **अनुभवात्मक अधिगम एवं 'करके सीखना' (Learning by Doing):**

गांधी जी के अनुसार ज्ञान क्रिया से उत्पन्न होता है। बालक जब स्वयं अपने हाथों से काम करता है (जैसे सूत कातना या पौधे लगाना), तो वह सबसे सहज और स्थायी रूप से सीखता है।

- **अनुबंध या समवाय विधि (Method of Correlation):**

यह गांधीवादी शिक्षण की सबसे महत्वपूर्ण विधि है। इसके अंतर्गत सभी विषयों (गणित, विज्ञान, इतिहास, भाषा) को अलग-अलग टुकड़ों में न पढ़ाकर, उन्हें केंद्र में रखे गए**हस्तशिल्प**, **प्रकृति**और**सामाजिक पर्यावरण**के साथ जोड़कर (Correlate करके) एक साथ पढ़ाया जाता है।

नोट

- **मातृभाषा के प्रयोग की विधि:**

शिक्षण की पूरी प्रक्रिया मातृभाषा में ही संचालित की जाए, जिससे बालक बिना किसी मानसिक तनाव के विचारों को समझ सके और मौलिक चिंतन कर सके।

- **गतिविधि एवं खेल विधि (Activity and Play-way Method):**

कक्षा का वातावरण रोचक और तनावमुक्त होना चाहिए जहाँ बालक गतिविधियों, नाटकों और समूहों में रहकर सीखें।

10.6.3 गांधी जी की अनुशासन की अवधारणा (Self-Discipline)

गांधी जी शिक्षा में बाह्य नियंत्रण, शारीरिक दंड या दबाव वाले अनुशासन के सख्त विरोधी थे।

- **आत्म-अनुशासन (Self-Discipline / Inner Discipline):**

गांधी जी का मानना था कि सच्चा अनुशासन बाहर से नहीं थोपा जा सकता, बल्कि यह व्यक्ति के अंदर से (आत्मा से) आता है। जब बालक में सत्य, अहिंसा, और कर्तव्यबोध जागृत होता है, तो वह स्वयं अनुशासित रहने लगता है।

- **शारीरिक दंड का विरोध:**

उपनिवेशवादी शिक्षा में प्रचलित छड़ी या मारपीट की सजा को गांधी जी हिंसा मानते थे। उनका मानना था कि दंड से डर पैदा होता है, चरित्र निर्माण नहीं होता।

- **स्वेच्छा और स्वतंत्रता (Freedom with Responsibility):**

बालक को अपनी अभिव्यक्तियों के लिए स्वतंत्रता मिलनी चाहिए, लेकिन यह स्वतंत्रता जिम्मेदारी से जुड़ी होनी चाहिए।

- **शिक्षक का आचरण ही अनुशासन का स्रोत:**

गांधी जी के अनुसार, यदि शिक्षक स्वयं सत्यनिष्ठा, संयम और अहिंसा का पालन करता है, तो छात्र उसका अनुकरण करके स्वतः ही अनुशासित हो जाते हैं।

नोट

10.7 शिक्षक एवं शिक्षार्थी की भूमिका

महात्मा गांधी के शैक्षिक दर्शन में शिक्षक और शिक्षार्थी केवल ज्ञान देने और लेने वाले दो पात्र नहीं हैं, बल्कि वे एक अहिंसक, स्वावलंबी और नैतिक समाज (सर्वोदय) के निर्माण के दो मुख्य आधार स्तंभ हैं।

10.7.1 शिक्षक की भूमिका (Role of the Teacher)

गांधी जी के अनुसार, शिक्षक का स्थान अत्यंत पवित्र और जिम्मेदारी पूर्ण है। वे शिक्षक को केवल एक वेतनभोगी कर्मचारी या सूचना प्रदाता नहीं मानते थे, बल्कि एक 'आदर्श मार्गदर्शक' और 'समाज सुधारक' के रूप में देखते थे।

- **एक आदर्श रोल मॉडल (Role Model):**

गांधी जी का मानना था कि बालक किताबों से कम और शिक्षक के चरित्र तथा व्यवहार से अधिक सीखता है। शिक्षक का स्वयं का जीवन सत्य, अहिंसा, संयम, समय की पाबंदी और श्रम के प्रति सम्मान का प्रतीक होना चाहिए।

- **मित्र, दार्शनिक और मार्गदर्शक (Friend, Philosopher, and Guide):**

कक्षा में शिक्षक का रवैया आधिकारिक या डर पैदा करने वाला नहीं होना चाहिए। उसे बालकों के साथ मित्रवत व्यवहार करना चाहिए, उनकी समस्याओं को सहानुभूतिपूर्वक समझना चाहिए और उनका सही मार्गदर्शन करना चाहिए।

- **कुशल शिल्पी एवं व्यावहारिक मार्गदर्शक:**

चूँकि बुनियादी शिक्षा हस्तशिल्प और उत्पादक कार्यों पर केंद्रित थी, इसलिए शिक्षक को स्वयं किसी न किसी हस्तशिल्प (जैसे कताई, बुनाई, कृषि) में निपुण होना अनिवार्य था, ताकि वह बालकों को व्यावहारिक कौशल सिखा सके।

- **समवाय (Correlation) में दक्ष:**

शिक्षक में यह बौद्धिक क्षमता होनी चाहिए कि वह हस्तशिल्प और प्राकृतिक पर्यावरण के माध्यम से गणित, विज्ञान, इतिहास और भाषा जैसे सभी सैद्धांतिक विषयों को आपस में जोड़कर (Correlate करके) सरलता से पढ़ा सके।

नोट

- **आत्म-अनुशासन का प्रेरक:**

शिक्षक को बालकों पर शारीरिक दंड या बाहरी नियम नहीं थोपने चाहिए, बल्कि अपने नैतिक आचरण द्वारा बालकों के भीतर 'आत्म-अनुशासन' की भावना जगानी चाहिए।

10.7.2 शिक्षार्थी की भूमिका एवं कर्तव्य (Role of the Learner)

गांधी जी के शैक्षिक चिंतन में शिक्षार्थी (बालक) को शिक्षा प्रक्रिया के केंद्र में रखा गया है। बालक को एक निष्क्रिय श्रोता होने के बजाय एक सक्रिय, स्वावलंबी और उत्तरदायी नागरिक होना चाहिए।

- **सक्रिय अधिगमकर्ता (Active Learner):**

बालक को केवल रटकर परीक्षा पास करने वाला शिक्षार्थी नहीं होना चाहिए, बल्कि उसे 'करके सीखने' (Learning by Doing) के लिए हमेशा तत्पर रहना चाहिए।

- **श्रम का सम्मान करने वाला (Dignity of Labour):**

शिक्षार्थी को शारीरिक श्रम से संकोच नहीं करना चाहिए। गांधी जी चाहते थे कि प्रत्येक छात्र अपने हाथों से काम करे (जैसे- झाड़ू लगाना, कताई करना, पौधे लगाना) और यह समझे कि कोई भी काम छोटा या बड़ा नहीं होता।

- **आत्मनिर्भर और उत्तरदायी:**

बालक में यह भावना होनी चाहिए कि वह अपनी शिक्षा और क्रियाकलापों के माध्यम से अपने और अपने समाज के लिए उपयोगी बने, न कि दूसरों पर बोझ।

- **सत्य और अहिंसा का साधक:**

शिक्षार्थी का मुख्य कर्तव्य अपने सहपाठियों के साथ प्रेम, सहयोग और अहिंसक व्यवहार करना है। उसमें अन्याय के खिलाफ खड़े होने का नैतिक साहस और सत्यनिष्ठा होनी चाहिए।

- **मातृभाषा और अपनी संस्कृति के प्रति निष्ठा:**

छात्र को अपनी मातृभाषा, लोक-संस्कृति और देश की परंपराओं पर गर्व होना चाहिए और समाज कल्याण (सर्वोदय) की भावना से ओतप्रोत होना चाहिए।

नोट

10.8 महात्मा गांधी के शैक्षिक विचारों की प्रासंगिकता (आधुनिक संदर्भ में)

महात्मा गांधी के शैक्षिक विचार केवल 20वीं सदी के भारत तक सीमित नहीं थे, बल्कि आज के 21वीं सदी के वैश्वीकृत, तकनीकी और आधुनिक संदर्भ में भी उनकी प्रासंगिकता और अधिक बढ़ गई है। समकालीन शिक्षा प्रणाली में अनुभव की जा रही चुनौतियों (जैसे- बेरोजगारी, नैतिक पतन, रटंत विद्या और किताबी ज्ञान) का समाधान गांधीवादी दर्शन में स्पष्ट रूप से मिलता है।

1. राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 (NEP 2020) और गांधीवादी दर्शन

भारत की नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की कई प्रमुख सिफारिशें प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से गांधी जी की 'बुनियादी शिक्षा' के सिद्धांतों से प्रेरित हैं:

- **मातृभाषा में प्राथमिक शिक्षण:** NEP 2020 में कक्षा 5 (और संभवतः कक्षा 8) तक शिक्षा का माध्यम मातृभाषा या स्थानीय भाषा रखने पर बल दिया गया है, जो गांधी जी का मूल विचार था।
- **व्यावसायिक शिक्षा (Vocational Education) का समावेश:**कक्षा 6 से ही छात्रों को व्यावसायिक कौशल (जैसे- कोडिंग, हस्तशिल्प, कृषि, बढ़ईगीरी) का व्यावहारिक अनुभव देने की सिफारिश गांधी जी की हस्तशिल्प-केंद्रित शिक्षा का आधुनिक रूप है।
- **अनुभवात्मक अधिगम (Experiential Learning):**केवल पुस्तकों से रटने के स्थान पर 'करके सीखने' (Learning by Doing) को प्राथमिकता देना गांधी जी के 3Hs (Head, Heart, Hand) के सिद्धांत का ही व्यावहारिक अनुप्रयोग है।

2. आधुनिक संदर्भ में गांधीवादी विचारों के प्रमुख आयाम

नोट

क्रम	गांधीवादी सिद्धांत	आधुनिक संदर्भ में प्रासंगिकता
1	**स्वावलंबन एवं कौशल विकास**	आज की शिक्षा केवल डिग्री देने तक सीमित है, जिससे 'शिक्षित बेरोजगारी' बढ़ रही है। गांधी जी की स्वावलंबी शिक्षा का मॉडल 'स्किल इंडिया' (Skill India) और 'आत्मानिर्भर भारत' की नींव है।
2	**मूल्य आधारित शिक्षा (Value Education)**	आधुनिक तकनीकी युग में साइबर अपराध, हिंसा और तनाव बढ़ रहा है। ऐसे में गांधी जी द्वारा प्रस्तावित सत्य, अहिंसा, करुणा और चरित्र निर्माण की शिक्षा अत्यंत आवश्यक है।
3	**पर्यावरणीय चेतना एवं सतत विकास**	गांधी जी का मानना था कि *"प्रकृति के पास हर व्यक्ति की आवश्यकता पूर्ति के लिए पर्याप्त है, लेकिन किसी के लालच के लिए नहीं।"*आज जलवायु परिवर्तन और सतत विकास (Sustainable Development Goals) के युग में उनका यह विचार अत्यंत प्रासंगिक है।
4	**समावेशी शिक्षा एवं सर्वोदय**	समाज के अंतिम व्यक्ति तक शिक्षा पहुँचाना और वर्गभेद समाप्त करना आज के 'समावेशी शिक्षा' (Inclusive Education) के लक्ष्य को पूरा करता है।
5	**शारीरिक और मानसिक विकास का संतुलन**	केवल बौद्धिक विकास (Head) पर बल देने के बजाय हृदय (Heart) और हाथों के कौशल (Hand) का विकास बालकों के मानसिक स्वास्थ्य को बेहतर बनाने में सहायक है।

निष्कर्ष

संक्षेप में, महात्मा गांधी का शैक्षिक दर्शन एक संकुचित कालखंड के लिए नहीं था। आज जब विश्व कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) और स्वचालन (Automation) की ओर बढ़ रहा है, तब भी व्यक्ति के नैतिक मूल्यों, मानवीय संवेदनाओं, व्यावहारिक कौशलों और आत्मनिर्भरता

नोट

का महत्व कम नहीं हुआ है। गांधी जी के विचार आज भी एक न्यायपूर्ण, अहिंसक और संतुलित समाज के निर्माण में प्रासंगिक एवं दिशा-निर्देशक हैं।

1. महात्मा गांधी द्वारा प्रतिपादित 'बुनियादी शिक्षा' (Basic Education) को किस नाम से जाना जाता है?

(A) वर्धा शिक्षा योजना (1937)

(B) शांतिनिकेतन योजना

(C) गुरुकुल प्रणाली

(D) नई राष्ट्रीय नीति

2. गांधीजी की शिक्षा का मूल सिद्धांत क्या था?

(A) 3Rs (Reading, Writing, Arithmetic)

(B) 3Hs (Head, Heart, Hand)

(C) केवल अंग्रेजी शिक्षा

(D) केवल सैद्धांतिक ज्ञान

3. गांधीजी के अनुसार प्राथमिक शिक्षा का माध्यम क्या होना चाहिए?

(A) अंग्रेजी

(B) मातृभाषा

(C) संस्कृत

(D) राष्ट्रभाषा केवल

4. गांधीजी ने शिक्षा को किस प्रकार स्वावलंबी बनाने का सुझाव दिया?

(A) हस्तशिल्प और उत्पादक कार्य के माध्यम से

(B) उच्च शुल्क लेकर

(C) विदेशी सहायता से

(D) केवल डिजिटल माध्यम से

5. 'सत्य और अहिंसा' को शिक्षा के केंद्र में रखने वाले विचारक कौन थे?

(A) महात्मा गांधी

(B) जॉन डीवी

(C) प्लेटो

(D) फ्रोबेल

नोट

10.9 सारांश (Summary)

- **दार्शनिक पृष्ठभूमि:**महात्मा गांधी का शैक्षिक दर्शन उनके जीवन-दर्शन पर आधारित है, जिसके दो मूल स्तंभ**'सत्य'**और**'अहिंसा'**हैं। उनका अंतिम लक्ष्य 'सर्वोदय' (सबका अभ्युदय) और समाज के अंतिम व्यक्ति का उत्थान करना था।
- **शिक्षा की अवधारणा (3Hs):**गांधी जी ने शिक्षा को केवल साक्षरता तक सीमित न मानकर बालक के सर्वांगीण विकास का माध्यम माना। उन्होंने पारंपरिक 3Rs (Reading, Writing, Arithmetic) के स्थान पर**3Hs (Head, Heart, Hand)**यानी मस्तिष्क, हृदय और हाथ (शारीरिक कौशल) के संतुलित विकास पर जोर दिया।
- **बुनियादी शिक्षा (वर्धा योजना, 1937):**गांधी जी ने ब्रिटिश कालीन शिक्षा प्रणाली के विकल्प के रूप में 'बेसिक शिक्षा' या 'नई तालीम' का मॉडल प्रस्तुत किया। इसकी मुख्य विशेषताएँ थीं— 7 से 14 वर्ष के बालकों के लिए निःशुल्क व अनिवार्य शिक्षा, मातृभाषा के माध्यम से शिक्षण, हस्तशिल्प-केंद्रित शिक्षा, और स्वावलंबन (आत्मनिर्भरता)।
- **पाठ्यक्रम एवं शिक्षण विधियाँ:**पाठ्यक्रम को जीवनोपयोगी और व्यावहारिक बनाया गया, जिसमें हस्तशिल्प, मातृभाषा, व्यावहारिक गणित, सामाजिक अध्ययन, विज्ञान और कला को शामिल किया गया। शिक्षण के लिए**'करके सीखने' (Learning by Doing)**तथा सभी विषयों को हस्तशिल्प व पर्यावरण से जोड़कर पढ़ाने की**'समवाय विधि' (Method of Correlation)**को अपनाया गया।
- **अनुशासन एवं भूमिकाएँ:**गांधी जी बाह्य दंड के स्थान पर**'आत्म-अनुशासन' (Self-Discipline)**के पक्षधर थे। उन्होंने शिक्षक को एक आदर्श रोल मॉडल,

नोट

मित्र और दार्शनिक मार्गदर्शक के रूप में देखा, जबकि शिक्षार्थी से सक्रिय, श्रम का सम्मान करने वाला और उत्तरदायी नागरिक बनने की अपेक्षा की।

- **आधुनिक प्रासंगिकता:**गांधी जी के विचार आज की**राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 (NEP 2020)**में मातृभाषा के प्रयोग, व्यावसायिक शिक्षा (Vocational Education), और अनुभवात्मक अधिगम (Experiential Learning) के रूप में अत्यंत प्रासंगिक हैं।

10.10 मुख्य शब्द / पारिभाषिक शब्दावली (Key Words)

- **सर्वोदय (Sarvodaya):**महात्मा गांधी द्वारा गढ़ा गया शब्द, जिसका अर्थ है 'सबका उदय' या 'सभी का सर्वांगीण कल्याण'।
- **बुनियादी शिक्षा / नई तालीम (Basic Education / Nai Talim):**गांधी जी द्वारा 1937 में प्रस्तुत शिक्षा योजना, जो मातृभाषा, हस्तशिल्प और स्वावलंबन पर आधारित है।
- **3Hs (Head, Heart, Hand):**गांधीवादी शिक्षा का मूल मंत्र— Head (मानसिक/बौद्धिक विकास), Heart (नैतिक/आत्मिक विकास), और Hand (शारीरिक/कौशल विकास)।
- **समवाय या अनुबंध विधि (Method of Correlation):**वह शिक्षण विधि जिसमें विभिन्न विषयों (गणित, विज्ञान, इतिहास आदि) को किसी एक केंद्रीय हस्तशिल्प या प्राकृतिक व सामाजिक पर्यावरण से जोड़कर एकीकृत रूप में पढ़ाया जाता है।
- **आत्म-अनुशासन (Self-Discipline):**बिना किसी बाहरी दबाव, भय या शारीरिक दंड के, व्यक्ति की अपनी अंतरात्मा से उत्पन्न होने वाला अनुशासन।
- **सत्याग्रह (Satyagraha):**सत्य के प्रति आग्रह रखते हुए अन्याय का अहिंसक और नैतिक रूप से विरोध करना।
- **श्रम की प्रतिष्ठा (Dignity of Labour):**प्रत्येक प्रकार के शारीरिक कार्य और हस्तशिल्प को सम्मान की दृष्टि से देखना और उसे छोटा न समझना।

10.11 बोध प्रश्नों के उत्तर

नोट

उत्तर: (A) वर्धा शिक्षा योजना (1937)

उत्तर: (B) 3Hs (Head, Heart, Hand)

उत्तर: (B) मातृभाषा

उत्तर: (A) हस्तशिल्प और उत्पादक कार्य के माध्यम से

उत्तर: (A) महात्मा गांधी

10.12 सुझावित अध्ययन सामग्री – मुक्त शैक्षिक संसाधन

1. eGyanKosh: Educational Thoughts of Mahatma Gandhi (IGNOU)
2. Gandhi Heritage Portal: Basic Education (Nai Talim)
3. UNESCO International Bureau of Education: Mahatma Gandhi Profile
4. OER Commons: Nai Talim and Vocational Education
5. NCERT: Gandhi on Education Modules

10.13 संदर्भ ग्रन्थ

महात्मा गांधी के दार्शनिक एवं शैक्षिक विचारों के गहन अध्ययन और विस्तृत अध्ययन हेतु निम्नलिखित प्राथमिक एवं द्वितीयक स्रोतों का संदर्भ लिया जा सकता है:

प्राथमिक स्रोत (गांधी जी की मूल रचनाएँ):

1. **गांधी, एम. के.** (1927). *सत्य के प्रयोग अथवा आत्मकथा* (An Autobiography or The Story of My Experiments with Truth). अहमदाबाद: नवजीवन पब्लिशिंग हाउस।
2. **गांधी, एम. के.** (1938). *बेसिक एजुकेशन* (Basic Education). अहमदाबाद: नवजीवन पब्लिशिंग हाउस।
3. **गांधी, एम. के.** (1909). *हिंद स्वराज* (Hind Swaraj or Indian Home Rule). अहमदाबाद: नवजीवन पब्लिशिंग हाउस।

नोट

4. **गांधी, एम. के.** (1951). *टू द स्टूडेंट्स* (To the Students). अहमदाबाद: नवजीवन पब्लिशिंग हाउस।

द्वितीयक स्रोत एवं मानक पाठ्यपुस्तकें:

1. **चौबे, एस. पी. और चौबे, अखिलेश** (2018). *भारतीय एवं पाश्चात्य शिक्षा दर्शन* (Philosophical and Sociological Foundations of Education). आगरा: विनोद पुस्तक मंदिर।
2. **गुप्त, आर. एस.** (2015). *महान शिक्षाशास्त्री एवं उनके शैक्षिक विचार.* नई दिल्ली: आर्य बुक डिपो।
3. **पांडेय, रामशकल** (2020). *शिक्षा के दार्शनिक एवं समाजशास्त्रीय आधार.* वाराणसी: विश्वविद्यालय प्रकाशन।
4. **सक्सेना, एन. आर. स्वरूप** (2017). *शिक्षा दर्शन एवं शिक्षा समाजशास्त्र.* मेरठ: लायल बुक डिपो।
5. **ज़ाकिर हुसैन समिति रिपोर्ट** (1937). *वर्धा शिक्षा योजना रिपोर्ट.* नई दिल्ली: भारत सरकार प्रकाशन विभाग।

10.13 अभ्यास प्रश्न (Exercises & Questions)

पाठ्यसामग्री के अध्ययन के बाद अपनी समझ का आकलन करने के लिए निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दें:

बोध प्रश्न (Self-Assessment Questions)

निर्देश:निम्नलिखित प्रश्नों के सही उत्तर का चयन कीजिए या एक-दो वाक्यों में उत्तर दीजिए:

1. महात्मा गांधी के अनुसार शिक्षा का मुख्य आधार कौन-से दो दार्शनिक सिद्धांत हैं?
2. गांधी जी के अनुसार '3Hs' का पूर्ण रूप (Full Form) क्या है?

नोट

3. वर्धा शिक्षा सम्मेलन किस वर्ष आयोजित किया गया था और इसके द्वारा गठित समिति के अध्यक्ष कौन थे?
4. महात्मा गांधी ने किस भाषा को प्राथमिक शिक्षा का माध्यम बनाने पर बल दिया?
5. सत्य और अहिंसा के आधार पर निर्मित गांधी जी के आदर्श समाज की अवधारणा को किस नाम से जाना जाता है?

2 लघु उत्तरीय प्रश्न (Short Answer Questions)

निर्देश:निम्नलिखित प्रश्नों का संक्षिप्त एवं स्पष्ट उत्तर (लगभग 100-150 शब्दों में) लिखिए:

1. महात्मा गांधी द्वारा दी गई शिक्षा की परिभाषा की संक्षिप्त व्याख्या कीजिए।
2. बुनियादी शिक्षा (वर्धा योजना) की प्रमुख चार विशेषताओं को बिंदुवार स्पष्ट कीजिए।
3. गांधी जी के अनुसार 'स्वावलंबन' (Self-reliance) का शिक्षा में क्या महत्व है?
4. शिक्षण की 'समवाय या अनुबंध विधि' (Method of Correlation) से आप क्या समझते हैं?
5. महात्मा गांधी के अनुसार कक्षा में अनुशासन कैसा होना चाहिए? आत्म-अनुशासन की अवधारणा को समझाइए।
6. गांधीवादी शिक्षा दर्शन में शिक्षक की क्या भूमिका बताई गई है?

3 निबंधात्मक प्रश्न (Long Answer / Essay Questions)

निर्देश:निम्नलिखित प्रश्नों का विस्तृत एवं विश्लेषणात्मक उत्तर (लगभग 300-500 शब्दों में) लिखिए:

1. "शिक्षा से मेरा तात्पर्य बालक और मनुष्य के शरीर, मन और आत्मा में निहित सर्वोत्तम गुणों को सर्वतोमुखी रूप से बाहर निकालना है।"महात्मा गांधी के इस कथन के आलोक में उनके शैक्षिक दर्शन एवं शिक्षा के उद्देश्यों की विस्तार से विवेचना कीजिए।

नोट

2. महात्मा गांधी की 'बुनियादी शिक्षा योजना (1937)' का विस्तृत मूल्यांकन कीजिए। इसके मुख्य सिद्धांतों, गुणों और व्यावहारिक सीमाओं पर प्रकाश डालिए।

3. आधुनिक भारतीय शिक्षा प्रणाली और राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 (NEP 2020) के संदर्भ में महात्मा गांधी के शैक्षिक विचारों की प्रासंगिकता का आलोचनात्मक विश्लेषण कीजिए।

नोट

इकाई 11
भारतीय विचारक: रवींद्रनाथ टैगोर एवं स्वामी विवेकानंद

इकाई संरचना (Unit Structure)

11.1 प्रस्तावना (Introduction)

11.2 उद्देश्य (Objectives)

11.3 रवींद्रनाथ टैगोर का शैक्षिक दर्शन

11.3.1 जीवन दर्शन एवं मूल दार्शनिक सिद्धांत

11.3.2 टैगोर के अनुसार शिक्षा के उद्देश्य

11.3.3 पाठ्यक्रम एवं शिक्षण विधियाँ

11.3.4 प्रकृतिवाद, मानववाद एवं विश्व-बंधुत्व (शांतिनिकेतन की अवधारणा)

11.3.5 शिक्षक की भूमिका एवं अनुशासन

11.4 स्वामी विवेकानंद का शैक्षिक दर्शन

11.4.1 जीवन दर्शन (व्यवहारिक वेदांत)

11.4.2 स्वामी जी के अनुसार शिक्षा की अवधारणा एवं उद्देश्य

11.4.3 चरित्र निर्माण एवं एकाग्रता आधारित शिक्षा

11.4.4 स्त्री शिक्षा, जन-शिक्षा एवं व्यावसायिक शिक्षा पर विचार

11.4.5 शिक्षक-शिक्षार्थी संबंध एवं अनुशासन

11.5 टैगोर एवं स्वामी विवेकानंद के विचारों का तुलनात्मक अध्ययन

11.5.1 समानताएँ

11.5.2 भिन्नताएँ

11.5.3 आधुनिक भारतीय शिक्षा संदर्भ (NEP 2020) में प्रासंगिकता

11.6 ओईआर एवं डिजिटल संसाधन (Open Educational Resources - OER)

11.6.1 ई-ज्ञानकोश एवं एनआरओईआर (NROER) अध्ययन सामग्री

नोट

11.6.2 ऑडियो-वीडियो व्याख्यान एवं डॉक्यूमेंट्री (NPTEL / Swayam / YouTube)

11.6.3 विश्व भारती एवं रामकृष्ण मिशन के डिजिटल संग्रह

11.7 सारांश (Summary)

11.8 मुख्य शब्द (Key Words)

11.9 बोध प्रश्नों के उत्तर

11.10 सुझावित अध्ययन सामग्री – मुक्त शैक्षिक संसाधन

11.11 संदर्भ ग्रन्थ

11.12 अभ्यास एवं स्वयं मूल्यांकन (Exercise & Self-Assessment Exercises)

11.1 प्रस्तावना (Introduction)

भारतीय शिक्षा चिंतन की धारा सदैव अत्यंत समृद्ध और बहुआयामी रही है। 19वीं और 20वीं शताब्दी का समय भारत में 'सांस्कृतिक पुनर्जागरण' (Cultural Renaissance) का काल था। इस दौर में औपनिवेशिक (ब्रिटिश) शिक्षा प्रणाली भारत पर हावी थी, जो मुख्य रूप से क्लर्क तैयार करने और पश्चिमी संस्कृति को बढ़ावा देने के उद्देश्य से डिजाइन की गई थी। इस औपनिवेशिक ढाँचे के जवाब में और भारतीय संस्कृति, आध्यात्मिक चेतना तथा मानविकी मूल्यों को पुनर्जीवित करने के लिए कई भारतीय विचारकों ने मौलिक शैक्षिक विचार प्रस्तुत किए।

इन विचारकों में **रवींद्रनाथ टैगोर** और **स्वामी विवेकानंद** का नाम अग्रणी है। दोनों ही विचारकों ने शिक्षा को केवल किताबी ज्ञान या जीविकोपार्जन का साधन न मानकर, मनुष्य के संपूर्ण व्यक्तित्व के विकास (Holistic Development) और उसकी आंतरिक चेतना के जागरण का माध्यम माना।

- **रवींद्रनाथ टैगोर** ने शिक्षा में प्रकृति, स्वतंत्रता, रचनात्मकता और अंतर्राष्ट्रीयतावाद का समन्वय किया। उनका मानना था कि बालक का विकास प्रकृति की गोद में, बिना किसी बाह्य दबाव के, प्राकृतिक और आनंदमयी वातावरण में होना चाहिए। शांतिनिकेतन की स्थापना उनका यही व्यावहारिक प्रयोग था।

नोट

- **स्वामी विवेकानंद** ने शिक्षा को "मनुष्य में पूर्व से ही निहित पूर्णता की अभिव्यक्ति" (Manifestation of perfection already in man) के रूप में परिभाषित किया। उन्होंने वेदांत के व्यावहारिक स्वरूप पर बल दिया और चरित्र निर्माण, एकाग्रता, शारीरिक व मानसिक शक्ति तथा जन-साधारण के उत्थान के लिए शिक्षा को अनिवार्य माना।

इस इकाई में हम रवींद्रनाथ टैगोर और स्वामी विवेकानंद के जीवन दर्शन, उनके शैक्षिक विचारों, शिक्षण विधियों तथा आधुनिक युग में उनके चिंतन की प्रासंगिकता का विस्तृत अध्ययन करेंगे।

11.2 उद्देश्य (Objectives)

इस इकाई का अध्ययन करने के पश्चात आप:

- **रवींद्रनाथ टैगोर के जीवन दर्शन और उनकी मूल दार्शनिक मान्यताओं**को स्पष्ट रूप से समझ सकेंगे।
- **टैगोर के शैक्षिक विचारों** (जैसे—प्रकृतिवाद, मानववाद, अंतर्राष्ट्रीयतावाद तथा विश्व-बंधुत्व) का विश्लेषण कर सकेंगे।
- **शांतिनिकेतन एवं विश्व-भारती**की स्थापना के पीछे निहित शैक्षिक उद्देश्यों, पाठ्यक्रम और शिक्षण विधियों का मूल्यांकन कर सकेंगे।
- **स्वामी विवेकानंद के 'व्यवहारिक वेदांत' (Practical Vedanta)**और उनके शैक्षिक दर्शन के मध्य संबंधों की व्याख्या कर सकेंगे।
- **विवेकानंद जी द्वारा प्रतिपादित चरित्र निर्माण, एकाग्रता, आत्म-विश्वास एवं जन-शिक्षा**के सिद्धांतों को समझ सकेंगे।

दोनों महान भारतीय विचारकों के शैक्षिक दर्शन का तुलनात्मक अध्ययनकरते हुए आधुनिक भारतीय शिक्षा प्रणाली (विशेषकर**राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020**) में इनकी प्रासंगिकता को रेखांकित कर सकेंगे।

नोट

11.3 रवींद्रनाथ टैगोर का शैक्षिक दर्शन

गुरुदेव रवींद्रनाथ टैगोर (1861–1941) केवल एक महान कवि, साहित्यकार या नोबेल पुरस्कार विजेता ही नहीं थे, बल्कि वे एक अद्वितीय शिक्षाशास्त्री और युगद्रष्टा भी थे। तत्कालीन ब्रिटिशकालीन औपनिवेशिक शिक्षा प्रणाली की नीरसता, कठोरता और यांत्रिक प्रकृति के विरोधी होने के कारण उन्होंने एक ऐसी शिक्षा पद्धति की कल्पना की जो बालक की स्वाभाविकता, रचनात्मकता और आध्यात्मिक चेतना का पूर्ण विकास कर सके।

11.3.1 जीवन दर्शन एवं मूल दार्शनिक सिद्धांत

रवींद्रनाथ टैगोर का जीवन दर्शन**प्रकृतिवाद (Naturalism), मानववाद (Humanism), वेदांत दर्शन (Vedanta Philosophy) और अंतर्राष्ट्रीयतावाद (Internationalism)**का अद्‌भुत समन्वय है।

1. **अद्वैतवादी और मानवतावादी दृष्टिकोण:**टैगोर ब्रह्म (ईश्वर), प्रकृति और मानव को एक-दूसरे से पृथक नहीं मानते थे। उनका विश्वास था कि ईश्वर की अनुभूति मानव सेवा और प्रकृति से एकात्म स्थापित करके ही की जा सकती है।
2. **प्रकृति के साथ सामंजस्य:**उनका मानना था कि प्रकृति परम शिक्षक है। मानव चेतना का उच्चतम विकास तब होता है जब वह प्रकृति के साथ आत्मीय संबंध स्थापित करता है।
3. **व्यक्तिगत स्वतंत्रता का सिद्धांत:**टैगोर बालक को पूर्ण स्वतंत्रता देने के पक्षधर थे। उनका मानना था कि भय और अनुशासन के दबाव में बालक का स्वाभाविक आत्म-विकास रुक जाता है।
4. **विश्व-बंधुत्व (अंतर्राष्ट्रीयतावाद):**टैगोर का चिंतन संकीर्ण राष्ट्रवाद से परे था। वे संपूर्ण मानवता को एक परिवार मानते थे और शिक्षा को विश्व-संस्कृति के समन्वय का माध्यम मानते थे।

11.3.2 टैगोर के अनुसार शिक्षा के उद्देश्य

नोट

टैगोर के अनुसार शिक्षा केवल अक्षरों का ज्ञान या जीविकोपार्जन का साधन मात्र नहीं है, बल्कि यह जीवन को सत्य और सुंदरता के सामंजस्य में लाने की प्रक्रिया है। मुख्य उद्देश्य निम्नलिखित हैं:

- **शारीरिक विकास (Physical Development):**टैगोर का मानना था कि स्वस्थ शरीर ही चेतना का आधार है। इसलिए खेलों, प्रकृति भ्रमण, बागवानी और शारीरिक गतिविधियों को शिक्षा में प्राथमिक स्थान मिलना चाहिए।
- **बौद्धिक एवं मानसिक विकास (Intellectual Development):**बालकों में मौलिक चिंतन, तर्कशक्ति, जिज्ञासा और स्वतंत्र निर्णय लेने की क्षमता का विकास करना।
- **नैतिक एवं आध्यात्मिक विकास (Moral and Spiritual Development):**सत्य, अहिंसा, दया, प्रेम और सहिष्णुता जैसे मानवीय मूल्यों का बीजारोपण करना ताकि बालक का अंतःकरण शुद्ध हो सके।
- **सामंजस्यपूर्ण व्यक्तित्व का विकास (Harmonious Development):**व्यक्ति के शरीर, मन और आत्मा के बीच पूर्ण सामंजस्य स्थापित करना।
- **अंतर्राष्ट्रीयतावादी भावना का विकास (Development of International Understanding):**संकीर्णताओं से ऊपर उठकर संपूर्ण विश्व के प्रति प्रेम, सहानुभूति और भ्रातृभाव की भावना जागृत करना।

11.3.3 पाठ्यक्रम एवं शिक्षण विधियाँ

(A) पाठ्यक्रम (Curriculum)

टैगोर ने एक विस्तृत, लचीले और जीवनोपयोगी पाठ्यक्रम का समर्थन किया। उन्होंने पाठ्यक्रम को किताबी ज्ञान तक सीमित न रखकर उसमें कला, संस्कृति और व्यावहारिक क्रियाओं का समावेश किया:

- **विषय:**साहित्य, भाषाएं, इतिहास, भूगोल, विज्ञान, और गणित।
- **कलात्मक एवं सृजनात्मक विषय:**संगीत, नृत्य, चित्रकला, नाटक और शिल्प।

नोट

- **व्यावहारिक एवं शारीरिक गतिविधियां:**बागवानी, भ्रमण, सामाजिक सेवा, और हस्तकला।

(B) शिक्षण विधियाँ (Teaching Methods)

टैगोर तत्कालीन पारंपरिक रटने की प्रणाली के सख्त विरोधी थे। उन्होंने निम्नलिखित शिक्षण विधियों पर बल दिया:

1. **प्रकृति के माध्यम से सीखना (Learning through Nature):**कक्षाएं बंद कमरों के बजाय खुले आसमान और वृक्षों की छांव के नीचे आयोजित होनी चाहिए।
2. **क्रिया द्वारा सीखना (Learning by Doing):**बालक स्वयं करके, प्रयोग करके और अनुभव प्राप्त करके सीखे।
3. **भ्रमण एवं प्रत्यक्ष अवलोकन (Learning by Travel & Observation):**वास्तविक जीवन की परिस्थितियों, ऐतिहासिक स्थलों और प्राकृतिक वातावरण के प्रत्यक्ष संपर्क से ज्ञान प्राप्त करना।
4. **स्वतंत्रता आधारित शिक्षण (Freedom in Learning):**बालक को अपनी रुचि और गति से सीखने की स्वतंत्रता होनी चाहिए।
5. **मातृभाषा के माध्यम से शिक्षा (Education through Mother Tongue):**टैगोर का दृढ़ मत था कि मौलिक और रचनात्मक चिंतन केवल अपनी मातृभाषा में ही संभव है।

11.3.4 प्रकृतिवाद, मानववाद एवं विश्व-बंधुत्व (शांतिनिकेतन की अवधारणा)

टैगोर ने अपने शैक्षिक विचारों को व्यावहारिक रूप देने के लिए 1901 में बोलपुर (पश्चिम बंगाल) में**'शांतिनिकेतन'**आश्रम की स्थापना की, जो बाद में 1921 में**'विश्व-भारती विश्वविद्यालय'**के रूप में विकसित हुआ।

- **प्रकृतिवाद का मूर्त रूप:**शांतिनिकेतन में शिक्षा खुले वातावरण में दी जाती थी, जहाँ बालक प्रकृति के साथ तादात्म्य स्थापित करते हुए सीखता था।

नोट

- **विश्व-भारती की अवधारणा:**इसका ध्येय वाक्य था—*"यत्र विश्वं भवत्येकनीडम्"* (जहाँ संपूर्ण विश्व एक घोंसले के समान एकत्र होता है)। यह स्थान प्राच्य (पूर्वी) और पाश्चात्य (पश्चिमी) संस्कृति, ज्ञान एवं दर्शन के संगम का केंद्र बना।
- **सृजनात्मक अभिव्यक्ति:**शांतिनिकेतनमें कला, साहित्य, संगीत और हस्तकला को औपचारिक शिक्षा के समकक्ष स्थान दिया गया ताकि बालक की आत्मानुभूति और सृजनात्मकता का संवर्धन हो सके।

11.3.5 शिक्षक की भूमिका एवं अनुशासन

(A) शिक्षक की भूमिका (Role of Teacher)

- **पथ-प्रदर्शक और मित्र:**टैगोर के अनुसार शिक्षक केवल ज्ञान उड़ेलने वाला यंत्रीकृत व्यक्ति नहीं है, बल्कि वह बालक का मार्गदर्शक, मित्र और सहानुभूतिपूर्ण साथी है।
- **निरंतर शिक्षार्थी:**उनका प्रसिद्ध कथन था—*"एक शिक्षक तब तक वास्तविक रूप से नहीं पढ़ा सकता जब तक कि वह स्वयं सीख न रहा हो। एक जलता हुआ दीपक ही दूसरे दीपक को प्रज्वलित कर सकता है।"*
- **सहानुभूति और संवेदनशीलता:**शिक्षक को बालक के मनोविज्ञान, उसकी आवश्यकताओं और उसकी व्यक्तिगत योग्यताओं का गहरा ज्ञान होना चाहिए।

(B) अनुशासन (Discipline)

- **स्व-अनुशासन (Self-Discipline):**टैगोर शारीरिक दंड या बाह्य दबाव पर आधारित अनुशासन के सख्त खिलाफ थे।
- **स्वतंत्रता से उत्पन्न अनुशासन:**उनका मानना था कि सच्ची स्वतंत्रता ही सच्चा अनुशासन पैदा करती है। जब बालक को प्राकृतिक वातावरण में अपनी स्वाभाविक प्रवृत्तियों को अभिव्यक्त करने का अवसर मिलता है, तो उसमें स्वतः ही आत्म-नियंत्रण और स्व-अनुशासन की भावना विकसित होती है।

11.4 स्वामी विवेकानंद का शैक्षिक दर्शन

नोट

स्वामी विवेकानंद (1863–1902) आधुनिक भारत के एक महान दार्शनिक, अध्यात्मवेत्ता और राष्ट्रनिर्माता थे। उनका मानना था कि किसी भी राष्ट्र का उत्थान उसकी शिक्षा प्रणाली और उसके नागरिकों के चरित्र पर निर्भर करता है। उन्होंने तत्कालीन ब्रिटिश शिक्षा प्रणाली को "नकारात्मक शिक्षा" (Negative Education) कहा, क्योंकि वह केवल सूचनाएं ठूंसने और क्लर्क तैयार करने का कार्य करती थी। इसके स्थान पर उन्होंने**"मानव-निर्माणकारी शिक्षा" (Man-Making Education)**का विचार प्रस्तुत किया।

11.4.1 जीवन दर्शन (व्यवहारिक वेदांत)

स्वामी विवेकानंद का जीवन दर्शन**अद्वैत वेदांत**पर आधारित है, जिसे उन्होंने समाज की व्यावहारिक समस्याओं से जोड़कर**'व्यवहारिक वेदांत' (Practical Vedanta)**का नाम दिया।

1. **आत्मा की अमरता और अंतर्निहित पूर्णता:**विवेकानंद के अनुसार प्रत्येक जीव में ईश्वर (ब्रह्म) का अंश विद्यमान है। मनुष्य केवल शारीरिक या मानसिक सत्ता नहीं है, बल्कि वह अपार शक्ति और ज्ञान का स्रोत है।
2. **कर्मयोग और मानव सेवा:**उन्होंने कहा कि*"शिव ज्ञाने जीव सेवा"*—अर्थात दरिद्र, अज्ञानी और पीड़ित मानव की सेवा ही ईश्वर की सच्ची पूजा है।
3. **आत्मविश्वास और आत्म-निर्भरता:**स्वामी जी का स्पष्ट मत था कि जब तक मनुष्य को स्वयं पर विश्वास नहीं होगा, तब तक वह ईश्वर पर भी विश्वास नहीं कर सकता।
4. **प्राच्य और पाश्चात्य का समन्वय:**उन्होंने भारत के**आध्यात्मिक ज्ञान**और पश्चिम के**भौतिक विज्ञान व प्रौद्योगिकी**का सुंदर समन्वय करने पर बल दिया।

11.4.2 स्वामी जी के अनुसार शिक्षा की अवधारणा एवं उद्देश्य

(A) शिक्षा की अवधारणा (Concept of Education)

स्वामी विवेकानंद के अनुसार:

"शिक्षा मनुष्य में पूर्व से ही निहित पूर्णता की अभिव्यक्ति है।"

(Education is the manifestation of the perfection already in man.)

नोट

ज्ञान बाहर से नहीं आता, बल्कि ज्ञान मनुष्य के भीतर ही विद्यमान है। बालक स्वयं सीखता है; शिक्षक केवल उसके मार्ग की बाधाओं को हटाकर ज्ञान के प्रकाश को प्रकट करने में सहायता करता है (जैसे एक माली पौधे की वृद्धि के लिए अनुकूल वातावरण प्रदान करता है)।

(B) शिक्षा के मुख्य उद्देश्य (Objectives of Education)

- **मानव निर्माण एवं चरित्र निर्माण (Man-Making & Character Building):**ऐसी शिक्षा जो मनुष्य को अपने पैरों पर खड़ा होना सिखाए और उसके नैतिक व आत्मिक बल को मजबूत करे।
- **शारीरिक एवं मानसिक शक्ति का विकास (Physical & Mental Strength):**स्वामी जी का प्रसिद्ध कथन है—*"युवाओं को गीता पढ़ने से पहले फुटबॉल खेलना चाहिए।"*उनका मानना था कि कमजोर शरीर से मजबूत आत्मा या मस्तिष्क का विकास नहीं हो सकता।
- **एकाग्रता और ध्यान की क्षमता का विकास:**शिक्षा का मूल उद्देश्य मानसिक एकाग्रता (Concentration of Mind) को बढ़ाना है।
- **आत्म-निर्भरता एवं व्यावसायिक विकास (Self-reliance & Vocational Development):**शिक्षा ऐसी हो जो व्यक्ति को आर्थिक रूप से स्वावलंबी बनाए और गरीबी को दूर करने में सहायक हो।
- **सर्वधर्म समभाव एवं विश्व-बंधुत्व:**बालकों में धार्मिक संकीर्णता से परे हटकर सार्वभौमिक भ्रातृभाव का विकास करना।

11.4.3 चरित्र निर्माण एवं एकाग्रता आधारित शिक्षा

(A) चरित्र निर्माण (Character Building)

स्वामी विवेकानंद के अनुसार चरित्र केवल अच्छे विचारों और आदतों का पुंज है।

नोट

- **इच्छाशक्ति का नियंत्रण:**चरित्र का निर्माण इच्छाशक्ति (Willpower) को नियंत्रित करने से होता है।
- **सकारात्मक विचार:**बालकों को बचपन से ही उदात्त, साहसी और परोपकारी विचारों की प्रेरणा दी जानी चाहिए।
- **निडरता (Fearlessness):**शिक्षा का सबसे बड़ा गुण बालक को 'निर्भीक' बनाना है। स्वामी जी का उपनिषदों से लिया गया प्रिय वाक्य था—*"उत्तिष्ठत जाग्रत प्राप्य वरान्निबोधत"* (उठो, जागो और तब तक मत रुको जब तक लक्ष्य प्राप्त न हो जाए)।

(B) एकाग्रता आधारित शिक्षा (Education based on Concentration)

- स्वामी जी के अनुसार ज्ञान प्राप्ति की एकमात्र कुंजी**'एकाग्रता' (Concentration)**है।
- जितना अधिक मन एकाग्र होगा, ज्ञान उतनी ही तेजी और गहराई से प्राप्त होगा।
- एकाग्रता बढ़ाने के लिए उन्होंने**योग और ध्यान (Yoga and Meditation)**को शिक्षा का अनिवार्य अंग बनाने की वकालत की।

11.4.4 स्त्री शिक्षा, जन-शिक्षा एवं व्यावसायिक शिक्षा पर विचार

1. जन-शिक्षा (Mass Education / Education for All)

स्वामी जी का मानना था कि भारत के पतन का मुख्य कारण देश की बहुसंख्यक जनता को शिक्षा से वंचित रखना था।

- जब तक गरीब और शोषित वर्ग शिक्षित नहीं होगा, राष्ट्र का पुनरुत्थान असंभव है।
- उन्होंने कहा कि यदि गरीब बच्चा शिक्षा तक नहीं पहुँच सकता, तो शिक्षा को बच्चे तक पहुँचना चाहिए (गाँवों और खेतों तक शिक्षा ले जाना)।

2. स्त्री शिक्षा (Women's Education)

नोट

- स्वामी जी का दृढ़ मत था कि बिना नारियों की स्थिति सुधारे विश्व के कल्याण की कोई संभावना नहीं है (जैसे एक पंख से पक्षी नहीं उड़ सकता)।
- उन्होंने स्त्रियों के लिए ऐसी शिक्षा की वकालत की जो उन्हें **निडर, आत्म-निर्भर और चरित्रवान**बनाए।
- उन्होंने सीता, सावित्री और गर्गी के आदर्शों पर आधारित आधुनिक वैज्ञानिक शिक्षा देने का सुझाव दिया।

3. व्यावसायिक एवं तकनीकी शिक्षा (Vocational & Technical Education)

- वे केवल शाब्दिक या साहित्यिक शिक्षा के विरोधी थे।
- उन्होंने भारत में उद्योगों, कृषि और तकनीकी ज्ञान को बढ़ावा देने के लिए व्यावसायिक शिक्षा को अनिवार्य माना ताकि देश से बेरोजगारी और भुखमरी का उन्मूलन हो सके।

11.4.5 शिक्षक-शिक्षार्थी संबंध एवं अनुशासन

(A) शिक्षक-शिक्षार्थी संबंध (Teacher-Student Relationship)

स्वामी विवेकानंद ने प्राचीन भारतीय'**गुरुकुल परंपरा**'और'**ब्रह्मचर्य**'के सिद्धांत पर बल दिया:

- **शिक्षक (Guru):**शिक्षक में त्याग, पवित्रता और छात्र के प्रति सच्चा स्नेह होना चाहिए। शिक्षक का जीवन स्वयं एक उदाहरण होना चाहिए।
- **शिक्षार्थी (Student):**शिक्षार्थी में श्रद्धा, नम्रता, जिज्ञासा और संयम (ब्रह्मचर्य) का गुण होना चाहिए।
- दोनों के बीच संबंध व्यावसायिक न होकर आत्मिक और श्रद्धापूर्ण होना चाहिए।

(B) अनुशासन (Discipline)

- **स्व-अनुशासन एवं आत्म-संयम:**स्वामी जी बाह्य दबाव, भय या शारीरिक दंड द्वारा स्थापित अनुशासन के खिलाफ थे।

नोट

- उनका मानना था कि वास्तविक अनुशासन आंतरिक संयम और**'ब्रह्मचर्य' (Chastity/Self-control)**के पालन से आता है, जो मन और शरीर की ऊर्जा को उच्च रचनात्मक कार्यों में रूपांतरित करता है।

11.5 टैगोर एवं स्वामी विवेकानंद के विचारों का तुलनात्मक अध्ययन

रवींद्रनाथ टैगोर और स्वामी विवेकानंद दोनों ही 19वीं और 20वीं शताब्दी के भारतीय पुनर्जागरण के प्रमुख स्तंभ थे। दोनों विचारकों ने तत्कालीन औपनिवेशिक शिक्षा प्रणाली की कमियों को पहचाना और भारतीय संस्कृति, दर्शन एवं मानवीय मूल्यों पर आधारित शिक्षा प्रणाली का समर्थन किया।

यद्यपि दोनों विचारकों का मुख्य उद्देश्य "मनुष्य का सर्वांगीण विकास" था, परंतु उनके दार्शनिक दृष्टिकोण, प्राथमिकताओं और कार्यान्वयन के तरीकों में कुछ भिन्नताएँ भी देखने को मिलती हैं।

11.5.1 समानताएँ (Similarities)

1. **औपनिवेशिक शिक्षा प्रणाली का विरोध:**
    - दोनों विचारकों ने ब्रिटिश शिक्षा पद्धति को अस्वीकार किया। टैगोर ने इसे 'यांत्रिक और नीरस' माना, जबकि स्वामी जी ने इसे मात्र 'सूचनाएं ठूंसने वाली क्लर्क बनाने की मशीन' कहा।
2. **सर्वांगीण एवं मानव-केंद्रित विकास (Holistic Development):**
    - दोनों का मानना था कि शिक्षा का उद्देश्य केवल बौद्धिक ज्ञान या जीविकोपार्जन तक सीमित नहीं होना चाहिए, बल्कि यह शारीरिक, मानसिक, नैतिक और आध्यात्मिक विकास का माध्यम होनी चाहिए।
3. **मातृभाषा के माध्यम से शिक्षा:**
    - दोनों ही विचारकों ने प्राथमिक और मौलिक शिक्षा के लिए मातृभाषा को ही सबसे उपयुक्त माध्यम माना।
4. **नैतिकता एवं चरित्र निर्माण:**

नोट

- दोनों विचारकों ने शिक्षा में केवल बौद्धिकता के स्थान पर नैतिक मूल्यों, आत्मानुभूति, करुणा और चरित्र निर्माण को सर्वोच्च प्राथमिकता दी।

5. **प्राच्य और पाश्चात्य का समन्वय:**

- दोनों ने भारतीय आध्यात्मिक दर्शन (वेदांत) और पाश्चात्य वैज्ञानिक ज्ञान के बीच एक सकारात्मक संतुलन बनाने की वकालत की।

11.5.2 भिन्नताएँ (Differences)

तुलना का आधार	रवींद्रनाथ टैगोर	स्वामी विवेकानंद
मूल दार्शनिक आधार	प्रकृतिवाद (Naturalism), मानववाद और विश्व-बंधुत्व का समन्वय।	व्यवहारिक अद्वैत वेदांत (Practical Vedanta)।
शिक्षा की मुख्य अवधारणा	शिक्षा प्रकृति के साथ आत्मीयता स्थापित करने और रचनात्मक स्वतंत्रता का माध्यम है।	*"शिक्षा मनुष्य में पूर्व से ही निहित पूर्णता की अभिव्यक्ति है।"*
सृजनात्मकता बनाम चरित्र बल	कला, संगीत, नृत्य, साहित्य और प्रकृति के सौंदर्यशास्त्र के माध्यम से विकास पर बल दिया।	एकाग्रता, ध्यान, चरित्र बल, इच्छाशक्ति पर नियंत्रण और शारीरिक शक्ति पर बल दिया।
अनुशासन का विचार	प्रकृति की गोद में पूर्ण स्वतंत्रता से उपजने वाले स्व-अनुशासन के पक्षधर थे।	ब्रह्मचर्य, इंद्रिय निग्रह और आत्म-संयम से प्राप्त अनुशासन पर बल दिया।
संस्थागत स्वरूप	**शांतिनिकेतन एवं विश्व-भारती** (खुली हवा और कलात्मक वातावरण)।	**रामकृष्ण मिशन** (सेवा, त्याग, योग और वेदांत दर्शन आधारित शिक्षण केंद्र)।

11.5.3 आधुनिक भारतीय शिक्षा संदर्भ (NEP 2020) में प्रासंगिकता

नोट

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 (NEP 2020) में टैगोर और स्वामी विवेकानंद दोनों के शैक्षिक सिद्धांतों का स्पष्ट प्रभाव दिखाई देता है:

1. **समग्र एवं बहुविषयक शिक्षा (Holistic & Multidisciplinary Education):**
    - टैगोर की शांतिनिकेतन की अवधारणा के अनुसार NEP 2020 में कला, विज्ञान, संगीत और खेलकूद के बीच के अंतर को समाप्त कर एकीकृत शिक्षण पर बल दिया गया है।
2. **मातृभाषा एवं स्थानीय भाषा में शिक्षा:**
    - दोनों विचारकों के मतानुसार NEP 2020 में प्राथमिक शिक्षा (कम से कम कक्षा 5 तक) मातृभाषा या स्थानीय भाषा में देने का प्रावधान किया गया है।
3. **अनुभवजन्य अधिगम (Experiential Learning):**
    - टैगोर की 'प्रकृति और क्रिया द्वारा सीखने' तथा विवेकानंद की 'व्यावहारिक शिक्षा' के सिद्धांत को NEP 2020 में करके सीखने और व्यावहारिक ज्ञान (Practical Knowledge) के रूप में अपनाया गया है।
4. **मूल्य आधारित एवं चरित्र निर्माण शिक्षा:**
    - स्वामी विवेकानंद के चरित्र निर्माण एवं नैतिक शिक्षा के विचारों को NEP 2020 में भारतीय मूल्य प्रणाली (Indian Knowledge Systems - IKS) और जीवन कौशल (Life Skills) के समावेश के रूप में लागू किया गया है।
5. **वैश्विक और अंतर्राष्ट्रीय दृष्टिकोण (Global Standards):**

नोट

- टैगोर की विश्व-बंधुत्व (अंतर्राष्ट्रीयतावाद) की भावना के अनुरूप NEP 2020 में भारतीय शिक्षा के अंतर्राष्ट्रीयकरण (Internationalization of Education) का लक्ष्य रखा गया है।

11.6 ओईआर एवं डिजिटल संसाधन (Open Educational Resources - OER)

समीचीन एवं आधुनिक अध्ययन हेतु मुद्रित सामग्री के साथ-साथ डिजिटल शिक्षण संसाधनों (OER) का उपयोग अत्यंत आवश्यक है। रवींद्रनाथ टैगोर और स्वामी विवेकानंद के शैक्षिक विचारों तथा कृतियों को और अधिक गहराई से समझने के लिए निम्नलिखित नि:शुल्क और ओपन डिजिटल प्लेटफॉर्म उपलब्ध हैं:

11.6.1 ई-ज्ञानकोश एवं एनआरओईआर (NROER) अध्ययन सामग्री

1. **ई-ज्ञानकोश (eGyanKosh):**
   - **विवरण:**इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय (IGNOU) द्वारा संचालित यह एक विशाल डिजिटल ज्ञान भंडार है।
   - **इस्तेमाल:**यहाँ एम.ए. (शिक्षाशास्त्र/दर्शनशास्त्र) और बी.ए. के पाठ्यक्रमों के अंतर्गत टैगोर और विवेकानंद के शैक्षिक दर्शन पर विस्तृत ई-बुक्स (PDFs) और अध्ययन मॉड्यूल नि:शुल्क उपलब्ध हैं।
2. **राष्ट्रीय शिक्षा संसाधन मुक्त कोष (NROER - National Repository of Open Educational Resources):**
   - **विवरण:** NCERT द्वारा विकसित यह प्लेटफॉर्म स्कूली और उच्च शिक्षा के लिए विविध डिजिटल सामग्री प्रदान करता है।
   - **इस्तेमाल:**यहाँ भारतीय दार्शनिकों के जीवन, उनके आदर्शों और शांतिनिकेतन/गुरुकुल परंपरा पर आधारित ई-बुक्स, अवधारणा मानचित्र (Concept Maps) और इंटरैक्टिव पाठ्य सामग्री उपलब्ध है।

11.6.2 ऑडियो-वीडियो व्याख्यान एवं डॉक्यूमेंट्री (NPTEL / Swayam / YouTube)

नोट

1. **स्वयं (SWAYAM) एवं एनपीटीईएल (NPTEL):**
    - **विवरण:**शिक्षा मंत्रालय (भारत सरकार) द्वारा संचालित MOOCs प्लेटफॉर्म।
    - **संसाधन:** 'Indian Philosophy' (भारतीय दर्शन) तथा 'Educational Thoughters' विषयों पर देश के प्रमुख प्रोफेसरों द्वारा दिए गए वीडियो व्याख्यान और नोट्स यहाँ उपलब्ध हैं।
2. **यूट्यूब (YouTube) एवं शैक्षिक चैनल (CEC-UGC / E-Vidya):**
    - **UGC-CEC Vyas Channel:**विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा निर्मित टैगोर के शांतिनिकेतन और विवेकानंद के 'चरित्र निर्माण आधारित शिक्षा' पर विशेष वृत्तचित्र (Documentaries) और व्याख्यान।
    - **Sansad TV / Films Division:**रवींद्रनाथ टैगोर और स्वामी विवेकानंद के जीवन व कार्यों पर प्रामाणिक डॉक्यूमेंट्रीज उपलब्ध हैं, जो उनके दर्शन को समझने में दृश्य-श्रव्य (Audio-Visual) मदद प्रदान करती हैं।

11.6.3 विश्व-भारती एवं रामकृष्ण मिशन के डिजिटल संग्रह

1. **विश्व-भारती ऑनलाइन संग्रह (Rabindra Bhavana Archives):**
    - **विवरण:**शांतिनिकेतन का आधिकारिक डिजिटल आर्काइव।
    - **संसाधन:**टैगोर की मूल रचनाएं, निबंध, उनके द्वारा शांतिनिकेतन में दिए गए भाषण तथा शि शिक्षा पर लिखे गए लेख ऑनलाइन पढ़े जा सकते हैं।
2. **रामकृष्ण मिशन डिजिटल लाइब्रेरी (Ramakrishna Math & Mission Portal):**
    - **विवरण:**स्वामी विवेकानंद के विचारों के प्रचार-प्रसार हेतु समर्पित आधिकारिक संस्थान।

नोट

- **संसाधन:**स्वामी विवेकानंद की संपूर्ण कृतियों का संकलन*(The Complete Works of Swami Vivekananda)*यहाँ ऑनलाइन और PDF प्रारूप में नि:शुल्क उपलब्ध है, विशेषकर उनके 'शिक्षा' (Education) पर आधारित व्याख्यान।

1. रवींद्रनाथ टैगोर ने किस प्रसिद्ध शिक्षण संस्थान की स्थापना की?

(A) बीएचयू (BHU)

(B) विश्वभारती (शांतिनिकेतन)

(C) जामिया मिलिया

(D) अलीगढ़ मुस्लिम यूनिवर्सिटी

2. टैगोर का शिक्षा दर्शन किस पर आधारित था?

(A) प्रकृतिवाद, मानववाद और अंतर्राष्ट्रीयतावाद

(B) केवल पाठ्यपुस्तकीय ज्ञान

(C) कठोर अनुशासन

(D) व्यावसायिक होड़

3. 'मैन-मेकिंग एजुकेशन' (मनुष्य निर्माणकारी शिक्षा) का विचार किसने दिया?

(A) स्वामी विवेकानंद

(B) राजा राममोहन राय

(C) दयानंद सरस्वती

(D) अरस्तू

4. स्वामी विवेकानंद के अनुसार शिक्षा का मुख्य ध्येय क्या है?

(A) चरित्र निर्माण और आत्मविश्वास जागृत करना

(B) केवल सरकारी नौकरी पाना

(C) विदेश जाकर पढ़ाई करना

(D) केवल धन अर्जित करना

5. प्रकृति के सानिध्य में स्वतंत्र रूप से सीखने पर बल किसने दिया?

(A) रवींद्रनाथ टैगोर

नोट

(B) प्लेटो

(C) जॉन डीवी

(D) मैकाले

11.7 सारांश (Summary)

इस इकाई में हमने 19वीं और 20वीं शताब्दी के दो महान भारतीय शैक्षिक विचारकों—**रवींद्रनाथ टैगोर**और**स्वामी विवेकानंद**के दार्शनिक चिंतन एवं शिक्षा दर्शन का गहन अध्ययन किया। इकाई के प्रमुख निष्कर्ष निम्नलिखित हैं:

- **तत्कालीन पृष्ठभूमि एवं विरोध:**दोनों विचारकों ने ब्रिटिशकालीन औपनिवेशिक शिक्षा प्रणाली का तीव्र विरोध किया, क्योंकि वह केवल सूचना केंद्रित और क्लर्क तैयार करने वाली यांत्रिक प्रणाली थी।
- **टैगोर का शैक्षिक दर्शन:**रवींद्रनाथ टैगोर का दर्शन प्रकृतिवाद, मानववाद और अंतर्राष्ट्रीयतावाद का अद्‌भुत समन्वय है। उन्होंने शांतिनिकेतन एवं विश्व-भारती के माध्यम से 'खुली हवा में शिक्षा', 'प्रकृति से तादात्म्य', 'मातृभाषा में शिक्षण' और 'सृजनात्मक कलाओं (संगीत, चित्रकला, नाटक)' को शिक्षा का मुख्य स्तंभ बनाया।
- **स्वामी विवेकानंद का शैक्षिक दर्शन:**स्वामी जी ने शिक्षा को *"मनुष्य में पूर्व से ही निहित पूर्णता की अभिव्यक्ति"*माना। उनका 'व्यवहारिक वेदांत' पर आधारित शैक्षिक दृष्टिकोण 'मानव-निर्माण' (Man-Making) और 'चरित्र-निर्माण' (Character-Building) पर केंद्रित था। उन्होंने शारीरिक दृढ़ता, मानसिक एकाग्रता (ध्यान व योग), स्त्री-शिक्षा और जन-शिक्षा के प्रसार पर विशेष बल दिया।
- **तुलनात्मक परिप्रेक्ष्य:**जहाँ टैगोर ने प्रकृति के बीच स्वतंत्रता, सौंदर्यबोध और वैश्विक भाईचारे के माध्यम से बालक के आत्म-विकास पर जोर दिया; वहीं विवेकानंद ने इच्छाशक्ति पर नियंत्रण, एकाग्रता, आत्म-संयम (ब्रह्मचर्य) और राष्ट्रोत्थान हेतु जन-सेवा को प्राथमिकता दी।

नोट

- **आधुनिक प्रासंगिकता:**दोनों विचारकों के विचार आज की**राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 (NEP 2020)**में स्पष्ट रूप से परिलक्षित होते हैं—विशेषकर बहुविषयक शिक्षा, मातृभाषा में प्राथमिक शिक्षण, अनुभवजन्य अधिगम (Experiential Learning) और मूल्य-आधारित चरित्र निर्माण के रूप में।

11.8 मुख्य शब्द (Key Words)

- **प्रकृतिवाद (Naturalism):**वह दार्शनिक विचार जो प्रकृति को ही अंतिम सत्य मानता है और बालकों को कृत्रिम वातावरण के बजाय प्राकृतिक वातावरण में सीखने पर बल देता है।
- **विश्व-बंधुत्व / अंतर्राष्ट्रीयतावाद (Internationalism):**संकीर्ण राष्ट्रीय सीमाओं से ऊपर उठकर संपूर्ण विश्व के प्रति प्रेम, सहानुभूति और सार्वभौमिक एकता की भावना।
- **शांतिनिकेतन एवं विश्व-भारती:**रवींद्रनाथ टैगोर द्वारा स्थापित वह ऐतिहासिक शैक्षिक आश्रम एवं विश्वविद्यालय जो प्राच्य (पूर्वी) और पाश्चात्य (पश्चिमी) ज्ञान और कलाओं का वैश्विक केंद्र है।
- **व्यवहारिक वेदांत (Practical Vedanta):**स्वामी विवेकानंद द्वारा प्रतिपादित सिद्धांत जो वेदांत के आध्यात्मिक सिद्धांतों (अद्वैत) को व्यावहारिक जीवन और समाज सेवा से जोड़ता है।
- **मानव-निर्माणकारी शिक्षा (Man-Making Education):**स्वामी जी द्वारा प्रस्तावित शिक्षा का वह स्वरूप जिसका उद्देश्य बालक में चरित्र निर्माण, आत्मविश्वास, शारीरिक व मानसिक दृढ़ता का विकास करना है।
- **एकाग्रता (Concentration of Mind):**मन को किसी एक विषय पर केंद्रित करने की क्षमता, जिसे स्वामी विवेकानंद ने ज्ञान प्राप्ति की सबसे प्रमुख कुंजी माना।

नोट

- **आत्म-संयम एवं ब्रह्मचर्य (Self-Control & Celibacy):**मन और इंद्रियों पर नियंत्रण का सिद्धांत, जो चरित्र निर्माण और मानसिक ऊर्जा के संवर्धन के लिए आवश्यक है।
- **मुक्त शैक्षिक संसाधन (OER - Open Educational Resources):**वे डिजिटल या मुद्रित शिक्षण सामग्रियां जो अध्ययन और अध्यापन के लिए सार्वजनिक रूप से नि:शुल्क उपलब्ध हैं (जैसे—eGyanKosh, NROER)।

11.9 बोध प्रश्नों के उत्तर

उत्तर: (B) विश्वभारती (शांतिनिकेतन)

उत्तर: (A) प्रकृतिवाद, मानववाद और अंतर्राष्ट्रीयतावाद

उत्तर: (A) स्वामी विवेकानंद

उत्तर: (A) चरित्र निर्माण और आत्मविश्वास जागृत करना

उत्तर: (A) रवींद्रनाथ टैगोर

11.10 सुझावित अध्ययन सामग्री – मुक्त शैक्षिक संसाधन

1. eGyanKosh: Educational Philosophy of Tagore and Vivekananda (IGNOU)
2. UNESCO IBE: Rabindranath Tagore Educational Thoughts
3. Ramakrishna Math & Mission Open Resources: Vivekananda on Education
4. OER Commons: Visva-Bharati and Tagore's Educational Vision
5. Swayam Prabha: Indian Thinkers on Education Series

11.11 संदर्भ ग्रन्थ

नोट

1. **Tagore, Rabindranath (1917).***My School*. Macmillan & Co., London.
2. **Vivekananda, Swami (1956).***Education*. Sri Ramakrishna Math, Mylapore, Madras.
3. **चौबे, एस. पी. एवं चौबे, अखिलेश (2014).** *भारतीय एवं पाश्चात्य शिक्षा शास्त्री*. अग्रवाल पब्लिकेशंस, आगरा।
4. **पाण्डेय, रामशकल (2018).***शिक्षा के दार्शनिक एवं समाजशास्त्रीय आधार*. विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा।
5. **NCERT (2005).***National Curriculum Framework 2005*. National Council of Educational Research and Training, New Delhi.
6. **Ministry of Education (2020).***National Education Policy 2020*. Government of India, New Delhi.
7. **eGyanKosh (IGNOU):***Block 3 - Unit on Indian Educational Thinkers* (Online Access: www.egyankosh.ac.in).

11.12 अभ्यास एवं स्वयं मूल्यांकन (Exercise & Self-Assessment Exercises)

1 निबंधात्मक प्रश्न (Long Answer Type Questions)

1. रवींद्रनाथ टैगोर के शैक्षिक दर्शन का विस्तृत विवेचन कीजिए। शांतिनिकेतन की स्थापना के पीछे उनके क्या उद्देश्य थे?
2. *"शिक्षा मनुष्य में पूर्व से ही निहित पूर्णता की अभिव्यक्ति है।"*स्वामी विवेकानंद के इस कथन के संदर्भ में उनके शैक्षिक विचारों और उद्देश्यों की व्याख्या कीजिए।
3. रवींद्रनाथ टैगोर एवं स्वामी विवेकानंद के शैक्षिक विचारों का तुलनात्मक अध्ययन कीजिए तथा आधुनिक भारतीय शिक्षा (NEP 2020) में इनकी प्रासंगिकता स्पष्ट कीजिए।

नोट

2 लघु उत्तरीय प्रश्न (Short Answer Type Questions)

1. टैगोर के अनुसार शिक्षण विधियाँ कैसी होनी चाहिए? संक्षेप में लिखिए।
2. स्वामी विवेकानंद के 'व्यवहारिक वेदांत' से आप क्या समझते हैं?
3. स्वामी जी के अनुसार स्त्री-शिक्षा एवं जन-शिक्षा पर क्या विचार थे?
4. टैगोर और स्वामी विवेकानंद के अनुसार 'अनुशासन' की अवधारणा में क्या मुख्य अंतर है?

3 वस्तुनिष्ठ प्रश्न (Objective Type Questions)

क. सही विकल्प चुनिए:

1. 'विश्व-भारती' विश्वविद्यालय की स्थापना किसने की थी?

(अ) स्वामी विवेकानंद

(ब) रवींद्रनाथ टैगोर

(स) महात्मा गांधी

(द) महर्षि अरविंद

2. *"शिक्षा मनुष्य में पूर्व से ही निहित पूर्णता की अभिव्यक्ति है"*—यह प्रसिद्ध कथन किसका है?

(अ) स्वामी विवेकानंद

(ब) रवींद्रनाथ टैगोर

(स) प्लेटो

(द) जॉन डीवी

3. रवींद्रनाथ टैगोर के अनुसार शिक्षा का मुख्य माध्यम क्या होना चाहिए?

(अ) अंग्रेजी

(ब) संस्कृत

(स) मातृभाषा

(द) राष्ट्रभाषा

उत्तर कुंजी (Answer Key):

1. (ब) रवींद्रनाथ टैगोर
2. (अ) स्वामी विवेकानंद
3. (स) मातृभाषा

नोट

नोट

इकाई 12
पाश्चात्य विचारक: प्लेटो

इकाई संरचना (Unit Structure)

12.1 प्रस्तावना (Introduction)
12.2 इकाई के उद्देश्य (Objectives)
12.3 प्लेटो का जीवन परिचय एवं दार्शनिक पृष्ठभूमि (Life Sketch & Philosophical Background)
12.3.1 प्लेटो का जीवनवृत्त एवं प्रमुख रचनाएँ (*द रिपब्लिक, द लॉज़*)
12.3.2 सुकरात का प्रभाव एवं प्लेटो का प्रत्ययवाद (Idealism / Theory of Forms)
12.4 प्लेटो के अनुसार शिक्षा का अर्थ एवं स्वरूप (Concept and Nature of Education)
12.4.1 शिक्षा की परिभाषा एवं सामाजिक-राजनीतिक आवश्यकता
12.4.2 राज्य-नियंत्रित शिक्षा प्रणाली (State-Controlled Education)
12.5 शिक्षा के उद्देश्य (Objectives of Education)
12.5.1 सत्य, शिव और सुंदर (Truth, Goodness & Beauty) की प्राप्ति
12.5.2 आदर्श राज्य (Ideal State) का निर्माण एवं सुनागरिकता का विकास
12.5.3 व्यक्ति में शारीरिक, मानसिक और नैतिक गुणों का संतुलन
12.6 प्लेटो की शिक्षा योजना / पाठ्यक्रम (Curriculum & Stages of Education)
12.6.1 प्राथमिक शिक्षा (Primary Education):व्यायाम, संगीत, और नैतिक कहानियाँ
12.6.2 माध्यमिक शिक्षा (Secondary Education):गणित, रेखागणित, ज्योतिष और तर्कशास्त्र
12.6.3 उच्च शिक्षा (Higher Education):द्वंद्वशास्त्र (Dialectics) और दर्शनशास्त्र
12.7 शिक्षण विधियाँ (Methods of Teaching)
12.7.1 संवाद एवं प्रश्नोत्तर विधि (Socratic / Conversational Method)
12.7.2 तर्क एवं द्वंद्ववाद (Dialectic Method)
12.7.3 अनुकरण और खेल विधि
12.8 शिक्षक एवं शिक्षार्थी का स्थान (Role of Teacher and Student)
12.9 प्लेटो के शैक्षिक विचारों का मूल्यांकन (Critical Evaluation)
12.10 आधुनिक शिक्षा में प्लेटो का योगदान एवं प्रासंगिकता
12.11 सारांश (Summary)
12.12 पारिभाषिक शब्दावली (Glossary / Key Terms)

12.13 बोध प्रश्नों के उत्तर
12.14 सुझावित अध्ययन सामग्री – मुक्त शैक्षिक संसाधन
12.15 संदर्भ ग्रन्थ
12.16 अभ्यास एवं मूल्यांकन (Exercises & Self-Assessment)

नोट

12.1 प्रस्तावना (Introduction)

पाश्चात्य दर्शन और शिक्षा के इतिहास में यूनानी दार्शनिक प्लेटो (427 ई.पू. - 347 ई.पू.) का स्थान अत्यंत महत्त्वपूर्ण एवं अग्रणी है। प्लेटो प्रसिद्ध दार्शनिक सुकरात के महानतम शिष्य तथा अरस्तू के गुरु थे। उन्होंने न केवल दार्शनिक विचारों का प्रतिपादन किया, बल्कि एक आदर्श समाज और राज्य की स्थापना हेतु शिक्षा को मुख्य साधन माना।

प्लैटो का मानना था कि शिक्षा का मूल उद्देश्य व्यक्ति के चरित्र का निर्माण करना और उसमें नैतिक व नागरिक गुणों का विकास करना है। उनकी रचना'**द रिपब्लिक' (The Republic)**केवल एक राजनीतिक ग्रंथ नहीं है, बल्कि यह शिक्षा शास्त्र का भी एक उत्कृष्ट ग्रंथ माना जाता है। प्रसिद्ध विचारक रूसो के अनुसार, "द रिपब्लिक शिक्षा पर लिखा गया अब तक का सबसे श्रेष्ठ ग्रंथ है।" प्लेटो ने प्रत्ययवाद (Idealism) की नींव रखी और यह प्रतिपादित किया कि भौतिक जगत की तुलना में विचारों (Ideas) का जगत ही अंतिम और शाश्वत सत्य है। इस इकाई में हम प्लेटो के दार्शनिक दृष्टिकोण, उनकी शिक्षा योजना तथा आधुनिक शिक्षा में उनकी प्रासंगिकता का विस्तृत अध्ययन करेंगे।

12.2 उद्देश्य (Objectives)

इस इकाई का सफलतापूर्वक अध्ययन करने के पश्चात आप:

प्लेटो के जीवन परिचय एवं उनकी दार्शनिक पृष्ठभूमि (प्रत्ययवाद) को स्पष्ट कर सकेंगे।

- प्लेटो द्वारा दी गई शिक्षा की परिभाषा और उसके स्वरूप की व्याख्या कर सकेंगे।
- प्लेटो की राज्य-नियंत्रित शिक्षा योजना और उसके विभिन्न चरणों (प्राथमिक, माध्यमिक एवं उच्च शिक्षा) का विश्लेषण कर सकेंगे।

नोट

- प्लेटो द्वारा सुझाई गई शिक्षण विधियों और शिक्षक एवं शिक्षार्थी के संबंधों को समझ सकेंगे।
- प्लेटो के शैक्षिक विचारों के सकारात्मक पहलुओं एवं उनकी सीमाओं का आलोचनात्मक मूल्यांकन कर सकेंगे।
- आधुनिक शिक्षा प्रणाली में प्लेटो के योगदान और उसकी प्रासंगिकता को रेखांकित कर सकेंगे।

12.3 प्लेटो का जीवन परिचय एवं दार्शनिक पृष्ठभूमि (Life Sketch & Philosophical Background)

(क) प्लेटो का जीवन परिचय (Life Sketch of Plato)

पाश्चात्य दर्शन शास्त्र के महानतम विचारकों में गिने जाने वाले**प्लेटो (427 ई.पू. - 347 ई.पू.)**का जन्म एथेंस (यूनान) के एक अत्यंत समृद्ध, कुलीन और प्रभावशाली राजनीतिक परिवार में हुआ था। प्लेटो का वास्तविक नाम'**अरिस्टोक्लीज' (Aristocles)**था। उनके चौड़े कंधों और सुगठित शारीरिक बनावट के कारण उनके व्यायाम शिक्षक ने उन्हें**'प्लेटो'** (जिसका अर्थ 'चौड़ा' या 'विशाल' होता है) का नाम दिया, जो बाद में इतिहास में प्रसिद्ध हुआ।

- **युग की परिस्थितियाँ:**प्लेटो का जन्म उस समय हुआ जब एथेंस राजनीतिक अस्थिरता और पेलोपोनेशियन युद्ध (Peloponnesian War) के दौर से गुजर रहा था। लोकतंत्र के नाम पर जारी भ्रष्टाचार और अराजकता ने प्लेटो के मन पर गहरा प्रभाव डाला।
- **सुकरात का प्रभाव:** 20 वर्ष की आयु में प्लेटो महान दार्शनिक**सुकरात (Socrates)**के शिष्य बने। सुकरात के नैतिक विचारों और 'ज्ञान ही सद्गुण है' (Knowledge is Virtue) के सिद्धांत ने प्लेटो के भावी जीवन की दिशा तय की। 399 ई.पू. में जब एथेंस की तत्कालीन सरकार ने सुकरात को विष देकर मृत्युदंड दिया, तो इस घटना ने प्लेटो को हिलाकर रख दिया। इसके बाद उन्होंने एथेंस छोड़कर मिस्र, इटली और सिप्रस जैसे देशों की यात्राएँ कीं और विभिन्न दार्शनिक चिंतनधाराओं का गहन अध्ययन किया।

नोट

- **'द अकादमी' (The Academy) की स्थापना:** 387 ई.पू. में एथेंस लौटने पर प्लेटो ने यूरोप के प्रथम विश्वविद्यालय के रूप में प्रसिद्ध संस्थान**'द अकादमी'**की स्थापना की। इसमें गणित, न्याय, राजनीति और दर्शनशास्त्र की शिक्षा दी जाती थी। प्रसिद्ध दार्शनिक अरस्तू इसी अकादमी के छात्र थे।
- **प्रमुख रचनाएँ (Major Works):**प्लेटो ने अपने विचार संवादात्मक शैली (Dialogues) में लिखे। उनकी प्रमुख कालजयी रचनाएँ निम्नलिखित हैं:
    1. **द रिपब्लिक (The Republic):**यह उनकी सबसे प्रसिद्ध रचना है, जिसमें आदर्श राज्य, न्याय, और राज्य-नियंत्रित शिक्षा योजना का विस्तृत वर्णन है।
    2. **द लॉज़ (The Laws):**अपने जीवन के अंतिम चरण में लिखी गई यह पुस्तक व्यावहारिक राजनीति और शिक्षा के नियमों पर आधारित है।
    3. **द स्टेट्समैन (The Statesman):**इसमें राज्य और शासन कला का विशलेषण किया गया है।
    4. **अन्य संवाद:***फाएडो (Phaedo)*, *सिम्पोज़ियम (Symposium)*, *कैटो (Crito)*इत्यादि।

(ख) प्लेटो की दार्शनिक पृष्ठभूमि: प्रत्ययवाद (Philosophical Background: Idealism / Theory of Forms)

प्लेटो का शैक्षिक दर्शन उनके दार्शनिक विचारों पर पूरी तरह आधारित है। प्लेटो**पाश्चात्य प्रत्ययवाद (Idealism)**के जनक माने जाते हैं। उनके दर्शन को समझने के लिए निम्नलिखित बिंदुओं का अध्ययन आवश्यक है:

1. विचारों/प्रत्ययों का सिद्धांत (Theory of Ideas / Forms)

प्लेटो के अनुसार, यह संसार दो भागों में विभाजित है:

- **प्रत्यय जगत (World of Ideas):**यह विचारों और प्रत्ययों का संसार है, जो शाश्वत, अमर, अपरिवर्तनीय और सत्य है। इसे केवल बुद्धि या विवेक (Reason) के माध्यम से ही जाना जा सकता है।

नोट

- **भौतिक/वस्तु जगत (Material World):**यह वह दुनिया है जिसे हम अपनी ज्ञानेंद्रियों द्वारा देखते और अनुभव करते हैं। प्लेटो के अनुसार, यह संसार केवल 'प्रत्यय जगत' की एक छाया या अनुकृति मात्र है, जो परिवर्तनशील और नश्वर है।

2. ज्ञान की अवधारणा (Concept of Knowledge)

प्लेटो का मानना था कि जो ज्ञान हमें अपनी इंद्रियों (इंद्रियजन्य अनुभव) से मिलता है, वह भ्रमित करने वाला और आंशिक होता है। वास्तविक ज्ञान केवल**तर्क, चिंतन और आत्मा के बौद्धिक अनुभव**से प्राप्त होता है। शिक्षा का कार्य व्यक्ति को भौतिक संसार के भ्रम से निकालकर सत्य (विचारों के जगत) की ओर ले जाना है।

3. मानव आत्मा के तीन तत्व (Tripartite Theory of Soul)

प्लेटो ने मानव आत्मा और प्रकृति को तीन मुख्य तत्वों में विभाजित किया:

1. **विवेक/बुद्धि (Reason/Wisdom):**यह आत्मा का सर्वोच्च गुण है। इसके आधार पर समाज में**'दार्शनिक शासक' (Philosopher Kings)**का निर्माण होता है।
2. **साहस/शौर्य (Courage/Spirit):**यह रक्षा और वीरता का गुण है। इससे समाज के**'सैनिक/रक्षक वर्ग' (Soldiers/Guardians)**का गठन होता है।
3. **तृष्णा/क्षुधा (Appetite/Desire):**यह शारीरिक आवश्यकताओं और इच्छाओं से संबंधित है। इससे समाज के**'उत्पादक वर्ग' (Producers/Craftsmen)**का निर्माण होता है।

4. आदर्श राज्य एवं न्याय (Ideal State & Justice)

प्लेटो के अनुसार, जब समाज के तीनों वर्ग (दार्शनिक, सैनिक, और उत्पादक) अपने-अपने स्वाभाविक गुणों के अनुसार कार्य करते हैं और एक-दूसरे के कार्य में हस्तक्षेप नहीं करते, तब समाज में**'न्याय' (Justice)**की स्थापना होती है। शिक्षा ही वह एकमात्र माध्यम है जिसके द्वारा इन तीनों वर्गों के नागरिकों को पहचाना और उनके कर्तव्यों के लिए प्रशिक्षित किया जा सकता है।

12.4 प्लेटो के अनुसार शिक्षा का अर्थ एवं स्वरूप (Concept and Nature of Education)

नोट

(क) शिक्षा का अर्थ (Concept of Education)

प्लेटो के अनुसार शिक्षा कोई बाहरी ज्ञान को व्यक्ति के मस्तिष्क में जबरन ठूँसने की प्रक्रिया नहीं है, बल्कि यह व्यक्ति के भीतर पहले से मौजूद ज्ञान, सत्य और गुणों को बाहर प्रकट करने एवं जागृत करने की प्रक्रिया है।

- **आंतरिक शक्तियों का प्रस्फुटन:**प्लेटो का मानना था कि आत्मा में ज्ञान पहले से विद्यमान होता है। शिक्षा का मुख्य कार्य आत्मा की दृष्टि को अज्ञानता के अंधकार से निकालकर सत्य के प्रकाश (प्रत्यय जगत) की ओर मोड़ना है।
- **नैतिक एवं आत्मिक रूपांतरण:**प्लेटो के शब्दों में—*"शिक्षा का अर्थ केवल आँख में दृष्टि डालना नहीं है, क्योंकि दृष्टि तो पहले से मौजूद है; बल्कि शिक्षा का कार्य पूरी देह (आत्मा) को प्रकाश की ओर मोड़ना है ताकि वह उच्चतम सत्य का साक्षात्कार कर सके।"*
- **सद्गुण ही ज्ञान है (Knowledge is Virtue):**अपने गुरु सुकरात के विचारों का अनुसरण करते हुए प्लेटो ने स्पष्ट किया कि सच्चा ज्ञान वही है जो व्यक्ति को सद्गुणी, नैतिक और न्यायप्रिय बनाए।

(ख) शिक्षा का स्वरूप (Nature of Education)

प्लेटो के दर्शन में शिक्षा के स्वरूप की मुख्य विशेषताएँ निम्नलिखित हैं:

1. राज्य-नियंत्रित एवं अनिवार्य शिक्षा (State-Controlled and Compulsory Education)

- प्लेटो व्यक्तिगत या निजी हाथों में शिक्षा प्रणाली के सख्त खिलाफ थे। उनका मानना था कि यदि शिक्षा निजी हाथों में रहेगी, तो समाज में स्वार्थ और विभिन्नता उत्पन्न होगी।

नोट

- शिक्षा का संचालन और नियंत्रण पूरी तरह से**राज्य (State)**के अधीन होना चाहिए। राज्य ही यह तय करेगा कि किसे, क्या और कितना पढ़ना है। शिक्षा सभी नागरिकों के लिए समान और अनिवार्य होनी चाहिए।

2. स्त्री-पुरुष के लिए समान शिक्षा (Equal Education for Men and Women)

- तत्कालीन यूनानी समाज में स्त्रियों को घर की चारदीवारी तक सीमित रखा जाता था और उन्हें औपचारिक शिक्षा से वंचित रखा जाता था।
- प्लेटो अपनी समय-सीमा से बहुत आगे थे। उन्होंने स्पष्ट रूप से प्रतिपादित किया कि**स्त्री और पुरुष की आत्मा में कोई मूलभूत अंतर नहीं होता**। अतः राज्य के निर्माण और रक्षा में महिलाओं की भी समान भागीदारी होनी चाहिए, और उन्हें पुरुषों के समान ही शिक्षा व शारीरिक प्रशिक्षण दिया जाना चाहिए।

3. सामाजिक वर्गों का निर्धारण (Determination of Social Classes)

- प्लेटो के अनुसार शिक्षा का एक प्रमुख स्वरूप यह है कि यह व्यक्ति की स्वाभाविक क्षमताओं और आत्मा के गुणों को पहचानती है।
- शिक्षा प्रक्रिया के दौरान ली जाने वाली परीक्षाओं के आधार पर ही यह निर्धारित होता है कि कौन व्यक्ति**उत्पादक वर्ग** (व्यापारी/किसान), कौन**सैनिक वर्ग** (रक्षक), और कौन**दार्शनिक शासक (Philosopher King)**बनेगा।

4. सर्वांगीण विकास पर बल (Harmonious Development)

- प्लेटो की शिक्षा प्रणाली शरीर और मन दोनों के संतुलित विकास पर बल देती है।
- वे कहते हैं कि केवल शारीरिक विकास व्यक्ति को बर्बर बना सकता है और केवल मानसिक विकास व्यक्ति को कमजोर व भावुक बना सकता है। इसीलिए उन्होंने**शरीर के लिए व्यायाम (Gymnastic)**और**मन/आत्मा के लिए संगीत (Music)**दोनों को शिक्षा का अनिवार्य अंग माना।

5. जीवनपर्यंत चलने वाली प्रक्रिया (Life-long Process)

नोट

- प्लेटो के अनुसार शिक्षा किसी निश्चित आयु में समाप्त होने वाली वस्तु नहीं है। उनकी शिक्षा योजना 6 वर्ष की आयु से शुरू होकर 50 वर्ष की आयु तक चलती है, जहाँ 50 वर्ष की आयु में व्यक्ति पूर्ण ज्ञान प्राप्त करके 'दार्शनिक शासक' बनने योग्य बनता है।

12.5 शिक्षा के उद्देश्य (Objectives of Education)

प्लेटो का मानना था कि शिक्षा केवल आजीविका कमाने का साधन नहीं है, बल्कि यह व्यक्ति का चरित्र निर्माण करने तथा राज्य को एक 'आदर्श राज्य' (Ideal State) बनाने की आधारशिला है। प्लेटो ने अपनी कालजयी पुस्तक *'द रिपब्लिक'* में शिक्षा के निम्नलिखित प्रमुख उद्देश्यों का प्रतिपादन किया है:

1. सत्य, शिव और सुंदर की प्राप्ति (Attainment of Truth, Goodness & Beauty)

प्लेटो के दर्शन का सर्वोच्च लक्ष्य**"सत्यम्, शिवम्, सुंदरम्"**की अनुभूति है:

- **सत्य (Truth):**भौतिक जगत के भ्रम को छोड़कर शाश्वत एवं निरपेक्ष सत्य (Ideas/Forms) को जानना।
- **शिव (Goodness):**व्यक्ति में नैतिक मूल्यों और सद्गुणों का विकास करना, जिससे वह हमेशा कल्याणकारी कार्य करे।
- **सुंदर (Beauty):**आत्मा को संवादिता (Harmony) और सुंदरता की ओर ले जाना।

2. आदर्श राज्य की स्थापना एवं न्याय (Creation of Ideal State & Justice)

- प्लेटो के अनुसार शिक्षा का सबसे बड़ा सामाजिक उद्देश्य एक'**आदर्श राज्य**'का निर्माण करना है।
- शिक्षा के माध्यम से नागरिकों में अपने-अपने कर्तव्यों के प्रति निष्ठा विकसित की जाती है। जब समाज के तीनों वर्ग (दार्शनिक, सैनिक और उत्पादक) अपने निर्धारित कर्तव्यों का पालन करते हैं, तब राज्य में**'न्याय' (Justice)**स्थापित होता है।

नोट

3. दार्शनिक शासक का निर्माण (Preparation of Philosopher King)

- प्लेटो की शिक्षा प्रणाली का एक मुख्य उद्देश्य राज्य के लिए'**दार्शनिक शासक' (Philosopher Kings)**तैयार करना है।
- प्लेटो का प्रसिद्ध कथन है: *"जब तक दार्शनिक राजा नहीं बनते या इस दुनिया के राजाओं में दर्शनशास्त्र की भावना नहीं आती, तब तक राज्यों को उनकी बुराइयों से मुक्ति नहीं मिल सकती।"*
- शिक्षा विवेकशील, निस्वार्थ और ज्ञानी शासकों को प्रशिक्षित करती है।

4. नागरिकता का विकास एवं राज्य के प्रति कर्तव्य (Development of Citizenship)

- प्लेटो के अनुसार व्यक्ति राज्य के लिए है, राज्य व्यक्ति के लिए नहीं।
- शिक्षा का उद्देश्य व्यक्ति में अनुशासित जीवन, देशप्रेम, और राज्य की सुरक्षा व व्यवस्था के प्रति पूर्ण समर्पण भाव उत्पन्न करना है।

5. व्यक्ति के सर्वांगीण व्यक्तित्व का संतुलन (Harmonious Development)

- प्लेटो शारीरिक और मानसिक विकास के संतुलन को अत्यंत आवश्यक मानते थे।
- शिक्षा का उद्देश्य व्यक्ति के**शरीर (Body), मन (Mind), और आत्मा (Soul)**का एकीकृत विकास करना है, ताकि उसमें साहस, संयम, विवेक और न्याय जैसे चार प्रमुख सद्गुण (Four Cardinal Virtues) विकसित हो सकें।

6. सामाजिक न्याय एवं योग्यता आधारित वर्ग विभाजन (Social Justice & Specialization)

- शिक्षा का कार्य समाज के प्रत्येक व्यक्ति की जन्मजात क्षमताओं (विवेक, साहस, या क्षुधा) की पहचान करना है।

नोट

- व्यक्ति को उसकी योग्यता के अनुसार उचित वर्ग (उत्पादक, सैनिक या शासक) में स्थापित करना शिक्षा का प्रमुख उद्देश्य है, जिससे समाज में अराजकता न फैले।

12.6 प्लेटो की शिक्षा योजना / पाठ्यक्रम (Curriculum & Stages of Education)

प्लाटो ने अपनी कालजयी पुस्तक *'द रिपब्लिक* में एक अत्यंत सुव्यवस्थित, व्यापक और राज्य-नियंत्रित शिक्षा योजना प्रस्तुत की है। उनकी यह शिक्षा योजना व्यक्ति की आयु और मानसिक परिपक्वता के आधार पर विभिन्न चरणों में विभाजित है। यह योजना बाल्यावस्था (6 वर्ष) से प्रारंभ होकर 50 वर्ष की आयु तक चलती है।

प्लेटो की शिक्षा योजना को मुख्य रूप से दो प्रमुख भागों और उनके अंतर्गत विभिन्न चरणों में बाँटा गया है:

[भाग 1] प्राथमिक शिक्षा (Primary Education: 6 से 20 वर्ष)

प्राथमिक शिक्षा का मुख्य उद्देश्य चरित्र निर्माण, इंद्रिय निग्रह, और शारीरिक व मानसिक स्वास्थ्य का संतुलन बनाना है। यह शिक्षा सभी नागरिकों (बालक व बालिका दोनों) के लिए अनिवार्य है।

1. प्रथम चरण (6 से 13 वर्ष)

- **पाठ्यक्रम:**व्यायाम (Gymnastics), खेल-कूद, संगीत (Music), और नैतिक कहानियाँ।
- **उद्देश्य:**
    - **व्यायाम:**शरीर को स्वस्थ, सुदृढ़ और अनुशासित बनाना ताकि भावी जीवन में बार-बार चिकित्सकों की आवश्यकता न पड़े।
    - **संगीत:**आत्मा को सुसंस्कृत, कोमल और संवादी (Harmonious) बनाना। (प्लेटो के अनुसार संगीत में कविता, कला और साहित्य शामिल हैं)।

नोट

- **नैतिकता:**बालकों को महापुरुषों की नैतिक कहानियाँ सुनाई जाती हैं। प्लेटो ने अनैतिक और कामुक साहित्य व नाटकों पर पूर्ण प्रतिबंध लगाने की सिफारिश की।

2. द्वितीय चरण (13 से 16 वर्ष)

- **पाठ्यक्रम:**संगीत, काव्य, प्रारंभिक गणित, और भाषा।
- **उद्देश्य:**बौद्धिक क्षमताओं का विकास करना और अमूर्त (Abstract) चिंतन की नींव रखना।

3. तृतीय चरण (17 से 20 वर्ष)

- **पाठ्यक्रम:**कठोर सैनिक प्रशिक्षण (Military Training) और शारीरिक अनुशासन।
- **उद्देश्य:**युवाओं में साहस, देशभक्ति, और सहनशीलता का विकास करना।
- **प्रथम चयन परीक्षा (20 वर्ष की आयु में):** 20 वर्ष की आयु में एक राज्यस्तरीय परीक्षा होती है:
  - जो छात्र इसमें असफल होते हैं, वे**उत्पादक वर्ग** (किसान, व्यापारी, शिल्पी) बनते हैं।
  - जो छात्र सफल होते हैं, वे**उच्च शिक्षा**के लिए चुने जाते हैं।

[भाग 2] उच्च शिक्षा (Higher Education: 20 से 50 वर्ष)

उच्च शिक्षा केवल उन चुनिंदा मेधावी छात्रों के लिए है जिनमें विवेक (Reason) और बौद्धिक क्षमता अधिक होती है। इसका उद्देश्य राज्य के रक्षकों और दार्शनिक शासकों का निर्माण करना है।

1. प्रथम चरण (20 से 30 वर्ष)

- **पाठ्यक्रम:**गणित (Mathematics), रेखागणित (Geometry), ज्योतिष शास्त्र (Astronomy), और संगीत शास्त्र (Harmonics)।

नोट

- **विशेष बल:**प्लेटो ने अपनी अकादमी के द्वार पर लिखा था—*"जिसे रेखागणित का ज्ञान न हो, वह यहाँ प्रवेश न करे।"*प्लेटो गणित को तर्क और अमूर्त विचार (Pure Thought) के विकास के लिए अनिवार्य मानते थे।
- **द्वितीय चयन परीक्षा (30 वर्ष की आयु में):** 30 वर्ष की आयु में पुनः एक कठोर परीक्षा होती है:
    - जो छात्र इसमें असफल होते हैं, वे**सैनिक/रक्षक वर्ग** (Soldiers/Guardians) और राज्य के प्रशासनिक अधिकारी बनते हैं।
    - जो छात्र उत्तीर्ण होते हैं, वे उच्चतम दार्शनिक शिक्षा के लिए चुने जाते हैं।

2. द्वितीय चरण (30 से 35 वर्ष)

- **पाठ्यक्रम:**द्वंद्वशास्त्र (Dialectics) और दर्शनशास्त्र (Philosophy)।
- **उद्देश्य:** 'प्रत्यय जगत' (World of Ideas) और सत्य का साक्षात्कार करना। विचारों का विश्लेषण और तर्क करने की सर्वोच्च क्षमता विकसित करना।

3. तृतीय चरण / व्यावहारिक शिक्षा (35 से 50 वर्ष)

- **स्वरूप:** 15 वर्षों का गहन व्यावहारिक अनुभव (Practical Training in Real World)।
- **गतिविधि:**इस अवधि में व्यक्ति को वास्तविक दुनिया के संघर्षों, राजनीति, और राज्य के प्रशासनिक पदों पर कार्य करना होता है।
- **अंतिम लक्ष्य (50 वर्ष की आयु):** 50 वर्ष की आयु तक जो व्यक्ति सफलतापूर्वक इस लंबी और कठोर प्रक्रिया को पार कर लेता है, वह पूर्ण रूप से ज्ञानी, निस्वार्थ और संन्यासी तुल्य'**दार्शनिक शासक' (Philosopher King)**बनने के योग्य होता है।

प्लेटो की शिक्षा योजना की मुख्य तालिका (Summary Table)

आयु सीमा	शिक्षा का चरण	मुख्य विषय / गतिविधियाँ	लक्ष्य / परिणाम

नोट

6 से 17 वर्ष	प्रारंभिक शिक्षा	व्यायाम, संगीत, नैतिक कहानियाँ, गणित	चरित्र निर्माण एवं शारीरिक-मानसिक संतुलन
17 से 20 वर्ष	सैनिक शिक्षा	सैनिक प्रशिक्षण एवं कठोर अनुशासन	प्रथम परीक्षा → असफल: उत्पादक वर्ग
20 से 30 वर्ष	उच्च शिक्षा (भाग-1)	गणित, रेखागणित, ज्योतिष शास्त्र	द्वितीय परीक्षा → असफल: सैनिक/प्रशासनिक वर्ग
30 से 35 वर्ष	उच्च शिक्षा (भाग-2)	द्वंद्वशास्त्र (Dialectics) एवं दर्शन	सर्वोच्च बौद्धिक एवं दार्शनिक चिंतन
35 से 50 वर्ष	व्यावहारिक प्रशिक्षण	राज्य प्रशासन का व्यावहारिक अनुभव	**दार्शनिक शासक (Philosopher King)**का निर्माण

12.7 शिक्षण विधियाँ (Methods of Teaching)

पाश्चात्य दर्शन के इतिहास में प्लेटो का योगदान केवल दार्शनिक सिद्धांतों और राज्य-व्यवस्था की रूपरेखा तक सीमित नहीं है, बल्कि उन्होंने शिक्षा को व्यावहारिक रूप देने के लिए शिक्षण विधियों (Methods of Teaching) के क्षेत्र में भी क्रांतिकारी विचार प्रस्तुत किए हैं। प्लेटो का मानना था कि शिक्षा कोई ऐसी प्रक्रिया नहीं है जिसमें शिक्षक विद्यार्थी के निष्क्रिय मस्तिष्क में बाहर से सूचनाएँ या तथ्य भरता है। इसके विपरीत, उनका दार्शनिक दृष्टिकोण 'प्रत्ययवाद' (Idealism) पर आधारित था, जिसके अनुसार सत्य, ज्ञान और विचार (Ideas) मनुष्य की आत्मा में जन्मजात रूप से विद्यमान होते हैं।

अतः प्लेटो के अनुसार शिक्षण का मुख्य कार्य विद्यार्थी के भीतर सुप्त (Dormant) अवस्था में पड़े ज्ञान को जगाना, उसकी बुद्धि को निखारना और उसे अज्ञानता के अंधकार से निकालकर सत्य का साक्षात्कार कराना है। इस उद्देश्य की प्राप्ति के लिए प्लेटो ने

नोट

पारंपरिक रटने की प्रणाली का सख्त विरोध किया और चिंतन, तर्क, संवाद एवं स्वतः क्रियाशीलता पर आधारित शिक्षण विधियों का समर्थन किया।

नीचे प्लेटो द्वारा प्रतिपादित तथा उनकी शिक्षा प्रणाली में प्रयुक्त प्रमुख शिक्षण विधियों का विस्तृत एवं विश्लेषणात्मक विवरण दिया गया है:

1. संवाद एवं प्रश्नोत्तर विधि (Socratic / Conversational Method)

- **पृष्ठभूमि एवं स्वरूप:**यह विधि प्लेटो को अपने महान गुरु सुकरात से विरासत में मिली थी। इसी कारण इसे 'सुकराती विधि' (Socratic Method) भी कहा जाता है। प्लेटो ने अपने लगभग सभी प्रसिद्ध दार्शनिक ग्रंथों (जैसे—*द रिपब्लिक, फाएडो, मेनो, सिम्पोज़ियम*) की रचना संवादात्मक शैली (Dialogues) में ही की है।
- **कार्यप्रणाली:**इस विधि में शिक्षक अपने विद्यार्थियों से सीधा व्याख्यान देने के बजाय उनसे विषय-वस्तु से संबंधित सारगर्भित और तार्किक प्रश्न पूछता है। जब शिक्षार्थी उत्तर देता है, तो शिक्षक उसके उत्तर में से ही नए प्रश्न बनाकर उसकी कमियों और अंतर्विरोधों को उजागर करता है। इस प्रक्रिया से शिक्षार्थी स्वयं विचार करने पर मजबूर होता है और अंततः सही निष्कर्ष तक पहुँचता है।
- **शैक्षणिक महत्त्व:**
    - यह विधि विद्यार्थी को 'सक्रिय विचारक' (Active Thinker) बनाती है, न कि केवल 'स्रोता'।
    - इससे छात्र में मौलिक चिंतन (Original Thinking) और विश्लेषणात्मक क्षमता का विकास होता है।
    - यह अज्ञानता के भ्रम को मिटाकर वास्तविक ज्ञान की ओर ले जाती है।

2. द्वंद्ववादी विधि या तर्क विधि (Dialectic Method)

- **स्वरूप एवं महत्त्व:**प्लेटो की शिक्षा प्रणाली में 'द्वंद्वशास्त्र' (Dialectics) को सर्वोच्च स्थान प्राप्त है। प्लेटो ने इसे उच्च शिक्षा (30 से 35 वर्ष की आयु) का

नोट

मुख्य आधार बनाया। यह केवल एक शिक्षण विधि नहीं है, बल्कि सत्य तक पहुँचने का सर्वोच्च बौद्धिक साधन है।

- **कार्यप्रणाली:**द्वंद्ववाद का अर्थ है— विचारों का विचारों से टकराव (Clash of Ideas)। इसमें किसी विचार या मान्यता (Thesis) पर चर्चा की जाती है, फिर उसके विरोधी विचार (Antithesis) को प्रस्तुत किया जाता है। दोनों पक्षों के बीच गहन तर्क-वितर्क, खंडन-मंडन और विश्लेषण के पश्चात् एक सर्वमान्य एवं उच्चतर सत्य (Synthesis) की स्थापना की जाती है।
- **शैक्षणिक महत्त्व:**
    - यह विधि केवल अत्यंत परिपक्व और मेधावी छात्रों के लिए उपयुक्त मानी गई है।
    - इसके माध्यम से छात्र भौतिक जगत की नश्वर वस्तुओं से ऊपर उठकर 'प्रत्यय जगत' (World of Ideas) के अमूर्त और शाश्वत सत्य को समझ पाता है।
    - यह दार्शनिक शासक (Philosopher King) के निर्माण की अंतिम बौद्धिक कसौटी है।

3. अनुकरण एवं खेल विधि (Imitation and Play Way Method)

- **प्राथमिक स्तर पर अनुप्रयोग:**प्लेटो बाल्यावस्था और प्रारंभिक शिक्षा (6 से 13 वर्ष) के दौरान बालकों पर किसी भी प्रकार का मानसिक दबाव या जबरदस्ती पढ़ाई थोपने के सख्त विरोधी थे। उनका मानना था कि जबरन सिखाया गया ज्ञान मस्तिष्क में स्थायी नहीं रहता।
- **खेल-कूद द्वारा शिक्षण:**प्लेटो के अनुसार, *"बालकों को स्वतंत्रता पूर्वक खेल-कूद के माध्यम से सिखाया जाना चाहिए।"*खेल विधि से बच्चों का शारीरिक विकास भी होता है और उनमें सामाजिक नियमों, सहयोग तथा अनुशासन की स्वाभाविक समझ विकसित होती है।

नोट

- **अनुकरण विधि (Imitation):**बच्चे स्वभाव से अनुकरणप्रिय होते हैं। प्लेटो ने निर्देश दिया कि बालकों के समक्ष नैतिक, चरित्रवान और वीर पुरुषों के उदाहरण तथा नाटक प्रस्तुत किए जाने चाहिए ताकि वे उनका अनुकरण करके अच्छे गुणों को आत्मसात कर सकें। इसी कारण उन्होंने बालकों के सामने अनैतिक, कायर या अनैतिक कहानियाँ सुनाने पर रोक लगाने की बात कही।

4. स्व-अध्ययन एवं स्वाध्याय विधि (Self-Study and Contemplation)

- **अंतरनिहित ज्ञान की जागृति:**प्लेटो का मानना था कि आत्मा अमर है और जन्म से पूर्व उसे समस्त ज्ञान प्राप्त था, परंतु शरीर में प्रवेश करते ही वह उसे भूल जाती है। शिक्षण का कार्य उस स्मृति को पुनः जागृत करना है (Theory of Recollection)।
- **चिंतन व मनन:**प्लेटो ने शिक्षार्थियों को एकांत में बैठकर आत्म-चिंतन (Self-Reflection) और गहन मनन करने के लिए प्रेरित किया। जब व्यक्ति बाहरी शोर से दूर होकर स्वाध्याय करता है, तो उसकी अंतरात्मा में छिपा सत्य स्वतः प्रकट होने लगता है।

5. आगमन एवं निगमन विधि (Inductive and Deductive Method)

- **निगमन विधि (Deductive Method):**प्लेटो ने सामान्य सिद्धांतों से विशिष्ट तथ्यों की ओर जाने की निगमन विधि का व्यापक प्रयोग किया। विशेष रूप से दर्शनशास्त्र और नीतिशास्त्र के अध्यापन में पहले सर्वव्यापी विचारों (General Concepts) को स्वीकार किया जाता था और फिर उनके आधार पर व्यावहारिक उदाहरणों का विश्लेषण किया जाता था।
- **आगमन विधि (Inductive Method):**गणित, रेखागणित और तर्कशास्त्र पढ़ाते समय प्लेटो ने विशिष्ट उदाहरणों और समस्याओं से सामान्य नियमों तक पहुँचने की आगमन विधि को भी स्थान दिया।

6. व्यावहारिक एवं क्रियात्मक प्रशिक्षण विधि (Practical and Experiential Method)

नोट

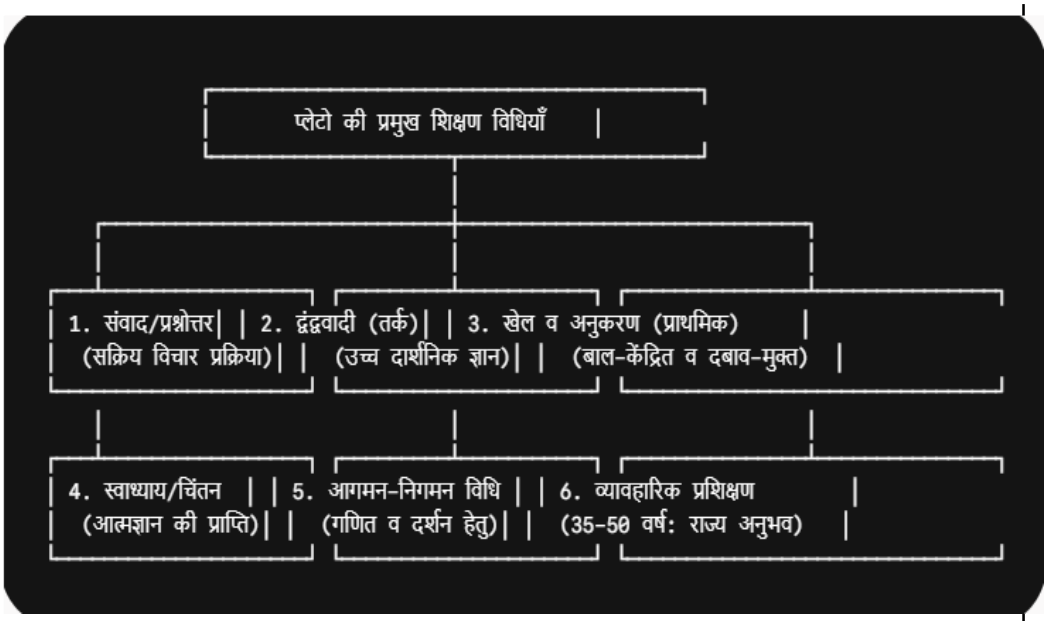
- **उच्चतर शिक्षा में अनुप्रयोग:**प्लेटो केवल किताबी या सैद्धांतिक ज्ञान के समर्थक नहीं थे। उनकी शिक्षा योजना के अंतिम चरण (35 से 50 वर्ष की आयु) में पूरी तरह से व्यावहारिक शिक्षण विधि का समावेश था।
- **कार्यप्रणाली:**इस 15 वर्ष की लंबी अवधि में शिक्षार्थियों को राज्य के वास्तविक प्रशासनिक पदों, सैन्य अभियानों और राजनीतिक जिम्मेदारियों के बीच भेजा जाता था। वे वास्तविक जीवन की समस्याओं, षड्यंत्रों, और प्रशासनिक चुनौतियों का प्रत्यक्ष सामना करके अनुभव प्राप्त करते थे।
- **महत्त्व:**प्लेटो का मानना था कि जब तक दार्शनिक को व्यावहारिक जीवन का अनुभव नहीं होगा, तब तक वह एक सफल और न्यायप्रिय शासक नहीं बन सकता।

7. विषय-आधारित एकीकृत विधियाँ (Subject-Specific Integrated Methods)

प्लेटो ने विभिन्न विषयों को पढ़ाने के लिए उनकी प्रकृति के अनुसार अलग-अलग विधियों का प्रस्ताव दिया:

- **व्यायाम और क्रीड़ा विधि (Gymnastics Method):**शरीर के विकास, सहनशीलता, और स्वास्थ्य के लिए शारीरिक अभ्यास और प्रशिक्षण विधि का प्रयोग।
- **संगीत एवं कला विधि (Music and Art Method):**मन, भावनाओं और आत्मा की शुद्धि तथा संयम के लिए संगीतात्मक एवं काव्यात्मक अभ्यासों का प्रयोग।
- **गणितीय एवं ज्यामितीय विधि (Mathematical Method):**तर्क, बुद्धि और अमूर्त सोच (Abstract Reasoning) को तीक्ष्ण करने के लिए गणितीय समस्याओं को हल करने की विधि।

प्लेटो की शिक्षण विधियों की मुख्य विशेषताएँ (एक दृष्टि में)



निष्कर्ष एवं आधुनिक प्रासंगिकता

संक्षेप में, प्लेटो की शिक्षण विधियाँ बाल-केंद्रित प्रारंभिक शिक्षा से शुरू होकर अत्यंत कठोर बौद्धिक एवं व्यावहारिक शिक्षा तक जाती हैं। उनकी विधियों का मूल मंत्र यह है कि**ज्ञान थोपा नहीं जाता, बल्कि खोजा जाता है।**

आधुनिक शिक्षा शास्त्र की दृष्टि से प्लेटो की ये विधियाँ आज भी उतनी ही प्रासंगिक हैं:

1. उनकी**खेल विधि**आधुनिक 'मॉन्टेसरी' और 'किंडरगार्टन' प्रणालियों का आधार है।
2. उनकी**संवाद विधि**आज की 'समस्या समाधान विधि' (Problem Solving Method) और 'क्रिटिकल थिंकिंग' (Critical Thinking) के समरूप है।

उनकी **व्यावहारिक प्रशिक्षण विधि** आधुनिक युग के 'इंटरर्नशिप' (Internship) और 'ऑन-द-जॉब ट्रेनिंग' (On-the-Job Training) का पूर्वाभास देती है।

12.8 शिक्षक एवं शिक्षार्थी का स्थान (Role of Teacher and Student)

प्लेटो के शिक्षा दर्शन में शिक्षक और शिक्षार्थी केवल एक औपचारिक प्रणाली के दो घटक नहीं हैं, बल्कि वे 'आदर्श राज्य' (Ideal State) के निर्माण और सत्य की खोज की प्रक्रिया

नोट

के दो सबसे महत्त्वपूर्ण स्तंभ हैं। प्लेटो ने दोनों की भूमिकाओं, कर्तव्यों और आपसी संबंधों को अत्यंत गहराई से रेखांकित किया है।

(क) प्लेटो के अनुसार शिक्षक का स्थान (Role of the Teacher)

प्लेटo के अनुसार शिक्षक केवल पाठ्य-सामग्री को रटाने वाला या कक्षा का प्रबंधक नहीं है, बल्कि वह आत्मा का मार्गदर्शक, सत्य का अन्वेषक और समाज का शिल्पकार है।

1. दार्शनिक एवं मार्गदर्शक (Philosopher and Guide)

- प्लेटो की दृष्टि में शिक्षक को स्वयं एक 'दार्शनिक' (Philosopher) होना चाहिए, जिसे प्रत्यय जगत और सत्य का साक्षात्कार हो चुका हो।
- शिक्षक का कार्य छात्र के मस्तिष्क में बाहर से ज्ञान डालना नहीं है, बल्कि छात्र की आत्मा में सुप्त अवस्था में मौजूद ज्ञान को बाहर निकालना और उसकी दृष्टि को सत्य (Idea of Good) की ओर मोड़ना है।

2. बौद्धिक और नैतिक पथ-प्रदर्शक (Intellectual and Moral Torchbearer)

- शिक्षक को ज्ञान, निष्पक्षता, संयम और उच्च नैतिक चरित्र का प्रतीक होना चाहिए।
- सुकरात की भाँति शिक्षक का मुख्य काम छात्रों से ऐसे प्रश्न पूछना (संवाद विधि) है, जिससे वे अपनी भ्रांतियों को दूर कर स्वयं विचार करना और सही निर्णय लेना सीख सकें।

3. आदर्श राज्य का निर्माता (Architect of Ideal State)

- प्लेटो ने शिक्षक को अत्यंत गौरवशाली स्थान दिया है क्योंकि वह राज्य के भविष्य—उत्पादक, सैनिक और भावी दार्शनिक शासक—का निर्माण करता है।
- शिक्षक ही यह पहचानता है कि किस छात्र की आत्मा में कौन-सा गुण (विवेक, साहस या क्षुधा) प्रधान है और उसी के अनुसार उसकी आगे की शिक्षा तय करता है।

(ख) प्लेटो के अनुसार शिक्षार्थी का स्थान (Role of the Student)

नोट

प्लेटो की शिक्षा योजना में शिक्षार्थी केवल ज्ञान का निष्क्रिय प्राप्तकर्ता नहीं है, बल्कि वह एक सक्रिय सत्य-अन्वेषक और राज्य का अनुशासित नागरिक है।

1. सत्य और ज्ञान का जिज्ञासु (Seeker of Truth)

- शिक्षार्थी का प्राथमिक कर्तव्य ज्ञान के प्रति सच्चा प्रेम और जिज्ञासा (Philos-Sophia) रखना है।
- उसे केवल भौतिक या सांसारिक लाभ के लिए नहीं, बल्कि आत्मा की शुद्धि और परम सत्य (Ideas) को जानने के लिए अध्ययन करना चाहिए।

2. अनुशासित और कर्तव्यपरायण (Disciplined and Duty-Bound)

- प्लेटो की शिक्षा प्रणाली अत्यधिक अनुशासित है। शिक्षार्थी को शारीरिक व्यायाम से शरीर को और संगीत व गणित से मन व बुद्धि को अनुशासित रखना होता है।
- शिक्षार्थी को राज्य के नियमों और अपनी शिक्षा योजना के सभी चरणों (प्राथमिक से लेकर उच्च स्तर की परीक्षाओं तक) का निष्ठापूर्वक पालन करना होता है।

3. योग्यता और क्षमता के अनुसार भूमिका (Role Based on Natural Aptitude)

- शिक्षार्थी का यह कर्तव्य है कि वह अपनी स्वाभाविक क्षमताओं (तर्क, साहस या उत्पादकता) को पहचाने और उसी के अनुरूप समाज में अपनी भूमिका (उत्पादक, सैनिक या शासक) को सहर्ष स्वीकार करे।

(ग) शिक्षक और शिक्षार्थी का संबंध (Teacher-Student Relationship)

- **संवादात्मक एवं मैत्रीपूर्ण (Conversational and Interactive):**प्लेटो की 'संवाद विधि' (Socratic Method) यह दर्शाती है कि शिक्षक और शिक्षार्थी के बीच का संबंध एकतरफा भाषण का नहीं, बल्कि द्विपक्षीय विचार-विमर्श और तर्क का होता है।
- **नैतिक एवं आध्यात्मिक बंधन (Moral and Spiritual Bond):**दोनों के बीच का संबंध केवल औपचारिक नहीं, बल्कि सत्य की खोज के लिए जुड़ा एक पवित्र आध्यात्मिक संबंध है।

नोट

- **समानता का भाव (Gender Equality):**प्लेटो ने स्पष्ट किया कि शिक्षक के सामने छात्र चाहे पुरुष हो या स्त्री, दोनों को समान रूप से सीखने का अधिकार है और उनके साथ एक समान व्यवहार किया जाना चाहिए।

12.9 प्लेटो के शैक्षिक विचारों का मूल्यांकन (Critical Evaluation of Plato's Educational Thought)

प्लेटो का शिक्षा दर्शन पाश्चात्य चिंतन के इतिहास में एक युगांतकारी मोड़ प्रस्तुत करता है। उनकी शिक्षा प्रणाली अत्यंत सुव्यवस्थित, तर्कसंगत और दूरदर्शी थी। यद्यपि प्लेटो ने ईसा पूर्व चौथी शताब्दी में अपने विचारों का प्रतिपादन किया था, फिर भी उनका चिंतन आज भी शिक्षाशास्त्र के क्षेत्र में अत्यंत प्रासंगिक और बहस का विषय है।

प्लेटो के शैक्षिक विचारों का निष्पक्ष और समग्र मूल्यांकन उनके**सकारात्मक पहलुओं (योगदान/गुण)**और उनकी**सीमाओं (दोष/आलोचनाओं)**के अंतर्गत निम्नलिखित रूप से किया जा सकता है:

(क) प्लेटो के शैक्षिक विचारों के सकारात्मक पहलू / शक्ति स्थान (Strengths and Contributions)

1. अनिवार्य और राज्य-नियंत्रित शिक्षा (State-Controlled & Universal Education)

- प्लेटो ने सबसे पहले यह विचार दिया कि शिक्षा किसी व्यक्ति या निजी संस्था का व्यवसाय नहीं, बल्कि राज्य का प्राथमिक दायित्व है।
- उन्होंने समाज के प्रत्येक वर्ग के लिए शिक्षा को अनिवार्य और निःशुल्क बनाने की वकालत की, जो आज के लोक कल्याणकारी राज्यों (Welfare States) का मुख्य आधार है।

2. स्त्री-पुरुष के लिए समान शिक्षा (Gender Equality in Education)

- तत्कालीन यूनानी समाज में, जहाँ महिलाओं को घर तक सीमित रखा जाता था, प्लेटो ने स्त्रियों और पुरुषों को एक समान शिक्षा और अवसर देने का क्रांतिकारी विचार दिया।

नोट

- उनका मानना था कि राज्य की आधी आबादी (महिलाओं) को अशिक्षित रखना राज्य को आधा अपंग बनाने जैसा है।

3. सर्वांगीण एवं संतुलित विकास पर बल (Harmonious Development)

- प्लेटो ने केवल किताबी ज्ञान पर बल न देकर शरीर (व्यायाम द्वारा) और आत्मा/मन (संगीत और गणित द्वारा) के संतुलित विकास का समर्थन किया।
- उन्होंने शारीरिक स्वास्थ्य और मानसिक तीक्ष्णता दोनों को शिक्षा का अभिन्न अंग माना।

4. बाल-केंद्रित एवं मनोवैज्ञानिक शिक्षण विधियाँ (Psychological Approach in Early Education)

- प्राथमिक स्तर पर प्लेटो ने रटने या दंड देने का विरोध किया और खेल-कूद, कहानियों तथा अनुकरण विधि द्वारा शिक्षा देने की सिफारिश की।
- यह विचार आधुनिक किंडरगार्टन और मोंटेसरी प्रणालियों का पूर्वगामी माना जाता है।

5. जीवनपर्यंत और स्तरीय शिक्षा (Life-long & Structured Education)

- प्लेटो ने शिक्षा को 6 से 50 वर्ष की आयु तक विस्तारित कर यह सिद्ध किया कि अधिगम (Learning) एक अनवरत चलने वाली प्रक्रिया है।
- उन्होंने आयु और परिपक्वता के अनुसार पाठ्यक्रम का विभाजन (प्राथमिक, माध्यमिक, उच्च और व्यावहारिक) अत्यंत वैज्ञानिक ढंग से किया।

(ख) प्लेटो के शैक्षिक विचारों की सीमाएँ एवं आलोचनाएँ (Limitations and Criticisms)

यद्यपि प्लेटो की योजना अत्यंत महान थी, किंतु अनेक आधुनिक विचारकों (जैसे कार्ल पॉपर, अरस्तू आदि) ने उनकी शिक्षा प्रणाली की निम्नलिखित आधारों पर तीखी आलोचना की है:

1. अत्यधिक राज्य-नियंत्रण एवं सर्वाधिकारवाद (Totalitarian Control)

नोट

- प्लेटo की प्रणाली में व्यक्ति की व्यक्तिगत स्वतंत्रता पूरी तरह समाप्त हो जाती है। राज्य ही यह तय करता है कि व्यक्ति क्या पढ़ेगा और क्या बनेगा।
- प्रसिद्ध दार्शनिक**कार्ल पॉपर (Karl Popper)**ने अपनी पुस्तक*'द ओपन सोसाइटी एंड इट्स एनिमीज़*में प्लेटो को 'मुक्त समाज का शत्रु' और उनके विचारों को सर्वाधिकारवादी (Totalitarian) करार दिया।

2. कला, साहित्य और संगीत पर कठोर सेंसरशिप (Censorship on Art & Literature)

- प्लेटो ने अपने आदर्श राज्य में कवियों, कलाकारों और काल्पनिक कहानियों पर प्रतिबंध लगाने की बात कही।
- उनका मानना था कि अनुचित साहित्य बालकों का चरित्र बिगाड़ता है। आलोचकों के अनुसार यह विचार अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता और मौलिक रचनात्मकता का हनन करता है।

3. लोकतांत्रिक मूल्यों की उपेक्षा एवं अजाततंत्र (Anti-Democratic / Elitist Nature)

- प्लेटो की उच्च शिक्षा योजना अत्यंत कठोर और केवल बौद्धिक रूप से प्रखर व्यक्तियों (दार्शनिक शासक) के लिए थी।
- उन्होंने समाज को उत्पादक, सैनिक और शासक वर्गों में बाँट दिया, जिससे एक प्रकार के 'कुलीनतंत्र' (Aristocracy) को बढ़ावा मिलता है और बहुसंख्यक आबादी (उत्पादक वर्ग) उच्च शिक्षा से वंचित रह जाती है।

4. अव्यावहारिक एवं अत्यधिक लंबी अवधि (Unrealistic & Overly Lengthy)

- 50 वर्ष की आयु तक चलने वाली शिक्षा योजना व्यावहारिक दृष्टि से अत्यंत कठिन और खर्चीली है।
- 35 वर्ष की पढ़ाई के बाद 15 वर्ष का व्यावहारिक प्रशिक्षण व्यावहारिक जीवन में लागू करना लगभग असंभव सा प्रतीत होता है।

नोट

5. व्यक्तिगत रुचियों और विभिन्नताओं की उपेक्षा (Neglect of Individual Differences)

- प्लेटो की शिक्षा योजना का अंतिम लक्ष्य 'राज्य की सेवा' है। इसमें व्यक्ति की अपनी व्यक्तिगत इच्छाओं, रुचियों और आकांक्षाओं को राज्य के हित के आगे गौण कर दिया गया है।

मूल्यांकन का निष्कर्ष (Conclusion of Evaluation)

दृष्टिकोण	मुख्य बिंदु
सकारात्मक योगदान	राज्य का दायित्व, स्त्री-शिक्षा, शारीरिक-मानसिक संतुलन, तर्क व खेल विधि, सार्वभौमिक शिक्षा।
प्रमुख सीमाएँ	अत्यधिक राज्य-नियंत्रण, कला पर प्रतिबंध, अलोकतांत्रिक/कुलीनतावादी स्वरूप, अत्यधिक लंबी अवधि।

संक्षेप में, प्लेटो की शिक्षा योजना में कुछ व्यावहारिक और लोकतांत्रिक कमियाँ अवश्य हैं, लेकिन एक सार्वभौमिक, राज्य-संचालित और चरित्र-निर्माणकारी शिक्षा का जो ढाँचा उन्होंने 2500 वर्ष पहले तैयार किया था, उसने संपूर्ण पाश्चात्य शिक्षा दर्शन की नींव रखी।

12.10 आधुनिक शिक्षा में प्लेटो का योगदान एवं प्रासंगिकता (Relevance of Plato's Thought in Modern Education)

ईसा पूर्व चौथी शताब्दी में प्रतिपादित होने के बावजूद, प्लेटो के शैक्षिक विचार 2500 वर्षों के पश्चात भी प्रासंगिक और विचारणीय हैं। आज की आधुनिक शिक्षा प्रणाली, जो मुख्य रूप से डिग्री, रोजगार और व्यावसायिक कुशलता पर केंद्रित हो गई है, उसे एक संतुलित, समावेशी और नैतिक दिशा देने में प्लेटो का दर्शन अत्यंत महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

आधुनिक शिक्षा के संदर्भ में प्लेटो के मुख्य योगदान और उनकी प्रासंगिकता को निम्नलिखित बिंदुओं के माध्यम से समझा जा सकता है:

1. शिक्षा राज्य का उत्तरदायित्व (Education as a State Responsibility)

नोट

- **प्लेटो का विचार:**प्लेटो ने सर्वप्रथम यह प्रतिपादित किया कि शिक्षा निजी हाथों में न होकर पूर्णतः राज्य के नियंत्रण और संरक्षण में होनी चाहिए।
- **आधुनिक प्रासंगिकता:**आज विश्व भर के लोक कल्याणकारी राज्यों में शिक्षा को नागरिक का मूलभूत अधिकार माना गया है। भारत में**शिक्षा का अधिकार अधिनियम (RTE Act, 2009)**और**राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 (NEP 2020)**का मूल आधार यही है कि सार्वभौमिक और गुणवत्तापूर्ण शिक्षा उपलब्ध कराना सरकार की प्राथमिकता है।

2. स्त्री-पुरुष के लिए समान शिक्षा (Gender Equality and Inclusion)

- **प्लेटो का विचार:**तत्कालीन रूढ़िवादी यूनानी समाज में प्लेटो ने स्त्रियों को पुरुषों के समान ही शिक्षा, खेलकूद और प्रशासनिक अवसर देने की पुरजोर वकालत की थी।
- **आधुनिक प्रासंगिकता:**आज का आधुनिक समाज लिंग समानता (Gender Equality) और महिला सशक्तिकरण पर बल देता है। प्लेटो का यह विचार आधुनिक 'समावेशी शिक्षा' (Inclusive Education) की नींव प्रस्तुत करता है।

3. सर्वांगीण एवं संतुलित शिक्षा (Harmonious and Holistic Development)

- **प्लेटो का विचार:**प्लेटो ने केवल बौद्धिक विकास को अधूरा माना। उन्होंने शरीर के लिए व्यायाम (Gymnastics) और मन व आत्मा की शुद्धि के लिए संगीत व कला (Music & Arts) के संतुलन को अनिवार्य माना।
- **आधुनिक प्रासंगिकता:**आधुनिक पाठ्यक्रम में खेल-कूद, योग, संगीत, और सह-पाठ्यचर्या गतिविधियों (Co-curricular activities) को जो स्थान दिया जा रहा है, वह प्लेटो के इसी सर्वांगीण विकास के सिद्धांत पर आधारित है।

4. बाल-केंद्रित एवं खेल विधि द्वारा शिक्षण (Play-Way Method in Early Childhood Education)

नोट

- **प्लेटो का विचार:**प्लेटो ने बाल्यावस्था में जबरन पढ़ाई थोपने या दंड देने का विरोध किया और बच्चों को खेल-कूद, कहानियों और गतिविधियों के माध्यम से सिखाने की सिफारिश की।
- **आधुनिक प्रासंगिकता:**आधुनिक युग में किंडरगार्टन (Kindergarten), मोंटेसरी प्रणाली, और प्रारम्भिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा (ECCE) का विचार पूरी तरह प्लेटो के इस मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण से मेल खाता है।

5. चरित्र निर्माण और मूल्य शिक्षा (Character Building & Value Education)

- **प्लेटो का विचार:**प्लेटो के अनुसार शिक्षा का मुख्य लक्ष्य केवल ज्ञान देना नहीं, बल्कि व्यक्ति में सत्य, संयम, साहस और न्याय जैसे नैतिक गुणों का विकास करना है।
- **आधुनिक प्रासंगिकता:**आज के डिजिटल युग में, जहाँ नैतिक मूल्यों का ह्रास हो रहा है, विद्यालयों में 'मूल्य आधारित शिक्षा' (Value-based Education) और 'नैतिकता' (Ethics) को पाठ्यक्रम में शामिल करने की आवश्यकता प्लेटो के विचारों की प्रासंगिकता को सिद्ध करती है।

6. तार्किक चिंतन एवं समस्या समाधान विधियाँ (Critical Thinking & Socratic Method)

- **प्लेटो का विचार:**प्लेटो ने संवाद विधि (Conversational Method) और द्वंद्वशास्त्र (Dialectics) के माध्यम से तर्क और विचार-मंथन पर बल दिया।
- **आधुनिक प्रासंगिकता:**आज की 21वीं सदी के कौशल (21st Century Skills) में**क्रिटिकल थिंकिंग (Critical Thinking)**, विश्लेषणात्मक क्षमता और समस्या समाधान (Problem Solving) को सबसे महत्त्वपूर्ण माना गया है, जो प्लेटो की प्रश्नोत्तर और संवाद शैली से ही प्रेरित हैं।

7. जीवनपर्यंत अधिगम का सिद्धांत (Lifelong Learning)

- **प्लेटो का विचार:**प्लेटो की शिक्षा योजना 50 वर्ष की आयु तक चलती है, जो यह दर्शाती है कि सीखने की प्रक्रिया जीवन में कभी समाप्त नहीं होती।

नोट

- **आधुनिक प्रासंगिकता:**आज के निरंतर बदलते तकनीकी युग में**'सतत शिक्षा' (Continuous Learning)**और**'री-स्किलिंग' (Re-skilling)**की अवधारणा अत्यंत लोकप्रिय है, जिसकी मूल प्रेरणा प्लेटो के दर्शन में मिलती है।

निष्कर्ष (Summary Table of Relevance)

प्लेटो का विचार	**आधुनिक शिक्षा में रूप/प्रयोग**
राज्य-नियंत्रित अनिवार्य शिक्षा	निःशुल्क एवं अनिवार्य शिक्षा का अधिकार (RTE), NEP 2020
स्त्री-पुरुष हेतु समान शिक्षा	बालिका शिक्षा, समावेशी शिक्षा एवं लिंग समानता
व्यायाम एवं संगीत का संतुलन	खेल-कूद (Physical Education) एवं कला-समेकित अधिगम (Art-Integrated Learning)
खेल-कूद द्वारा प्रारंभिक शिक्षा	मोंटेसरी, किंडरगार्टन एवं ECCE प्रणाली
संवाद एवं तर्क विधि	क्रिटिकल थिंकिंग, केस स्टडी एवं समस्या-समाधान विधियाँ

1. प्लेटो की प्रसिद्ध पुस्तक का क्या नाम है जिसमें उन्होंने शिक्षा और आदर्श राज्य का वर्णन किया है?

(A) दी रिपब्लिक (The Republic)

(B) एमील (Emile)

(C) डेमोक्रेसी एंड एजुकेशन

(D) दी लॉज

2. प्लेटो किस दार्शनिक के शिष्य थे?

(A) अरस्तू

(B) सुकरात (Socrates)

नोट

(C) कांट

(D) हेगेल

3. प्लेटो ने किस शिक्षण संस्थान की स्थापना की थी?

(A) दी एकेडेमी (The Academy)

(B) लीसियम

(C) किंडरगार्टन

(D) ऑक्सफोर्ड

4. प्लेटो के अनुसार शिक्षा का मुख्य उद्देश्य क्या था?

(A) आदर्श राज्य हेतु योग्य नागरिकों एवं शासकों (दार्शनिक राजा) का निर्माण

(B) केवल व्यापार सिखाना

(C) सैन्य बल बढ़ाना केवल

(D) कृषि विकास

5. प्लेटो किस दार्शनिक परंपरा के अग्रदूत माने जाते हैं?

(A) आदर्शवाद (Idealism)

(B) प्रकृतिवाद

(C) प्रयोजनवाद

(D) अस्तित्ववाद

12.11 सारांश (Summary)

- **दार्शनिक पृष्ठभूमि:**प्लेटो पाश्चात्य प्रत्ययवाद (Idealism) के जनक हैं। उनका मानना था कि भौतिक संसार परिवर्तनशील एवं नश्वर है, जबकि विचारों का संसार (World of Ideas) ही शाश्वत और अंतिम सत्य है।

नोट

- **शिक्षा का अर्थ:**प्लेटो के अनुसार शिक्षा बाहरी ज्ञान थोपना नहीं है, बल्कि आत्मा में पूर्व-विद्यमान सुप्त ज्ञान एवं गुणों को बाहर प्रकट करने और व्यक्ति की दृष्टि को अज्ञानता से सत्य की ओर मोड़ने की प्रक्रिया है।
- **राज्य-नियंत्रित एवं समान शिक्षा:**शिक्षा पूर्णतः राज्य के नियंत्रण में होनी चाहिए। प्लेटो ने पुरुषों और महिलाओं दोनों के लिए समान शिक्षा और समान अवसरों का समर्थन किया।
- **शिक्षा की संरचना:**
    - **प्राथमिक शिक्षा (6 से 20 वर्ष):**शरीर के लिए व्यायाम, मन के लिए संगीत तथा चरित्र निर्माण के लिए नैतिक कहानियों व सैनिक प्रशिक्षण पर बल।
    - **उच्च शिक्षा (20 से 50 वर्ष):**गणित, रेखागणित, ज्योतिष, द्वंद्वशास्त्र (Dialectics), दर्शन और 15 वर्षों के व्यावहारिक प्रशासनिक अनुभव के बाद**'दार्शनिक शासक' (Philosopher King)**का निर्माण।
- **शिक्षण विधियाँ:**संवाद/प्रश्नोत्तर विधि, द्वंद्ववाद, तर्क विधि, तथा प्राथमिक स्तर पर खेल व अनुकरण विधि का प्रयोग।
- **शिक्षक एवं शिक्षार्थी:**शिक्षक को दार्शनिक और मार्गदर्शक का स्थान प्राप्त है जो आत्मा को सत्य की ओर मोड़ता है; शिक्षार्थी अनुशासित होकर सत्य का अन्वेषक बनता है।
- **मूल्यांकन एवं प्रासंगिकता:**अत्यधिक राज्य-नियंत्रण और सेंसरशिप की सीमाओं के बावजूद, प्लेटो द्वारा दी गई सार्वभौमिक, राज्य-संचालित, मूल्य-आधारित और खेल-केंद्रित शिक्षा का सिद्धांत आधुनिक शिक्षा प्रणालियों (RTE, NEP 2020) की महत्वपूर्ण आधारशिला है।

12.12 पारिभाषिक शब्दावली (Glossary / Key Terms)

- **प्रत्ययवाद (Idealism):**वह दार्शनिक विचारधारा जो भौतिक जगत की तुलना में विचारों, आत्मा और अमूर्त सिद्धांतों को सर्वोच्च एवं अंतिम सत्य मानती है।

नोट

- **प्रत्यय / विचार (Idea / Form):**प्लेटो के अनुसार वस्तुओं का वास्तविक, अपरिवर्तनीय और शाश्वत स्वरूप जिसे केवल बुद्धि और तर्क द्वारा जाना जा सकता है।
- **दार्शनिक शासक (Philosopher King):**प्लेटो के आदर्श राज्य का सर्वोच्च शासक, जो उच्च शिक्षा, द्वंद्वशास्त्र और गहन व्यावहारिक प्रशिक्षण द्वारा निर्मित एक विवेकशील व निस्वार्थ ज्ञानी व्यक्ति होता है।
- **द्वंद्वशास्त्र (Dialectics):**तर्क-वितर्क, खंडन-मंडन और विचारों के टकराव के माध्यम से सर्वोच्च सत्य तक पहुँचने की बौद्धिक विधि।
- **प्रत्यय जगत (World of Ideas):**विचारों का वह अमूर्त संसार जो अमर, अपरिवर्तनीय और सत्य है (भौतिक जगत जिसकी केवल एक छाया मात्र है)।
- **सुकराती विधि (Socratic Method):**प्रश्नों और संवादों के माध्यम से छात्र के अंदर छिपे उत्तरों को बाहर निकालने और तर्कशक्ति विकसित करने की शिक्षण विधि।

12.13 बोध प्रश्नों के उत्तर

उत्तर: (A) दी रिपब्लिक (The Republic)

उत्तर: (B) सुकरात (Socrates)

उत्तर: (A) दी एकेडेमी (The Academy)

उत्तर: (A) आदर्श राज्य हेतु योग्य नागरिकों एवं शासकों (दार्शनिक राजा) का निर्माण

उत्तर: (A) आदर्शवाद (Idealism)

12.14 सुझावित अध्ययन सामग्री – मुक्त शैक्षिक संसाधन

1. eGyanKosh: Plato's Educational Thought (IGNOU)
2. Stanford Encyclopedia of Philosophy: Plato's Ethics and Politics in Education
3. Project Gutenberg: Plato's Republic (Educational Aspect)

नोट

4. Internet Encyclopedia of Philosophy: Plato
5. OER Commons: Classical Greek Educational Thought

12.15 संदर्भ ग्रन्थ

(क) प्राथमिक स्रोत (Primary Sources - प्लेटो की मूल एवं अनुवादित रचनाएँ)

1. प्लेटो (अनुवादक: बी. एल. अत्रेय) – *द रिपब्लिक (The Republic)*, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।
2. Plato (Translated by Benjamin Jowett) – *The Republic*, Oxford University Press, London.
3. Plato (Translated by Trevor J. Saunders) – *The Laws*, Penguin Classics, London.

(ख) द्वितीयक स्रोत: पाश्चात्य दर्शन एवं शिक्षा दर्शन (Secondary Sources)

1. अत्रेय, बी. एल. – *भारतीय एवं पाश्चात्य दार्शनिक चिंतन*, केदारनाथ रामनाथ प्रकाशन, मेरठ।
2. चौबे, एस. पी. एवं चौबे, अखिलेश – *शैक्षिक दर्शनशास्त्र एवं समाजशास्त्र*, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा।
3. गुप्ता, आर. सी. – *पाश्चात्य राजनीतिक विचारों का इतिहास (सुकरात से कार्ल मार्क्स तक)*, लक्ष्मी नारायण अग्रवाल प्रकाशन, आगरा।
4. शर्मा, रामनाथ – *पाश्चात्य दर्शन के प्रमुख विचारक*, केदारनाथ रामनाथ प्रकाशन, मेरठ।
5. Pandey, R. S. – *Philosophical and Sociological Perspectives of Education*, Vinod Pustak Mandir, Agra.
6. Popper, Karl R. – *The Open Society and Its Enemies (Volume 1: The Spell of Plato)*, Routledge & Kegan Paul, London.

नोट

7. Rusk, Robert R. – *The Doctrines of the Great Educators*, St. Martin's Press, New York.

12.16 अभ्यास एवं मूल्यांकन (Exercises & Self-Assessment)

(क) वस्तुनिष्ठ प्रश्न (Multiple Choice Questions)

1. प्लेटो की प्रसिद्ध पुस्तक जिसमें उनके शैक्षिक एवं राजनीतिक विचार वर्णित हैं, कौन-सी है?

(अ) एथिक्स

(ब) द रिपब्लिक

(स) पॉलिटिक्स

(द) दास कैपिटल

2. प्लेटो के अनुसार उच्च शिक्षा में द्वंद्वशास्त्र (Dialectics) का अध्ययन किस आयु वर्ग में किया जाता है?

(अ) 6 से 13 वर्ष

(ब) 13 से 20 वर्ष

(स) 20 से 30 वर्ष

(द) 30 से 35 वर्ष

3. "द रिपब्लिक शिक्षा पर लिखा गया अब तक का सबसे श्रेष्ठ ग्रंथ है"— यह कथन किसका है?

(अ) अरस्तू

(ब) सुकरात

(स) रूसो

(द) जॉन डीवी

नोट

4. प्लेटो ने शरीर के विकास के लिए किसे अनिवार्य माना है?

(अ) संगीत

(ब) व्यायाम

(स) गणित

(द) दर्शन

(ख) लघु उत्तरीय प्रश्न (Short Answer Questions)

1. प्लेटो के 'प्रत्ययवाद' (Idealism) के सिद्धांत को संक्षेप में स्पष्ट कीजिए।
2. प्लेटो द्वारा प्राथमिक स्तर पर सुझाई गई शिक्षण विधियों का उल्लेख कीजिए।
3. प्लेटो के अनुसार शिक्षा में महिलाओं के स्थान की व्याख्या कीजिए।
4. 'दार्शनिक शासक' (Philosopher King) से आप क्या समझते हैं?
5. प्लेटो के अनुसार शिक्षा के मुख्य उद्देश्य क्या हैं?

(ग) दीर्घ उत्तरीय प्रश्न (Long Answer / Essay Type Questions)

1. प्लेटो की शिक्षा योजना के विभिन्न चरणों (प्राथमिक से लेकर उच्च शिक्षा तक) का विस्तृत वर्णन कीजिए तथा इसकी प्रमुख विशेषताओं को स्पष्ट कीजिए।
2. "प्लेटो के शैक्षिक विचार आधुनिक शिक्षा प्रणाली का आधार प्रस्तुत करते हैं।" इस कथन के आलोक में प्लेटो के योगदान एवं प्रासंगिकता की विस्तृत विवेचना कीजिए।
3. प्लेटो के शैक्षिक विचारों का आलोचनात्मक मूल्यांकन कीजिए। उनके दर्शन के सकारात्मक पहलुओं और सीमाओं पर प्रकाश डालिए।

(घ) उत्तर माला (Answers to Objective Questions)

1. **(ब)**द रिपब्लिक
2. **(द)** 30 से 35 वर्ष

3. **(स)**रूसो

4. **(ब)**व्यायाम

नोट

नोट

इकाई 13
पाश्चात्य विचारक: फ्रेडरिक फ्रोबेल

इकाई संरचना (Unit Structure)

13.1 प्रस्तावना (Introduction)
13.2 इकाई के उद्देश्य (Objectives)
13.3 फ्रोबेल का दार्शनिक एवं शैक्षिक चिंतन
13.3.1 एकता का सिद्धांत (Law of Unity / Absolute Unity)
13.3.2 विकास का सिद्धांत (Theory of Organic Development)
13.3.3 आत्म-क्रियाशीलता का सिद्धांत (Principle of Self-Activity)
13.4 किंडरगार्टन प्रणाली (Kindergarten System)
13.4.1 किंडरगार्टन की संकल्पना "बच्चों का उद्यान" (Garden of Children) का दार्शनिक अर्थ प्रसिद्ध रूपक का विश्लेषण
13.4.2 खेल द्वारा शिक्षा का सिद्धांत (Play-Way Method)
13.4.3 फ्रोबेल के 'उपहार' (Gifts)
13.4.4 फ्रोबेल के 'व्यवसाय' (Occupations)
13.4.5 मातृ-गीत एवं क्रियात्मक खेल (Mother's Songs and Games)
13.5 पाठ्यक्रम, शिक्षण पद्धतियाँ एवं अनुशासन की अवधारणा
13.5.1 पाठ्यक्रम का स्वरूप प्रकृति अध्ययन, पर्यावरण, गणितीय आकृतियाँ, भाषा और हस्तकला
13.5.2 शिक्षण पद्धतियाँ स्वतंत्रता, स्व-अनुभव, और सामूहिक सहयोगात्मक गतिविधियाँ
13.5.3 स्वतंत्रता एवं अनुशासन आंतरिक अनुशासन (Self-Discipline) की अवधारणा प्रेम, सहानुभूति एवं बाह्य नियंत्रण-मुक्त वातावरण की आवश्यकता
13.6 आधुनिक शिक्षा में योगदान एवं आलोचनात्मक विश्लेषण
13.6.1 आधुनिक पूर्व-प्राथमिक शिक्षा पर प्रभाव
13.6.2 फ्रोबेल के विचारों की सीमाएँ एवं आलोचना
13.7 सारांश (Summary)
13.8 मुख्य शब्द / पारिभाषिक शब्दावली (Key Words)
13.9 बोध प्रश्नों के उत्तर

13.10 सुझावित अध्ययन सामग्री – मुक्त शैक्षिक संसाधन
13.11 संदर्भ ग्रन्थ
13.12 अभ्यास प्रश्न (Exercise)

नोट

13.1 प्रस्तावना (Introduction)

13.1.1 फ्रेडरिक फ्रोबेल का संक्षिप्त जीवन परिचय

फ्रेडरिक विल्हेम ऑगस्ट फ्रोबेल (Friedrich Wilhelm August Froebel: 1782–1852) एक प्रसिद्ध जर्मन शिक्षाशास्त्री और दार्शनिक थे। उन्हें आधुनिक पूर्व-प्राथमिक शिक्षा (Pre-Primary Education) का जनक माना जाता है। फ्रोबेल का बचपन काफी कठिनाइयों और एकाकीपन में बीता, जिसने उन्हें प्रकृति और ईश्वर के प्रति गहराई से आकर्षित किया। उन्होंने अपनी उच्च शिक्षा जेना विश्वविद्यालय (University of Jena) से प्राप्त की, जहाँ उन्होंने दर्शन, गणित, वनस्पति विज्ञान और खनिज विज्ञान का गहन अध्ययन किया। प्रकृति और विज्ञान के इस मिश्रण ने उनके बाद के शैक्षिक सिद्धांतों की नींव रखी।

13.1.2 19वीं शताब्दी का यूरोपीय शैक्षिक परिदृश्य और फ्रोबेल का आगमन

19वीं सदी की शुरुआत में यूरोप में औद्योगिक क्रांति का प्रभाव तेजी से बढ़ रहा था। उस समय की पारंपरिक शिक्षा प्रणाली अत्यधिक कठोर, औपचारिक और पुस्तक-केन्द्रित थी। बालकों को "छोटे वयस्क" (Miniature Adults) की तरह देखा जाता था और उन पर सख्त अनुशासन थोपा जाता था। फ्रोबेल ने इस यांत्रिक शिक्षण विधि का पुरजोर विरोध किया। उनका मानना था कि बाल्यावस्था जीवन का एक स्वतंत्र और महत्वपूर्ण चरण है, जिसे स्वतंत्रता, खेल और रचनात्मकता के माध्यम से विकसित होने का अवसर मिलना चाहिए।

13.1.3 पेस्टालॉजी (Pestalozzi) के विचारों का प्रभाव

फ्रोबेल के दार्शनिक चिंतन पर स्विट्जरलैंड के महान शिक्षाविद् जोहान हेनरिक पेस्टालॉजी का गहरा प्रभाव पड़ा। फ्रोबेल ने पेस्टालॉजी के संस्थान में रहकर उनकी शिक्षण पद्धतियों का प्रत्यक्ष अध्ययन किया था। पेस्टालॉजी के इस विचार—"शिक्षा बालक की स्वाभाविक, प्रगतिशील और सामंजस्यपूर्ण विकास प्रक्रिया है"—ने फ्रोबेल को बहुत

नोट

प्रेरित किया। हालाँकि, फ्रोबेल ने पेस्टालॉजी के विचारों को और आगे बढ़ाते हुए उसमें आध्यात्मिक दर्शन, खेल-विधि और विशेष शिक्षण सामग्रियों (उपहारों) का समावेश किया।

13.1.4 प्रारंभिक बाल्यावस्था शिक्षा (ECCE) का औचित्य एवं आवश्यकता

फ्रोबेल पहले ऐसे विचारक थे जिन्होंने स्पष्ट रूप से स्वीकार किया कि 3 से 6 वर्ष की आयु के बीच बालक का शारीरिक, मानसिक और संवेगात्मक विकास सबसे तीव्र गति से होता है। इस अवस्था में बालक को औपचारिक पुस्तकीय ज्ञान के स्थान पर उसकी इंद्रियों के विकास (Sensory Development) और रचनात्मक अभिव्यक्तियों का अवसर दिया जाना चाहिए। इसी सोच ने विश्व प्रसिद्ध**'किंडरगार्टन' (Kindergarten)**की नींव रखी, जिसने पूरी दुनिया में प्रारंभिक बाल्यावस्था शिक्षा की दिशा बदल दी।

13.2 इकाई के उद्देश्य (Objectives)

इस इकाई का अध्ययन करने के पश्चात आप:

- **फ्रेडरिक फ्रोबेल**के जीवन वृत्त, उनके प्राथमिक अनुभवों और उनके दार्शनिक चिंतन की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि को समझ सकेंगे।
- फ्रोबेल द्वारा प्रतिपादित**'एकता के सिद्धांत' (Law of Unity)**तथा उनके आध्यात्मिक एवं वैज्ञानिक दृष्टिकोण का विशलेषण कर सकेंगे।
- बाल-केन्द्रित शिक्षा के अंतर्गत**किंडरगार्टन प्रणाली (Kindergarten System)**की मूल अवधारणा और इसकी शिक्षण कार्यप्रणाली की व्याख्या कर सकेंगे।
- शिक्षण प्रक्रिया में फ्रोबेल द्वारा विकसित**'उपहारों' (Gifts)**और**'व्यवसायों' (Occupations)**के व्यावहारिक एवं शैक्षणिक महत्व को रेखांकित कर सकेंगे।
- आधुनिक**प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल एवं शिक्षा (ECCE)**तथा 'राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020' के संदर्भ में फ्रोबेल के योगदान का मूल्यांकन कर सकेंगे।

13.3 फ्रोबेल का दार्शनिक एवं शैक्षिक चिंतन

नोट

फ्रेडरिक फ्रोबेल का शैक्षिक चिंतन मूलतः**आदर्शवाद (Idealism)**, **प्रकृतिवाद (Naturalism)**और**व्यावहारिक मनोविज्ञान**का एक अद्‌भुत समन्वय है। उन्होंने शिक्षा को केवल बौद्धिक ज्ञान प्राप्त करने का साधन नहीं माना, बल्कि इसे बाल-विकास की एक आंतरिक और सर्वव्यापी प्रक्रिया के रूप में स्थापित किया। उनके संपूर्ण दार्शनिक चिंतन को मुख्य रूप से निम्नलिखित तीन मूलभूत सिद्धांतों के अंतर्गत समझा जा सकता है:

13.3.1 एकता का सिद्धांत (Law of Unity / Absolute Unity)

'एकता का सिद्धांत' फ्रोबेल के दर्शन का सबसे केंद्रीय और मूलभूत स्तंभ है। फ्रोबेल एक रहस्यवादी (Mystic) और ईश्वरवादी दार्शनिक थे।

- **ईश्वर, प्रकृति और मानव का अंतर्संबंध:**फ्रोबेल के अनुसार, इस ब्रह्मांड की प्रत्येक वस्तु (चाहे वह चेतन हो या अचेतन) एक ही परम चेतना यानी ईश्वर से उत्पन्न हुई है। ईश्वर ही इस सृष्टि की समस्त गतिविधियों का मूल केंद्र है। प्रकृति, मानव और ईश्वर—ये तीनों अलग-अलग नहीं हैं, बल्कि एक ही सार्वभौमिक एकता के विभिन्न रूप हैं।
- **शिक्षा में आध्यात्मिक और भौतिक पक्षों का एकीकरण:**फ्रोबेल का मानना था कि शिक्षा का मुख्य उद्देश्य बालक को इस आंतरिक और बाह्य एकता की अनुभूति कराना है। शिक्षा को बालक के भौतिक (शरीर), मानसिक (बुद्धि) और आध्यात्मिक (आत्मा) पक्षों को अलग-अलग करके नहीं देखना चाहिए, बल्कि इन सभी का एक एकीकृत रूप में विकास करना चाहिए।
- **विविधता में एकता (Unity in Diversity):**प्रकृति में दिखाई देने वाली विविधता के पीछे एक ही नियम कार्य करता है। जब बालक प्रकृति के संपर्क में आता है, तो वह विभिन्न आकारों, रंगों और वस्तुओं के माध्यम से इस सार्वभौमिक एकता को समझने में सक्षम होता है।

13.3.2 विकास का सिद्धांत (Theory of Organic Development)

फ्रोबेल ने बाल-विकास की प्रक्रिया की तुलना एक वनस्पति या पौधे के जैविक विकास से की है।

नोट

- **आंतरिक शक्तियों का बाह्य प्रकटन (Unfoldment from Within):**जैसे एक छोटे से बीज के भीतर एक पूरा विशाल वृक्ष छिपकर (सुप्त अवस्था में) विद्यमान रहता है और अनुकूल वातावरण मिलने पर वह स्वयं विकसित होकर बाहर आता है; ठीक उसी प्रकार बालक के भीतर भी उसकी समस्त क्षमताएं और शक्तियां जन्मजात रूप से मौजूद होती हैं। शिक्षा बाहर से कुछ थोपने की प्रक्रिया नहीं है, बल्कि बालक की इन आंतरिक शक्तियों को बाहर प्रकट होने का अवसर प्रदान करना है।

- **निरंतर एवं क्रमिक विकास (Continuous and Gradual Process):**विकास कोई एकाएक होने वाली घटना नहीं है। यह एक निरंतर, क्रमिक और स्वाभाविक प्रक्रिया है। बालक के जीवन का प्रत्येक चरण (शैशवावस्था, बाल्यावस्था, किशोरावस्था) अपने आप में पूर्ण और महत्वपूर्ण है। यदि प्रारंभिक चरण में विकास सही ढंग से नहीं होता, तो उसका प्रभाव आगे के चरणों पर भी पड़ता है।

- **सामंजस्यपूर्ण विकास (Harmonious Development):**विकास की यह प्रक्रिया बालक के सभी पहलुओं—शारीरिक, संवेगात्मक, नैतिक और बौद्धिक—में एक संतुलित और सामंजस्यपूर्ण रूप से होनी चाहिए।

13.3.3 आत्म-क्रियाशीलता का सिद्धांत (Principle of Self-Activity)

फ्रोबेल का मानना था कि सच्चा अधिगम (Learning) केवल और केवल बालक की अपनी सक्रियता से ही संभव है।

- **स्व-प्रेरणा और आंतरिक इच्छा:**जब बालक अपनी इच्छा, रुचि और स्व-प्रेरणा से कोई कार्य करता है, तो उसे 'आत्म-क्रियाशीलता' कहते हैं। शिक्षक या अभिभावक द्वारा जबरन कराया गया कार्य केवल एक यांत्रिक अभ्यास बनकर रह जाता है, उससे वास्तविक अधिगम नहीं होता।

- **करके सीखना (Learning by Doing):**फ्रोबेल ने निष्क्रिय रूप से सुनने या रटने की शिक्षण प्रणालियों का कड़ा विरोध किया। उन्होंने कहा कि बालक

नोट

अपनी इंद्रियों का प्रयोग करके, वस्तुओं को छूकर, निर्माण करके और स्वयं अन्वेषण (Exploration) करके सबसे बेहतर सीखता है।

- **रचनात्मकता और अभिव्यक्ति (Creativity and Expression):**आत्म-क्रियाशीलता बालक की रचनात्मक ऊर्जा को बाहर लाती है। जब बालक चित्र बनाता है, मिट्टी के खिलौने गढ़ता है, या ब्लॉक (Blocks) से संरचनाएं बनाता है, तो वह अपनी आंतरिक भावनाओं और विचारों को मूर्त रूप (External Realization) दे रहा होता है। यह प्रक्रिया बालक के संज्ञानात्मक और संवेगात्मक विकास के लिए अत्यंत अनिवार्य है।

13.4 किंडरगार्टन प्रणाली (Kindergarten System)

फ्रेडरिक फ्रोबेल का सबसे स्थाई और क्रांतिकारी योगदान**किंडरगार्टन प्रणाली**का विकास है। 1837 में जर्मनी के बैड ब्लैंकेनबर्ग (Bad Blankenburg) में स्थापित इस संस्था को फ्रोबेल ने प्रारंभ में "अंगूठे और हाथ का खेल संस्थान" नाम दिया था, जिसे 1840 में बदलकर**'किंडरगार्टन' (Kindergarten)**कर दिया गया। यह प्रणाली पूर्व-प्राथमिक शिक्षा की दुनिया में एक नए युग की शुरुआत साबित हुई।

13.4.1 किंडरगार्टन की मूल अवधारणा एवं रूपक

'किंडरगार्टन' एक जर्मन शब्द है, जिसका शाब्दिक अर्थ है—**"बच्चों का उद्यान" (Garden of Children)**। फ्रोबेल ने इस प्रणाली को समझाने के लिए एक सुंदर और अर्थपूर्ण रूपक (Metaphor) प्रस्तुत किया:

- **विद्यालय = उद्यान (Garden):**विद्यालय एक ऐसा सुरक्षित, तनावमुक्त और प्राकृतिक वातावरण है जहाँ बालकों का सर्वांगीण विकास होता है।
- **बालक = कोमल पौधा (Plant):**बालक एक पौधा है जिसकी विकास की क्षमताएँ और विशेषताएँ उसके भीतर पहले से विद्यमान हैं।
- **शिक्षक = माली (Gardener):**शिक्षक की भूमिका किसी शासक या प्रशासक की नहीं, बल्कि एक माली जैसी है। माली पौधे को स्वयं विकसित नहीं करता, बल्कि वह केवल उसे खाद, पानी, धूप और उपयुक्त वातावरण प्रदान करता है ताकि पौधा अपनी स्वाभाविक गति से पनप सके।

नोट

फ्रोबेल के अनुसार, किंडरगार्टन का मुख्य उद्देश्य बालक पर बाहर से कोई ज्ञान थोपना नहीं, बल्कि उसके स्वाभाविक विकास में आने वाली बाधाओं को दूर करना है।

13.4.2 खेल-खेल में शिक्षा का सिद्धांत (Play-Way Method)

किंडरगार्टन प्रणाली की आत्मा**'खेल' (Play)**में निहित है। फ्रोबेल पहले ऐसे शिक्षाशास्त्री थे जिन्होंने बाल्यावस्था में खेल के मनोवैज्ञानिक और शैक्षणिक महत्व को वैज्ञानिक आधार प्रदान किया।

- **बालक का कार्य (Child's Work):**फ्रोबेल ने घोषणा की कि *"खेल बाल्यावस्था में विकास का उच्चतम रूप है।"*वयस्क के लिए जो स्थान 'काम' का है, बालक के लिए वही स्थान 'खेल' का है।
- **स्वतःस्फूर्त अभिव्यक्ति:**खेल के माध्यम से बालक अपनी भावनाओं, इच्छाओं, आनंद और तनाव को स्वाभाविक रूप से व्यक्त करता है।
- **सर्वांगीण विकास:**खेल-खेल में शिक्षण से बालक का शारीरिक कौशल (स्थूल और सूक्ष्म गतिज क्षमताएँ), मानसिक एकाग्रता, सामाजिक गुण (सहयोग, साझा करना, नियमों का पालन) और संवेगात्मक संतुलन एक साथ विकसित होते हैं।

13.4.3 फ्रोबेल के 'उपहार' (Gifts / Gaben)

बालक की आत्म-क्रियाशीलता और प्रयोगात्मक अधिगम को दिशा देने के लिए फ्रोबेल ने विशेष प्रकार की शिक्षण सामग्रियों का निर्माण किया, जिन्हें**'उपहार' (Gifts)**कहा जाता है। ये उपहार बालक की आयु और विकास के चरण के अनुसार क्रमबद्ध (Systematic Sequence) रूप से दिए जाते हैं:
संकल्पना:उपहार वे भौतिक वस्तुएँ हैं जिन्हें बालक को खेलने के लिए दिया जाता है। ये वस्तुएँ बालक को आकार, रूप, संख्या, भार और ज्यामितीय संरचनाओं का बोध कराती हैं।

- **प्रमुख उपहारों का क्रम:**

नोट

1. **प्रथम उपहार (छह रंगीन ऊनी गेंदें):**इसमें प्राथमिक और द्वितीयक रंगों की छह नरम गेंदें होती हैं। यह बालक को रंग, गति, दिशा और स्पर्श का ज्ञान देती हैं।
2. **द्वितीय उपहार (लकड़ी का गोला, घन और बेलन):**यह बालक को आकृतियों के अंतर को समझाता है। गोला (गतिशीलता), घन (स्थिरता) और बेलन (इन दोनों के बीच का संयोजन) का प्रतीक है।
3. **तृतीय से छठवां उपहार (विभाजित लकड़ी के घन/ब्लॉक्स):**एक बड़े घन को छोटे-छोटे टुकड़ों में विभाजित करके दिया जाता है। इनसे बालक निर्माण (Construction), अंश और पूर्ण (Part and Whole) के संबंध तथा प्रारंभिक गणितीय अवधारणाओं को सीखता है।

13.4.4 फ्रोबेल के 'व्यवसाय' (Occupations / Beschäftigungen)

उपहारों के साथ-साथ फ्रोबेल ने**'व्यवसाय' (Occupations)**की अवधारणा भी दी। इन दोनों के मध्य अंतर को समझना अत्यंत आवश्यक है:

- **उपहार बनाम व्यवसाय:** 'उपहार' से खेलते समय वस्तु का मूल रूप परिवर्तित नहीं होता (जैसे ब्लॉक्स जोड़ना और फिर खोल देना)। जबकि 'व्यवसाय' में प्रयुक्त सामग्री का रूप स्थायी रूप से बदल जाता है और उससे नई वस्तु का निर्माण होता है।
- **गतिविधियों के प्रकार:**
    - मिट्टी के खिलौने बनाना (Clay Modeling)
    - कागज़ मोड़ना (Origami) और काटना
    - गत्ते या कागज़ की बुनाई और सिलाई
    - चित्रकारी और रंग भरना

नोट

- **महत्व:**व्यवसाय बालकों में सूक्ष्म गत्यात्मक कौशलों (Fine Motor Skills), हाथ और आँख के समन्वय (Hand-Eye Coordination) तथा रचनात्मक अभिव्यक्ति को विकसित करते हैं।

13.4.5 मातृ-गीत एवं क्रियात्मक खेल (Mother's Songs and Nursery Rhymes)

किंडरगार्टन प्रणाली का एक अन्य मुख्य अंग**'मातृ-गीत' (Mother Play and Nursery Songs)**का प्रयोग है। फ्रोबेल ने 50 से अधिक ऐसे गीतों और कविताओं का संकलन एवं निर्माण किया जो अभिनय और शारीरिक क्रियाओं के साथ गाए जाते हैं।

- **भाषा एवं संगीत विकास:**संगीतात्मक वातावरण में बालक स्वाभाविक रूप से भाषा की लय, शब्दावली और उच्चारण सीखता है।
- **सामाजिकीकरण:**समूह में सामूहिक गीत गाने और गोल घेरे में नृत्य (Circle Games) करने से बालकों में सहकारिता, सामूहिकता और सामाजिक चेतना की भावना उत्पन्न होती है।

13.5 पाठ्यक्रम, शिक्षण पद्धतियाँ एवं अनुशासन की अवधारणा

किंडरगार्टन प्रणाली की सैद्धांतिक नींव के पश्चात फ्रेडरिक फ्रोबेल ने इसके व्यावहारिक कार्यान्वयन के लिए एक विशिष्ट पाठ्यक्रम, शिक्षण पद्धतियों और अनुशासन के नवीन दृष्टिकोण को प्रतिपादित किया। उन्होंने पारंपरिक शिक्षण व्यवस्था के कठोर तथा यांत्रिक स्वरूप को पूरी तरह खारिज करते हुए एक ऐसी प्रणाली विकसित की, जो बाल-केन्द्रित और स्वतंत्रता पर आधारित थी।

13.5.1 फ्रोबेल के अनुसार पाठ्यक्रम का स्वरूप

फ्रोबेल का मानना था कि पाठ्यक्रम को विभिन्न विषयों की पृथक-पृथक सीमाओं में बांधने के स्थान पर एक एकीकृत (Integrated) रूप में प्रस्तुत किया जाना चाहिए। पाठ्यक्रम का मूल उद्देश्य बालक के आंतरिक विकास को उसके बाह्य वातावरण से जोड़ना है।

- **प्रकृति अध्ययन एवं पर्यावरण ज्ञान:**फ्रोबेल के पाठ्यक्रम में प्रकृति अध्ययन को सर्वोच्च स्थान दिया गया। बालकों को पौधों की देखभाल करने, बीज बोने,

नोट

और छोटे-छोटे जीवों का अवलोकन करने का अवसर दिया जाता था। इससे उनमें पर्यावरण के प्रति संवेदनशीलता और ईश्वर की उपस्थिति का अहसास विकसित होता था।

- **गणित एवं ज्यामितीय ज्ञान:**फ्रोबेल ने गणित को एक शुष्क विषय के रूप में नहीं, बल्कि आकारों, आकृतियों और संबंधों को समझने के साधन के रूप में देखा। 'उपहारों' (Gifts) के माध्यम से बालकों को गिनती, जोड़-घटाव, और ज्यामितीय आकृतियों (जैसे गोला, घन, आयत) का व्यावहारिक ज्ञान दिया जाता था।

- **भाषा, कला एवं संगीत:**भाषा विकास के लिए मातृ-गीतों, कहानियों और संवादात्मक वार्तालाप को शामिल किया गया। कला, चित्रकारी, मिट्टी के कार्य (Clay Work) और संगीत को अभिव्यक्ति के प्रमुख माध्यम के रूप में स्थान दिया गया।

- **हस्तकौशल (Manual Crafts):** 'व्यवसाय' (Occupations) के माध्यम से कागज़ मोड़ना (Origami), बुनाई, सिलाई और कटिंग जैसी गतिविधियों को पाठ्यक्रम का अभिन्न हिस्सा बनाया गया ताकि बालकों में गत्यात्मक कौशलों का संवर्धन हो सके।

13.5.2 शिक्षण पद्धतियाँ

फ्रोबेल की शिक्षण पद्धतियाँ बाल-विकास के प्राकृतिक नियमों पर आधारित हैं। उन्होंने निष्क्रिय रटंत प्रणाली के विपरीत निम्नलिखित सिद्धांतों पर आधारित शिक्षण पद्धतियों को अपनाया:

- **आत्म-क्रियाशीलता एवं प्रयोगात्मक अधिगम (Self-Activity & Experiential Learning):**बालक को केवल निर्देश नहीं दिए जाते, बल्कि उसे स्वयं वस्तुओं के साथ प्रयोग करने और सीखने की पूर्ण स्वतंत्रता दी जाती है। बालक करके और अनुभव प्राप्त करके सीखता है।

- **स्वतंत्रता एवं स्व-अनुभव (Freedom and Self-Experience):**फ्रोबेल का मानना था कि अधिगम तभी प्रभावी होता है जब बालक अपनी रुचि और गति

नोट

के अनुसार कार्य करता है। शिक्षक का कार्य केवल मार्गदर्शन करना और उपयुक्त वातावरण तैयार करना होता है।

- **सामूहिक एवं सहयोगात्मक गतिविधियाँ (Cooperative Learning):**किंडरगार्टन में गतिविधियाँ व्यक्तिगत के साथ-साथ समूह में आयोजित की जाती हैं। गोल घेरे में बैठकर खेले जाने वाले खेल (Circle Games) और सामूहिक गीत बालकों को एक-दूसरे के साथ सहयोग करना, प्रतीक्षा करना और सामाजिक दायित्व निभाना सिखाते हैं।

- **इंद्रिय प्रशिक्षण (Sensory Training):**फ्रोबेल ने पेस्टालॉजी से प्रेरणा लेते हुए बालक की पाँचों ज्ञानेंद्रियों को प्रशिक्षित करने पर बल दिया। स्पर्श, दृष्टि, और श्रवण माध्यमों से सीखने की प्रक्रिया को प्रभावी बनाया जाता है।

13.5.3 स्वतंत्रता एवं अनुशासन की अवधारणा

अनुशासन के संदर्भ में फ्रोबेल का दृष्टिकोण अपने समय से बहुत आगे था। उन्होंने 19वीं सदी में प्रचलित शारीरिक दंड और सख्त बाह्य नियंत्रण का पूरी तरह खंडन किया।

- **आंतरिक अनुशासन (Self-Discipline / Inner Discipline):**फ्रोबेल के अनुसार सच्चा अनुशासन बाहर से थोपा नहीं जा सकता, बल्कि वह बालक के भीतर से स्वतः उत्पन्न होना चाहिए। जब बालक अपनी पसंद की गतिविधि या खेल में पूरी तरह लीन होता है, तो वह आत्म-नियंत्रण और एकाग्रता सीखता है। यही 'आंतरिक अनुशासन' है।

- **प्रेम और सहानुभूति पर आधारित वातावरण:**शिक्षक और बालक का संबंध भय या अधिकार का नहीं, बल्कि प्रेम, विश्वास और सहानुभूति का होना चाहिए। यदि वातावरण भयमुक्त होगा, तो बालक में अनुशासनहीनता उत्पन्न ही नहीं होगी।

- **स्वतंत्रता और अनुशासन का संतुलन:**फ्रोबेल के अनुसार स्वतंत्रता का अर्थ उच्छृंखलता या मनमानी करना नहीं है। बालक को दूसरों के अधिकारों का सम्मान करते हुए स्व-नियंत्रित स्वतंत्रता प्रदान की जाती है। समूह में खेलते समय

नोट

बालक स्वयं नियमों का पालन करना सीखता है, जो सामाजिक अनुशासन की नीव रखता है।

13.6 आधुनिक शिक्षा में फ्रोबेल का योगदान एवं आलोचनात्मक विश्लेषण

फ्रेडरिक फ्रोबेल के शैक्षिक विचार केवल 19वीं सदी के यूरोपीय समाज तक सीमित नहीं रहे, बल्कि उन्होंने विश्वभर की आधुनिक पूर्व-प्राथमिक और प्राथमिक शिक्षा प्रणालियों को बुनियादी रूप से रूपांतरित किया। उन्होंने शिक्षाशास्त्र को बाल-केन्द्रित और क्रिया-आधारित दिशा प्रदान की। हालाँकि, उनके सिद्धांतों के कुछ पहलुओं की उत्तरवर्ती शिक्षाशास्त्रियों द्वारा आलोचना भी की गई है।

13.6.1 आधुनिक पूर्व-प्राथमिक शिक्षा पर प्रभाव

फ्रोबेल को**आधुनिक पूर्व-प्राथमिक शिक्षा (Pre-Primary Education) का जनक**माना जाता है। आज विश्वभर में प्रचलित किंडरगार्टन, प्ले-स्कूल (Play Schools), और नर्सरी शिक्षण पद्धतियों में उनके विचारों की स्पष्ट छाप देखी जा सकती है:

- **मोंटेसरी और अन्य बाल-केन्द्रित पद्धतियों की नींव:**मारिया मोंटेसरी (Maria Montessori), जॉन डीवी (John Dewey), और ओविड डेक्रोली (Ovide Decroly) जैसे महान शिक्षाविदों ने फ्रोबेल के 'खेल-विधि' और 'इंद्रिय-प्रशिक्षण' से व्यापक प्रेरणा ली। मोंटेसरी सामग्री और फ्रोबेल के 'उपहारों' (Gifts) में दार्शनिक समानता पाई जाती है।
- **खेल-आधारित अधिगम (Play-Based Learning):**आधुनिक प्राथमिक शिक्षा में यह सर्वमान्य सिद्धांत बन चुका है कि बालकों के संज्ञानात्मक और गत्यात्मक कौशलों का विकास खेल के माध्यम से सबसे प्रभावी ढंग से होता है।
- **शिक्षक की बदलती भूमिका:**फ्रोबेल ने शिक्षक को एक कठोर प्रशासक के स्थान पर एक 'सुविधाप्रदाता' (Facilitator) और 'मार्गदर्शक' (माली) के रूप में स्थापित किया, जो आधुनिक संरचनावादी (Constructivist) शिक्षाशास्त्र का मूल आधार है।

13.6.2 राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 (NEP 2020) के ECCE ढांचे से जुड़ाव

नोट

भारतीय संदर्भ में, **राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020**के अंतर्गत प्रस्तुत5 + 3 + 3 + 4के नए शैक्षणिक ढाँचे में फ्रोबेल के सिद्धांतों का सीधा अनुप्रयोग देखा जा सकता है:

- **फाउंडेशनल स्टेज (3से8वर्ष):** NEP 2020 की प्रथम पाँच वर्षों की 'फाउंडेशनल स्टेज' को पूरी तरह से खेल-आधारित, गतिविधि-आधारित, और खोज-आधारित अधिगम (Play, Activity, and Discovery-Based Learning) पर केंद्रित किया गया है, जो फ्रोबेल के किंडरगार्टन मॉडल का ही आधुनिक स्वरूप है।
- **प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा (ECCE):**नीति में 3 से 6 वर्ष के बच्चों के लिए 'ईसीसीई' को अनिवार्य माना गया है, जिसमें फ्रोबेल द्वारा प्रस्तावित कला, संगीत, चित्रकारी, मातृ-गीत, और प्रकृति अध्ययन को प्राथमिकता दी गई है।
- **आंतरिक कौशल विकास:**फ्रोबेल के 'व्यवसाय' (Occupations) की तर्ज पर NEP 2020 में हस्तकौशल, मिट्टी के खिलौने बनाने और स्थानीय शिल्पकला के माध्यम से सीखने पर बल दिया गया है।

13.6.3 फ्रोबेल के सिद्धांतों की आलोचनात्मक समीक्षा

सकारात्मक योगदानों के बावजूद, अनेक शिक्षाविदों और वैज्ञानिकों ने फ्रोबेल की प्रणाली में निम्नलिखित सीमाएँ और कमियाँ चिन्हित की हैं:

- **उपहारों का अत्यधिक औपचारिक एवं कठोर प्रयोग:**फ्रोबेल द्वारा विकसित 'उपहारों' (Gifts) के प्रयोग के नियम इतने जटिल और क्रमबद्ध थे कि इससे बालक की प्राकृतिक स्वतंत्रता बाधित होती थी। आलोचकों (जैसे जॉन डीवी) का मानना था कि बालकों को विशिष्ट ज्यामितीय आकृतियों तक सीमित रखने के स्थान पर उन्हें वास्तविक जीवन की वस्तुओं से सीखने की छूट मिलनी चाहिए।
- **अत्यधिक रहस्यवादी और दार्शनिक दृष्टिकोण:**फ्रोबेल की 'एकता की अवधारणा' और आकृतियों की व्याख्या अत्यधिक रहस्यवादी (Mystical) और अध्यात्मवादी थी। उदाहरण के लिए, गोले को 'आत्मा का प्रतीक' या घन को

नोट

'स्थिरता का प्रतीक' मानना एक छोटे बालक की समझ और व्यावहारिक मनोविज्ञान से परे प्रतीत होता है।

- **सामाजिक जीवन और वास्तविक अनुभवों की उपेक्षा:**फ्रोबेल ने किंडरगार्टन को एक आदर्श और कृत्रिम उद्यान के रूप में विकसित किया, जहाँ बालक को बाहरी समाज की जटिलताओं से दूर रखा जाता था। आधुनिक शिक्षाविदों का तर्क है कि शिक्षा को बालक के वास्तविक सामाजिक और पारिवारिक वातावरण से अलग नहीं किया जाना चाहिए।
- **शिक्षकों पर अत्यधिक निर्भरता:**फ्रोबेल की प्रणाली में प्रयुक्त मातृ-गीतों, उपहारों के विशेष अनुक्रम, और प्रतीकात्मक खेलों के संचालन के लिए अत्यधिक विशेष रूप से प्रशिक्षित शिक्षकों की आवश्यकता होती थी, जिससे इसका सार्वभौमिक प्रसार चुनौतीपूर्ण हो गया।

1. 'किंडरगार्टन' (Kindergarten) प्रणाली के जनक कौन हैं?

(A) फ्रेडरिक फ्रोबेल

(B) मोंटेसरी

(C) जॉन डीवी

(D) पेस्टालॉजी

2. 'किंडरगार्टन' शब्द का शाब्दिक अर्थ क्या है?

(A) बच्चों का बगीचा (Children's Garden)

(B) बाल श्रम केंद्र

(C) प्राथमिक विद्यालय

(D) खेल का मैदान

3. फ्रोबेल ने शिक्षण के लिए किन साधनों का विकास किया?

(A) उपहार और खेल (Gifts and Occupations)

(B) पाठ्यपुस्तकें और गाइड

(C) दंड और पुरस्कार

(D) कंप्यूटर आधारित टेस्ट

नोट

4. फ्रोबेल के अनुसार शिक्षक की भूमिका क्या है?

(A) एक माली (Gardener) के समान

(B) एक तानाशाह के समान

(C) एक मूक दर्शक के समान

(D) केवल परीक्षक के समान

5. फ्रोबेल का शिक्षा दर्शन किस प्रमुख सिद्धांत पर आधारित था?

(A) स्व-क्रिया (Self-activity) और खेल द्वारा सीखना

(B) रटने की प्रक्रिया

(C) परीक्षा का डर

(D) केवल मौखिक व्याख्यान

13.7 सारांश (Summary)

- **प्रारंभिक शिक्षा के अग्रदूत:**फ्रेडरिक फ्रोबेल (1782–1852) एक महान जर्मन शिक्षाविद थे, जिन्होंने बाल-केन्द्रित शिक्षा और प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल एवं शिक्षा (ECCE) की सुदृढ़ नींव रखी।
- **दार्शनिक त्रिकोण:**उनका दर्शन आदर्शवाद, प्रकृतिवाद और अध्यात्म का अद्‌भुत समन्वय है। उन्होंने 'एकता का सिद्धांत' (Law of Unity), 'विकास का सिद्धांत' (Organic Development) और 'आत्म-क्रियाशीलता का सिद्धांत' (Self-Activity) प्रतिपादित किया।
- **किंडरगार्टन एवं रूपक:**फ्रोबेल ने 1840 में विश्व प्रसिद्ध 'किंडरगार्टन' (बच्चों का उद्यान) प्रणाली की शुरुआत की। इसमें उन्होंने विद्यालय को उद्यान, बालक को पौधा और शिक्षक को एक सजग 'माली' का रूपक दिया।
- **खेल-विधि और शिक्षण सामग्री:**उन्होंने 'खेल-खेल में शिक्षा' (Play-Way Method) का मनोवैज्ञानिक महत्व स्थापित किया तथा अधिगम को गति देने के लिए अनुक्रमिक 'उपहारों' (Gifts) और रचनात्मक 'व्यवसायों' (Occupations) का विकास किया।

नोट

- **आधुनिक प्रासंगिकता एवं सीमाएँ:**फ्रोबेल की शिक्षण पद्धति का प्रभाव आधुनिक मोंटेसरी प्रणाली तथा भारत की 'राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020' के फाउंडेशनल स्टेज (5 + 3 + 3 + 4) पर स्पष्ट दिखाई देता है, यद्यपि उनके उपहारों के अत्यधिक औपचारिक प्रयोग और रहस्यवादी दृष्टिकोण की आलोचना भी की जाती है।

13.8 मुख्य शब्द / पारिभाषिक शब्दावली (Key Words)

1. **बालवाड़ी) किंडरगार्टन /Kindergarten):** फ्रोबेल द्वारा स्थापित बच्चों के शिक्षण की एक प्रणाली, जिसका शाब्दिक अर्थ है "बच्चों का बगीचा")Children's Garden)। यहाँ शिक्षक को एक माली और बच्चे को एक पौधे के रूप में देखा जाता है।
2. **उपहार एवं व्यापार) व्यायाम/Gifts and Occupations):** फ्रोबेल द्वारा विकसित विशेष शिक्षण सामग्री। 'उपहार' (Gifts) में गेंद, लकड़ी के ब्लॉक, गोले आदि शामिल हैं जो बच्चों को आकार और संरचना का बोध कराते हैं, जबकि 'व्यायाम' (Occupations) में चित्रकारी, मिट्टी के खिलौने बनाना आदि शामिल हैं।
3. **स्वतः स्फूर्त गतिविधि)Self-Activity):** बच्चे की आंतरिक प्रेरणा और इच्छा से होने वाली स्वाभाविक गतिविधि, जिसके माध्यम से वह स्वयं सीखता है।
4. **खेल) आधारित शिक्षा-Play-way Method):** शिक्षा की वह पद्धति जिसमें खेल को बच्चे के शारीरिक, मानसिक एवं सामाजिक विकास का प्राथमिक और स्वाभाविक माध्यम माना जाता है।
5. **एकता का सिद्धांत)Principle of Unity):** फ्रोबेल का यह दार्शनिक विचार कि संपूर्ण ब्रह्मांड में एक ही ईश्वर या ईश्वरीय चेतना व्याप्त है, और शिक्षा का उद्देश्य इस एकता की अनुभूति कराना है।

13.9 बोध प्रश्नों के उत्तर

उत्तर: (A) फ्रेडरिक फ्रोबेल

उत्तर: (A) बच्चों का बगीचा (Children's Garden)

नोट

उत्तर: (A) उपहार और खेल (Gifts and Occupations)

उत्तर: (A) एक माली (Gardener) के समान

उत्तर: (A) स्व-क्रिया (Self-activity) और खेल द्वारा सीखना

13.10 सुझावित अध्ययन सामग्री – मुक्त शैक्षिक संसाधन

1. eGyanKosh: Friedrich Froebel and Kindergarten Movement (IGNOU)
2. UNESCO IBE: Friedrich Froebel Pioneer Profile
3. Project Gutenberg: The Education of Man by Friedrich Froebel
4. OER Commons: Early Childhood Pedagogy and Froebel
5. Internet Archive: Educational Writings of Froebel

13.11 संदर्भ ग्रन्थ

- **Froebel, Friedrich.** (1887). *The Education of Man* (W. N. Hailmann, Trans.). D. Appleton and Company, New York.
- **Bowen, H. Courthope.** (1903). *Froebel and Education by Self-Activity*. Charles Scribner's Sons, New York.
- **Liebschner, Joachim.** (1992). *A Child's Work: Freedom and Guidance in Froebel's Educational Theory and Practice*. James Clarke & Co., Cambridge.
- **Mani, R. S.** (1966). *Educational Ideas and Ideals of Eminent Educationists*. Educational Publishers, Agra.
- **Ministry of Education, Government of India.** (2020). *National Education Policy 2020*. New Delhi.

नोट

- **Pandey, R. S.** (2015). *Educational Philosophies of the West (पाश्चात्य शैक्षिक दर्शन)*. Vinod Pustak Mandir, Agra.
- **Weston, Peter.** (1998). *Friedrich Froebel: His Life and Ideas*. Elementary Education Journal, 45(2), 112–128.

13.12 अभ्यास प्रश्न (Exercise)

13.12.1 वस्तुनिष्ठ प्रश्न (Multiple Choice Questions - MCQs)

1. **फ्रेडरिक फ्रोबेल ने 'किंडरगार्टन' (Kindergarten) शब्द का प्रयोग सर्वप्रथम किस वर्ष में किया था?**

(a) 1837

(b) 1840

(c) 1852

(d) 1805

उत्तर: (b) 1840

व्याख्या: 1837 में फ्रोबेल ने इसे बैड ब्लैंकेनबर्ग में शुरू किया था, किंतु 1840 में इसका नाम 'किंडरगार्टन' रखा गया।

2. **किंडरगार्टन प्रणाली में फ्रोबेल के अनुसार शिक्षक की भूमिका किस रूप में मानी गई है?**

(a) राजा/शासक

(b) माली (Gardener)

(c) निर्देशक

(d) नियंत्रक

उत्तर: (b) माली (Gardener)

नोट

3. **निम्नलिखित में से कौन-सा फ्रोबेल द्वारा विकसित प्रथम 'उपहार' (First Gift) है?**

(a) लकड़ी का घन

(b) मिट्टी का गोलक

(c) छह रंगीन ऊनी गेंदें

(d) कागज़ की पट्टी

उत्तर: (c) छह रंगीन ऊनी गेंदें

4. **फ्रोबेल की प्रणाली में 'उपहार' (Gifts) और 'व्यवसाय' (Occupations) में मुख्य अंतर क्या है?**

(a) उपहार से खेलने पर सामग्री का रूप स्थायी रूप से बदल जाता है

(b) व्यवसाय में सामग्री का मूल रूप परिवर्तित नहीं होता

(c) उपहार में मूल वस्तु का रूप नहीं बदलता, जबकि व्यवसाय में सामग्री का रूप परिवर्तित हो जाता है

(d) दोनों में कोई अंतर नहीं है

उत्तर: (c) उपहार में मूल वस्तु का रूप नहीं बदलता, जबकि व्यवसाय में सामग्री का रूप परिवर्तित हो जाता है

5. **फ्रोबेल के अनुसार बाल-विकास की प्रक्रिया किस दार्शनिक सिद्धांत पर आधारित है?**

(a) बाह्य वातावरण का आरोपण

(b) आंतरिक शक्तियों का बाह्य प्रकटन (Unfoldment from Within)

(c) केवल यांत्रिक रटंत विद्या

(d) दंड द्वारा नियंत्रण

उत्तर: (b) आंतरिक शक्तियों का बाह्य प्रकटन (Unfoldment from Within)

नोट

13.12.2 लघु उत्तरीय प्रश्न (Short Answer Questions)

1. **फ्रोबेल के 'एकता के सिद्धांत' (Law of Unity) को संक्षेप में स्पष्ट कीजिए।**

*उत्तर संकेत:*ईश्वर, प्रकृति और मानव जाति के मध्य अंतर्संबंध, सर्वांगीण आध्यात्मिक एवं भौतिक सामंजस्य का विवरण दें। (शब्द सीमा: 50–100 शब्द)

2. **किंडरगार्टन प्रणाली के रूपक में शिक्षक, बालक और विद्यालय के संबंधों को समझाइए।**

*उत्तर संकेत:*माली (शिक्षक), कोमल पौधा (बालक) और उद्यान (विद्यालय) के तुलनात्मक संबंध को रेखांकित करें। (शब्द सीमा: 50–100 शब्द)

3. **फ्रोबेल के 'मातृ-गीत' (Mother's Songs and Nursery Rhymes) का बालक के विकास में क्या महत्व है?**

*उत्तर संकेत:*भाषा विकास, संगीतात्मक चेतना, सूक्ष्म गत्यात्मक कौशल और संवेगात्मक संतुलन का उल्लेख करें। (शब्द सीमा: 50–100 शब्द)

4. **फ्रोबेल के अनुसार अनुशासन की क्या संकल्पना है?**

*उत्तर संकेत:*बाह्य दंड के खंडन तथा आंतरिक अनुशासन (Self-Discipline) एवं प्रेम-आधारित वातावरण पर बल दें। (शब्द सीमा: 50–100 शब्द)

13.12.3 दीर्घ उत्तरीय एवं विश्लेषणात्मक प्रश्न (Long Answer / Analytical Questions)

1. **फ्रेडरिक फ्रोबेल के किंडरगार्टन प्रणाली और खेल-विधि (Play-Way Method) का विस्तृत वर्णन कीजिए। यह किस प्रकार पारंपरिक शिक्षा प्रणाली से भिन्न है?**

*उत्तर संकेत:*खेल का मनोवैज्ञानिक आधार, स्वतंत्रता, आत्म-क्रियाशीलता और पारंपरिक रटंत प्रणाली के विरोध पर प्रकाश डालें। (शब्द सीमा: 300–500 शब्द)

नोट

2. **राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 (NEP 2020) के फाउंडेशनल स्टेज (**5 + 3 + 3 + 4**) के संदर्भ में फ्रोबेल के शैक्षिक सिद्धांतों की प्रासंगिकता का आलोचनात्मक विश्लेषण कीजिए।**

उत्तर संकेत: ECCE ढांचा, खेल व गतिविधि आधारित शिक्षण, हस्तकौशल विकास के साथ-साथ फ्रोबेल के उपहारों की सीमाएँ भी लिखें। (शब्द सीमा: 300–500 शब्द)

13.12.4 व्यावहारिक / केस-स्टडी आधारित प्रश्न (Application-Based Questions)

1. यदि आप एक पूर्व-प्राथमिक (Pre-Primary) विद्यालय के शिक्षक हैं, तो फ्रोबेल के 'उपहार' और 'व्यवसाय' के सिद्धांतों को अपनी आधुनिक कक्षा-कक्ष गतिविधियों में किस प्रकार लागू करेंगे? व्यावहारिक उदाहरणों सहित स्पष्ट करें।

नोट

इकाई 14
पाश्चात्य विचारक: जॉन डीवी

इकाई संरचना (Unit Structure)

14.1 प्रस्तावना (Introduction)
14.2 उद्देश्य (Objectives)
14.2 जॉन डीवी का जीवन परिचय एवं दार्शनिक पृष्ठभूमि
14.3 जॉन डीवी का प्रयोजनवाद/व्यवहारवाद
14.4 जॉन डीवी के अनुसार शिक्षा का दर्शन एवं सिद्धांत
14.4.1 शिक्षा की अवधारणा और परिभाषा
14.4.2 शिक्षा के उद्देश्य (Aims of Education)
14.5 पाठ्यक्रम एवं शिक्षण विधियाँ
14.5.1 अनुभव-केंद्रित पाठ्यक्रम
14.5.2 करके सीखना एवं समस्या समाधान विधि
14.5.3 प्रोजेक्ट प्रणाली/परियोजना विधि (Project Method)
14.6 विद्यालय, शिक्षक एवं छात्र की अवधारणा (Concept of School, Teacher, and Student)
14.6.1 विद्यालय: समाज का लघु रूप (School as a Miniature Society)
14.6.2 शिक्षक की भूमिका: मार्गदर्शक एवं सुविधादाता (Role of Teacher as a Guide and Facilitator)
14.6.3 बालक केंद्रित शिक्षा (Child-Centered Education)
14.7 लोकतांत्रिक शिक्षा और मूल्य (Democratic Education and Values)
14.8 जॉन डीवी के विचारों का आधुनिक शिक्षा में योगदान एवं प्रासंगिकता
14.9 सारांश (Summary)
14.10 शब्दावली (Glossary)
14.11 बोध प्रश्नों के उत्तर
14.12 सुझावित अध्ययन सामग्री – मुक्त शैक्षिक संसाधन
14.13 संदर्भ ग्रन्थ
14.14 अभ्यास प्रश्न एवं मूल्यांकन

14.1 प्रस्तावना (Introduction)

आधुनिक पाश्चात्य शैक्षिक चिंतन के इतिहास में अमरीकी दार्शनिक और शिक्षाशास्त्री **जॉन डीवी (John Dewey, 1859–1952)**का स्थान अत्यंत महत्त्वपूर्ण है। 19वीं सदी

नोट

के उत्तरार्ध और 20वीं सदी के प्रारंभ में जब शिक्षा व्यवस्था मुख्य रूप से परंपरागत, शिक्षक-केंद्रित और किताबी ज्ञान तक सीमित थी, तब जॉन डीवी ने शिक्षा के क्षेत्र में एक क्रांतिकारी बदलाव की नींव रखी।

डीवी का मानना था कि शिक्षा केवल भविष्य के जीवन की तैयारी मात्र नहीं है, बल्कि**"शिक्षा स्वयं जीवन है" (Education is life itself)**। उन्होंने दर्शन को केवल अमूर्त चिंतन या विचारों की उड़ान न मानकर उसे व्यावहारिक जीवन की समस्याओं को सुलझाने का एक साधन माना। इसी विचार से **प्रयोजनवाद (Pragmatism)** या **व्यावहारिक दर्शन** का विकास हुआ।

जॉन डीवी ने इस बात पर विशेष बल दिया कि बालक अपने अनुभवों और स्वयं करके सीखने (Learning by Doing) की प्रक्रिया द्वारा ज्ञान का निर्माण करता है। उन्होंने परंपरागत कक्षा-कक्ष की व्यवस्था को चुनौती दी और विद्यालय को एक ऐसे सामाजिक प्रयोगशाला के रूप में देखा जहाँ बालक लोकतांत्रिक मूल्यों, सहयोग और व्यावहारिक जीवन के कौशलों को सीखता है। इस इकाई में हम जॉन डीवी के दार्शनिक विचारों, उनके शैक्षिक सिद्धांतों, शिक्षण विधियों तथा आधुनिक शिक्षा प्रणाली पर उनके प्रभाव का विस्तार से अध्ययन करेंगे।

14.2 उद्देश्य (Objectives)

इस इकाई का अध्ययन करने के पश्चात् आप:

- जॉन डीवी के जीवन वृत्त और उनके दार्शनिक चिंतन के विकास को समझ सकेंगे।
- डीवी के प्रयोजनवादी (Pragmatic) एवं व्यवहारवादी (Instrumentalist) दर्शन के मूल सिद्धांतों की व्याख्या कर सकेंगे।
- शिक्षा के संप्रत्यय, स्वरूप और उसके उद्देश्यों के संबंध में डीवी के दृष्टिकोण का विश्लेषण कर सकेंगे।
- डीवी द्वारा प्रतिपादित 'अनुभव-केंद्रित पाठ्यक्रम' (Experience-Centered Curriculum) और 'समस्या-समाधान विधि' के महत्व को रेखांकित कर सकेंगे।

नोट

- विद्यालय को "समाज का लघु रूप" (School as a Miniature Society) मानने की अवधारणा को स्पष्ट कर सकेंगे।
- शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया में शिक्षक एवं शिक्षार्थी की बदलती भूमिका को समझ सकेंगे।
- लोकतांत्रिक मूल्यों के संवर्धन में जॉन डीवी के शैक्षिक विचारों एवं आधुनिक शिक्षा में उनकी प्रासंगिकता का मूल्यांकन कर सकेंगे।

14.3 जॉन डीवी का जीवन परिचय एवं दार्शनिक पृष्ठभूमि (Life Sketch and Philosophical Background of John Dewey)

जॉन डीवी 20वीं शताब्दी के सबसे प्रभावशाली अमरीकी दार्शनिक, शिक्षाशास्त्री और मनोवैज्ञानिकों में से एक थे। उन्होंने शिक्षा के पारंपरिक ढर्रे को बदलकर उसे समाज और बालक के व्यावहारिक जीवन से जोड़ने का ऐतिहासिक कार्य किया।

14.3.1 जीवन परिचय (Life Sketch)

- **जन्म एवं प्रारंभिक जीवन:**जॉन डीवी का जन्म**20 अक्टूबर 1859**को संयुक्त राज्य अमेरिका के**वर्मांट (Vermont) राज्य के बर्लिंगटन (Burlington)**नगर में हुआ था। उनका परिवार एक साधारण मध्यमवर्गीय परिवार था, जिससे उन्हें श्रम, सरलता और व्यावहारिक जीवन के मूल्यों की प्रेरणा मिली।
- **शिक्षा:**डीवी ने अपनी प्रारंभिक एवं स्नातक शिक्षा वर्मोंट विश्वविद्यालय से पूरी की। इसके पश्चात् 1884 में उन्होंने प्रसिद्ध**जॉन हॉकिन्स विश्वविद्यालय (Johns Hopkins University)**से दर्शनशास्त्र में डॉक्टरेट (Ph.D.) की उपाधि प्राप्त की।
- **अध्यापन एवं शोध कार्य:**

नोट

- उन्होंने मिशिगन और मिनेसोटा विश्वविद्यालयों में दर्शनशास्त्र के प्राध्यापक के रूप में कार्य किया।
- **1894 में वे शिकागो विश्वविद्यालय**में दर्शनशास्त्र, मनोविज्ञान और शिक्षाशास्त्र विभाग के अध्यक्ष बने। यहीं पर उन्होंने 1896 में अपने प्रसिद्ध**"लैबोरेटरी स्कूल" (Laboratory School / Dewey School)**की स्थापना की, जहाँ उन्होंने अपने शैक्षिक प्रयोगों को व्यावहारिक रूप दिया।
- 1904 से 1930 तक वे**कोलंबिया विश्वविद्यालय**में दर्शनशास्त्र के प्रोफेसर रहे और सेवानिवृत्ति के बाद भी आजीवन लेखन और समाज सेवा में सक्रिय रहे।

- **निधन:1 जून 1952**को 92 वर्ष की आयु में न्यूयार्क में उनका देहावसान हो गया।

14.3.2 प्रमुख रचनाएँ (Major Works)

जॉन डीवी ने दर्शन, शिक्षा, राजनीति और समाजशास्त्र पर कई कालजयी पुस्तकें लिखीं, जिनमें प्रमुख हैं:

- *माय पेडागॉजिकल क्रीड (My Pedagogic Creed - 1897)*
- *द स्कूल एंड सोसाइटी (The School and Society - 1899)*
- *द चाइल्ड एंड द करिकुलम (The Child and the Curriculum - 1902)*
- *हाउ वी थिंक (How We Think - 1910)*
- *डेमोक्रेसी एंड एजुकेशन (Democracy and Education - 1916)* – यह पुस्तक उनकी शैक्षिक विचारधारा का शिखर मानी जाती है।
- *एक्सपीरियंस एंड एजुकेशन (Experience and Education - 1938)*

14.3.3 दार्शनिक पृष्ठभूमि (Philosophical Background)

नोट

जॉन डीवी के विचारों का निर्माण केवल किताबों से नहीं, बल्कि तत्कालीन सामाजिक, वैज्ञानिक और औद्योगिक परिवर्तनों के प्रभाव से हुआ। उनकी दार्शनिक पृष्ठभूमि को निम्नलिखित तीन प्रमुख घटकों से समझा जा सकता है:

1. प्रयोजनवाद (Pragmatism / Instrumentalism)

डीवी को**प्रयोजनवाद (Pragmatism)**की धारा 'प्रयोगवाद' (Experimentalism) या'**साधनवाद' (Instrumentalism)**के जनक के रूप में जाना जाता है।

- प्रयोजनवाद के अनुसार, कोई भी विचार, सिद्धांत या मूल्य शाश्वत (अंतिम और सत्य) नहीं होता।
- विचार या सत्य केवल वही है जो मानव जीवन में व्यावहारिक रूप से उपयोगी और कार्यसाधक हो। डीवी के अनुसार, "सत्य बनाया जाता है, वह पूर्व-निर्धारित नहीं होता।"

2. डार्विन का विकासवाद (Darwin's Theory of Evolution)

चार्लस डार्विन के जैव विकासवादी सिद्धांत ने डीवी के चिंतन को गहराई से प्रभावित किया।

- डार्विन के अनुसार जीव अपने पर्यावरण के साथ निरंतर अंतःक्रिया (Interaction) करता है और जीवित रहने के लिए अनुकूलन (Adaptation) स्थापित करता है।
- डीवी ने इसी विचार को शिक्षा में लागू किया: *मनुष्य का ज्ञान और चिंतन पर्यावरण के साथ संघर्ष और समायोजन की प्रक्रिया से पैदा होता है।*

3. लोकतंत्र और सामाजिक प्रगति (Democracy and Social Progress)

19वीं और 20वीं सदी में अमेरिका तेजी से औद्योगिक क्रांति और शहरीकरण की ओर बढ़ रहा था। डीवी ने देखा कि पुरानी शिक्षा प्रणाली इस नए लोकतांत्रिक और औद्योगिक समाज की आवश्यकताओं को पूरा करने में असमर्थ थी। इसलिए उन्होंने एक ऐसी दार्शनिक पृष्ठभूमि तैयार की जिसमें **लोकतंत्र, सामाजिक उत्तरदायित्व, वैज्ञानिक दृष्टिकोण और व्यक्तिगत स्वतंत्रता** का संतुलन हो।

नोट

14.4 जॉन डीवी का प्रयोजनवाद/व्यवहारवाद (Pragmatism / Instrumentalism of John Dewey)

जॉन डीवी को पाश्चात्य दर्शन की**प्रयोजनवादी (Pragmatic)**धारा का सबसे प्रमुख प्रतिपादक माना जाता है। डीवी ने अपने प्रयोजनवाद को **'साधनवाद' (Instrumentalism)**,**'प्रयोगवाद' (Experimentalism)** तथा **'व्यवहारवाद' (Functionalism)**जैसे नामों से संबोधित किया। उनका दर्शन विचारों की शुष्क बौद्धिकता के बजाय व्यावहारिक जीवन के अनुभवों और समस्याओं के समाधान पर आधारित है।

14.4.1 प्रयोजनवाद और साधनवाद का अर्थ (Meaning of Pragmatism and Instrumentalism)

- **प्रयोजनवाद (Pragmatism):** 'Pragmatism' शब्द की उत्पत्ति ग्रीक भाषा के शब्द *'Pragma* से हुई है, जिसका अर्थ है—**क्रिया (Action), कार्य (Work) या व्यावहारिक कार्यशाला**।
    - इस दर्शन के अनुसार वही विचार या सिद्धांत सत्य है, जो जीवन में व्यावहारिक परिणाम (Practical Results) दे और मनुष्य की समस्याओं को सुलझाने में उपयोगी सिद्ध हो।
- **साधनवाद (Instrumentalism):**डीवी ने अपने दर्शन को 'साधनवाद' कहा क्योंकि उनके अनुसार मनुष्य का**मस्तिष्क, बुद्धि और विचार कोई अंतिम लक्ष्य नहीं हैं, बल्कि वे जीवन की व्यावहारिक समस्याओं का समाधान करने वाले 'साधन' (Instruments) मात्र हैं।**

14.4.2 डीवी के प्रयोजनवाद के मौलिक सिद्धांत (Fundamental Principles of Dewey's Pragmatism)

जॉन डीवी के दार्शनिक चिंतन को निम्नलिखित प्रमुख सिद्धांतों के अंतर्गत समझा जा सकता है:

1. सत्य परिवर्तनशील और निर्मित होता है (Truth is Dynamic and Created)

नोट

- डीवी के अनुसार सत्य पूर्व-निर्धारित, शाश्वत या अंतिम नहीं होता।
- सत्य का निर्माण मनुष्य के अनुभवों से होता है। जो विचार आज की परिस्थितियों में उपयोगी और सफल सिद्ध होता है, वही आज का सत्य है। यदि परिस्थितियाँ बदलती हैं, तो सत्य का स्वरूप भी बदल जाता है।

2. विचारों की कसौटी 'क्रिया' और 'परिणाम' है (Action is the Criterion of Ideas)

- कोई भी सिद्धांत या विचार तब तक केवल एक उपकल्पना (Hypothesis) है जब तक उसे प्रयोग में न लाया जाए।
- डीवी का मानना था कि विचार और क्रिया एक-दूसरे से पृथक् नहीं हैं। क्रिया करने के बाद जो परिणाम प्राप्त होते हैं, वही विचार की उपयोगिता और प्रमाणिकता तय करते हैं।

3. अनुभव ही ज्ञान का मूल स्रोत है (Experience is the Source of Knowledge)

- डीवी के दर्शन का केंद्र बिंदु**'अनुभव' (Experience)**है। मनुष्य और उसके पर्यावरण के बीच निरंतर अंतःक्रिया (Interaction) होती है।
- इस अंतःक्रिया से जो अनुभव प्राप्त होते हैं, वही वास्तविक ज्ञान का निर्माण करते हैं। अनुभव से परे कोई अमूर्त या अलौकिक ज्ञान नहीं होता।

4. समस्याओं का समाधान और वैज्ञानिक दृष्टिकोण (Problem-Solving and Scientific Attitude)

- जीवन समस्याओं की एक श्रृंखला है। डीवी के अनुसार दर्शन और बुद्धि का मुख्य कार्य मनुष्य को इन समस्याओं से निपटने के योग्य बनाना है।
- इसके लिए वे**वैज्ञानिक विधि (Scientific Method)**के प्रयोग पर बल देते हैं—जिसमें समस्या की पहचान, डेटा एकत्र करना, उपकल्पना बनाना, प्रयोग करना और निष्कर्ष निकालना शामिल है।

5. मूल्यों का लचीलापन (Flexibility of Values)

नोट

- डीवी किसी भी प्रकार के कठोर, पारलौकिक या ईश्वर-प्रदत्त मूल्यों (Absolute Values) को स्वीकार नहीं करते।
- उनके अनुसार मूल्य मानव समाज की बदलती आवश्यकताओं के अनुसार निर्मित और परिवर्तित होते रहते हैं।

14.4.3 जॉन डीवी के प्रयोजनवाद का शिक्षा पर प्रभाव (Impact of Pragmatism on Education)

जॉन डीवी ने अपने प्रयोजनवादी दर्शन को शिक्षा के क्षेत्र में व्यावहारिक रूप दिया। शिक्षा के संदर्भ में उनके दर्शन का प्रभाव निम्नलिखित रूपों में दिखता है:

प्रयोजनवादी सिद्धांत	**शैक्षिक निहितार्थ (Educational Implication)**
सत्य परिवर्तनशील है	पाठ्यक्रम कठोर न होकर लचीला और परिवर्तनशील होना चाहिए।
अनुभव एवं क्रिया पर बल	'करके सीखना' (Learning by Doing) और 'गतिविधि-आधारित अधिगम'।
समस्या-समाधान दृष्टिकोण	रटने की प्रथा का विरोध; चिंतनशील और तर्कसंगत सोच का विकास।
साधन के रूप में विचार	पुस्तकीय ज्ञान की जगह व्यावहारिक जीवन के कौशलों पर ध्यान।

मुख्य निष्कर्ष:जॉन डीवी का प्रयोजनवाद शिक्षा को किताबी दीवारों से बाहर निकालकर वास्तविक जीवन, प्रयोग और सामाजिक अनुभवों से जोड़ता है। उनके अनुसार शिक्षा का उद्देश्य बालक को बदलते हुए पर्यावरण में सफलतापूर्वक अनुकूलन करने और समस्याओं का समाधान खोजने के योग्य बनाना है।

14.5 जॉन डीवी के अनुसार शिक्षा का दर्शन एवं सिद्धांत (Educational Philosophy and Principles of John Dewey)

नोट

जॉन डीवी का मानना था कि शिक्षा कोई निष्क्रिय या केवल पुस्तकीय प्रक्रिया नहीं है, बल्कि यह जीवन की एक सतत और गत्यात्मक (dynamic) प्रक्रिया है। उन्होंने शिक्षा को दर्शन का व्यावहारिक पक्ष माना। उनके अनुसार, **"दर्शन शिक्षा का सिद्धांत है और शिक्षा दर्शन का व्यावहारिक रूप है।"**

14.5.1 शिक्षा की अवधारणा और परिभाषा (Concept and Definition of Education)

डीवी के अनुसार शिक्षा मनुष्य की समस्त क्षमताओं का वह विकास है जो उसे अपने पर्यावरण पर नियंत्रण रखने तथा अपनी संभावनाओं को पूर्ण करने के योग्य बनाती है। उन्होंने शिक्षा की अवधारणा को निम्नलिखित प्रमुख बिंदुओं के माध्यम से स्पष्ट किया:

- **शिक्षा स्वयं जीवन है (Education is Life Itself):**डीवी का सबसे प्रसिद्ध कथन है—*"Education is not preparation for life; education is life itself"* (शिक्षा जीवन की तैयारी नहीं है, बल्कि शिक्षा स्वयं जीवन है)। उनके अनुसार बालक को भविष्य के किसी काल्पनिक जीवन के लिए तैयार करने के बजाय उसे वर्तमान जीवन के वास्तविक अनुभवों से जोड़ा जाना चाहिए।
- **अनुभवों का निरंतर पुनर्निर्माण (Continuous Reconstruction of Experiences):**डीवी के अनुसार शिक्षा की प्रक्रिया में बालक नए-नए अनुभव प्राप्त करता है। पुराने अनुभवों का नए अनुभवों से पुनर्गठन होता है, जिससे उसके ज्ञान, समझ और कौशलों का निरंतर विस्तार होता रहता है।
- **शिक्षा एक द्वि-मुखी प्रक्रिया के रूप में (Education as a Bi-polar Process):**डीवी ने शिक्षा के दो प्रमुख पक्ष बताए हैं:
    1. **मनोवैज्ञानिक पक्ष (Psychological Side):**इसमें बालक की जन्मजात शक्तियाँ, रुचियाँ, प्रवृत्तियाँ और व्यक्तिगत क्षमताएँ शामिल हैं।
    2. **सामाजिक पक्ष (Sociological Side):**इसमें वह सामाजिक वातावरण शामिल है जिसमें बालक रहता है और अपने विचारों का आदान-प्रदान करता है। डीवी के अनुसार, मनोवैज्ञानिक पक्ष को समझे

नोट

बिना सामाजिक पक्ष अधूरा है और सामाजिक वातावरण के बिना मनोवैज्ञानिक शक्तियों का विकास संभव नहीं है।

14.5.2 शिक्षा के उद्देश्य (Aims of Education)

जॉन डीवी परंपरागत शिक्षा के उन सिद्धांतों के विरोधी थे जो शिक्षा के पूर्व-निर्धारित या अंतिम उद्देश्य तय करते थे। उनके अनुसार शिक्षा का कोई निश्चित और अंतिम लक्ष्य नहीं हो सकता।

1. पूर्व-निर्धारित उद्देश्यों का विरोध

डीवी का मानना था कि परिस्थितियाँ और समाज निरंतर बदलते रहते हैं, इसलिए शिक्षा के उद्देश्य भी स्थिर या शाश्वत नहीं हो सकते। उद्देश्य परिस्थितियों के अनुसार स्वयं विकसित होने चाहिए।

2. अधिक शिक्षा प्राप्त करने की क्षमता (Growth and Further Education)

डीवी के शब्दों में, **"शिक्षा का अपने आप में कोई उद्देश्य नहीं होता, उद्देश्य केवल व्यक्तियों के होते हैं।"**शिक्षा का एकमात्र सामान्य उद्देश्य है—बालक का निरंतर विकास (Growth) करना ताकि वह जीवन भर सीखता रहे।

3. सामाजिक कुशलता का विकास (Social Efficiency)

शिक्षा का मुख्य उद्देश्य बालक को एक कुशल सामाजिक प्राणी बनाना है। सामाजिक कुशलता का अर्थ है:

- समाज के साधनों का उचित उपयोग करना सीखना।
- समाज के प्रति अपनी जिम्मेदारियों को समझना और योगदान देना।
- दूसरों के साथ सहयोग, सहानुभूति और सहअस्तित्व की भावना से रहना।

4. लोकतांत्रिक मूल्यों और जीवन-शैली का संवर्धन (Promoting Democratic Values)

नोट

डीवी के अनुसार शिक्षा का एक प्रमुख उद्देश्य बालकों में स्वतंत्रता, समानता, बंधुत्व, न्याय और सहिष्णुता जैसे लोकतांत्रिक मूल्यों का विकास करना है ताकि वे एक स्वस्थ लोकतांत्रिक समाज का निर्माण कर सकें।

5. पर्यावरण के साथ अनुकूलन और नियंत्रण (Adaptation and Control of Environment)

शिक्षा बालक को केवल अपने पर्यावरण में ढलना (Adaptation) ही नहीं सिखाती, बल्कि उसे आवश्यकता पड़ने पर पर्यावरण में सुधार करने और उस पर नियंत्रण रखने के योग्य भी बनाती है।

निष्कर्ष:जॉन डीवी के अनुसार शिक्षा की प्रक्रिया बालक की रुचि, क्षमता और सामाजिक आवश्यकताओं के समन्वय पर आधारित होनी चाहिए। शिक्षा का मूल कार्य बालक को एक ऐसा स्वतंत्र, चिंतनशील और सामाजिक रूप से उत्तरदायी नागरिक बनाना है जो जीवन की अनिश्चित चुनौतियों का सामना कर सके।

कदाचित् आप**14.5 (पाठ्यक्रम एवं शिक्षण विधियाँ)**या**14.5.1 / 14.5.2**के बारे में जानना चाह रहे हैं।

जॉन डीवी के शैक्षिक विचारों के अंतर्गत**अनुभाग 14.5: पाठ्यक्रम एवं शिक्षण विधियाँ (Curriculum and Teaching Methods)**का विस्तृत विवरण नीचे प्रस्तुत है:

14.6 पाठ्यक्रम एवं शिक्षण विधियाँ (Curriculum and Teaching Methods)

जॉन डीवी ने पारंपरिक पाठ्यक्रम की विषय-केंद्रित (Subject-centered) और रटने पर आधारित प्रकृति की तीव्र आलोचना की। उनका मानना था कि पाठ्यक्रम बालक की रुचियों, आवश्यकताओं और व्यावहारिक जीवन से जुड़ा होना चाहिए।

14.6.1 अनुभव-केंद्रित पाठ्यक्रम (Experience-Centered Curriculum)

डीवी के अनुसार पाठ्यक्रम केवल पुस्तकों और विषयों का संग्रह नहीं है, बल्कि वह उन सभी अनुभवों का योग है जिन्हें बालक विद्यालय, कक्षा, प्रयोगशाला, खेल के मैदान और समाज में प्राप्त करता है।

- **पाठ्यक्रम निर्माण के मूल सिद्धांत:**

नोट

1. **उपयोगिता का सिद्धांत (Principle of Utility):**पाठ्यक्रम में उन्हीं विषयों और गतिविधियों को स्थान मिलना चाहिए जो बालक के वर्तमान और भावी व्यावहारिक जीवन में उपयोगी हों।
2. **रुचि का सिद्धांत (Principle of Interest):**बालक की स्वाभाविक रुचियों (जैसे—निर्माण करना, खोजना, संवाद करना, कलात्मक अभिव्यक्ति) के अनुकूल पाठ्यक्रम होना चाहिए।
3. **लचीलेपन का सिद्धांत (Principle of Flexibility):**पाठ्यक्रम कठोर या पूर्व-निर्धारित न होकर समाज और बालक की बदलती आवश्यकताओं के अनुसार परिवर्तनशील होना चाहिए।
4. **एकीकरण का सिद्धांत (Principle of Integration):**ज्ञान को अलग-अलग विषयों (इतिहास, भूगोल, गणित) में बाँटने के बजाय एक समग्र और एकीकृत इकाई (Integrated Whole) के रूप में पढ़ाया जाना चाहिए।

14.6.2 करके सीखना एवं समस्या समाधान विधि (Learning by Doing and Problem-Solving Method)

जॉन डीवी शिक्षण विधियों के क्षेत्र में**'करके सीखने' (Learning by Doing)**के सिद्धांत के सबसे बड़े समर्थक माने जाते हैं।

- **करके सीखना (Learning by Doing):**
    - बालक केवल सुनकर या पढ़कर नहीं, बल्कि स्वयं गतिविधियों (Activities) में भाग लेकर और प्रयोग करके प्रभावी ढंग से सीखता है।
    - शिक्षण प्रक्रिया में बालक निष्क्रिय श्रोता नहीं, बल्कि सक्रिय सहभागी (Active Learner) होता है।
- **समस्या-समाधान विधि (Problem-Solving Method):**

डीवी ने वैज्ञानिक दृष्टिकोण पर आधारित समस्या-समाधान प्रक्रिया के पाँच मुख्य चरण बताए हैं:

नोट

1. **समस्या की अनुभूति (Felt Difficulty):**बालक के सामने एक व्यावहारिक समस्या या परिस्थिति उत्पन्न होना।
2. **समस्या का विश्लेषण और परिभाषण (Defining the Problem):**समस्या के स्वरूप को स्पष्ट रूप से समझना।
3. **उपकल्पनाओं का निर्माण (Formulation of Hypotheses):**संभावित समाधानों या विचारों का अनुमान लगाना।
4. **तर्क एवं निष्कर्ष निकालन (Reasoning and Deduction):**प्रत्येक समाधान के परिणामों पर विचार करना।
5. **प्रयोग एवं सत्यापन (Testing and Verification):**व्यावहारिक रूप से प्रयोग करके सही समाधान की पुष्टि करना।

14.6.3 प्रोजेक्ट प्रणाली/परियोजना विधि (Project Method)

यद्यपि**प्रोजेक्ट प्रणाली (Project Method)**का व्यावहारिक और व्यवस्थित विकास जॉन डीवी के योग्य शिष्य**विलियम हर्ड किलपैट्रिक (William Heard Kilpatrick)**ने किया था, परंतु इसकी दार्शनिक नीव जॉन डीवी के प्रयोजनवाद और "करके सीखने" के सिद्धांत पर ही आधारित है।

- **प्रोजेक्ट विधि की विशेषताएँ:**
    - यह विधि किसी वास्तविक और उद्देश्यपूर्ण सामाजिक परिस्थिति में पूरी की जाती है।
    - बालक इसमें समूह में मिलकर कार्य करते हैं, जिससे उनमें सहयोग, उत्तरदायित्व और सामाजिकता का विकास होता है।
    - इसमें किताबी ज्ञान के स्थान पर व्यावहारिक जीवन की समस्याओं का समाधान किया जाता है।

निष्कर्ष:जॉन डीवी का पाठ्यक्रम और शिक्षण विधियाँ बालक को ज्ञान का निष्क्रिय प्राप्तकर्ता न बनाकर उसे एक खोजकर्ता, प्रयोगकर्ता और समस्या-समाधानकर्ता के रूप में विकसित करने पर बल देती हैं।

नोट

14.7 विद्यालय, शिक्षक एवं छात्र की अवधारणा (Concept of School, Teacher, and Student)

जॉन डीवी ने शिक्षा प्रक्रिया के तीनों मुख्य घटकों—**विद्यालय, शिक्षक और छात्र**—की पारंपरिक भूमिकाओं में क्रांतिकारी परिवर्तन किया। उन्होंने शिक्षा को किताबी ज्ञान की चारदीवारी से बाहर निकालकर एक व्यावहारिक और सामाजिक प्रक्रिया के रूप में स्थापित किया।

14.7.1 विद्यालय: समाज का लघु रूप (School as a Miniature Society)

डीवी के अनुसार विद्यालय केवल एक ऐसी इमारत नहीं है जहाँ बच्चों को कुछ विषय पढ़ाए जाते हैं, बल्कि यह समाज का एक जीवंत अंग है।

- **समाज का सरलीकृत और शुद्ध रूप:**विद्यालय को समाज का एक ऐसा लघु रूप (Miniature Society) होना चाहिए जहाँ बालक समाज के जटिल नियमों को सरल, शुद्ध और संतुलित वातावरण में सीख सके।
- **सामाजिक प्रयोगशाला (Social Laboratory):**डीवी ने अपने "लैबोरेटरी स्कूल" (Laboratory School) के माध्यम से सिद्ध किया कि विद्यालय एक ऐसी प्रयोगशाला है जहाँ बालक विभिन्न सामाजिक गतिविधियों, प्रयोगों और अनुभवों के माध्यम से सहयोग, सहअस्तित्व और नागरिकता के गुण सीखता है।
- **जीवन से जुड़ाव:**विद्यालय का वातावरण घर और समाज के वातावरण से अलग थलग नहीं होना चाहिए, बल्कि यह बालक के व्यावहारिक जीवन का ही एक विस्तारित रूप होना चाहिए।

14.7.2 शिक्षक की भूमिका: मार्गदर्शक एवं सुविधादाता (Role of Teacher as a Guide and Facilitator)

पारंपरिक शिक्षा में शिक्षक को एक सत्तावादी (Authoritative) और ज्ञान का एकमात्र स्रोत माना जाता था। जॉन डीवी ने इस विचार को पूरी तरह खारिज किया।

नोट

- **सुविधादाता और मार्गदर्शक (Facilitator and Guide):**डीवी के अनुसार शिक्षक का कार्य बालक पर ज्ञान थोपना या उस पर शासन करना नहीं है, बल्कि बालक के लिए ऐसा वातावरण तैयार करना है जहाँ वह स्वयं सीख सके।
- **निरीक्षक एवं निर्देशक (Observer and Director):**शिक्षक का काम बालक की स्वाभाविक रुचियों, प्रवृत्तियों और क्षमताओं का सूक्ष्म निरीक्षण करना और उन्हें सही दिशा देना है।
- **सामाजिक मित्र एवं सहयोगी:**शिक्षक को कक्षा में एक मित्र, सलाहकार और सह-शिक्षार्थी के रूप में कार्य करना चाहिए जो बालकों के साथ मिलकर समस्याओं का समाधान खोजता है।

14.7.3 बालक केंद्रित शिक्षा (Child-Centered Education)

डीवी के दर्शन का केंद्र बिंदु'**बालक**'है। उन्होंने 'बाल-केंद्रित शिक्षा' (Child-Centered Education) पर विशेष बल दिया।

- **बालक मुख्य केंद्र के रूप में:**डीवी का प्रसिद्ध कथन है कि *"शिक्षा की प्रक्रिया में बालक सूर्य के समान है जिसके चारों ओर शिक्षा के अन्य साधन (पाठ्यक्रम, शिक्षक, विद्यालय) चक्कर लगाते हैं।"*
- **रुचियों और आवश्यकताओं का सम्मान:**शिक्षण प्रक्रिया बालक की आयु, मानसिक क्षमता, व्यक्तिगत भिन्नता और स्वाभाविक रुचियों पर आधारित होनी चाहिए।
- **सक्रिय शिक्षार्थी (Active Learner):**बालक ज्ञान का निष्क्रिय प्राप्तकर्ता नहीं है; वह एक सक्रिय खोजकर्ता है जो स्वयं गतिविधियों और अनुभवों के माध्यम से अपने ज्ञान का निर्माण करता है।

मुख्य निष्कर्ष:जॉन डीवी की दृष्टि में विद्यालय एक लोकतांत्रिक और सामाजिक मंच है, जहाँ शिक्षक एक कुशल मार्गदर्शक के रूप में बालक की अंतर्निहित शक्तियों का विकास कर उसे समाज का एक उपयोगी व ज़िम्मेदार सदस्य बनाता है।

14.8 लोकतांत्रिक शिक्षा और मूल्य (Democratic Education and Values)

नोट

जॉन डीवी के पूरे शैक्षिक और दार्शनिक चिंतन का मुख्य आधार**लोकतंत्र (Democracy)**है। उनकी प्रसिद्ध कृति *'डेमोक्रेसी एंड एजुकेशन' (1916)*में उन्होंने यह विचार प्रतिपादित किया कि लोकतंत्र केवल शासन का एक रूप (Form of Government) नहीं है, बल्कि यह मूल रूप से**संबद्ध जीवन जीने का एक तरीका (A way of associated living)**और संयुक्त रूप से संप्रेषित अनुभवों का एक माध्यम है।

14.8.1 जॉन डीवी के अनुसार लोकतंत्र की अवधारणा (Concept of Democracy according to Dewey)

- **जीवन शैली के रूप में लोकतंत्र:**डीवी का मानना था कि जब तक लोकतांत्रिक मूल्यों को नागरिकों के दैनिक व्यवहार, सोचने के तरीके और सामाजिक अंतःक्रियाओं में नहीं उतारा जाता, तब तक केवल राजनीतिक रूप से चुनाव करा लेना या संविधान बना लेना पर्याप्त नहीं है।
- **सामाजिक लचीलापन और सहयोग:**एक लोकतांत्रिक समाज वह है जहाँ समाज के विभिन्न वर्गों के बीच संवाद के द्वार खुले रहते हैं, नए विचारों का स्वागत होता है और व्यक्तियों के साझा हितों का विस्तार होता है।

14.8.2 लोकतांत्रिक शिक्षा की आवश्यकता और स्वरूप (Need and Nature of Democratic Education)

डीवी के अनुसार लोकतंत्र और शिक्षा एक-दूसरे पर आश्रित हैं। शिक्षा के बिना लोकतंत्र का पोषण संभव नहीं है, और लोकतंत्र के बिना शिक्षा का सही विकास नहीं हो सकता।

- **कक्षा और विद्यालय में लोकतांत्रिक वातावरण:**
    - विद्यालय को तानाशाही या कठोर नियमों से मुक्त होना चाहिए।
    - कक्षा-कक्ष में विद्यार्थियों को अपने विचार व्यक्त करने, प्रश्न पूछने, असहमति व्यक्त करने और शिक्षक के साथ संवाद करने की पूर्ण स्वतंत्रता होनी चाहिए।
- **साझा निर्णय प्रक्रिया (Shared Decision-Making):**

नोट

- विद्यार्थियों को विद्यालय की गतिविधियों, नियमों और योजनाओं के निर्माण में सहभागी बनाया जाना चाहिए। इससे बालकों में उत्तरदायित्व और स्वामित्व (Ownership) की भावना विकसित होती है।

- **समान अवसर और विविधता का सम्मान (Equality of Opportunity and Diversity):**
  - लोकतांत्रिक शिक्षा प्रत्येक बालक की व्यक्तिगत भिन्नता, क्षमता और पृष्ठभूमि का सम्मान करती है। इसमें प्रत्येक छात्र को अपनी क्षमता के अनुसार विकास करने का समान अवसर मिलता है।

14.8.3 लोकतांत्रिक मूल्यों का संवर्धन (Promoting Democratic Values)

जॉन डीवी ने शिक्षा के माध्यम से निम्नलिखित मुख्य लोकतांत्रिक मूल्योंके विकास पर बल दिया:

1. **स्वतंत्रता और स्वायत्तता (Freedom and Autonomy):**

बालक को केवल शारीरिक स्वतंत्रता ही नहीं, बल्कि**बौद्धिक स्वतंत्रता (Intellectual Freedom)**मिलनी चाहिए ताकि वह स्वयं चिंतन कर सके और बिना किसी दबाव के अपने निर्णय ले सके।

2. **सहयोग और भ्रातृत्व (Cooperation and Fraternity):**

डीवी ने व्यक्तिगत प्रतिस्पर्धा (Competition) के बजाय सामाजिक सहयोग (Cooperation) पर बल दिया। समूह गतिविधियों (Group Projects) और टीम-वर्क के माध्यम से बालकों में परस्पर सहयोग और भातृभाव विकसित होता है।

3. **समानता और न्याय (Equality and Justice):**

विद्यालय का वातावरण ऐसा हो जहाँ जाति, वर्ग, लिंग या धर्म के आधार पर कोई भेदभाव न हो और सभी बालकों के साथ न्यायसंगत व्यवहार किया जाए।

4. **सामाजिक उत्तरदायित्व (Social Responsibility):**

नोट

लोकतांत्रिक शिक्षा बालक को केवल अधिकारों का ज्ञान नहीं देती, बल्कि उसे समाज के प्रति अपने कर्तव्यों और जिम्मेदारियों का बोध भी कराती है।

5. **सहिष्णुता एवं विचार-विमर्श (Tolerance and Deliberation):**

दूसरों के विचारों, विश्वासों और दृष्टिकोणों का सम्मान करना तथा हिंसा या हठधर्मिता के बजाय शांतिपूर्ण संवाद और तर्क से विवादों को सुलझाना।

मुख्य निष्कर्ष:जॉन डीवी के अनुसार लोकतांत्रिक शिक्षा का मूल लक्ष्य ऐसे जागरूक, चिंतनशील और सहिष्णु नागरिकों का निर्माण करना है जो एक स्वतंत्र, परिवर्तनशील और समतावादी समाज को बनाए रखने और आगे बढ़ाने में सक्षम हों।

14.9 जॉन डीवी के विचारों का आधुनिक शिक्षा में योगदान एवं प्रासंगिकता (Contribution and Relevance of John Dewey's Ideas in Modern Education)

जॉन डीवी के शैक्षिक विचारों और प्रयोजनवादी दर्शन ने 20वीं और 21वीं सदी की आधुनिक शिक्षा प्रणालियों को गहराई से प्रभावित किया है। आज की समकालीन शिक्षा में जिन आधुनिक शिक्षण उपागमों (Pedagogical Approaches) और नीतियों की चर्चा की जाती है, उनकी दार्शनिक नीव जॉन डीवी द्वारा दशकों पहले ही रखी जा चुकी थी।

14.9.1 आधुनिक शिक्षा में प्रमुख योगदान (Major Contributions to Modern Education)

जॉन डीवी ने पारंपरिक, शिक्षक-केंद्रित और किताबी शिक्षा मॉडल को बदलकर आधुनिक शिक्षा को निम्नलिखित प्रमुख दिशाएँ प्रदान कीं:

1. बाल-केंद्रित एवं समावेशी शिक्षा (Child-Centered and Inclusive Education)

- डीवी ने बालक को शिक्षा प्रक्रिया के केंद्र में रखा।
- आज की आधुनिक शिक्षा प्रणाली बालकों की व्यक्तिगत भिन्नता (Individual Differences), रुचियों, मानसिक क्षमताओं और अधिगम शैलियों के आधार पर शिक्षण की बात करती है, जो डीवी के विचारों की ही देन है।

नोट

2. गतिविधि-आधारित एवं रचनात्मक अधिगम (Activity-Based and Constructivist Learning)

- डीवी का**"करके सीखना" (Learning by Doing)**का सिद्धांत आधुनिक निर्मितिवाद (Constructivism) का आधार स्तंभ है।
- जीन पियाजे और लेव वायगोत्स्की जैसे आधुनिक वैज्ञानिकों के निर्मितिवादी विचार डीवी की इस अवधारणा से मेल खाते हैं कि बालक स्वयं ज्ञान का निर्माण करता है, वह ज्ञान का निष्क्रिय प्राप्तकर्ता नहीं है।

3. वैज्ञानिक दृष्टिकोण एवं समस्या-समाधान (Scientific Attitude and Problem-Solving)

- डीवी ने शिक्षा में रटने की परिपाटी का विरोध किया और समस्या-समाधान विधि (Problem-Solving Method) पर बल दिया।
- आज की आधुनिक शिक्षा में बालकों के**आलोचनात्मक चिंतन (Critical Thinking)**, विश्लेषण क्षमता और वैज्ञानिक दृष्टिकोण को बढ़ावा देने के पीछे डीवी का दर्शन निहित है।

4. समेकित एवं व्यावहारिक पाठ्यक्रम (Integrated and Practical Curriculum)

- डीवी ने ज्ञान के अलग-अलग विषयों के बीच की कृत्रिम दीवारों को तोड़ने और एकीकृत पाठ्यक्रम (Integrated Curriculum) बनाने पर बल दिया।
- वर्तमान में व्यावसायिक शिक्षा (Vocational Education), स्टेम (STEM) शिक्षा और कला-समेकित अधिगम (Art-Integrated Learning) इसी एकीकृत दृष्टिकोण के उदाहरण हैं।

5. लोकतांत्रिक एवं प्रगतिशील विद्यालय (Democratic and Progressive Schools)

- डीवी ने विद्यालय को "समाज का लघु रूप" मानकर उसमें लोकतांत्रिक वातावरण स्थापित करने की प्रेरणा दी।

नोट

- आधुनिक प्रगतिशील शिक्षा मॉडल, छात्र परिषदें (Student Councils), और सहयोगात्मक अधिगम (Cooperative Learning) डीवी की लोकतांत्रिक दृष्टि का प्रत्यक्ष परिणाम हैं।

14.9.2 भारत की राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 (NEP 2020) में प्रासंगिकता (Relevance in NEP 2020)

भारत की नई**राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 (NEP 2020)**के प्रमुख प्रावधानों पर जॉन डीवी के विचारों की स्पष्ट छाप देखी जा सकती है:

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 का प्रावधान	**जॉन डीवी का दार्शनिक विचार**
अनुभवात्मक अधिगम (Experiential Learning)	करके सीखना (Learning by Doing) और व्यावहारिक अनुभव।
विषय-मुक्ति एवं एकीकृत पाठ्यक्रम	विषयों के कठोर विभाजन को समाप्त कर एकीकृत शिक्षण।
21वीं सदी के कौशल (Critical Thinking & Inquiry)	समस्या-समाधान विधि और वैज्ञानिक चिंतनशील सोच।
कक्षा 6 से व्यावसायिक शिक्षा (Vocational Education)	शिक्षा को जीवन और व्यावहारिक कार्यों से जोड़ना।
रटंत प्रणाली से मुक्ति और सतत मूल्यांकन	पूर्व-निर्धारित ज्ञान के स्थान पर क्रिया और प्रयोग पर बल।

14.9.3 वैश्विक संदर्भ में प्रासंगिकता (Global Relevance in 21st Century)

डिजिटल युग और सूचना क्रांति के इस दौर में जॉन डीवी के विचार और भी अधिक प्रासंगिक हो गए हैं:

- **डिजिटल युग में व्यावहारिक अनुभव:**इंटरनेट और एआई के युग में सूचना आसानी से उपलब्ध है, लेकिन उस सूचना का व्यावहारिक उपयोग कैसे किया जाए, यह डीवी के समस्या-समाधान दृष्टिकोण से ही संभव है।

नोट

- **वैश्विक नागरिकता (Global Citizenship):**डीवी के लोकतांत्रिक मूल्य और सामाजिक कुशलता का सिद्धांत बालकों को एक सहिष्णु, समावेशी और वैश्विक समाज में रहने योग्य बनाते हैं।

मुख्य निष्कर्ष:जॉन डीवी केवल 20वीं सदी के विचारक नहीं थे, बल्कि वे आधुनिक और भावी शिक्षा के मार्गदर्शक हैं। उनका यह विचार कि *"शिक्षा जीवन की तैयारी नहीं, बल्कि शिक्षा स्वयं जीवन है"*आज भी विश्वभर की आधुनिक शिक्षा सुधार यात्रा का मुख्य प्रेरणा स्रोत बना हुआ है।

1. जॉन डीवी किस दार्शनिक विचारधारा के प्रमुख समर्थक थे?

(A) प्रयोजनवाद / व्यावहारिक दर्शन (Pragmatism)

(B) आदर्शवाद

(C) यथार्थवाद

(D) प्रकृतिवाद

2. 'करके सीखना' (Learning by Doing) का सिद्धांत किसने अत्यधिक लोकप्रिय बनाया?

(A) जॉन डीवी

(B) प्लेटो

(C) सुकरात

(D) कांट

3. जॉन डीवी के अनुसार शिक्षा की त्रि-ध्रुवीय (Tri-polar) प्रक्रिया में कौन शामिल हैं?

(A) शिक्षार्थी, शिक्षक और समाज/पाठ्यक्रम

(B) पुस्तक, कलम और कक्षा

(C) केवल शिक्षक और छात्र

(D) राज्य, नियम और परीक्षा

4. जॉन डीवी द्वारा लिखित प्रसिद्ध पुस्तक कौन सी है?

(A) डेमोक्रेसी एंड एजुकेशन (Democracy and Education)

(B) दी रिपब्लिक

नोट

(C) एमील

(D) दास कैपिटल

5. जॉन डीवी ने किस प्रकार के विद्यालयों की अवधारणा दी?

(A) प्रगतिशील विद्यालय (Progressive Schools / Lab Schools)

(B) सैनिक स्कूल

(C) धार्मिक गुरुकुल

(D) केवल रात्रि विद्यालय

14.10 सारांश (Summary)

- **जीवन एवं पृष्ठभूमि:**जॉन डीवी (1859–1952) अमरीका के एक प्रमुख दार्शनिक और शिक्षाशास्त्री थे। उन्होंने 1896 में शिकागो विश्वविद्यालय में 'लैबोरेटरी स्कूल' की स्थापना की और शिक्षा में क्रांतिकारी प्रयोग किए।
- **प्रयोजनवाद/साधनवाद:**डीवी का दर्शन प्रयोजनवाद (Pragmatism) और साधनवाद (Instrumentalism) कहलाता है। इसके अनुसार सत्य अंतिम या पूर्व-निर्धारित नहीं होता, बल्कि अनुभवों और व्यावहारिक परिणामों के आधार पर निर्मित होता है। बुद्धिमत्ता और विचार समस्याओं को सुलझाने के 'साधन' हैं।
- **शिक्षा की अवधारणा:**डीवी के अनुसार, "शिक्षा जीवन की तैयारी नहीं, बल्कि शिक्षा स्वयं जीवन है।" शिक्षा बालकों के अनुभवों के निरंतर पुनर्निर्माण की प्रक्रिया है। इसके दो प्रमुख पक्ष हैं—मनोवैज्ञानिक और सामाजिक।
- **शिक्षा के उद्देश्य:**डीवी कठोर या पूर्व-निर्धारित उद्देश्यों का विरोध करते हैं। उनके अनुसार शिक्षा का मुख्य उद्देश्य बालक का निरंतर विकास करना, उसमें सामाजिक कुशलता लाना और पर्यावरण के साथ अनुकूलन व नियंत्रण की क्षमता विकसित करना है।
- **पाठ्यक्रम और शिक्षण विधियाँ:**पाठ्यक्रम को अनुभव-केंद्रित, उपयोगितावादी और लचीला होना चाहिए। डीवी ने रटने की पद्धति को खारिज करते हुए 'करके सीखना' (Learning by Doing) और 'समस्या-समाधान विधि'

नोट

(Problem-Solving Method) पर बल दिया, जो आधुनिक प्रोजेक्ट प्रणाली (Project Method) का आधार बनी।

- **विद्यालय, शिक्षक एवं छात्र:**विद्यालय "समाज का एक लघु रूप" (Miniature Society) है जहाँ बालक सामाजिक जीवन सीखता है। शिक्षा बाल-केंद्रित (Child-Centered) होनी चाहिए जहाँ शिक्षक की भूमिका एक तानाशाह की न होकर मार्गदर्शक, सुविधादाता और मित्र की होती है।
- **लोकतांत्रिक मूल्य एवं आधुनिक प्रासंगिकता:**डीवी लोकतंत्र को शासन प्रणाली के साथ-साथ जीवन जीने की एक शैली मानते थे। उनके विचार आज की आधुनिक शिक्षा, निर्मितिवाद (Constructivism) तथा भारत की राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 (NEP 2020) के अनुभवात्मक अधिगम (Experiential Learning) के सिद्धांतों में पूर्णतः प्रासंगिक हैं।

14.11 शब्दावली (Glossary)

- **प्रयोजनवाद (Pragmatism):**दर्शनशास्त्र की वह धारा जो अमूर्त सिद्धांतों के बजाय व्यावहारिक परिणामों, क्रिया और उपयोगिता को सत्य की कसौटी मानती है।
- **साधनवाद (Instrumentalism):**जॉन डीवी का दार्शनिक दृष्टिकोण, जिसके अनुसार मनुष्य के विचार, बुद्धि और मस्तिष्क व्यावहारिक समस्याओं को सुलझाने के 'साधन' (Instruments) हैं।
- **करके सीखना (Learning by Doing):**वह शिक्षण सिद्धांत जिसमें बालक केवल निष्क्रिय होकर सुनने की बजाय स्वयं गतिविधियों और प्रयोगों में भाग लेकर ज्ञान अर्जित करता है।
- **अनुभव-केंद्रित पाठ्यक्रम (Experience-Centered Curriculum):**ऐसा पाठ्यक्रम जो केवल पुस्तकीय विषयों तक सीमित न होकर बालक के व्यावहारिक जीवन और विविध सामाजिक अनुभवों पर आधारित होता है।

नोट

- **समस्या-समाधान विधि (Problem-Solving Method):**वैज्ञानिक दृष्टिकोण पर आधारित एक शिक्षण विधि जिसमें शिक्षार्थी समस्या की पहचान कर, उपकल्पनाएँ बनाकर और प्रयोगों द्वारा समाधान तक पहुँचता है।
- **समाज का लघु रूप (Miniature Society):**डीवी की वह अवधारणा जिसके अनुसार विद्यालय को बृहद समाज की गतिविधियों, नियमों और लोकतांत्रिक मूल्यों का एक छोटा और सरलीकृत रूप होना चाहिए।
- **अनुभवात्मक अधिगम (Experiential Learning):**प्रत्यक्ष अनुभवों, चिंतन और क्रिया-कलापों के माध्यम से ज्ञान प्राप्त करने की प्रक्रिया।

14.12 बोध प्रश्नों के उत्तर

उत्तर: (A) प्रयोजनवाद / व्यावहारिक दर्शन (Pragmatism)

उत्तर: (A) जॉन डीवी

उत्तर: (A) शिक्षार्थी, शिक्षक और समाज/पाठ्यक्रम

उत्तर: (A) डेमोक्रेसी एंड एजुकेशन (Democracy and Education)

उत्तर: (A) प्रगतिशील विद्यालय (Progressive Schools / Lab Schools)

14.13 सुझावित अध्ययन सामग्री – मुक्त शैक्षिक संसाधन

1. eGyanKosh: John Dewey and Pragmatism in Education (IGNOU)
2. Stanford Encyclopedia of Philosophy: John Dewey
3. Project Gutenberg: Democracy and Education by John Dewey
4. Internet Encyclopedia of Philosophy: Dewey's Philosophy of Education
5. OER Commons: Experiential Learning and Progressive Education

14.14 संदर्भ ग्रन्थ

नोट

इस इकाई के अध्ययन और जॉन डीवी के विचारों के गहन विश्लेषण हेतु निम्नलिखित प्रमुख पुस्तकों, संदर्भ ग्रंथों एवं पठन सामग्रियों का उपयोग किया जा सकता है:

1 जॉन डीवी की मूल रचनाएँ (Original Works of John Dewey)

1. **Dewey, J. (1897).** *My Pedagogic Creed*. School Journal, 54, 77-80.
2. **Dewey, J. (1899).** *The School and Society*. Chicago: The University of Chicago Press.
3. **Dewey, J. (1902).** *The Child and the Curriculum*. Chicago: The University of Chicago Press.
4. **Dewey, J. (1910).** *How We Think*. Boston: D. C. Heath & Co.
5. **Dewey, J. (1916).** *Democracy and Education: An Introduction to the Philosophy of Education*. New York: The Macmillan Company.
6. **Dewey, J. (1938).** *Experience and Education*. New York: Kappa Delta Pi / Macmillan.

2 हिंदी भाषा में प्रमुख संदर्भ पुस्तकें (Key Reference Books in Hindi)

1. **पाण्डेय, रामशकल (2018).** *शिक्षा के दार्शनिक एवं समाजशास्त्रीय आधार*. आगरा: अग्रवाल पब्लिकेशंस।
2. **गुप्ता, एस. पी. (2020).** *भारतीय एवं पाश्चात्य शैक्षिक विचारक*. इलाहाबाद: शारदा पुस्तक भवन।
3. **चौबे, एस. पी. एवं चौबे, अखिलेश (2015).** *शिक्षा के दार्शनिक एवं समाजशास्त्रीय विचार*. नई दिल्ली: विकास पब्लिशिंग हाउस।
4. **शर्मा, रामनाथ (2016).** *शिक्षा दर्शन एवं शैक्षिक विचारक*. मेरठ: केदारनाथ रामनाथ प्रकाशन।
5. **सक्सेना, एन. आर. स्वरूप (2019).** *शिक्षा दर्शन की रूपरेखा*. मेरठ: लायल बुक डिपो।

नोट

3 अंग्रेजी भाषा में सहायक ग्रंथ (Supplementary Books in English)

1. **Archambault, R. D. (Ed.). (1964).***John Dewey on Education: Selected Writings*. New York: Random House.
2. **Brubacher, J. S. (1969).***Modern Philosophies of Education*. New York: McGraw-Hill.
3. **Kilpatrick, W. H. (1951).***Philosophy of Education*. New York: Macmillan.
4. **Westbrook, R. B. (1991).***John Dewey and American Democracy*. Ithaca, NY: Cornell University Press.

4 शासकीय नीति दस्तावेज एवं ऑनलाइन स्रोत (Policy Documents & Online Resources)

1. **Ministry of Education, Government of India (2020).***National Education Policy 2020 (NEP 2020)*. New Delhi: MHRD.
2. **NCERT (2005).***National Curriculum Framework 2005 (NCF 2005)*. New Delhi: NCERT.
3. **Stanford Encyclopedia of Philosophy (SEP).***John Dewey*. Online Resource (plato.stanford.edu).

14.15 अभ्यास प्रश्न एवं मूल्यांकन (Exercise and Self-Assessment Questions)

यह अनुभाग जॉन डीवी के दार्शनिक एवं शैक्षिक विचारों पर आधारित आपकी समझ का मूल्यांकन करने के लिए तैयार किया गया है। प्रश्नों का उत्तर देने से पूर्व पूरी इकाई का ध्यानपूर्वक पुनरावलोकन करें।

1 वस्तुनिष्ठ प्रश्न (Objective Questions)

निर्देश:निम्नलिखित प्रश्नों में से सही विकल्प का चयन कीजिए:

नोट

1. **जॉन डीवी के दार्शनिक दृष्टिकोण को मुख्य रूप से किस नाम से जाना जाता है?**

(क) आदर्शवाद (Idealism)

(ख) प्रकृतिवाद (Naturalism)

(ग) प्रयोजनवाद / साधनवाद (Pragmatism / Instrumentalism)

(घ) यथार्थवाद (Realism)

2. **जॉन डीवी ने 1896 में अपने प्रसिद्ध "लैबोरेटरी स्कूल" (Laboratory School) की स्थापना किस विश्वविद्यालय में की थी?**

(क) कोलंबिया विश्वविद्यालय

(ख) शिकागो विश्वविद्यालय

(ग) जॉन हॉपकिन्स विश्वविद्यालय

(घ) वर्मोंट विश्वविद्यालय

3. **"शिक्षा जीवन की तैयारी नहीं है, बल्कि शिक्षा स्वयं जीवन है।" यह प्रसिद्ध कथन किसका है?**

(क) स्वामी विवेकानंद

(ख) फ्रेडरिक फ्रोबेल

(ग) प्लेटो

(घ) जॉन डीवी

4. **जॉन डीवी के अनुसार विद्यालय की सही अवधारणा क्या है?**

(क) धार्मिक शिक्षा का केंद्र

(ख) समाज का एक लघु रूप (Miniature Society)

(ग) केवल परीक्षा की तैयारी कराने वाला संस्थान

नोट

(घ) एक औद्योगिक कारखाना

5. **जॉन डीवी के प्रयोजनवादी विचारों पर आधारित प्रसिद्ध 'प्रोजेक्ट विधि' (Project Method) का व्यवस्थित विकास किसने किया?**

(क) विलियम हर्ड किलपैट्रिक

(ख) चार्लस डार्विन

(ग) जॉन लॉक

(घ) रूसो

2 लघु उत्तरीय प्रश्न (Short Answer Questions)

1. जॉन डीवी के 'साधनवाद' (Instrumentalism) के संप्रत्यय को संक्षेप में स्पष्ट कीजिए।
2. डीवी के अनुसार "शिक्षा के दो प्रमुख पक्षों" (मनोवैज्ञानिक एवं सामाजिक) से क्या तात्पर्य है?
3. डीवी द्वारा प्रतिपादित 'अनुभव-केंद्रित पाठ्यक्रम' के मुख्य सिद्धान्तों का उल्लेख कीजिए।
4. जॉन डीवी के शिक्षण-अधिगम मॉडल में 'शिक्षक' की भूमिका पारंपरिक शिक्षक से किस प्रकार भिन्न है?
5. डीवी के अनुसार समस्या-समाधान विधि (Problem-Solving Method) के मुख्य पाँच चरण कौन-कौन से हैं?

3 निबंधात्मक प्रश्न (Long / Essay Type Questions)

1. *"शिक्षा बालकों के अनुभवों के निरंतर पुनर्निर्माण की प्रक्रिया है।"*जॉन डीवी के इस कथन के आलोक में उनके शिक्षा के दर्शन, उद्देश्यों और 'करके सीखने' (Learning by Doing) के सिद्धांत की विस्तार से व्याख्या कीजिए।

नोट

2. जॉन डीवी के अनुसार 'लोकतांत्रिक शिक्षा' की अवधारणा क्या है? एक समतावादी और स्वतंत्र समाज के निर्माण में डीवी द्वारा बताए गए लोकतांत्रिक मूल्यों के योगदान की विवेचना कीजिए।

3. जॉन डीवी के दार्शनिक एवं शैक्षिक विचारों की आधुनिक शिक्षा में क्या प्रासंगिकता है? भारत की**राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 (NEP 2020)**में निहित अनुभवात्मक अधिगम (Experiential Learning) के संदर्भ में इसका विशेष विश्लेषण कीजिए।

नोट

इकाई 15
स्वतंत्रता-उत्तर शिक्षा आयोग
(मुदालियर एवं कोठारी आयोग)

इकाई संरचना (Unit Structure)

15.1 प्रस्तावना (Introduction)
15.2 उद्देश्य (Objectives)
15.3 स्वतंत्रता-उत्तर भारत में शैक्षिक सुधारों की पृष्ठभूमि
15.4 माध्यमिक शिक्षा आयोग / मुदालियर आयोग (1952-53)
15.4.1 गठन एवं मुख्य उद्देश्य
15.4.2 माध्यमिक शिक्षा की प्रमुख सिफारिशें एवं सुझाव
15.4.3 मुदालियर आयोग के गुण एवं सीमाएँ
15.5 राष्ट्रीय शिक्षा आयोग / कोठारी आयोग (1964-66)
15.5.1 गठन, कार्यक्षेत्र एवं उद्देश्य
15.5.2 प्रमुख सिफारिशें (10+2+3 संरचना, त्रि-भाषा सूत्र एवं राष्ट्रीय शिक्षा नीति का आधार)
15.5.3 भारतीय शिक्षा प्रणाली पर कोठारी आयोग का प्रभाव
15.6 मुदालियर एवं कोठारी आयोग का तुलनात्मक विश्लेषण
15.7 सारांश (Summary)
15.8 शब्दावली (Glossary)
15.9 बोध प्रश्नों के उत्तर
15.10 सुझावित अध्ययन सामग्री – मुक्त शैक्षिक संसाधन
15.11 संदर्भ ग्रन्थ
15.12 अभ्यास प्रश्न एवं स्वाध्याय कार्य (Exercises)

15.1 प्रस्तावना (Introduction)

15 अगस्त 1947 को स्वतंत्रता प्राप्त करने के पश्चात् भारत के समक्ष समाज, राजनीति और अर्थव्यवस्था के पुनर्गठन की विशाल चुनौतियाँ थीं। किसी भी नव-स्वतंत्र राष्ट्र के समग्र विकास और प्रजातांत्रिक मूल्यों की स्थापना के लिए एक सुदृढ़, प्रासंगिक और समावेशी शिक्षा प्रणाली का होना अनिवार्य था। ब्रिटिश काल की शिक्षा प्रणाली मुख्यतः प्रशासनिक आवश्यकताओं (क्लर्क तैयार करने) और औपनिवेशिक हितों को ध्यान में रखकर बनाई गई थी। स्वतंत्रता के बाद यह स्पष्ट हो गया कि इस पारंपरिक शिक्षा प्रणाली में व्यापक एवं मौलिक सुधारों की तत्काल आवश्यकता है।

नोट

स्वतंत्र भारत के प्रथम शिक्षा मंत्री मौलाना अबुल कलाम आजाद के नेतृत्व में शिक्षा को राष्ट्रीय पुनर्निर्माण का मुख्य साधन माना गया। देश की नई सामाजिक-आर्थिक आवश्यकताओं, लोकतांत्रिक मूल्यों, राष्ट्रीय एकता और वैज्ञानिक दृष्टिकोण को बढ़ावा देने के उद्देश्य से विभिन्न शिक्षा आयोगों की स्थापना की गई।

इसी क्रम में विश्वविद्यालय स्तर की शिक्षा के लिए 1948-49 में 'विश्वविद्यालय शिक्षा आयोग' (राधाकृष्णन आयोग) का गठन किया गया। इसके बाद, विद्यालयी शिक्षा और विशेषकर माध्यमिक स्तर की समस्याओं के समाधान हेतु**1952-53 में 'माध्यमिक शिक्षा आयोग' (मुदालियर आयोग)**का गठन किया गया। इसके पश्चात्, प्राथमिक से लेकर उच्च शिक्षा तक संपूर्ण शिक्षा प्रणाली का एक एकीकृत और व्यापक सर्वेक्षण करने के लिए**1964-66 में 'राष्ट्रीय शिक्षा आयोग' (कोठारी आयोग)**की स्थापना की गई।

यह इकाई स्वतंत्रता के बाद गठित इन दोनों ऐतिहासिक आयोगों की सिफारिशों, नीतियों और भारतीय शिक्षा प्रणाली पर पड़े उनके दूरगामी प्रभावों का गहराई से अध्ययन करती है।

15.2 उद्देश्य (Objectives)

इस इकाई का अध्ययन करने के पश्चात् आप:

- स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भारत में शैक्षिक सुधारों की आवश्यकता एवं पृष्ठभूमि को समझ सकेंगे।
- माध्यमिक शिक्षा आयोग (मुदालियर आयोग, 1952-53) के गठन के कारणों, उसके मुख्य उद्देश्यों एवं सिफारिशों की व्याख्या कर सकेंगे।
- माध्यमिक शिक्षा के पुनर्गठन में मुदालियर आयोग के योगदान, उसके गुणों एवं सीमाओं का आलोचनात्मक विश्लेषण कर सकेंगे।
- राष्ट्रीय शिक्षा आयोग (कोठारी आयोग, 1964-66) की प्रमुख सिफारिशों जैसे—10+2+3 शिक्षा संरचना, त्रि-भाषा सूत्र तथा शिक्षा के राष्ट्रीय पैटर्न का विस्तृत अध्ययन कर सकेंगे।

नोट

- स्वतंत्रता-उत्तर भारत की शिक्षा नीति के निर्माण में कोठारी आयोग के ऐतिहासिक प्रभाव का मूल्यांकन कर सकेंगे।
- मुदालियर आयोग एवं कोठारी आयोग की सिफारिशों का तुलनात्मक अध्ययन करके आधुनिक भारतीय शिक्षा प्रणाली पर उनके प्रभावों को समझ सकेंगे।

15.3 स्वतंत्रता-उत्तर भारत में शैक्षिक सुधारों की पृष्ठभूमि

15 अगस्त 1947 को स्वतंत्रता प्राप्त करने के पश्चात् नव-स्वतंत्र भारत के समक्ष अपनी सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक व्यवस्थाओं को पुनर्गठित करने की विशाल चुनौती थी। औपनिवेशिक शासन के दौरान विकसित की गई शिक्षा प्रणाली भारतीय समाज की आवश्यकताओं, आकांक्षाओं और लोकतांत्रिक मूल्यों के अनुकूल नहीं थी। अतः स्वतंत्रता-उत्तर भारत में एक नई, समावेशी और राष्ट्रीय आवश्यकताओं के अनुरूप शिक्षा नीति के निर्माण के लिए व्यापक शैक्षिक सुधारों की पृष्ठभूमि तैयार हुई।

शैक्षिक सुधारों की इस पृष्ठभूमि को निम्नलिखित मुख्य बिन्दुओं के आधार पर समझा जा सकता है:

1. ब्रिटिशकालीन शिक्षा प्रणाली की सीमाएँ एवं औपनिवेशिक विरासत

ब्रिटिश काल में शिक्षा का मुख्य उद्देश्य औपनिवेशिक शासन के प्रशासनिक कार्यों (जैसे क्लर्क तैयार करना) का संचालन करना था।

- **संकुचित उद्देश्य:**ब्रिटिश शिक्षा प्रणाली का ध्यान भारतीय नागरिकों के सर्वांगीण विकास या चरित्र निर्माण पर नहीं, बल्कि प्रशासनिक तंत्र को सुचारू रूप से चलाने पर था।
- **अव्यावहारिक एवं सैद्धांतिक प्रकृति:**शिक्षा अत्यधिक पुस्तकीय और सैद्धांतिक थी। इसमें व्यावसायिक, तकनीकी और व्यावहारिक ज्ञान की भारी कमी थी, जिसके कारण शिक्षित युवाओं में स्वरोजगार या उत्पादक कौशलों का अभाव था।

नोट

- **सीमित पहुँच:**शिक्षा का प्रसार केवल उच्च एवं मध्य वर्ग के सीमित वर्गों तक ही हो पाया था। जनसामान्य, ग्रामीण आबादी और महिलाओं की शिक्षा की उपेक्षा की गई थी।

2. लोकतांत्रिक एवं संवैधानिक मूल्यों की आवश्यकता

(स्वतंत्रता) के बाद भारत ने एक धर्मनिरपेक्ष, लोकतांत्रिक और समतावादी गणराज्य के रूप में अपनी यात्रा प्रारंभ की।

- **नागरिकता का विकास:**एक सफल लोकतंत्र के संचालन के लिए जागरूक, अधिकार-कर्तव्य संपन्न और तार्किक विचार शक्ति वाले नागरिकों की आवश्यकता थी।
- **संवैधानिक प्रतिबद्धता:**भारतीय संविधान के नीति निदेशक तत्वों (अनुच्छेद 45) के तहत राज्य को 14 वर्ष तक के सभी बच्चों के लिए निःशुल्क और अनिवार्य शिक्षा प्रदान करने का संकल्प लिया गया। इस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए संपूर्ण शिक्षा प्रणाली के पुनर्गठन की आवश्यकता महसूस की गई।

3. सामाजिक और आर्थिक पुनर्निर्माण की आवश्यकता

स्वतंत्रता के समय भारत गरीबी, निरक्षरता, खाद्यान्न संकट और औद्योगिक पिछड़ेपन जैसी गंभीर समस्याओं से जूझ रहा था।

- **उत्पादकता से शिक्षा का जुड़ाव:**देश को आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बनाने के लिए कृषि, उद्योग और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में कुशल मानव संसाधन (Skilled Manpower) तैयार करने की तत्काल आवश्यकता थी।
- **माजिक समानता:**जाति, धर्म, लिंग और वर्ग आधारित असमानताओं को समाप्त करने और सामाजिक गतिशीलता (Social Mobility) को बढ़ावा देने के लिए शिक्षा को एक प्रमुख साधन के रूप में देखा गया।

4. राष्ट्रीय एकता और अखंडता का संवर्धन

स्वतंत्रता के समय भारत को देश के विभाजन, सांप्रदायिक तनाव और विविध भाषाई व सांस्कृतिक विविधताओं को एक सूत्र में पिरोने की चुनौती का सामना करना पड़ा।

नोट

- **साझा राष्ट्रीय चेतना:**शिक्षा के माध्यम से भावी पीढ़ियों में राष्ट्रीय एकीकरण, बंधुत्व और धर्मनिरपेक्षता की भावना विकसित करना अनिवार्य माना गया।
- **भाषा नीति की जटिलता:**बहुभाषी देश होने के नाते शिक्षा के माध्यम (मातृभाषा, प्रांतीय भाषा और अंग्रेजी) को लेकर स्पष्ट और संतुलित नीति की आवश्यकता थी।

5. प्रारम्भिक प्रयास: राधाकृष्णन आयोग (1948-49)

स्वतंत्र भारत में शैक्षिक सुधारों की शुरुआत विश्वविद्यालय स्तर से हुई।

- नवंबर 1948 में डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन की अध्यक्षता में **विश्वविद्यालय शिक्षा आयोग' (Radhakrishnan Commission)**का गठन किया गया।
- इस आयोग ने उच्च शिक्षा के पुनर्गठन, विश्वविद्यालयों की स्वायत्तता, अनुसंधान और विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (UGC) की स्थापना की सिफारिशें कीं।
- हालाँकि, राधाकृष्णन आयोग ने यह भी स्पष्ट रेखांकित किया कि उच्च शिक्षा की गुणवत्ता तब तक नहीं सुधर सकती जब तक कि उसकी नींव—अर्थात्**माध्यमिक शिक्षा (Secondary Education)**—में व्यापक सुधार न किया जाए।

निष्कर्ष

ब्रिटिशकालीन संकुचित शिक्षा प्रणाली को बदलकर एक ऐसी राष्ट्रीय शिक्षा प्रणाली का निर्माण करना आवश्यक था, जो भारत की सांस्कृतिक विरासत, आधुनिक वैज्ञानिक दृष्टिकोण और लोकतांत्रिक मूल्यों का समन्वय कर सके। राधाकृष्णन आयोग द्वारा माध्यमिक शिक्षा के स्तर पर ध्यान आकर्षित करने के परिणामस्वरूप ही 1952 में**मुदालियर आयोग (माध्यमिक शिक्षा आयोग)**के गठन का मार्ग प्रशस्त हुआ, जिसने स्वतंत्रता-उत्तर भारत में स्कूली शिक्षा के पुनर्गठन की मजबूत नींव रखी।

15.4 माध्यमिक शिक्षा आयोग / मुदालियर आयोग (1952-53)

स्वतंत्र भारत में राधाकृष्णन आयोग (1948-49) की सिफारिशों के पश्चात् यह स्पष्ट हो गया था कि जब तक स्कूली शिक्षा, विशेषकर माध्यमिक स्तर की शिक्षा में व्यापक सुधार नहीं किए जाते, तब तक उच्च शिक्षा का स्तर नहीं सुधारा जा सकता। इसी आवश्यकता

नोट

को ध्यान में रखते हुए 23 सितंबर 1952 को मद्रास विश्वविद्यालय के तत्कालीन कुलपति**डॉ. अर्कट लक्ष्मणस्वामी मुदालियर**की अध्यक्षता में 'माध्यमिक शिक्षा आयोग' का गठन किया गया। अध्यक्ष के नाम पर ही इसे'**मुदालियर आयोग' (Mudaliar Commission)**कहा जाता है।

15.4.1 गठन एवं मुख्य उद्देश्य

- **गठन:**भारत सरकार के शिक्षा मंत्रालय द्वारा सितंबर 1952 में गठित किया गया। इस आयोग ने देश भर के शिक्षण संस्थानों का दौरा कर जून 1953 में अपनी विस्तृत रिपोर्ट प्रस्तुत की।
- **मुख्य उद्देश्य:**
    1. भारत की तत्कालीन माध्यमिक शिक्षा प्रणाली की वर्तमान स्थिति की जाँच करना।
    2. माध्यमिक शिक्षा के उद्देश्यों, पाठ्यक्रम और परीक्षा प्रणाली के पुनर्गठन हेतु सुझाव देना।
    3. माध्यमिक शिक्षा को प्राथमिक और उच्च शिक्षा के साथ सामंजस्यपूर्ण रूप से जोड़ना।
    4. देश की आवश्यकताओं के अनुसार माध्यमिक शिक्षा में तकनीकी और व्यावसायिक विषयों को शामिल करने के उपाय बताना।

15.4.2 माध्यमिक शिक्षा की प्रमुख सिफारिशें एवं सुझाव

मुदालियर आयोग ने माध्यमिक शिक्षा के पुनर्गठन के लिए निम्नलिखित महत्वपूर्ण सिफारिशें कीं:

- **शिक्षा का संगठनात्मक ढाँचा:**

नोट

- माध्यमिक शिक्षा की अवधि 7 वर्ष (11 से 17 वर्ष की आयु के बच्चों के लिए) निर्धारित की गई।
- संपूर्ण स्कूली शिक्षा को 11 वर्ष का करने का सुझाव दिया गया:**8 वर्ष की पूर्व-माध्यमिक/जूनियर बेसिक शिक्षा**और**3 वर्ष की उच्चतर माध्यमिक (Higher Secondary) शिक्षा**।
- पुरानी इंटरमीडिएट (11वीं और 12वीं) प्रणाली को समाप्त कर, 11वीं को माध्यमिक शिक्षा में और 12वीं को स्नातक स्तर (3 वर्षीय डिग्री पाठ्यक्रम) के साथ जोड़ने का सुझाव दिया गया।

- **बहुउद्देशीय विद्यालयों (Multipurpose Schools) की स्थापना:**
  - छात्रों की विभिन्न रुचियों, योग्यताओं और क्षमताओं को ध्यान में रखते हुए बहुउद्देशीय विद्यालय खोलने की सिफारिश की गई।
  - इन विद्यालयों में कला, विज्ञान, वाणिज्य, कृषि, ललित कला और गृह विज्ञान जैसे विविधतापूर्ण पाठ्यक्रम उपलब्ध कराने का प्रावधान था।
- **पाठ्यक्रम का विविधीकरण (Diversification of Curriculum):**
  - उच्चतर माध्यमिक स्तर पर पाठ्यक्रम को 7 मुख्य समूहों (Groups) में विभाजित किया गया: कला (Humanities), विज्ञान (Science), वाणिज्य (Commerce), कृषि (Agriculture), तकनीकी (Technical), सूक्ष्म कला (Fine Arts), और गृह विज्ञान (Home Science)।
  - अनिवार्य विषयों में मातृभाषा/प्रादेशिक भाषा, राष्ट्रभाषा (हिंदी/अंग्रेजी), सामान्य विज्ञान, सामाजिक अध्ययन और गणित को शामिल किया गया।
- **भाषा नीति:**
  - माध्यमिक स्तर पर त्रि-भाषा सूत्र (Three-Language Formula) का प्रारंभिक रूप प्रस्तावित किया गया, जिसमें मातृभाषा/क्षेत्रीय भाषा, राष्ट्रभाषा (हिंदी) और एक अन्य आधुनिक भाषा या अंग्रेजी शामिल थी।
- **परीक्षा एवं मूल्यांकन प्रणाली में सुधार:**

नोट

- बाह्य निबंधात्मक परीक्षाओं के महत्व को कम करके वस्तुनिष्ठ प्रश्नों (Objective Questions) को प्राथमिकता देने की सिफारिश की गई।
- छात्रों के सतत मूल्यांकन के लिए आंतरिक मूल्यांकन और संचयी आलेख पत्र (Cumulative Record Cards) की व्यवस्था लागू करने का सुझाव दिया गया।

- **शिक्षक प्रशिक्षण एवं कल्याण:**
  - माध्यमिक विद्यालयों के लिए प्रशिक्षित शिक्षकों की उपलब्धता हेतु 2 वर्षीय बी.एड. (B.Ed.) और एम.एड. (M.Ed.) पाठ्यक्रमों के संचालन का सुझाव दिया गया।

15.4.3 मुदालियर आयोग के गुण एवं सीमाएँ

गुण (Merits):

1. **व्यावहारिक दृष्टिकोण:**आयोग ने शिक्षा को केवल पुस्तकीय ज्ञान तक सीमित न रखकर तकनीकी और व्यावसायिक कौशलों से जोड़ा।
2. **बहुउद्देशीय विद्यालयों की अवधारणा:**इससे छात्रों को अपनी रुचि और योग्यता के अनुसार विषय चुनने का अवसर मिला।
3. **सतत मूल्यांकन पर बल:**निबंधात्मक परीक्षाओं के स्थान पर आंतरिक मूल्यांकन और वस्तुनिष्ठ प्रश्नों को बढ़ावा दिया गया।
4. **चरित्र निर्माण एवं नेतृत्व विकास:**शिक्षा के माध्यम से लोकतांत्रिक नागरिकता और चरित्र निर्माण के लक्ष्यों को रेखांकित किया गया।

सीमाएँ (Demerits / Limitations):

1. **वित्तीय संसाधनों का अभाव:**बहुउद्देशीय विद्यालयों और प्रयोगशालाओं की स्थापना के लिए आवश्यक वित्तीय संसाधनों की भारी कमी रही, जिससे सिफारिशें पूर्णतः लागू नहीं हो सकीं।

नोट

2. **जटिल पाठ्यक्रम:** 7 समूहों में पाठ्यक्रम का विभाजन कई ग्रामीण और छोटे विद्यालयों के लिए व्यावहारिक रूप से कठिन साबित हुआ।
3. **अंग्रेजी का स्पष्ट स्थान न होना:**भाषा नीति को लेकर स्पष्टता की कमी के कारण भाषाई भ्रम की स्थिति बनी रही।
4. **एकीकृत दृष्टि का अभाव:**आयोग का ध्यान केवल माध्यमिक शिक्षा पर केंद्रित था, जिससे प्राथमिक और उच्च शिक्षा के साथ इसका पूर्ण समन्वय नहीं हो सका।

15.5 राष्ट्रीय शिक्षा आयोग / कोठारी आयोग (1964-66)

माध्यमिक शिक्षा आयोग (मुदालियर आयोग) के प्रयासों के बावजूद भारतीय शिक्षा प्रणाली में एकीकृत दृष्टिकोण का अभाव था। प्राथमिक, माध्यमिक और उच्च शिक्षा अलग-अलग दिशाओं में कार्य कर रही थीं। इसी कमी को दूर करने के लिए भारत सरकार ने 14 जुलाई 1964 को विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (UGC) के तत्कालीन अध्यक्ष**डॉ. दौलत सिंह कोठारी**की अध्यक्षता में 'राष्ट्रीय शिक्षा आयोग' का गठन किया। इसे सामान्यतः**'कोठारी आयोग' (Kothari Commission)**के नाम से जाना जाता है।

यह स्वतंत्र भारत का पहला ऐसा शिक्षा आयोग था, जिसे किसी एक स्तर के बजाय संपूर्ण शिक्षा प्रणाली के पुनर्गठन और विकास पर विचार करने का कार्य सौंपा गया था। आयोग ने 29 जून 1966 को अपनी ऐतिहासिक रिपोर्ट**"शिक्षा और राष्ट्रीय विकास" (Education and National Development)**शीर्षक से प्रस्तुत की।

15.5.1 गठन, कार्यक्षेत्र एवं उद्देश्य

- **गठन:** 14 जुलाई 1964 को गठित। इसमें 17 सदस्य शामिल थे, जिनमें से 5 विदेशी शिक्षाविद् (अमेरिका, ब्रिटेन, रूस, फ्रांस और जापान से) भी शामिल थे, ताकि अंतर्राष्ट्रीय अनुभवों का लाभ उठाया जा सके।
- **कार्यक्षेत्र:**प्राथमिक शिक्षा से लेकर उच्च शिक्षा, व्यावसायिक शिक्षा, तकनीकी शिक्षा, शिक्षक प्रशिक्षण, तथा शिक्षा के प्रशासनिक एवं वित्तीय पहलुओं का सर्वांगीण अध्ययन करना।
- **मुख्य उद्देश्य:**

नोट

1. शिक्षा को भारत के सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक पुनरुत्थान का मुख्य साधन बनाना।
2. शिक्षा को जीवन और राष्ट्रीय विकास की आवश्यकताओं से जोड़ना।
3. राष्ट्रीय एकीकरण, सामाजिक समरसता और लोकतांत्रिक मूल्यों का सुदृढ़ीकरण करना।
4. देश में विज्ञान और प्रौद्योगिकी शिक्षा को बढ़ावा देना।

15.5.2 प्रमुख सिफारिशें

कोठारी आयोग ने भारतीय शिक्षा में क्रांतिकारी बदलाव हेतु निम्नलिखित प्रमुख सिफारिशें कीं:

1. शिक्षा का राष्ट्रीय ढाँचा (10+2+3 संरचना):

आयोग ने संपूर्ण देश में एक समान शैक्षिक संरचना लागू करने का सुझाव दिया:

- **10 वर्ष की सामान्य शिक्षा:** (5 वर्ष प्राथमिक + 3 वर्ष उच्च प्राथमिक + 2 वर्ष निम्न माध्यमिक)।
- **2 वर्ष की उच्चतर माध्यमिक शिक्षा:** (11वीं और 12वीं कक्षा)।
- **3 वर्ष का प्रथम स्नातक डिग्री पाठ्यक्रम:** (उच्च शिक्षा/विश्वविद्यालयी स्तर)।

2. त्रि-भाषा सूत्र (Three-Language Formula):

भाषाई समन्वय और राष्ट्रीय एकीकरण के लिए त्रि-भाषा सूत्र को संशोधित रूप में लागू करने की सिफारिश की:

- **मातृभाषा या क्षेत्रीय भाषा**
- **संघ की राजभाषा (हिंदी)**या गैर-हिंदी भाषी राज्यों में अंग्रेजी।
- **एक अन्य आधुनिक भारतीय भाषा या यूरोपीय भाषा** (जो पहली दो भाषाओं में शामिल न हो)।

3. शिक्षा और उत्पादकता (Education and Productivity):

नोट

- **कार्य अनुभव (Work Experience):**स्कूली शिक्षा के सभी स्तरों पर 'कार्य अनुभव' (हस्तशिल्प, कृषि, या औद्योगिक कार्य) को अनिवार्य विषय के रूप में शामिल करने का सुझाव दिया गया।
- **विज्ञान एवं गणित शिक्षा:**प्राथमिक स्तर से ही विज्ञान और गणित को शिक्षा का अभिन्न अंग बनाने पर बल दिया गया।

4. सामाजिक एवं राष्ट्रीय एकीकरण:

- **सामान्य स्कूल प्रणाली (Common School System):**जाति, वर्ग, धर्म या आय के भेदभाव के बिना सभी बच्चों को गुणवत्तापूर्ण और समान शिक्षा देने के लिए 'नेबरहुड स्कूल' (Neighborhood Schools) की अवधारणा पेश की गई।
- **सामाजिक सेवा:**छात्रों में श्रम का महत्व और सामुदायिक दायित्व विकसित करने के लिए सामाजिक सेवा और NCC/NSS को बढ़ावा देने की सिफारिश की गई।

5. शिक्षा पर राष्ट्रीय आय का 6% व्यय:

आयोग ने सिफारिश की कि देश के तीव्र विकास के लिए**राष्ट्रीय आय (GNP) का कम से कम 6% हिस्सा शिक्षा पर व्यय**किया जाना चाहिए।

6. शिक्षक शिक्षा और स्थिति सुधार:

- शिक्षकों के वेतनमान, कार्यदशाओं और सामाजिक प्रतिष्ठा में सुधार की सिफारिश की गई।
- शिक्षक प्रशिक्षण संस्थानों के पुनर्गठन और उनके निरंतर व्यावसायिक विकास पर बल दिया गया।

15.5.3 भारतीय शिक्षा प्रणाली पर कोठारी आयोग का प्रभाव

कोठारी आयोग की रिपोर्ट भारतीय शिक्षा के इतिहास में एक मील का पत्थर साबित हुई। इसके प्रभाव निम्नलिखित रूपों में देखे जा सकते हैं:

नोट

1. **प्रथम राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NPE 1968) का आधार:**कोठारी आयोग की सिफारिशों के आधार पर ही 1968 में भारत की पहली 'राष्ट्रीय शिक्षा नीति' घोषित की गई।
2. **समरूपता एवं मानकीकरण:** 10+2+3 की संरचना ने देश भर में बिखरी हुई शिक्षा प्रणालियों को एक राष्ट्रीय सूत्र में पिरोया।
3. **विज्ञान एवं तकनीकी शिक्षा को बढ़ावा:**आयोग के सुझावों से देश में वैज्ञानिक अनुसंधान, कृषि विश्वविद्यालयों और तकनीकी संस्थानों के विकास को नई दिशा मिली।
4. **सामाजिक न्याय और समानता:** 'समान स्कूल प्रणाली' और पिछड़े वर्गों तथा महिलाओं की शिक्षा पर दिए गए जोर ने शैक्षिक अवसरों की समानता को बढ़ावा दिया।

15.6 मुदालियर एवं कोठारी आयोग का तुलनात्मक विश्लेषण

स्वतंत्रता-उत्तर भारत में शिक्षा के पुनर्गठन और आधुनिक नीव रखने में माध्यमिक शिक्षा आयोग (मुदालियर आयोग, 1952-53) तथा राष्ट्रीय शिक्षा आयोग (कोठारी आयोग, 1964-66) दोनों की ऐतिहासिक भूमिका रही है। हालाँकि, इन दोनों आयोगों के कार्यक्षेत्र, दृष्टिकोण और सिफारिशों में स्पष्ट भिन्नता देखने को मिलती है।

नीचे तालिका के माध्यम से दोनों आयोगों का तुलनात्मक विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है:

तुलना का आधार	**मुदालियर आयोग (1952-53)**	**कोठारी आयोग (1964-66)**
अध्यक्ष	डॉ. अर्कट लक्ष्मणस्वामी मुदालियर	डॉ. दौलत सिंह कोठारी
मुख्य ध्यान/क्षेत्र	केवल**माध्यमिक शिक्षा**के सुधार पर केंद्रित।	प्राथमिक से लेकर उच्च शिक्षा तक**संपूर्ण शिक्षा प्रणाली**का सर्वांगीण अध्ययन।

नोट

प्रतिवेदन का शीर्षक	माध्यमिक शिक्षा आयोग की रिपोर्ट	शिक्षा और राष्ट्रीय विकास (Education and National Development)
प्रस्तावित संरचना	8 वर्ष जूनियर बेसिक + 3 वर्ष उच्चतर माध्यमिक (11 वर्षीय स्कूली शिक्षा)।	**10+2+3 संरचना** (10 वर्ष स्कूली शिक्षा + 2 वर्ष उच्चतर माध्यमिक + 3 वर्ष स्नातक)।
व्यावहारिक शिक्षा	बहुउद्देशीय विद्यालयों (Multipurpose Schools) और व्यावसायिक स्ट्रीम्स की सिफारिश।	**कार्य अनुभव (Work Experience)**और विज्ञान तथा गणित को अनिवार्य बनाने पर जोर।
समानता एवं पहुँच	विविधीकृत पाठ्यक्रम के माध्यम से व्यक्तिगत रुचियों को प्राथमिकता।	**सामान्य स्कूल प्रणाली (Common School System)**और नेबरहुड स्कूल की अवधारणा पर बल।
वित्तीय अनुशंसा	वित्तीय प्रावधानों और विशिष्ट बजट प्रतिशत पर स्पष्ट बल नहीं।	शिक्षा पर राष्ट्रीय आय (GNP) का**कम से कम 6%**व्यय करने की स्पष्ट सिफारिश।
अंतर्राष्ट्रीय भागीदारी	मुख्यतः भारतीय शिक्षाविद् ही शामिल थे।	रिपोर्ट तैयार करने में 5 देशों के विदेशी विशेषज्ञ भी शामिल थे।

तुलनात्मक निष्कर्ष:

- **मुदालियर आयोग**ने ब्रिटिश काल की एकांगी, सैद्धांतिक और क्लर्क बनाने वाली माध्यमिक शिक्षा प्रणाली को तोड़कर उसे विविध (Diversified) और व्यावसायिक बनाने का पहला ठोस प्रयास किया।
- **कोठारी आयोग**ने मुदालियर आयोग की सीमाओं को दूर करते हुए शिक्षा को केवल एक स्तर तक सीमित नहीं रखा, बल्कि इसे**"राष्ट्रीय विकास"**की पूरी

नोट

प्रक्रिया से जोड़ा। इसने देश भर में एक समान शैक्षिक संरचना (10+2+3) और राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1968 का मार्ग प्रशस्त किया।

1. मुदालियर आयोग (1952-53) को अन्य किस नाम से जाना जाता है?

(A) माध्यमिक शिक्षा आयोग

(B) विश्वविद्यालय शिक्षा आयोग

(C) राष्ट्रीय शिक्षा आयोग

(D) प्राथमिक शिक्षा आयोग

2. कोठारी आयोग (1964-66) के अध्यक्ष कौन थे?

(A) डॉ. दौलत सिंह कोठारी

(B) डॉ. एल. एस. मुदालियर

(C) डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन

(D) के. कस्तूरीरंगन

3. भारत में 10+2+3 शिक्षा संरचना का सुझाव सबसे पहले किस आयोग ने दिया था?

(A) कोठारी आयोग

(B) मुदालियर आयोग

(C) राधाकृष्णन आयोग

(D) हंटर आयोग

4. कोठारी आयोग की रिपोर्ट का शीर्षक क्या था?

(A) शिक्षा एवं राष्ट्रीय विकास (Education and National Development)

(B) स्वतंत्र भारत में शिक्षा

(C) शिक्षा का अधिकार

(D) भारत की नई शिक्षा प्रणाली

5. त्रि-भाषा सूत्र (Three-Language Formula) की सिफारिश किस आयोग द्वारा की गई थी?

(A) कोठारी आयोग

नोट

(B) राधाकृष्णन आयोग

(C) मुदालियर आयोग

(D) सार्जेंट योजना

15.7 सारांश (Summary)

- **ऐतिहासिक पृष्ठभूमि:**स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भारत की औपनिवेशिक एवं संकुचित ब्रिटिशकालीन शिक्षा प्रणाली में व्यापक मौलिक सुधारों की आवश्यकता महसूस की गई, ताकि इसे लोकतांत्रिक मूल्यों, सामाजिक समरसता और राष्ट्रीय पुनरुत्थान के अनुकूल बनाया जा सके।
- **मुदालियर आयोग (1952-53):**डॉ. अर्कट लक्ष्मणस्वामी मुदालियर की अध्यक्षता में गठित इस आयोग का मुख्य ध्यान**माध्यमिक शिक्षा के पुनर्गठन**पर केंद्रित था।
    - इसने 11 वर्षीय स्कूली शिक्षा प्रणाली (8 वर्ष जूनियर बेसिक + 3 वर्ष उच्चतर माध्यमिक) की सिफारिश की।
    - छात्रों की व्यक्तिगत रुचियों और व्यावसायिक दक्षताओं को बढ़ावा देने के लिए**बहुउद्देशीय विद्यालयों (Multipurpose Schools)**और 7 विविधीकृत वर्ग समूहों (Streams) की शुरुआत की।
    - मूल्यांकन में निबंधात्मक प्रश्नों का प्रभाव कम करके वस्तुनिष्ठ प्रश्नों और संचयी आलेख पत्रों (Cumulative Record Cards) के माध्यम से सतत आंतरिक मूल्यांकन पर बल दिया।
- **कोठारी आयोग (1964-66):**डॉ. दौलत सिंह कोठारी की अध्यक्षता में गठित राष्ट्रीय शिक्षा आयोग स्वतंत्र भारत का पहला आयोग था, जिसने प्राथमिक से लेकर उच्च शिक्षा तक**संपूर्ण शिक्षा प्रणाली का एकीकृत एवं सर्वांगीण सर्वेक्षण**किया।

नोट

- आयोग ने अपना प्रतिवेदन**"शिक्षा और राष्ट्रीय विकास"**शीर्षक से प्रस्तुत किया।
- संपूर्ण देश में एक समान**10+2+3 शिक्षा संरचना**लागू करने की सिफारिश की।
- भाषाई एकीकरण के लिए**त्रि-भाषा सूत्र (Three-Language Formula)**, सामाजिक समानता हेतु**सामान्य स्कूल प्रणाली (Common School System)**तथा शिक्षा को उत्पादकता से जोड़ने के लिए**कार्य अनुभव (Work Experience)**को अनिवार्य करने का सुझाव दिया।
- आयोग ने सिफारिश की कि देश की राष्ट्रीय आय (GNP) का कम से कम**6% हिस्सा शिक्षा पर व्यय**किया जाना चाहिए।

- **दीर्घकालिक प्रभाव:**मुदालियर आयोग ने माध्यमिक शिक्षा को एक सुदृढ़ दिशा दी, जबकि कोठारी आयोग की सिफारिशें भारत की**प्रथम राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1968**का मुख्य आधार बनीं और आधुनिक भारतीय शिक्षा प्रणाली के मानकीकरण में निर्णायक भूमिका निभाई।

15.8 शब्दावली (Glossary)

- **माध्यमिक शिक्षा आयोग (Secondary Education Commission):**वर्ष 1952-53 में डॉ. अर्कट लक्ष्मणस्वामी मुदालियर की अध्यक्षता में गठित आयोग, जिसका मुख्य उद्देश्य स्वतंत्र भारत में माध्यमिक शिक्षा की स्थिति का अध्ययन कर उसमें व्यापक सुधार हेतु सुझाव देना था। (इसे 'मुदालियर आयोग' भी कहा जाता है)।
- **राष्ट्रीय शिक्षा आयोग (National Education Commission):**वर्ष 1964-66 में डॉ. दौलत सिंह कोठारी की अध्यक्षता में गठित आयोग, जिसने भारत की संपूर्ण शिक्षा प्रणाली (प्राथमिक से उच्च शिक्षा तक) के पुनर्गठन के लिए अपनी रिपोर्ट प्रस्तुत की। (इसे 'कोठारी आयोग' भी कहा जाता है)।

नोट

- **बहुउद्देशीय विद्यालय (Multipurpose Schools):**मुदालियर आयोग द्वारा अनुशंसित ऐसे विद्यालय जहाँ छात्रों को उनकी रुचि, क्षमता और योग्यता के अनुसार विभिन्न प्रकार के विषय (जैसे कला, विज्ञान, वाणिज्य, कृषि, तकनीकी आदि) चुनने के विकल्प उपलब्ध कराए जाते हैं।
- **10+2+3 शिक्षा संरचना (10+2+3 Education Structure):**कोठारी आयोग द्वारा अनुशंसित देश भर में एक समान स्कूली एवं उच्च शिक्षा का ढाँचा— जिसमें 10 वर्ष की सामान्य स्कूली शिक्षा, 2 वर्ष की उच्चतर माध्यमिक शिक्षा और 3 वर्ष का प्रथम स्नातक डिग्री पाठ्यक्रम शामिल है।
- **त्रि-भाषा सूत्र (Three-Language Formula):**भाषाई समन्वय और राष्ट्रीय एकीकरण के लिए विकसित एक नीति, जिसके अंतर्गत विद्यालयों में तीन भाषाओं— मातृभाषा/क्षेत्रीय भाषा, राजभाषा (हिंदी/अंग्रेजी), और एक अन्य आधुनिक भारतीय या विदेशी भाषा का अध्ययन अनिवार्य किया गया।
- **सामान्य स्कूल प्रणाली (Common School System):**कोठारी आयोग द्वारा प्रस्तावित एक ऐसी व्यवस्था जिसमें सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमि या वर्ग के भेदभाव के बिना देश के सभी बच्चों को उनके पड़ोस के विद्यालयों (Neighborhood Schools) में समान एवं गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान की जाए।
- **कार्य अनुभव (Work Experience):**कोठारी आयोग द्वारा संस्तुत एक अवधारणा, जिसका उद्देश्य विद्यार्थियों में श्रम के प्रति सम्मान, व्यावहारिक ज्ञान और उत्पादकता को बढ़ावा देने के लिए हस्तशिल्प, कृषि या औद्योगिक गतिविधियों को स्कूली शिक्षा का अनिवार्य हिस्सा बनाना था।
- **संचयी आलेख पत्र (Cumulative Record Card):**छात्र के अकादमिक, शारीरिक, मानसिक, सामाजिक और व्यक्तित्व विकास का संपूर्ण तथा निरंतर दर्ज किया जाने वाला प्रपत्र, जिसका सुझाव पारंपरिक निबंधात्मक परीक्षाओं के विकल्प के रूप में आंतरिक मूल्यांकन हेतु दिया गया था।

15.9 बोध प्रश्नों के उत्तर

उत्तर: (A) माध्यमिक शिक्षा आयोग

नोट

उत्तर: (A) डॉ. दौलत सिंह कोठारी

उत्तर: (A) कोठारी आयोग

उत्तर: (A) शिक्षा एवं राष्ट्रीय विकास (Education and National Development)

उत्तर: (A) कोठारी आयोग

15.10 सुझावित अध्ययन सामग्री – मुक्त शैक्षिक संसाधन

1. eGyanKosh: Education Commissions in Post-Independence India (IGNOU)
2. NCERT: Kothari Commission Report (1964-66) Complete Text
3. Ministry of Education (Govt. of India): Secondary Education Commission (Mudaliar Commission)
4. OER Commons: Post-Independence Educational Reforms in India
5. Swayam: Development of Education System in India

15.11 संदर्भ ग्रन्थ

- **भारत सरकार, शिक्षा मंत्रालय (1953):** *माध्यमिक शिक्षा आयोग की रिपोर्ट (1952-53)* (मुदालियर आयोग रिपोर्ट), नई दिल्ली।
- **भारत सरकार, शिक्षा मंत्रालय (1966):** *शिक्षा और राष्ट्रीय विकास: राष्ट्रीय शिक्षा आयोग की रिपोर्ट (1964-66)* (कोठारी आयोग रिपोर्ट), नई दिल्ली।
- **अग्रवाल, जे. सी. (2010):** *आधुनिक भारतीय शिक्षा का इतिहास एवं समस्याएँ*, श्री विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा।
- **चौबे, एस. पी. एवं चौबे, अखिलेश (2015):** *भारतीय शिक्षा का इतिहास एवं उसकी समस्याएँ*, अवधारणा पब्लिशिंग कंपनी, नई दिल्ली।
- **राव, वी. के. (2004):** *स्वतंत्र भारत में शैक्षिक नीतियाँ एवं आयोग*, कल्याणी पब्लिशर्स, नई दिल्ली।

नोट

15.12 अभ्यास प्रश्न एवं स्वाध्याय कार्य (Exercises & Self-Assessment)

15.12.1 वस्तुनिष्ठ प्रश्न (Objective Questions)

प्रश्न 1. माध्यमिक शिक्षा आयोग (1952-53) के अध्यक्ष कौन थे?

(क) डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन

(ख) डॉ. अर्कट लक्ष्मणस्वामी मुदालियर

(ग) डॉ. दौलत सिंह कोठारी

(घ) मौलाना अबुल कलाम आजाद

प्रश्न 2. किस आयोग की सिफारिशों के आधार पर देश में 10+2+3 शिक्षा संरचना लागू की गई?

(क) राधाकृष्णन आयोग

(ख) मुदालियर आयोग

(ग) कोठारी आयोग

(घ) राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986

प्रश्न 3. बहुउद्देशीय विद्यालयों (Multipurpose Schools) की स्थापना का सुझाव किस आयोग ने दिया था?

(क) माध्यमिक शिक्षा आयोग

(ख) विश्वविद्यालय शिक्षा आयोग

(ग) राष्ट्रीय शिक्षा आयोग

(घ) राष्ट्रीय ज्ञान आयोग

प्रश्न 4. कोठारी आयोग ने शिक्षा पर राष्ट्रीय आय (GNP) का कितने प्रतिशत व्यय करने की सिफारिश की थी?

(क) 3%

नोट

(ख) 4%

(ग) 6%

(घ) 10%

15.12.2 लघु उत्तरीय प्रश्न (Short Answer Questions)

1. मुदालियर आयोग (1952-53) के गठन के मुख्य उद्देश्य क्या थे?
2. त्रि-भाषा सूत्र (Three-Language Formula) से आप क्या समझते हैं? संक्षेप में व्याख्या कीजिए।
3. कोठारी आयोग द्वारा प्रस्तावित 'सामान्य स्कूल प्रणाली' (Common School System) की अवधारणा को स्पष्ट कीजिए।
4. मुदालियर आयोग द्वारा अनुशंसित बहुउद्देशीय विद्यालयों की मुख्य विशेषताएँ क्या थीं?
5. कोठारी आयोग ने शिक्षा को 'उत्पादकता' से जोड़ने के लिए क्या सुझाव दिए?

15.12.3 निबंधात्मक प्रश्न (Long Answer Questions)

1. "स्वतंत्रता-उत्तर भारत में माध्यमिक शिक्षा के पुनर्गठन में मुदालियर आयोग का महत्वपूर्ण योगदान रहा है।" इस कथन के प्रकाश में मुदालियर आयोग की प्रमुख सिफारिशों, गुणों एवं सीमाओं का आलोचनात्मक विश्लेषण कीजिए।
2. राष्ट्रीय शिक्षा आयोग (कोठारी आयोग, 1964-66) की प्रमुख सिफारिशों का विस्तृत विवरण दीजिए और भारतीय शिक्षा प्रणाली के मानकीकरण पर पड़े इसके प्रभावों की विवेचना कीजिए।
3. स्वतंत्रता-उत्तर भारत के दो प्रमुख शिक्षा आयोगों— मुदालियर आयोग एवं कोठारी आयोग— का तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत कीजिए।

नोट

इकाई 16
राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 (NPE 1986)

इकाई संरचना (Unit Structure)

16.1 प्रस्तावना (Introduction)
16.2 उद्देश्य (Objectives)
16.3 राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 की पृष्ठभूमि एवं ऐतिहासिक संदर्भ
- 16.3.1 1968 की शिक्षा नीति का अवलोकन
- 16.3.2 1986 की नीति की आवश्यकता एवं प्रमुखलक्ष्य

16.4 NPE 1986 की मुख्य विशेषताएँ एवं संरचना
- 16.4.1 राष्ट्रीय शिक्षा प्रणाली (National System of Education)
- 16.4.2 10+2+3 की समान शैक्षिक संरचना
- 16.4.3 सारभूत पाठ्यचर्या (Core Curriculum)

16.5 समानता के लिए शिक्षा (Education for Equality)
- 16.5.1 महिला सशक्तीकरण एवं शिक्षा
- 16.5.2 अनुसूचित जाति, जनजाति एवं अल्पसंख्यक वर्गों के लिए प्रावधान
- 16.5.3 विकलांग एवं वंचित वर्गों के लिए समावेशी प्रयास

16.6 प्राथमिक शिक्षा का सार्वभौमीकरण एवं 'ऑपरेशन ब्लैकबोर्ड'
- 16.6.1 ऑपरेशन ब्लैकबोर्ड (Operation Blackboard) की अवधारणा एवं घटक
- 16.6.2 प्राथमिक विद्यालयों में न्यूनतम मूलभूत सुविधाओं का प्रावधान

16.7 माध्यमिक एवं उच्च शिक्षा में सुधार
- 16.7.1 नवोदय विद्यालय (Navodaya Vidyalayas) की स्थापना
- 16.7.2 व्यावसायिक शिक्षा (Vocational Education) पर बल
- 16.7.3 मुक्त विश्वविद्यालय एवं दूरस्थ शिक्षा (IGNOU का विकास)

16.8 कार्य योजना 1992 (Program of Action - POA 1992)
- 16.8.1 जनार्दन रेड्डी समिति की सिफारिशें
- 16.8.2 NPE 1986 में किए गए संशोधन

16.9 Open Educational Resources (OER) एवं डिजिटल संसाधनों का समावेश
16.10 NPE 1986 की प्रमुख उपलब्धियाँ एवं सीमाएँ
16.11 सारांश (Summary)
16.12 शब्दावली (Key Terms / Glossary)

नोट

16.13 बोध प्रश्नों के उत्तर
16.14 सुझावित अध्ययन सामग्री – मुक्त शैक्षिक संसाधन
16.15 संदर्भ ग्रन्थ
16.16 अभ्यास/अभ्यास प्रश्न (Exercises / Model Questions)

16.1 प्रस्तावना (Introduction)

किसी भी राष्ट्र के सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक विकास का मूल आधार उसकी शिक्षा प्रणाली होती है। स्वतंत्र भारत में शिक्षा के पुनर्गठन और दिशा-निर्देशन के लिए समय-समय पर विभिन्न आयोगों और नीतियों का गठन किया गया। 1968 की पहली राष्ट्रीय शिक्षा नीति के बाद, देश में तेज़ी से बदलते सामाजिक-आर्थिक परिदृश्य, तकनीकी प्रगति और बढ़ती जनसंख्या की आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए एक नई और अधिक व्यावहारिक शिक्षा नीति की आवश्यकता महसूस की गई। इसी परिप्रेक्ष्य में तत्कालीन प्रधानमंत्री राजीव गांधी के नेतृत्व में **राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 (NPE 1986)**तैयार की गई।

NPE 1986 भारत की शैक्षिक यात्रा में एक युगांतरकारी मोड़ सिद्ध हुई। इसने न केवल संपूर्ण देश में एक समान शैक्षिक संरचना (10+2+3) को सुदृढ़ किया, बल्कि "समानता के लिए शिक्षा" को अपना केंद्रीय लक्ष्य बनाया। इस नीति ने प्राथमिक स्तर पर न्यूनतम मूलभूत सुविधाएँ उपलब्ध कराने के लिए 'ऑपरेशन ब्लैकबोर्ड' जैसी ऐतिहासिक योजना शुरू की और ग्रामीण प्रतिभाओं को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा देने हेतु 'नवमी/नवोदय विद्यालयों' की नींव रखी। इसके अतिरिक्त, शैक्षिक प्रौद्योगिकी के उपयोग और दूरस्थ शिक्षा के माध्यम से उच्च शिक्षा की पहुँच को सर्वसुलभ बनाने पर विशेष बल दिया गया। प्रस्तुत इकाई में हम NPE 1986 के प्रमुख घटकों, इसकी कार्यान्वयन रणनीति और भारतीय शिक्षा पर इसके दूरगामी प्रभावों का विस्तार से अध्ययन करेंगे।

16.2 उद्देश्य (Objectives)

इस इकाई का अध्ययन करने के पश्चात् आप:

- राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 (NPE 1986) की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि और इसे लागू करने के मुख्य कारणों को समझ सकेंगे।

नोट

- राष्ट्रीय शिक्षा प्रणाली के ढाँचे, जैसे कि 10+2+3 की समान संरचना और सारभूत पाठ्यचर्या (Core Curriculum) का विश्लेषण कर सकेंगे।
- 'ऑपरेशन ब्लैकबोर्ड' और प्राथमिक शिक्षा के सार्वभौमीकरण हेतु किए गए प्रयासों की व्याख्या कर सकेंगे।
- समानता के लिए शिक्षा—विशेष रूप से महिलाओं, अनुसूचित जाति/जनजाति और वंचित वर्गों के लिए किए गए नीतिगत प्रावधानों का मूल्यांकन कर सकेंगे।
- नवोदय विद्यालयों की भूमिका तथा व्यावसायिक व दूरस्थ शिक्षा (IGNOU) के प्रसार को समझ सकेंगे।
- कार्य योजना 1992 (POA 1992) द्वारा नीति में किए गए संशोधनों एवं modern परिदृश्य में OER (मुक्त शैक्षिक संसाधनों) के महत्व को रेखांकित कर सकेंगे।

16.3 राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 की पृष्ठभूमि एवं ऐतिहासिक संदर्भ *(Background and Historical Context of NPE 1986)*

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 का निर्माण भारतीय शिक्षा के इतिहास में एक अत्यंत महत्वपूर्ण और दूरगामी घटना थी। स्वतंत्रता के पश्चात् भारत में शिक्षा प्रणाली को सुदृढ़, सर्वसुलभ और राष्ट्र निर्माण के अनुकूल बनाने के लिए समय-समय पर अनेक प्रयास किए गए, परंतु 1980 के दशक तक पहुँचते-पहुँचते देश में सामाजिक, आर्थिक और तकनीकी स्तर पर व्यापक बदलाव आए। इन नई चुनौतियों और आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए एक नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति की रूपरेखा तैयार की गई।

इस अनुभाग में हम नीति के ऐतिहासिक संदर्भ और इसकी आवश्यकता के प्रमुख कारणों का विस्तृत अध्ययन करेंगे:

16.3.1 1968 की शिक्षा नीति का अवलोकन

(Overview of the National Policy on Education, 1968)

स्वतंत्र भारत की पहली**राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1968**में तत्कालीन प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी के कार्यकाल में घोषित की गई थी। यह नीति मुख्य रूप से 1964-66 के**कोठारी आयोग (Kothari Commission)**की सिफारिशों पर आधारित थी।

नोट

- **मुख्य लक्ष्य व प्रावधान:**
    - **समान शैक्षिक संरचना (10+2+3):**देश भर में एक समान शिक्षा संरचना लागू करने की संस्तुति की गई।
    - **त्रिभाषा सूत्र (Three-Language Formula):**क्षेत्रीय भाषाओं, हिंदी और अंग्रेजी के संतुलित विकास के लिए त्रिभाषा सूत्र अपनाने पर बल दिया गया।
    - **अनिवार्य एवं निःशुल्क शिक्षा:** 14 वर्ष तक के सभी बच्चों के लिए संविधान के अनुच्छेद 45 के अनुरूप सार्वभौमिक और अनिवार्य शिक्षा का लक्ष्य रखा गया।
    - **जीडीपी का 6% व्यय:**शिक्षा पर राष्ट्रीय आय (जीडीपी) का कम से कम 6% खर्च करने का संकल्प लिया गया।
- **1968 की नीति की सीमाएँ एवं चुनौतियाँ:**
    - **कार्यान्वयन में कमी:**वित्तीय संसाधनों की भारी कमी और प्रशासनिक इच्छाशक्ति के अभाव के कारण नीति के कई महत्वपूर्ण प्रस्ताव कागजों तक ही सीमित रह गए।
    - **क्षेत्रीय विषमताएँ:**देश के विभिन्न राज्यों के बीच शैक्षिक गुणवत्ता और सुविधाओं में गहरा अंतर बना रहा।
    - **गुणवत्ता और पहुँच का अभाव:**प्राथमिक विद्यालयों में मूलभूत सुविधाओं (जैसे- भवन, ब्लैकबोर्ड, पेयजल, योग्य शिक्षक) का अत्यंत अभाव था, जिससे बीच में ही पढ़ाई छोड़ने (Dropout) की दर बहुत अधिक थी।

16.3.2 1986 की नीति की आवश्यकता एवं प्रमुख लक्ष्य

(Need and Major Objectives of NPE 1986)

1980 के दशक के मध्य में तत्कालिक प्रधानमंत्री राजीव गांधी के नेतृत्व में सरकार ने माना कि 21वीं सदी की ओर बढ़ते भारत के लिए शिक्षा प्रणाली में क्रांतिकारी सुधार

नोट

अति आवश्यक हैं। 1985 में भारत सरकार के मानव संसाधन विकास मंत्रालय द्वारा**"शिक्षा की चुनौती: नीतिगत परिप्रेक्ष्य" (Challenge of Education: A Policy Perspective)**नामक एक दस्तावेज़ प्रस्तुत किया गया, जिसने देश भर में एक व्यापक बहस को जन्म दिया। इसके फलस्वरूप 1986 में नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NPE 1986) संसद द्वारा स्वीकृत की गई।

1986 की नीति की आवश्यकता और इसके मुख्य लक्ष्य निम्नलिखित थे:

1. **21वीं सदी की चुनौतियों की तैयारी:**
    - तेजी से विकसित हो रही सूचना प्रौद्योगिकी (IT) और आधुनिक विज्ञान के युग में भारतीय युवाओं को वैश्विक स्तर पर प्रतिस्पर्धी बनाने के लिए शिक्षा के आधुनिकीकरण की तत्काल आवश्यकता थी।
2. **समानता और सामाजिक न्याय का संवर्धन:**
    - स्वतंत्रता के दशकों बाद भी महिलाओं, अनुसूचित जातियों (SC), अनुसूचित जनजातियों (ST), अल्पसंख्यकों और ग्रामीण आबादी के बीच साक्षरता दर काफी कम थी। नीति का मुख्य उद्देश्य इन असमानताओं को दूर कर शिक्षा को समाज के अंतिम व्यक्ति तक पहुँचाना था।
3. **प्राथमिक शिक्षा में सुधार और ड्रॉप-आउट रोकना:**
    - प्राथमिक विद्यालयों में विद्यार्थियों के ठहराव (Retention) को बढ़ाने और ड्रॉप-आउट दर को घटाने के लिए विद्यालयों के भौतिक ढाँचे और शिक्षण पद्धति में अमूलचूल सुधार की आवश्यकता महसूस की गई।
4. **आंतरिक राष्ट्र-निर्माण और धर्मनिरपेक्षता:**
    - भारत की विविधता में एकता को सुदृढ़ करने के लिए एक ऐसी साझा पाठ्यचर्या की आवश्यकता थी जो राष्ट्रीय मूल्यों, धर्मनिरपेक्षता, लोकतंत्र, और पर्यावरण संरक्षण के प्रति जागरूकता बढ़ा सके।
5. **उच्च एवं व्यावसायिक शिक्षा की गुणवत्ता बढ़ाना:**

नोट

- केवल डिग्री बाँटने के बजाय शिक्षा को रोजगार से जोड़ने (Vocationalization) तथा दूरस्थ एवं मुक्त शिक्षा (Distance Education) का प्रसार कर उच्च शिक्षा की पहुँच बढ़ाने पर विशेष बल देने का लक्ष्य निर्धारित किया गया।

16.4 NPE 1986 की मुख्य विशेषताएँ एवं संरचना *(Major Features and Structure of NPE 1986)*

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 का मुख्य ध्येय संपूर्ण देश में शिक्षा का एक एकीकृत और गुणवत्तापूर्ण ढाँचा तैयार करना था, जिससे क्षेत्रीय और सामाजिक असमानताओं को मिटाया जा सके। इस नीति के अंतर्गत भारत में पहली बार एक सुव्यवस्थित राष्ट्रीय शिक्षा प्रणाली की नींव रखी गई।

इस अनुभाग में हम नीति की तीन मुख्य विशेषताओं और संरचनात्मक घटकों का विस्तृत अध्ययन करेंगे:

16.4.1 राष्ट्रीय शिक्षा प्रणाली (National System of Education)

(Concept of National System of Education)

NPE 1986 ने 'राष्ट्रीय शिक्षा प्रणाली' की अवधारणा प्रस्तुत की, जिसका मूल सिद्धांत यह था कि लिंग, जाति, स्थान या वर्ग के भेदभाव के बिना, निश्चित स्तर तक सभी छात्रों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा की समान पहुँच प्राप्त होनी चाहिए।

- **एकीकृत शैक्षिक दृष्टिकोण:**यह प्रणाली देश के सभी राज्यों और संघ राज्य क्षेत्रों में शिक्षा के स्तर में समानता लाने और एक साझा राष्ट्रीय पहचान विकसित करने पर बल देती है।
- **संसाधनों का न्यायसंगत वितरण:**इसके तहत पिछड़े, ग्रामीण और दुर्गम क्षेत्रों के विद्यालयों को प्राथमिक संसाधन और अनुदान प्राथमिकता के आधार पर उपलब्ध कराने का संकल्प लिया गया।

नोट

- **शिक्षकों एवं विद्यार्थियों की गतिशीलता (Mobility):**एक राष्ट्रीय ढाँचा होने से छात्रों और शिक्षकों के लिए एक राज्य से दूसरे राज्य में स्थानांतरण के बाद भी शिक्षा जारी रखना आसान हो गया।

16.4.2 10+2+3 की समान शैक्षिक संरचना

(Uniform Educational Structure: 10+2+3 Pattern)

यद्यपि 10+2+3 की संरचना की सिफारिश 1968 की नीति में भी की गई थी, लेकिन NPE 1986 ने इसे संपूर्ण देश में अनिवार्य रूप से और प्रभावी ढंग से लागू किया। इस संरचना को निम्नलिखित रूप से विभाजित किया गया:

- **10 वर्ष की प्राथमिक व माध्यमिक शिक्षा:**
    - **5 वर्ष:**प्राथमिक शिक्षा (कक्षा 1 से 5)
    - **3 वर्ष:**उच्च प्राथमिक शिक्षा (कक्षा 6 से 8)
    - **2 वर्ष:**माध्यमिक शिक्षा (कक्षा 9 और 10)
- **2 वर्ष की उच्च माध्यमिक शिक्षा:**
    - कक्षा 11 और 12, जहाँ छात्रों को कला, विज्ञान, वाणिज्य या व्यावसायिक (Vocational) विषयों का चयन करने का विकल्प दिया गया।
- **3 वर्ष की स्नातक (उच्च) शिक्षा:**
    - विश्वविद्यालयी स्तर पर 3 वर्षीय स्नातक पाठ्यक्रम (B.A., B.Sc., B.Comआदि)।

16.4.3 सारभूत पाठ्यचर्या (Core Curriculum)

(National Core Curriculum Framework)

राष्ट्रीय शिक्षा प्रणाली को व्यावहारिक रूप देने के लिए एक राष्ट्रीय पाठ्यचर्या ढाँचा (National Curriculum Framework) तैयार किया गया, जिसमें एक**'सारभूत पाठ्यचर्या' (Core Curriculum)**को शामिल किया गया। यह कोर पाठ्यक्रम देश के सभी विद्यालयों में समान रूप से लागू किया गया, चाहे वे किसी भी राज्य में स्थित हों।

नोट

- **सारभूत पाठ्यचर्या के मुख्य घटक:**

    1. **स्वतंत्रता आंदोलन का इतिहास:**भारत के स्वतंत्रता संग्राम और राष्ट्रीय नायकों के योगदान की जानकारी।
    2. **संवैधानिक दायित्व:**भारतीय संविधान के मूल्यों, अधिकारों और नागरिक कर्तव्यों का समावेश।
    3. **राष्ट्रीय पहचान एवं संवर्धन:**राष्ट्रीय प्रतीकों, राष्ट्रगान और सांस्कृतिक विरासत के प्रति सम्मान।
    4. **समानता और धर्मनिरपेक्षता:**लोकतंत्र, धर्मनिरपेक्षता और लिंग समानता (Gender Equality) का संवर्धन।
    5. **पर्यावरण संरक्षण:**पर्यावरण के प्रति संवेदनशीलता और सतत विकास की भावना।
    6. **छोटा परिवार मानक (Small Family Norm):**जनसंख्या शिक्षा को पाठ्यचर्या का हिस्सा बनाना।
    7. **वैज्ञानिक दृष्टिकोण:**अंधविश्वासों को दूर कर छात्रों में वैज्ञानिक सोच (Scientific Temper) विकसित करना।

16.5 समानता के लिए शिक्षा (Education for Equality)

(Education for Equality)

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 का सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण और क्रांतिकारी दर्शन "समानता के लिए शिक्षा" (Education for Equality) था। नीति निर्माताओं ने यह स्पष्ट स्वीकार किया कि स्वतंत्रता के लगभग चार दशकों बाद भी समाज के वंचित, शोषित और पिछड़े वर्गों तक शिक्षा की पहुँच सीमित थी। अतः NPE 1986 ने केवल अवसरों की समानता की बात नहीं की, बल्कि असमानताओं को दूर करने के लिए विशेष सकारात्मक कार्रवाई (Positive Affirmative Action) पर बल दिया।

नोट

इस अनुभाग में हम समानता सुनिश्चित करने के लिए नीति द्वारा किए गए मुख्य प्रावधानों का विस्तृत विश्लेषण करेंगे:

16.5.1 महिला सशक्तीकरण एवं शिक्षा

(Education for Women's Equality)

NPE 1986 ने महिलाओं की शिक्षा को केवल साक्षरता तक सीमित न रखकर इसे**महिला सशक्तीकरण (Women Empowerment)**का सशक्त माध्यम माना। नीति ने माना कि जब तक महिलाओं की स्थिति में बदलाव नहीं आएगा, तब तक सामाजिक विकास संभव नहीं है।

- **पाठ्यचर्या में बदलाव:**पाठ्यपुस्तकों और शिक्षण सामग्री से लैंगिक रूढ़िवादिता (Gender Stereotypes) और पूर्वाग्रहों को हटाने के निर्देश दिए गए।
- **विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी में भागीदारी:**महिलाओं और लड़कियों को विज्ञान, गणित और तकनीकी/व्यावसायिक पाठ्यक्रमों में प्रवेश के लिए प्रोत्साहित किया गया।
- **विशेष योजनाएँ:**बालिका शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए प्राथमिकता के आधार पर प्राथमिक विद्यालय स्थापित किए गए और महिला शिक्षकों की नियुक्ति पर विशेष ध्यान दिया गया।
- **महिला समाख्या कार्यक्रम:** 1989 में NPE 1986 की प्राथमिकताओं के तहत 'महिला समाख्या' कार्यक्रम शुरू किया गया, जिसका उद्देश्य ग्रामीण और सामाजिक रूप से पिछड़े वर्गों की महिलाओं में आत्म-विश्वास और शिक्षा के प्रति जागरूकता पैदा करना था।

16.5.2 अनुसूचित जाति, जनजाति एवं अल्पसंख्यक वर्गों के लिए प्रावधान

(Education of Scheduled Castes, Scheduled Tribes, and Minorities)

अनुसूचित जातियों (SC), अनुसूचित जनजातियों (ST) और अन्य सामाजिक रूप से पिछड़े वर्गों को शिक्षा की मुख्यधारा से जोड़ने के लिए नीति में कई विशेष रियायतें और सुविधाएँ प्रदान की गईं:

नोट

- **अनुसूचित जातियों (SC) के लिए प्रावधान:**
    - **छात्रवृत्तियाँ एवं प्रोत्साहन:**गरीब परिवारों के बच्चों को नियमित विद्यालय भेजने के लिए विशेष छात्रवृत्तियाँ (Scholarships) और मुफ्त पाठ्यपुस्तकों/यूनिफॉर्म की व्यवस्था की गई।
    - **शिक्षकों की नियुक्ति:** SC समुदाय के योग्य व्यक्तियों को प्राथमिक विद्यालयों में शिक्षक के रूप में नियुक्त करने में प्राथमिकता दी गई।
    - **आवास और विद्यालय:**अनुसूचित जाति बहुल बस्तियों में प्राथमिकता के आधार पर नए प्राथमिक विद्यालय खोले गए।
- **अनुसूचित जनजातियों (ST) के लिए प्रावधान:**
    - **मातृभाषा में शिक्षा:**जनजातीय क्षेत्रों में प्राथमिक स्तर की शिक्षा बच्चों की स्थानीय बोली/मातृभाषा में देने पर बल दिया गया।
    - **आश्रम शालाएँ (Ashram Schools):**दुर्गम पहाड़ी और जनजातीय क्षेत्रों में आवासीय 'आश्रम विद्यालयों' की स्थापना की गई ताकि बच्चों को रहने और पढ़ने की नि:शुल्क सुविधा मिल सके।
    - **विशेष पाठ्य सामग्री:**जनजातीय संस्कृति, कला और जीवनशैली को सम्मान देने वाली पाठ्य सामग्री तैयार की गई।
- **अल्पसंख्यक वर्गों (Minorities) के लिए प्रावधान:**
    - धार्मिक एवं भाषाई अल्पसंख्यकों के बच्चों की शिक्षा पर विशेष ध्यान देने हेतु उनके द्वारा संचालित शिक्षण संस्थाओं को मान्यता और अनुदान देने की प्रक्रिया को सुगम बनाया गया।
    - मदरसा शिक्षा का आधुनिकीकरण करने तथा उसमें विज्ञान, गणित और अंग्रेजी जैसे आधुनिक विषयों को जोड़ने के लिए प्रोत्साहन दिया गया।

16.5.3 विकलांग एवं वंचित वर्गों के लिए समावेशी प्रयास

(Education of the Handicapped and Disadvantaged)

नोट

NPE 1986 ने शारीरिक और मानसिक रूप से दिव्यांग बच्चों की शिक्षा के लिए समेकित/समावेशी शिक्षा (Integrated Education) की आवश्यकता पर बल दिया:

- **समेकित शिक्षा (Integrated Education):**सामान्य या हल्के रूप से विकलांग बच्चों को सामान्य विद्यालयों में ही सामान्य बच्चों के साथ पढ़ाने की नीति बनाई गई, जिससे उनमें हीनभावना न पनपे।
- **विशेष विद्यालय:**गंभीर रूप से विकलांग बच्चों के लिए जिला स्तर या क्षेत्रीय स्तर पर विशेष आवासीय विद्यालयों और प्रशिक्षण केंद्रों की व्यवस्था की गई।
- **शिक्षक प्रशिक्षण:**सामान्य शिक्षकों को दिव्यांग बच्चों की मनोवैज्ञानिक और भौतिक आवश्यकताओं को समझने तथा उन्हें पढ़ाने के लिए विशेष प्रशिक्षण देने का प्रावधान किया गया।
- **प्रौढ़ शिक्षा (Adult Education):** 15 से 35 वर्ष के निरक्षर और वंचित वयस्कों के लिए राष्ट्रीय साक्षरता मिशन (National Literacy Mission - 1988) की शुरुआत की गई, जो NPE 1986 का ही एक प्रत्यक्ष परिणाम था।

16.6 प्राथमिक शिक्षा का सार्वभौमीकरण एवं 'ऑपरेशन ब्लैकबोर्ड'

(Universalization of Primary Education and 'Operation Blackboard')

प्राथमिक शिक्षा का सार्वभौमीकरण (Universalization of Elementary Education - UEE) राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 का एक प्रमुख राष्ट्रीय लक्ष्य था। नीति निर्माताओं का मानना था कि जब तक प्राथमिक स्तर पर शत-प्रतिशत नामांकन (Enrollment) और ठहराव (Retention) हासिल नहीं किया जाता, तब तक साक्षरता और सामाजिक विकास का सपना अधूरा रहेगा।

इस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए NPE 1986 के अंतर्गत**'ऑपरेशन ब्लैकबोर्ड' (Operation Blackboard)**नामक एक ऐतिहासिक एवं महत्वाकांक्षी योजना की शुरुआत की गई।

16.6.1 ऑपरेशन ब्लैकबोर्ड की अवधारणा एवं घटक

(Concept and Components of Operation Blackboard)

नोट

1987-88 में शुरू की गई 'ऑपरेशन ब्लैकबोर्ड' योजना एक युद्धस्तर पर चलाया गया अभियान था, जिसका मुख्य उद्देश्य देश के प्राथमिक विद्यालयों में न्यूनतम आवश्यक भौतिक और मानवीय सुविधाएँ उपलब्ध कराना था। जैसे किसी सैन्य ऑपरेशन में त्वरित और ठोस कार्रवाई की जाती है, वैसे ही प्राथमिक शिक्षा की दुर्दशा को सुधारने के लिए इस योजना को लागू किया गया।

- **मुख्य घटक (Key Components):**

    1. **भौतिक ढाँचा (Physical Infrastructure):**प्रत्येक प्राथमिक विद्यालय में कम से कम दो विशाल, पक्के और सभी मौसमों में उपयोगी कमरे (Classrooms) तथा उनके साथ एक बरामदा होना अनिवार्य किया गया।
    2. **मानवीय संसाधन (Human Resources):**प्रत्येक विद्यालय में न्यूनतम दो शिक्षक (जहाँ तक संभव हो, उनमें से एक महिला शिक्षक) की नियुक्ति का प्रावधान किया गया, ताकि एकल-शिक्षक विद्यालयों (Single-Teacher Schools) की समस्या समाप्त हो सके।
    3. **प्रसाधन सुविधाएँ (Sanitation):**छात्र और छात्राओं के लिए अलग-अलग शौचालयों तथा पेयजल की समुचित व्यवस्था करना।

16.6.2 प्राथमिक विद्यालयों में न्यूनतम मूलभूत सुविधाओं का प्रावधान

(Provision of Minimum Essential Facilities in Primary Schools)

ऑपरेशन ब्लैकबोर्ड के तहत प्रत्येक प्राथमिक विद्यालय को एक निश्चित**'शिक्षण-अधिगम सामग्री किट' (Teaching-Learning Equipment Kit)**प्रदान की गई, ताकि पढ़ाई केवल किताबों तक सीमित न रहकर गतिविधि-आधारित (Activity-based) बन सके।

इस किट में निम्नलिखित आवश्यक सामग्रियाँ शामिल थीं:

श्रेणी	उपलब्ध कराई गई सामग्रियाँ

नोट

शिक्षण सामग्री	ब्लैकबोर्ड, चौक, डस्टर, शिक्षक संदर्भ पुस्तकें (Teacher Guides)।
टीएलएम (TLM)	नक्शे (मानचित्र), ग्लोब, दीवार चार्ट, गणितीय किट (Counting Rods/Abacus)।
खेल एवं मनोरंजन	प्राथमिक खेल सामग्री (गेंद, रस्सी, खिलौने) तथा संगीत उपकरण (जैसे ढोलक/मंजीरा)।
अन्य आवश्यक उपकरण	प्राथमिक चिकित्सा किट (First Aid Box), कूड़ेदान, शौचालय हेतु बाल्टी व मग।

16.6.3 प्राथमिक शिक्षा के सार्वभौमीकरण पर प्रभाव

(Impact on Universalization of Primary Education)

- **ड्रॉप-आउट दर में कमी:**विद्यालयों के वातावरण में सुधार और महिला शिक्षकों की नियुक्ति से विशेषकर बालिकाओं के ठहराव (Retention) में उल्लेखनीय वृद्धि हुई और पढ़ाई बीच में छोड़ने (Drop-out) की दर घटी।
- **शिक्षकों की गुणवत्ता और प्रशिक्षण:**शिक्षकों को इन सामग्रियों का सही उपयोग सिखाने के लिए बड़े पैमाने पर 'ऑपरेशन ब्लैकबोर्ड विशेष शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम' (PMOST) चलाए गए।
- **योजना का विस्तार (1993-94):** 1992 की समीक्षा के बाद इस योजना का विस्तार उच्च प्राथमिक (Upper Primary) विद्यालयों तक भी किया गया, जहाँ 100 से अधिक छात्रों वाले विद्यालयों में तीसरे कमरे और तीसरे शिक्षक का प्रावधान जोड़ा गया।

16.7 माध्यमिक एवं उच्च शिक्षा में सुधार

(Reforms in Secondary and Higher Education)

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 ने केवल प्राथमिक स्तर तक ही ध्यान सीमित नहीं रखा, बल्कि माध्यमिक और उच्च शिक्षा के स्तर पर भी दूरगामी सुधारों का ढाँचा तैयार किया। इस

नोट

नीति का उद्देश्य माध्यमिक शिक्षा को गुणवत्तापूर्ण बनाना, ग्रामीण प्रतिभाओं को अवसर प्रदान करना तथा उच्च शिक्षा को आधुनिक एवं सर्वसुलभ बनाना था।

इस अनुभाग में हम माध्यमिक और उच्च शिक्षा में सुधार के लिए शुरू की गई मुख्य पहलों का विस्तृत अध्ययन करेंगे:

16.7.1 नवोदय विद्यालय (Navodaya Vidyalayas) की स्थापना

(Establishment of Navodaya Vidyalayas / Pace-Setting Schools)

NPE 1986 की सबसे चर्चित और सफल पहलों में से एक**जवाहर नवोदय विद्यालयों (JNVs)**की स्थापना थी। नीति ने माना कि ग्रामीण क्षेत्रों में अपार प्रतिभाएँ छिपी हुई हैं, जिन्हें संसाधनों के अभाव में सही अवसर नहीं मिल पाता।

- **मुख्य विशेषताएँ एवं उद्देश्य:**
    - **पेस-सेटिंग स्कूल (Pace-Setting Schools):**नवोदय विद्यालयों को गति-निर्धारक (Pace-setting) मॉडल स्कूल के रूप में विकसित किया गया, जो अन्य स्थानीय विद्यालयों के लिए गुणवत्ता का मानक तय करते हैं।
    - **ग्रामीण प्रतिभाओं की खोज:**इन विद्यालयों में कम से कम**75% सीटें ग्रामीण क्षेत्रों के बच्चों के लिए आरक्षित**रखी गईं।
    - **पूर्णतः निःशुल्क एवं आवासीय:**चयनित छात्रों को कक्षा 6 से 12 तक निःशुल्क आवास, भोजन, पाठ्यपुस्तकों और गुणवत्तापूर्ण शिक्षा की सुविधा दी जाती है।
    - **राष्ट्रीय एकता एवं सांस्कृतिक आदान-प्रदान:**त्रिभाषा सूत्र को लागू करते हुए, गैर-हिंदी भाषी राज्यों और हिंदी भाषी राज्यों के नवोदय विद्यालयों के बीच कक्षा 9 के छात्रों के स्थानांतरण (Migration Scheme) की व्यवस्था की गई, जिससे राष्ट्रीय एकीकरण को बल मिला।

16.7.2 व्यावसायिक शिक्षा (Vocational Education) पर बल

(Emphasis on Vocationalization of Education)

नोट

माध्यमिक स्तर पर केवल सैद्धांतिक शिक्षा देने के बजाय शिक्षा को रोजगार से जोड़ने के लिए NPE 1986 ने**व्यावसायिक शिक्षा (Vocationalization of Secondary Education)**पर विशेष बल दिया।

- **उद्देश्य एवं लक्ष्य:**
    - उच्च माध्यमिक स्तर (+2 स्तर) पर छात्रों को ऐसे व्यावहारिक और तकनीकी कौशल सिखाना जिससे वे सीधे स्वरोजगार या रोजगार प्राप्त कर सकें।
    - 1990 तक +2 स्तर के 10% तथा 1995 तक 25% छात्रों को व्यावसायिक धाराओं (Vocational Streams) में लाने का लक्ष्य निर्धारित किया गया।
- **पाठ्यक्रम एवं उद्योग संबंध:**
    - कृषि, स्वास्थ्य, वाणिज्य, इंजीनियरिंग और गृह विज्ञान जैसे क्षेत्रों में विविध प्रकार के अल्पावधि व दीर्घावधि व्यावसायिक पाठ्यक्रम शुरू किए गए।
    - इन पाठ्यक्रमों को स्थानीय उद्योगों और व्यापारिक घरानों की जरूरतों के अनुरूप डिजाइन करने की सिफारिश की गई।

16.7.3 मुक्त विश्वविद्यालय एवं दूरस्थ शिक्षा (IGNOU का विकास)

(Open Universities and Distance Education: Expansion of IGNOU)

उच्च शिक्षा के क्षेत्र में अवसरों का विस्तार करने और उन लोगों तक शिक्षा पहुँचाने के लिए जो औपचारिक शिक्षा प्रणाली से वंचित रह गए थे, NPE 1986 ने मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा (Open and Distance Education) को एक सशक्त माध्यम के रूप में अपनाया।

- **इग्नू (IGNOU) की सुदृढ़ीकरण भूमिका:**
    - 1985 में स्थापित**इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय (IGNOU)**को दूरस्थ शिक्षा के राष्ट्रीय केंद्र और नियामक के रूप में सुदृढ़ किया गया।

नोट

- **राज्य मुक्त विश्वविद्यालयों की स्थापना:** IGNOU के सफल मॉडल को देखते हुए विभिन्न राज्यों में भी राज्य मुक्त विश्वविद्यालयों (State Open Universities) और मुक्त विद्यालयों (National Open School / NIOS) की स्थापना को प्रोत्साहन दिया गया।
- **लचीली अधिगम प्रणाली:**दूरस्थ शिक्षा प्रणाली ने छात्रों को समय, आयु और स्थान के लचीलेपन के साथ उच्च शिक्षा प्राप्त करने का अवसर दिया, जिससे उच्च शिक्षा में सकल नामांकन अनुपात (GER) में वृद्धि हुई।

16.8 कार्य योजना 1992 (Program of Action - POA 1992)

(Program of Action - POA 1992)

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 के लागू होने के कुछ वर्षों बाद, इसके क्रियान्वयन और व्यावहारिक परिणामों की समीक्षा करने की आवश्यकता महसूस की गई। देश में बदलते राजनीतिक और सामाजिक परिदृश्य के बीच 1990 में**आचार्य राममूर्ति समिति**तथा 1992 में**एन. जनार्दन रेड्डी समिति**का गठन किया गया। इन समितियों की सिफारिशों के आधार पर संसद ने 1992 में NPE 1986 में कुछ आवश्यक संशोधन किए और एक अद्यतन**कार्य योजना 1992 (POA 1992)**प्रस्तुत की।

इस अनुभाग में हम POA 1992 की पृष्ठभूमि, जनार्दन रेड्डी समिति की सिफारिशों और नीति में किए गए प्रमुख संशोधनों का विस्तृत अध्ययन करेंगे:

16.8.1 जनार्दन रेड्डी समिति की सिफारिशें

(Recommendations of the Janardhana Reddy Committee)

केंद्रीय सलाहकार शिक्षा बोर्ड (CABE) द्वारा गठित**एन. जनार्दन रेड्डी समिति (1991)**को आचार्य राममूर्ति समिति (1990) की रिपोर्ट पर विचार करने और NPE 1986 में व्यावहारिक संशोधनों के सुझाव देने का कार्य सौंपा गया था।

- **मुख्य सिफारिशें:**

नोट

1. **नीति की निरंतरता:**समिति ने माना कि 1986 की नीति का मूल ढाँचा अत्यंत मजबूत है, इसलिए नई नीति बनाने के बजाय NPE 1986 को ही कुछ परिमार्जनों के साथ जारी रखा जाना चाहिए।
2. **संसाधनों का पुनर्गठन:**प्राथमिक शिक्षा के सार्वभौमीकरण और 'ऑपरेशन ब्लैकबोर्ड' को और अधिक व्यापक बनाने की आवश्यकता पर बल दिया गया।
3. **व्यावसायिक शिक्षा का विस्तार:**व्यावसायिक पाठ्यक्रमों को केवल +2 स्तर तक सीमित न रखकर माध्यमिक स्तर से ही किसी न किसी रूप में जोड़ने का सुझाव दिया गया।
4. **अनौपचारिक शिक्षा को मजबूती:**जो बच्चे नियमित विद्यालय नहीं जा सकते (जैसे- बाल मजदूर), उनके लिए गैर-औपचारिक शिक्षा (Non-Formal Education) केंद्रों की गुणवत्ता में सुधार करने की सिफारिश की गई।

16.8.2 NPE 1986 में किए गए संशोधन एवं POA 1992 के प्रमुख बिंदु

(Modifications in NPE 1986 and Major Features of POA 1992)

जनार्दन रेड्डी समिति की सिफारिशों के आधार पर तैयार की गई**कार्य योजना 1992 (POA 1992)**को 23 विभिन्न अध्यायों/क्षेत्रों में विभाजित किया गया था। इसमें किए गए मुख्य संशोधन निम्नलिखित हैं:

- **1. प्राथमिक शिक्षा एवं ऑपरेशन ब्लैकबोर्ड का विस्तार:**
    - **तीन कमरे और तीन शिक्षक:**ऑपरेशन ब्लैकबोर्ड योजना का विस्तार करके यह प्रावधान किया गया कि जिन प्राथमिक विद्यालयों में नामांकित बच्चों की संख्या अधिक है, वहाँ तीन कमरे और तीन शिक्षक (जिनमें कम से कम एक महिला शिक्षक) उपलब्ध कराए जाएँ।

नोट

- **उच्च प्राथमिक स्तर पर विस्तार:**इस योजना को केवल प्राथमिक (कक्षा 1-5) तक सीमित न रखकर उच्च प्राथमिक (कक्षा 6-8) विद्यालयों तक विस्तारित किया गया।

- **2. राष्ट्रीय साक्षरता मिशन (NLM) को गति:**
  - 15 से 35 आयु वर्ग के निरक्षर व्यक्तियों के लिए चलाए जा रहे**राष्ट्रीय साक्षरता मिशन**को और अधिक प्रभावी बनाया गया तथा "संपूर्ण साक्षरता अभियान" (Total Literacy Campaign) को जन-आंदोलन का रूप दिया गया।

- **3. नवोदय विद्यालयों का सुदृढ़ीकरण:**
  - देश के प्रत्येक जिले में एक नवोदय विद्यालय स्थापित करने के लक्ष्य को पुनर्जीवित किया गया तथा इनमें बुनियादी सुविधाओं के विकास के लिए बजट बढ़ाया गया।

- **4. तकनीकी एवं व्यावसायिक शिक्षा का आधुनिकीकरण:**
  - **AICTE का सुदृढ़ीकरण:**ऑल इंडिया काउंसिल फॉर टेक्निकल एजुकेशन (AICTE) को अधिक स्वायत्तता दी गई ताकि तकनीकी संस्थानों की गुणवत्ता बनी रहे।
  - कंप्यूटर शिक्षा और सूचना प्रौद्योगिकी को विद्यालयी और उच्च शिक्षा के स्तर पर प्राथमिकता दी गई।

- **5. परीक्षा प्रणाली एवं मूल्यांकन में सुधार:**
  - केवल रटने पर आधारित परीक्षा प्रणाली के स्थान पर**सतत और व्यापक मूल्यांकन (CCE)**की दिशा में कदम बढ़ाने तथा ग्रेडिंग प्रणाली को धीरे-धीरे अपनाने का संकल्प लिया गया।

16.9 Open Educational Resources (OER) एवं डिजिटल संसाधनों का समावेश

नोट

(Open Educational Resources and Digital Resources Integration)

21वीं सदी के बदलते शैक्षिक परिवेश में मुक्त एवं सर्वसुलभ शिक्षा की आवश्यकता को देखते हुए राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 के मूल सिद्धांतों को आधुनिक तकनीक के साथ जोड़ा गया है। NPE 1986 ने सर्वप्रथम भारत में शैक्षिक प्रौद्योगिकी (Educational Technology) के उपयोग को संस्थागत रूप दिया था, जिसका विकसित रूप आज**मुक्त शैक्षिक संसाधनों (Open Educational Resources - OER)**और डिजिटल शिक्षण के रूप में परिलक्षित होता है।

इस अनुभाग में हम OER की अवधारणा, इसके विकासक्रम तथा आधुनिक शिक्षा में इसकी उपयोगिता का विस्तृत अध्ययन करेंगे:

16.9.1 OER की अवधारणा एवं परिभाषा

(Concept and Definition of OER)

मुक्त शैक्षिक संसाधन (OER)से तात्पर्य ऐसी शिक्षण, अधिगम (Learning) और अनुसंधान सामग्रियों से है जो सार्वजनिक डोमेन (Public Domain) में उपलब्ध हैं या जिन्हें ऐसे खुले डिजिटल लाइसेंस (Open License) के तहत जारी किया गया है कि कोई भी व्यक्ति उन्हें नि:शुल्क उपयोग, पुनः उपयोग (Reuse), अनुकूलित (Adapt) और पुनः वितरित (Redistribute) कर सकता है।

- **5Rs की स्वतंत्रता:** OER उपयोगकर्ताओं को 5 मुख्य अधिकार/स्वतंत्रता प्रदान करता है:
    1. **Retain (रखना):**सामग्री की प्रतिलिपि बनाने और अपने पास रखने का अधिकार।
    2. **Reuse (पुनः उपयोग):**सामग्री को विभिन्न रूपों (जैसे- कक्षा, ऑनलाइन) में उपयोग करने का अधिकार।
    3. **Revise (संशोधन):**सामग्री का अनुवाद, अनुकूलन या अद्यतन करने का अधिकार।

नोट

4. **Remix (मिश्रण):**मूल सामग्री को अन्य संसाधनों के साथ मिलाकर नया संसाधन बनाने का अधिकार।
5. **Redistribute (पुनः वितरण):**संशोधित या मूल सामग्री को दूसरों के साथ साझा करने का अधिकार।

16.9.2 NPE 1986 के संदर्भ में शैक्षिक प्रौद्योगिकी की शुरुआत

(Initiation of Educational Technology in NPE 1986)

NPE 1986 ने दूरदराज और ग्रामीण क्षेत्रों में शिक्षा की पहुँच बढ़ाने के लिए जनसंचार मीडिया और प्रौद्योगिकी के प्रयोग को अनिवार्य माना:

- **शैक्षिक प्रौद्योगिकी योजना (Educational Technology Scheme):**विद्यालयों में रेडियो, ऑडियो-कैसेट और टेलीविजन (Doordarshan educational broadcasts) के माध्यम से शिक्षण को बढ़ावा दिया गया।
- **CIET और SIET की स्थापना:**राष्ट्रीय स्तर पर**केंद्रीय शैक्षिक प्रौद्योगिकी संस्थान (CIET-NCERT)**तथा राज्य स्तर पर SIET की भूमिका को सुदृढ़ किया गया ताकि दूरदर्शन और रेडियो के लिए उच्च गुणवत्ता की ऑडियो-विजुअल शिक्षण सामग्री तैयार की जा सके।
- **कंप्यूटर साक्षरता (CLASS प्रोजेक्ट):**विद्यालयों में 'कंप्यूटर साक्षरता एवं अध्ययन' (Computer Literacy and Studies in Schools - CLASS) कार्यक्रम की नींव रखी गई।

16.9.3 आधुनिक परिदृश्य में OER की भूमिका एवं उपयोगिता

(Role and Utility of OER in Modern Context)

NPE 1986 के "समानता के लिए शिक्षा" के विज़न को OER ने आधुनिक काल में और अधिक सशक्त बनाया है:

- **लागत में कमी:**महंगी पाठ्यपुस्तकों और संदर्भ सामग्रियों पर छात्रों की निर्भरता कम होती है, जिससे शिक्षा अधिक किफायती बनती है।

नोट

- **गुणवत्तापूर्ण सामग्री की सार्वभौमिक पहुँच:**ग्रामीण और वंचित क्षेत्रों के छात्र भी शीर्ष संस्थानों और विशेषज्ञों द्वारा तैयार की गई अध्ययन सामग्री तक नि:शुल्क पहुँच प्राप्त कर सकते हैं।
- **शिक्षकों के लिए नवाचार:**शिक्षक OER सामग्री को अपनी स्थानीय भाषाओं और छात्रों की आवश्यकताओं के अनुसार बदलकर पढ़ा सकते हैं।
- **भारतीय OER पहलें:**भारत सरकार द्वारा शुरू किए गए**दीक्षा (DIKSHA)**, **ई-ज्ञानकोश (eGyanKosh - IGNOU)**, **NPTEL**, और**ई-पाठशाला (e-Pathshala)**जैसी परियोजनाएं NPE 1986 की दूरस्थ व सर्वसुलभ शिक्षा की सोच का ही आधुनिक तकनीकी रूप हैं।

16.9.4 OER के प्रमुख प्रकार एवं लाइसेंसिंग (Creative Commons)

(Types of OER and Creative Commons Licensing)

OER सामग्री केवल पीडीएफ (PDF) तक सीमित नहीं है, इसमें विभिन्न प्रकार के डिजिटल प्रारूप शामिल हैं:

OER के प्रकार	विवरण / उदाहरण
पाठेतर सामग्री (Textual)	ओपन टेक्स्टबुक्स, ई-बुक्स, रिसर्च पेपर, लेक्चर नोट्स।
दृश्य-श्रव्य (Audio-Visual)	वीडियो व्याख्यान (e.g., YouTube/SWAYAM), पॉडकास्ट, एनिमेशन।
इंटरएक्टिव संसाधन	वर्चुअल लैब्स (Virtual Labs), ऑनलाइन क्विज़, सिमुलेशन।

- **क्रिएटिव कॉमन्स (Creative Commons - CC) लाइसेंसिंग:**
    - OER सामग्रियाँ**Creative Commons**लाइसेंस के तहत संरक्षित होती हैं। यह कॉपीराइट का एक सरल और कानूनी तरीका है, जो रचयिता को अपना स्वामित्व बनाए रखने के साथ-साथ जनता को सामग्री के नि:शुल्क उपयोग की अनुमति देने का अवसर प्रदान करता है।

16.10 NPE 1986 की प्रमुख उपलब्धियाँ एवं सीमाएँ

नोट

(Major Achievements and Limitations of NPE 1986)

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 भारत के शैक्षिक इतिहास में एक मील का पत्थर साबित हुई। इसने स्वतंत्रता के बाद पहली बार देश को एक दिशा-निर्देशित और एकीकृत शिक्षा ढाँचा प्रदान किया। हालाँकि, अपने दूरगामी और प्रगतिशील लक्ष्यों के बावजूद, कार्यान्वयन और व्यावहारिक धरातल पर इस नीति को कुछ सीमाओं और आलोचनाओं का भी सामना करना पड़ा।

इस अनुभाग में हम NPE 1986 की प्रमुख उपलब्धियों तथा इसकी सीमाओं का निष्पक्ष मूल्यांकन करेंगे:

16.10.1 NPE 1986 की प्रमुख उपलब्धियाँ

(Major Achievements of NPE 1986)

1. **समान शैक्षिक संरचना का राष्ट्रव्यापी क्रियान्वयन:**
    - संपूर्ण देश में**10+2+3 की समान शैक्षिक संरचना**को सफलतापूर्वक लागू किया गया, जिससे राज्यों के बीच शैक्षिक विषमताएँ कम हुईं और छात्रों की गतिशीलता आसान हुई।
2. **प्राथमिक शिक्षा में ढांचागत सुधार (ऑपरेशन ब्लैकबोर्ड):**
    - 'ऑपरेशन ब्लैकबोर्ड' के माध्यम से हजारों ग्रामीण प्राथमिक विद्यालयों को बुनियादी भौतिक सुविधाएँ (पक्के कमरे, पेयजल, प्रसाधन) और शिक्षण-अधिगम सामग्री (TLM) प्राप्त हुई, जिससे प्राथमिक स्तर पर नामांकन में भारी वृद्धि हुई।
3. **ग्रामीण प्रतिभाओं को प्रोत्साहन (नवोदय विद्यालय):**
    - जवाहर नवोदय विद्यालयों की स्थापना ने ग्रामीण और वंचित पृष्ठभूमि के मेधावी छात्रों को पूर्णतः नि:शुल्क, गुणवत्तापूर्ण और आवासीय शिक्षा प्राप्त करने का अवसर दिया।

नोट

4. **समानता एवं समावेशी शिक्षा पर बल:**
    - महिला शिक्षा, अनुसूचित जाति (SC), अनुसूचित जनजाति (ST), और अल्पसंख्यकों के लिए विशेष प्रावधानों तथा छात्रवृत्तियों के माध्यम से शिक्षा के क्षेत्र में सामाजिक न्याय को बढ़ावा मिला।
5. **मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा का विस्तार:**
    - इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय (IGNOU) तथा राज्य मुक्त विश्वविद्यालयों के माध्यम से उच्च शिक्षा को सर्वसुलभ बनाया गया, जिससे औपचारिक शिक्षा से वंचित लोगों को पढ़ाई जारी रखने का अवसर मिला।
6. **शैक्षिक प्रौद्योगिकी एवं सूचना क्रांति की नींव:**
    - विद्यालयों में रेडियो, टीवी और 'CLASS' प्रोजेक्ट के माध्यम से कंप्यूटर शिक्षा की शुरुआत कर भारत को डिजिटल युग के लिए तैयार करने का प्रारंभिक प्रयास किया गया।

16.10.2 NPE 1986 की सीमाएँ एवं आलोचनाएँ

(Limitations and Criticisms of NPE 1986)

1. **जीडीपी के 6% लक्ष्य को प्राप्त न कर पाना:**
    - कोठारी आयोग की तरह NPE 1986 ने भी शिक्षा पर राष्ट्रीय आय (GDP) का 6% व्यय करने का संकल्प लिया था, लेकिन वित्तीय संसाधनों की कमी के कारण यह लक्ष्य कागजों तक ही सीमित रहा।
2. **व्यावसायिक शिक्षा का सीमित प्रभाव:**
    - उच्च माध्यमिक स्तर पर 25% छात्रों को व्यावसायिक धाराओं (Vocational Streams) से जोड़ने का लक्ष्य रखा गया था, लेकिन उद्योगों के साथ उचित समन्वय और बुनियादी ढाँचे के अभाव के कारण यह योजना अधिक सफल नहीं हो सकी।

नोट

3. **समान स्कूल प्रणाली (Common School System) की उपेक्षा:**
    - नीति में 'समानता के लिए शिक्षा' की बात तो की गई, लेकिन देश में अमीर और गरीब बच्चों के लिए अलग-अलग गुणवत्ता वाले (निजी बनाम सरकारी) विद्यालयों की दोहरी प्रणाली (Dual System) बनी रही।
4. **गुणवत्ता के स्थान पर मात्रात्मक प्रसार पर अधिक ध्यान:**
    - विद्यालयों की संख्या बढ़ाने और नामांकन (Enrollment) पर अधिक जोर दिया गया, लेकिन कक्षाओं में शिक्षण की वास्तविक गुणवत्ता और अधिगम स्तर (Learning Outcomes) में अपेक्षित सुधार नहीं हो सका।
5. **अनौपचारिक शिक्षा केंद्रों की विफलता:**
    - ड्रॉप-आउट और कामकाजी बच्चों के लिए चलाए गए गैर-औपचारिक शिक्षा (NFE) केंद्र गुणवत्ता और जवाबदेही के अभाव में केवल औपचारिक बनकर रह गए।

1. राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 में प्राथमिक शिक्षा के सुधार हेतु कौन सा अभियान चलाया गया था?

(A) ऑपरेशन ब्लैकबोर्ड

(B) सर्व शिक्षा अभियान

(C) पढ़ना लिखना अभियान

(D) शिक्षा का अधिकार

2. ग्रामीण प्रतिभाशालियों बच्चों के लिए किस प्रकार के विद्यालयों की स्थापना NPE 1986 के तहत की गई?

(A) जवाहर नवोदय विद्यालय

(B) केवि (KVS)

(C) सैनिक स्कूल

(D) कस्तूरबा गांधी विद्यालय

3. NPE 1986 की समीक्षा के लिए 1990 में किस समिति का गठन किया गया था?

नोट

(A) आचार्य राममूर्ति समिति

(B) यशपाल समिति

(C) कस्तूरीरंगन समिति

(D) वर्मा समिति

4. NPE 1986 का संशोधित रूप किस वर्ष प्रस्तुत किया गया (POA)?

(A) 1992

(B) 1995

(C) 2000

(D) 2005

5. NPE 1986 में किस पर विशेष बल दिया गया था?

(A) शैक्षिक अवसरों की समानता एवं महिला सशक्तीकरण

(B) उच्च शिक्षा के निजीकरण पर

(C) केवल अंग्रेजी माध्यम पर

(D) प्राथमिक शिक्षा को समाप्त करने पर

16.11 सारांश (Summary)

- **ऐतिहासिक संदर्भ:**राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 (NPE 1986) 1968 की नीति की समीक्षा और 21वीं सदी की नई सामाजिक, आर्थिक तथा तकनीकी आवश्यकताओं के जवाब में तत्कालीन प्रधानमंत्री राजीव गांधी के नेतृत्व में तैयार की गई थी।
- **राष्ट्रीय शिक्षा प्रणाली एवं संरचना:**इसने संपूर्ण देश में 10+2+3 की समान शैक्षिक संरचना लागू की तथा भारतीय संस्कृति, स्वतंत्रता संग्राम, लोकतंत्र और पर्यावरण संरक्षण जैसे विषयों को समेटते हुए एक 'सारभूत पाठ्यचर्या' (Core Curriculum) का खाका प्रस्तुत किया।
- **समानता के लिए शिक्षा:**महिला सशक्तीकरण, अनुसूचित जाति (SC), अनुसूचित जनजाति (ST), अल्पसंख्यकों और दिव्यांगजनों की शिक्षा के लिए

नोट

विशेष सकारात्मक कार्रवाई, छात्रवृत्तियों और आश्रम शालाओं का प्रावधान किया गया।

- **ऑपरेशन ब्लैकबोर्ड:**प्राथमिक शिक्षा के सार्वभौमीकरण हेतु विद्यालयों में न्यूनतम भौतिक ढाँचे (दो पक्के कमरे, शौचालय) और 'शिक्षण-अधिगम सामग्री किट' (TLM) की उपलब्धता सुनिश्चित करने के लिए 'ऑपरेशन ब्लैकबोर्ड' अभियान चलाया गया।
- **नवोदय विद्यालय व दूरस्थ शिक्षा:**ग्रामीण प्रतिभाओं के लिए गुणवत्तापूर्ण आवासीय 'जवाहर नवोदय विद्यालयों' की स्थापना की गई। साथ ही, उच्च शिक्षा के प्रसार के लिए इग्नू (IGNOU) तथा मुक्त विश्वविद्यालयों को सुदृढ़ किया गया।
- **POA 1992 एवं OER:** 1992 में जनार्दन रेड्डी समिति की सिफारिशों के आधार पर 'कार्य योजना 1992' (POA 1992) लाई गई। NPE 1986 द्वारा शुरू की गई शैक्षिक प्रौद्योगिकी की नींव पर ही आज आधुनिक 'मुक्त शैक्षिक संसाधन' (OER) और डिजिटल शिक्षण (जैसे- दीक्षा, ई-पाठशाला) संचालित हो रहे हैं।

16.12 शब्दावली (Key Terms / Glossary)

- **सारभूत पाठ्यचर्या (Core Curriculum):**राष्ट्रीय स्तर पर निर्धारित वह अनिवार्य पाठ्यक्रम जो देश के सभी विद्यालयों में समान रूप से लागू किया जाता है।
- **ऑपरेशन ब्लैकबोर्ड (Operation Blackboard):**प्राथमिक विद्यालयों में न्यूनतम आवश्यक भौतिक एवं मानवीय सुविधाएँ उपलब्ध कराने के लिए 1987-88 में शुरू की गई एक राष्ट्रीय योजना।
- **पेस-सेटिंग स्कूल (Pace-Setting Schools):**ऐसे मॉडल विद्यालय (जैसे नवोदय विद्यालय) जो अपने क्षेत्र के अन्य विद्यालयों के लिए गुणवत्ता और नवाचार का मानक तय करते हैं।
- **मुक्त शैक्षिक संसाधन (Open Educational Resources - OER):**सार्वजनिक डोमेन या खुले लाइसेंस के तहत उपलब्ध वे डिजिटल शिक्षण

नोट

सामग्रियाँ जिन्हें कोई भी नि:शुल्क उपयोग, अनुकूलित और पुनः वितरित कर सकता है।

- **समेकित शिक्षा (Integrated Education):**सामान्य विद्यालयों में ही दिव्यांग बच्चों को सामान्य बच्चों के साथ शिक्षा प्रदान करने की व्यवस्था।

16.13 बोध प्रश्नों के उत्तर

उत्तर: (A) ऑपरेशन ब्लैकबोर्ड

उत्तर: (A) जवाहर नवोदय विद्यालय

उत्तर: (A) आचार्य राममूर्ति समिति

उत्तर: (A) 1992

उत्तर: (A) शैक्षिक अवसरों की समानता एवं महिला सशक्तीकरण

16.14 सुझावित अध्ययन सामग्री – मुक्त शैक्षिक संसाधन

1. eGyanKosh: National Policy on Education 1986 Analysis (IGNOU)
2. Ministry of Education: NPE 1986 Policy Document and Programme of Action 1992
3. NCERT: NPE 1986 Salient Features and Implementation
4. OER Commons: Educational Policies in 20th Century India
5. Swayam Prabha: National Education Policies Overview

16.15 संदर्भ ग्रन्थ

MHRD. (1986). *National Policy on Education 1986*. Ministry of Human Resource Development, Government of India, New Delhi.

- MHRD. (1992). *Program of Action 1992*. Ministry of Human Resource Development, Government of India, New Delhi.

नोट

- NCERT. (2005). *National Curriculum Framework 2005*. National Council of Educational Research and Training, New Delhi.
- UNESCO. (2019). *Recommendation on Open Educational Resources (OER)*. UNESCO Paris.
- **Agrawal, S. P., & Aggarwal, J. C.** (1997). *Development of Education in India: Select Documents 1985-1992*. Concept Publishing Company, New Delhi.
- **Ghosh, S. C.** (2013). *The History of Education in Modern India (1757-2012)*. Orient Blackswan, New Delhi.
- **Government of India.** (1985). *Challenge of Education: A Policy Perspective*. Ministry of Human Resource Development (MHRD), New Delhi.
- **Government of India.** (1986). *National Policy on Education - 1986*. Ministry of Human Resource Development (MHRD), Department of Education, New Delhi.
- **Government of India.** (1992). *National Policy on Education 1986 (Modified in 1992) with Programme of Action 1992*. MHRD, Department of Education, New Delhi.
- **MHRD.** (1990). *Towards an Enlightened and Humane Society: Report of the Committee for Review of National Policy on Education 1986 (Acharya Ramamurti Report)*. Ministry of Human Resource Development, New Delhi.
- **Mukerji, S. N.** (2014). *Education in India: Today and Tomorrow*. Vinod Pustak Mandir, Agra.

नोट

- **NCERT.** (2005). *National Curriculum Framework (NCF 2005)*. National Council of Educational Research and Training, New Delhi.
- **Pathak, R. P.** (2012). *Development of Education System in India*. Pearson Education India, New Delhi.
- **UNESCO.** (2019). *Recommendation on Open Educational Resources (OER)*. UNESCO, Paris.
- **UNESCO & Commonwealth of Learning.** (2015). *Guidelines for Open Educational Resources (OER) in Higher Education*. UNESCO, Paris.

16.16 अभ्यास/अभ्यास प्रश्न (Exercises / Model Questions)

1 बोध प्रश्न (Self-Assessment Questions)

1. NPE 1986 के समय भारत सरकार द्वारा जारी किए गए नीतिगत दस्तावेज़ का शीर्षक क्या था?
2. 'ऑपरेशन ब्लैकबोर्ड' योजना किस वर्ष शुरू की गई थी?
3. जवाहर नवोदय विद्यालयों में ग्रामीण क्षेत्र के बच्चों के लिए कितने प्रतिशत सीटें आरक्षित होती हैं?
4. OER के संदर्भ में '5Rs' का क्या अर्थ है?

2 लघु उत्तरीय प्रश्न (Short Answer Type Questions)

1. राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 की आवश्यकता के मुख्य कारणों को स्पष्ट कीजिए।
2. 10+2+3 की समान शैक्षिक संरचना से आप क्या समझते हैं?
3. NPE 1986 में महिला सशक्तीकरण एवं शिक्षा के लिए क्या-क्या प्रावधान किए गए थे?

नोट

4. कार्य योजना 1992 (POA 1992) की मुख्य सिफारिशों का संक्षेप में वर्णन कीजिए।

3 दीर्घ उत्तरीय प्रश्न (Long Answer Type Questions)

1. "राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 में प्राथमिक शिक्षा के सार्वभौमीकरण के लिए 'ऑपरेशन ब्लैकबोर्ड' एक क्रांतिकारी कदम था।" इस कथन की समीक्षा कीजिए।
2. NPE 1986 की मुख्य विशेषताओं, उपलब्धियों और सीमाओं का विस्तृत मूल्यांकन कीजिए।
3. 'समानता के लिए शिक्षा' के सिद्धांत को स्पष्ट करते हुए बताइए कि NPE 1986 ने अनुसूचित जातियों, जनजातियों और दिव्यांगों के लिए क्या-क्या नीतियाँ बनाईं?

4 प्रोजेक्ट / व्यावहारिक कार्य (Project Work)

1. अपने समीप के किसी सरकारी प्राथमिक विद्यालय का भ्रमण करें और यह अवलोकन रिपोर्ट तैयार करें कि वहाँ 'ऑपरेशन ब्लैकबोर्ड' या आधुनिक शिक्षण-अधिगम सामग्री (TLM) की क्या स्थिति है।
2. इंटरनेट पर 'दीक्षा' (DIKSHA) या 'ई-पाठशाला' पोर्टल पर जाकर किसी एक विषय के OER (मुक्त शैक्षिक संसाधन) की खोज करें और उसकी उपयोगिता पर 200 शब्दों का संक्षिप्त नोट लिखें।

नोट

इकाई 17
राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 (NEP 2020)

इकाई की रूपरेखा (Unit Structure)

17.1 प्रस्तावना (Introduction)
17.2 उद्देश्य (Objectives)
17.3 राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 का पृष्ठभूमि एवं ऐतिहासिक संदर्भ (Background and Historical Context of NEP 2020)
17.4 NEP 2020 के मूल सिद्धांत एवं दृष्टि (Core Principles and Vision)
17.5 स्कूली शिक्षा में संरचनात्मक सुधार: 5+3+3+4 ढांचा (Structural Reform in School Education: 5+3+3+4 Structure)
17.5.1 बुनियादी चरण (Foundational Stage - 5 Years)
17.5.2 प्रारंभिक चरण (Preparatory Stage - 3 Years)
17.5.3 मध्य चरण (Middle Stage - 3 Years)
17.5.4 माध्यमिक चरण (Secondary Stage - 4 Years)
17.6 पाठ्यक्रम एवं शिक्षाशास्त्र में परिवर्तन (Curriculum and Pedagogical Changes)
17.6.1 बहुभाषावाद एवं भाषा की शक्ति (Multilingualism and Power of Language)
17.6.2 अनुभवात्मक अधिगम एवं रटंत विद्या का उन्मूलन (Experiential Learning and Rot-free Pedagogy)
17.7 उच्च शिक्षा में व्यापक सुधार (Transformational Reforms in Higher Education)
17.7.1 बहु-विषयक शिक्षा एवं लचीलापन
17.7.2 एबीसी (Academic Bank of Credits - ABC) एवं बहु-प्रवेश/निकास (Multiple Entry/Exit)
17.7.3 राष्ट्रीय शोध फाउंडेशन (NRF) की स्थापना
17.8 शिक्षक शिक्षा एवं व्यावसायिक विकास
17.9 प्रौद्योगिकी का समावेश एवं डिजिटल शिक्षा
17.10 NEP 2020 का क्रियान्वयन, चुनौतियाँ एवं भविष्य की राह
17.11 सारांश (Summary)
17.12 पारिभाषिक शब्दावली (Glossary)
17.13 बोध प्रश्नों के उत्तर

नोट

17.14 सुझावित अध्ययन सामग्री – मुक्त शैक्षिक संसाधन
17.15 संदर्भ ग्रन्थ
17.16 अभ्यास प्रश्न एवं अभ्यास कार्य

17.1 प्रस्तावना (Introduction)

किसी भी राष्ट्र की प्रगति, समृद्धि और सामाजिक-आर्थिक विकास का मूल आधार उसकी शिक्षा प्रणाली होती है। बदलती वैश्विक प्राथमिकताओं, 21वीं सदी की आवश्यकताओं और तकनीकी प्रगति के दृष्टिगत भारतीय शिक्षा प्रणाली में व्यापक एवं क्रांतिकारी सुधारों की आवश्यकता महसूस की जा रही थी। इसी उद्देश्य की पूर्ति हेतु 29 जुलाई 2020 को भारत सरकार द्वारा 'राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020' (NEP 2020) को मंजूरी दी गई, जिसने 34 वर्ष पुरानी 'राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986' का स्थान लिया।

यह नीति डॉ. के. कस्तूरीरंगन की अध्यक्षता वाली समिति की सिफारिशों पर आधारित है। NEP 2020 का मुख्य ध्येय भारत को एक ज्ञान आधारित वैश्विक महाशक्ति (Global Knowledge Superpower) के रूप में स्थापित करना है। यह नीति केवल पहुँच और समानता तक सीमित न रहकर गुणवत्ता, जवाबदेही और लचीलेपन पर विशेष बल देती है। यह इकाई NEP 2020 के प्रमुख स्तंभों, स्कूली एवं उच्च शिक्षा में संरचनात्मक व व्यावहारिक सुधारों तथा इसके प्रभावी क्रियान्वयन के विभिन्न पहलुओं का विस्तार से विवेचन करती है।

17.2 उद्देश्य (Objectives)

इस इकाई का अध्ययन करने के पश्चात् आप:

- राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 (NEP 2020) की पृष्ठभूमि एवं इसके ऐतिहासिक संदर्भ को समझ सकेंगे।
- नीति के मूल सिद्धांतों, दृष्टि (Vision) तथा इसके प्रमुख उद्देश्यों की व्याख्या कर सकेंगे।
- स्कूली शिक्षा की 5+3+3+4 संरचना तथा इसमें किए गए प्रमुख बदलावों का विश्लेषण कर सकेंगे।

नोट

- पाठ्यक्रम, भाषा नीति तथा अनुभवात्मक अधिगम (Experiential Learning) से जुड़े सुधारों का मूल्यांकन कर सकेंगे।
- उच्च शिक्षा में बहु-विषयक दृष्टिकोण, एबीसी (Academic Bank of Credits) तथा राष्ट्रीय शोध फाउंडेशन (NRF) के महत्व को स्पष्ट कर सकेंगे।
- शिक्षा में प्रौद्योगिकी के समावेश तथा शिक्षक शिक्षा में नीतिगत सुधारों के भावी प्रभावों की समीक्षा कर सकेंगे।

17.3 राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 का पृष्ठभूमि एवं ऐतिहासिक संदर्भ (Background and Historical Context of NEP 2020)

भारत में शिक्षा का इतिहास अत्यंत समृद्ध और प्राचीन रहा है। प्राचीन काल में तक्षशिला, नालंदा और विक्रमशिला जैसे विश्वविख्यात विश्वविद्यालय ज्ञान के प्रमुख केंद्र थे, जहाँ अनुभवात्मक एवं बहु-विषयक शिक्षा दी जाती थी। आधुनिक भारत में एक सुदृढ़ और न्यायसंगत शिक्षा प्रणाली के निर्माण के लिए समय-समय पर अनेक नीतियाँ और आयोग गठित किए गए। NEP 2020 को समझने के लिए भारत की स्वतंत्रता से लेकर अब तक के शैक्षिक विकास के ऐतिहासिक घटनाक्रम को समझना आवश्यक है।

स्वतंत्रता-उत्तर शिक्षा नीतियों का संक्षिप्त अवलोकन

वर्ष / आयोग	प्रमुख नीतियाँ एवं सिफारिशें
विश्वविद्यालय शिक्षा आयोग (1948-49)	डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन की अध्यक्षता में गठित। इसका मुख्य ध्यान उच्च शिक्षा का पुनर्गठन और विश्वविद्यालयों के मानकों में सुधार करना था।
माध्यमिक शिक्षा आयोग (1952-53)	मुदालियर आयोग के नाम से प्रसिद्ध। इसने माध्यमिक शिक्षा के ढांचे, बहुउद्देशीय विद्यालयों और व्यावसायिक शिक्षा की शुरुआत पर बल दिया।

नोट

कोठारी शिक्षा आयोग (1964-66)	डॉ. डी. एस. कोठारी की अध्यक्षता में गठित। इसने शिक्षा को राष्ट्रीय विकास से जोड़ा और 10+2+3 शिक्षा ढांचे तथा सकल घरेलू उत्पाद (GDP) के 6% हिस्सा शिक्षा पर व्यय करने का सुझाव दिया।
प्रथम राष्ट्रीय शिक्षा नीति (1968)	कोठारी आयोग की सिफारिशों पर आधारित। इसमें 14 वर्ष तक के बच्चों के लिए अनिवार्य शिक्षा, त्रि-भाषा सूत्र (Three-Language Formula) और शिक्षकों के प्रशिक्षण पर जोर दिया गया।
द्वितीय राष्ट्रीय शिक्षा नीति (1986)	असमानताओं को दूर करने और शैक्षिक अवसरों की समानता पर केंद्रित। इसके तहत 'ऑपरेशन ब्लैकबोर्ड' और नवोदय विद्यालयों की स्थापना की गई।
कार्य योजना (POA 1992)	1986 की नीति की समीक्षा के बाद 1992 में इसमें कुछ महत्वपूर्ण संशोधन और कार्यान्वयन रणनीतियाँ जोड़ी गईं।

NEP 2020 की आवश्यकता और पृष्ठभूमि

1986 की शिक्षा नीति के बाद के तीन दशकों में भारत और वैश्विक परिदृश्य में व्यापक बदलाव आए। NEP 2020 के निर्माण के पीछे निम्नलिखित प्रमुख कारण थे:

- **21वीं सदी की आवश्यकताएँ:**वैश्विक स्तर पर सूचना और संचार प्रौद्योगिकी (ICT), आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (AI), और डेटा साइंस के तेजी से बढ़ते प्रभाव ने पारंपरिक शिक्षा पद्धति में बदलाव की आवश्यकता को रेखांकित किया।
- **रटंत प्रणाली की विफलता:**पुरानी प्रणाली मुख्यतः परीक्षा-केंद्रित और रटने पर आधारित थी, जिससे छात्रों में रचनात्मकता, तार्किक सोच (Critical Thinking) और समस्या-समाधान कौशल का विकास सीमित हो रहा था।
- **स्कूली शिक्षा की अप्रासंगिकता (10+2 ढांचा):** 10+2 ढांचे में 3 से 6 वर्ष की आयु के बच्चों (प्रारंभिक बचपन की देखभाल और शिक्षा - ECCE) को औपचारिक स्कूली शिक्षा में शामिल नहीं किया गया था, जबकि यह मस्तिष्क के विकास का सबसे महत्वपूर्ण चरण होता है।

नोट

- **उच्च शिक्षा में विखंडन:**उच्च शिक्षा में विषयों के बीच कठोर विभाजन (जैसे कला, विज्ञान और वाणिज्य) के कारण छात्र बहु-विषयक (Multidisciplinary) ज्ञान अर्जित करने से वंचित रह जाते थे।

NEP 2020 की निर्माण प्रक्रिया (Formulation Process)

NEP 2020 का निर्माण किसी बंद कमरे का निर्णय न होकर, भारत के इतिहास में अब तक का सबसे बड़ा परामर्श और समावेशी अभियान था:

- **टी. एस. आर. सुब्रमण्यम समिति (2015-16):**मई 2015 में पूर्व केंद्रीय कैबिनेट सचिव स्वर्गीय टी. एस. आर. सुब्रमण्यम की अध्यक्षता में एक समिति का गठन किया गया, जिसने मई 2016 में अपनी रिपोर्ट प्रस्तुत की।
- **डॉ. के. कस्तूरीरंगन समिति (2017-19):**जून 2017 में प्रसिद्ध अंतरिक्ष वैज्ञानिक डॉ. के. कस्तूरीरंगन की अध्यक्षता में 'राष्ट्रीय शिक्षा नीति का मसौदा तैयार करने वाली समिति' का गठन किया गया। इस समिति ने 31 मई 2019 को अपना मसौदा प्रस्तुत किया।
- **व्यापक जन-परामर्श:**मसौदे को सार्वजनिक डोमेन में रखा गया, जिसके बाद 2.5 लाख ग्राम पंचायतों, 6,600 ब्लॉकों, 6,000 शहरी स्थानीय निकायों (ULBs) और आम जनता से सुझाव आमंत्रित किए गए।
- **अंतिम स्वीकृति:**व्यापक विचार-विमर्श के बाद 29 जुलाई 2020 को केंद्रीय मंत्रिमंडल ने इस ऐतिहासिक नीति को औपचारिक मंजूरी प्रदान की और मानव संसाधन विकास मंत्रालय (MHRD) का नाम बदलकर पुनः**'शिक्षा मंत्रालय' (Ministry of Education)**कर दिया।

17.4 NEP 2020 के मूल सिद्धांत एवं दृष्टि (Core Principles and Vision of NEP 2020)

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 का संपूर्ण ढांचा भारत को एक समतामूलक, जीवंत और ज्ञान आधारित समाज (Knowledge Society) के रूप में रूपांतरित करने के विचार पर

नोट

टिका है। यह नीति केवल संरचनात्मक परिवर्तन नहीं करती, बल्कि शिक्षा के प्रति दृष्टिकोण में भी एक बुनियादी बदलाव लाती है।

NEP 2020 की दृष्टि (Vision of the Policy)

NEP 2020 की दृष्टि (Vision) निम्नलिखित प्रमुख स्तंभों पर आधारित है:

- **भारतीयता में निहित शिक्षा (Deep-rootedness in Indian Ethos):**शिक्षा प्रणाली को भारत की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत, चिंतन परंपरा और मूल्यों से जोड़ना, ताकि छात्र अपनी जड़ों से जुड़े रहते हुए वैश्विक नागरिक बन सकें।
- **वैश्विक ज्ञान महाशक्ति (Global Knowledge Superpower):**भारत को शिक्षा और अनुसंधान के क्षेत्र में वैश्विक स्तर पर अग्रणी स्थान दिलाना।
- **मौलिक कर्तव्यों और मानवाधिकारों के प्रति सम्मान:**छात्रों में संविधान के प्रति निष्ठा, मौलिक कर्तव्यों, मानवाधिकारों और पर्यावरण संरक्षण के प्रति संवेदनशीलता विकसित करना।

NEP 2020 के मार्गदर्शक मूल सिद्धांत (Core Guiding Principles)

यह नीति कुछ आधारभूत सिद्धांतों को रेखांकित करती है, जो प्राथमिक शिक्षा से लेकर उच्च शिक्षा तक के सभी स्तरों को निर्देशित करते हैं:

- **प्रत्येक बच्चे की अद्वितीय क्षमता की पहचान (Recognizing Unique Capabilities):**शिक्षकों और माता-पिता को प्रत्येक छात्र की व्यक्तिगत क्षमताओं और रुचियों को पहचानने तथा उन्हें बढ़ावा देने के लिए प्रोत्साहित करना।
- **लचीलापन (Flexibility):**शिक्षार्थियों को अपनी रुचि के अनुसार विषय (जैसे कला, विज्ञान, व्यावसायिक पाठ्यक्रम) चुनने की स्वतंत्रता देना, ताकि वे अपनी गति और इच्छा के अनुसार अध्ययन कर सकें।
- **कला और विज्ञान के बीच कोई सख्त पृथक्करण नहीं (No Hard Separations):**पाठ्यचर्या (Curriculum) और सह-पाठ्यचर्या (Co-

नोट

curricular) गतिविधियों, व्यावसायिक और अकादमिक धाराओं, तथा कला एवं विज्ञान के बीच के पारंपरिक विभाजन को समाप्त करना।

- **बहु-विषयक और समग्र शिक्षा (Multidisciplinary and Holistic Education):**ज्ञान की सीमाओं को तोड़कर एक एकीकृत शिक्षण दृष्टिकोण अपनाना, जहाँ विज्ञान का छात्र भी संगीत या दर्शनशास्त्र का अध्ययन कर सके।
- **अवधारणात्मक समझ पर बल (Emphasis on Conceptual Understanding):**केवल परीक्षा के लिए रटने (Rote Learning) की प्रवृत्ति को समाप्त कर अवधारणाओं की गहरी समझ और व्यावहारिक ज्ञान को बढ़ावा देना।
- **तार्किक सोच और रचनात्मकता (Critical Thinking and Creativity):**नवाचार, तर्कसंगत निर्णय लेने और समस्या-समाधान (Problem Solving) के कौशल का विकास करना।
- **बहुभाषावाद और भाषा की ताकत (Multilingualism):**शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया में मातृभाषा, स्थानीय भाषा और भारतीय भाषाओं के उपयोग को प्राथमिकता देना।
- **सतत मूल्यांकन (Continuous Assessment):**वर्ष के अंत में होने वाली योगात्मक (Summative) परीक्षा के बजाय सीखने की प्रक्रिया के दौरान सतत और रचनात्मक (Formative) मूल्यांकन पर ध्यान केंद्रित करना।
- **प्रौद्योगिकी का व्यापक उपयोग (Use of Technology):**शिक्षण, अधिगम, भाषा की बाधाओं को दूर करने और दिव्यांग छात्रों के लिए शैक्षिक पहुँच बढ़ाने में प्रौद्योगिकी का अधिकतम लाभ उठाना।

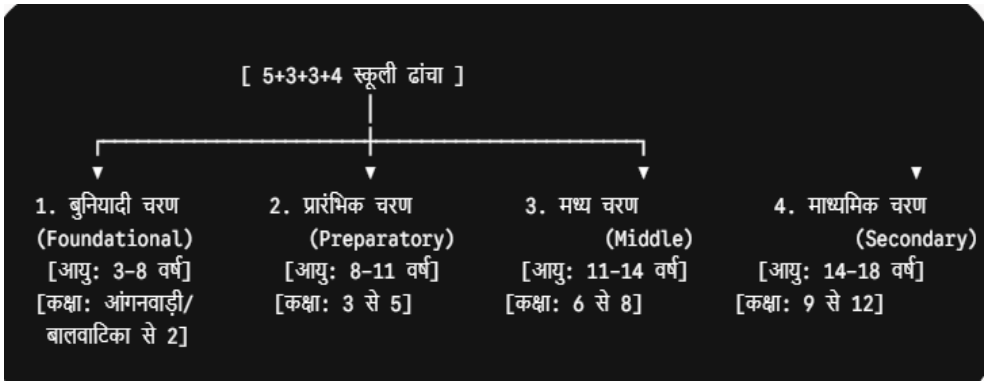
17.5 स्कूली शिक्षा में संरचनात्मक सुधार: 5+3+3+4 ढांचा (Structural Reform in School Education: 5+3+3+4 Structure)

नोट

NEP 2020 की सबसे प्रमुख और ऐतिहासिक सिफारिशों में से एक स्कूली शिक्षा के पारंपरिक 10+2 ढांचे को समाप्त करके उसके स्थान पर एक नया**5+3+3+4 शैक्षिक ढांचा**लागू करना है।

पुराने 10+2 ढांचे में 3 से 6 वर्ष की आयु के बच्चों को शामिल नहीं किया गया था, क्योंकि कक्षा 1 में प्रवेश की न्यूनतम आयु 6 वर्ष थी। हालांकि, मस्तिष्क विज्ञान के अध्ययनों से सिद्ध हो चुका है कि 6 वर्ष की आयु तक बच्चे के मस्तिष्क का 85% से अधिक विकास हो जाता है। इसी वैज्ञानिक तथ्य को ध्यान में रखते हुए NEP 2020 ने प्रारंभिक बचपन की देखभाल और शिक्षा (ECCE) को औपचारिक स्कूली शिक्षा का हिस्सा बनाया है।

5+3+3+4 ढांचे का विस्तृत विभाजन



17.5.1 बुनियादी चरण (Foundational Stage - 5 Years)

यह चरण कुल 5 वर्षों का है, जिसे दो भागों में विभाजित किया गया है:

- **अवधि एवं कक्षाएँ:** 3 वर्ष की पूर्व-प्राथमिक शिक्षा (आंगनवाड़ी / बालवाटिका / प्री-स्कूल) तथा 2 वर्ष की प्राथमिक शिक्षा (कक्षा 1 और 2)।
- **आयु वर्ग:** 3 से 8 वर्ष।
- **शिक्षाशास्त्र (Pedagogy):**इसमें शिक्षा पूरी तरह से खेल-आधारित (Play-based), गतिविधि-आधारित (Activity-based) और खोज-आधारित (Discovery-based) होगी।

नोट

- **प्रमुख ध्यान:**इसमें औपचारिक पाठ्यपुस्तक शिक्षण के बजाय भाषा, अक्षरों, संख्याओं, रंगों और आकृतियों की बुनियादी समझ विकसित करने पर बल दिया जाएगा। इस चरण में कोई औपचारिक परीक्षा नहीं होगी।

17.5.2 प्रारंभिक चरण (Preparatory Stage - 3 Years)

- **अवधि एवं कक्षाएँ:** 3 वर्ष (कक्षा 3 से 5)।
- **आयु वर्ग:** 8 से 11 वर्ष।
- **शिक्षाशास्त्र:**खेल और गतिविधियों के साथ-साथ हल्का औपचारिक पाठ्यपुस्तक शिक्षण शुरू किया जाएगा।
- **प्रमुख ध्यान:**इस चरण में बुनियादी साक्षरता और संख्यात्मकता (FLN - Foundational Literacy and Numeracy) को सुदृढ़ करने पर ध्यान दिया जाएगा। पढ़ने, लिखने, बोलने, गणित, कला और विज्ञान जैसे विषयों का हल्का परिचय दिया जाएगा। शिक्षण का मुख्य माध्यम मातृभाषा या स्थानीय भाषा होगा।

17.5.3 मध्य चरण (Middle Stage - 3 Years)

- **अवधि एवं कक्षाएँ:** 3 वर्ष (कक्षा 6 से 8)।
- **आयु वर्ग:** 11 से 14 वर्ष।
- **शिक्षाशास्त्र:**विषय-केंद्रित (Subject-oriented) अनुभवात्मक शिक्षण दृष्टिकोण अपनाया जाएगा।
- **प्रमुख ध्यान:**
    - गणित, विज्ञान, सामाजिक विज्ञान, कला और मानविकी जैसे विषयों के अमूर्त अवधारणाओं (Abstract Concepts) की शुरुआत की जाएगी।
    - **व्यावसायिक शिक्षा (Vocational Education):**कक्षा 6 से ही छात्रों को व्यावसायिक कौशल (जैसे कोडिंग, मिट्टी के बर्तन बनाना, बढ़ईगिरी, बागवानी आदि) का व्यावहारिक ज्ञान दिया जाएगा। इसके लिए 10 दिनों के 'बस्ता-रहित दिवस' (Bagless Days) का प्रावधान किया गया है।

नोट

17.5.4 माध्यमिक चरण (Secondary Stage - 4 Years)

- **अवधि एवं कक्षाएँ:** 4 वर्ष (कक्षा 9 से 12 - जिन्हें 2 चरणों में विभाजित किया जा सकता है: 9-10 और 11-12)।
- **आयु वर्ग:** 14 से 18 वर्ष।
- **शिक्षाशास्त्र:**बहु-विषयक अध्ययन, तार्किक चिंतन (Critical Thinking) और लचीलापन।
- **प्रमुख ध्यान:**
    - **धाराओं का उन्मूलन (No Rigid Streams):**विज्ञान, कला और वाणिज्य के बीच के पारंपरिक विभाजन को समाप्त कर दिया गया है। अब कक्षा 11-12 का छात्र भौतिक विज्ञान के साथ इतिहास या संगीत का चयन भी कर सकता है।
    - **विषय चयन की स्वतंत्रता:**छात्रों को उनकी रुचि के अनुसार विषयों का चयन करने का व्यापक अवसर मिलेगा।
    - **परीक्षा प्रणाली में बदलाव:**बोर्ड परीक्षाओं के दबाव को कम करने के लिए वर्ष में दो बार परीक्षा (Semester System या Modular Exams) के विकल्प पर विचार किया गया है, जहाँ रटने के बजाय अवधारणात्मक स्पष्टता का मूल्यांकन होगा।

17.6 पाठ्यक्रम एवं शिक्षाशास्त्र में परिवर्तन (Curriculum and Pedagogical Changes)

NEP 2020 केवल यह नहीं बदलती कि शिक्षा कहाँ और कब दी जाती है, बल्कि यह इस बात पर भी ध्यान केंद्रित करती है कि**क्या**पढ़ाया जाए और**कैसे**पढ़ाया जाए। इस नीति का मुख्य लक्ष्य शिक्षण पद्धतियों (Pedagogy) को अधिक व्यावहारिक, आनंददायक और छात्र-केंद्रित बनाना है।

17.6.1 बहुभाषावाद एवं भाषा की शक्ति (Multilingualism and Power of Language)

नोट

भाषा केवल अभिव्यक्ति का माध्यम नहीं है, बल्कि यह सीखने और सोचने की प्रक्रिया का मूल आधार है। संज्ञानात्मक अध्ययनों (Cognitive Studies) से सिद्ध हुआ है कि छोटे बच्चे अपनी मातृभाषा या घर की भाषा में अमूर्त अवधारणाओं को अधिक तेज़ी से और गहराई से समझते हैं।

- **प्राथमिक स्तर पर मातृभाषा में शिक्षा:**नीति में स्पष्ट रूप से सिफारिश की गई है कि जहाँ भी संभव हो, कम से कम**कक्षा 5 तक (और अधिमानतः कक्षा 8 तक)**शिक्षण का माध्यम मातृभाषा, स्थानीय भाषा, क्षेत्रीय भाषा या घर की भाषा (Home Language) होना चाहिए।
- **त्रि-भाषा सूत्र में लचीलापन (Flexibility in Three-Language Formula):**त्रि-भाषा सूत्र को लागू करते समय राज्यों और छात्रों को अधिक लचीलापन दिया जाएगा। किसी भी राज्य पर कोई भी भाषा थोपी नहीं जाएगी। शर्त केवल यह है कि सीखी जाने वाली तीन भाषाओं में से कम से कम दो भाषाएं भारतीय होनी चाहिए।
- **बहुभाषी शिक्षण (Multilingual Teaching):**शिक्षकों को द्विभाषी (Bilingual) शिक्षण माध्यम का उपयोग करने के लिए प्रोत्साहित किया जाएगा (जैसे यदि पाठ्यपुस्तक अंग्रेजी या हिंदी में है, तो भी शिक्षक स्थानीय बोली का सहारा लेकर समझा सकते हैं)।
- **शास्त्रीय एवं आधुनिक भारतीय भाषाओं का संवर्धन:**संस्कृत सहित भारत की सभी शास्त्रीय भाषाओं (जैसे तमिल, तेलुगु, कन्नड़, मलयालम, उड़िया) को पाठ्यचर्या में समृद्ध विकल्प के रूप में शामिल किया जाएगा।

17.6.2 अनुभवात्मक अधिगम एवं रटंत विद्या का उन्मूलन (Experiential Learning and Rote-free Pedagogy)

पारंपरिक परीक्षा-केंद्रित और रटने (Rote Learning) पर आधारित शिक्षा प्रणाली को पूरी तरह से समाप्त करना NEP 2020 का एक प्रमुख लक्ष्य है।

- **पाठ्यचर्या के बोझ में कमी (Reduction in Curriculum Content):**पाठ्यचर्या की सामग्री को प्रत्येक विषय की मूल अवधारणाओं

नोट

(Core Essentials) तक सीमित किया जाएगा, ताकि छात्रों में तार्किक सोच (Critical Thinking), विश्लेषण और खोज-आधारित सीखने के लिए पर्याप्त स्थान और समय उपलब्ध हो सके।

- **अनुभवात्मक अधिगम (Experiential Learning):**सभी स्तरों पर अनुभवात्मक अधिगम को अपनाया जाएगा, जिसमें शामिल हैं:
    - **खेल-आधारित और खोज-आधारित शिक्षण:**विशेष रूप से प्राथमिक और मध्य स्तर पर।
    - **कला-एकीकृत शिक्षा (Art-Integrated Learning):**भारतीय कला और संस्कृति को विभिन्न विषयों (जैसे गणित और विज्ञान) को पढ़ाने के लिए एक शिक्षण उपकरण के रूप में प्रयोग करना।
    - **खेल-एकीकृत शिक्षा (Sports-Integrated Learning):**शारीरिक फिटनेस के साथ-साथ अनुशासन, टीमवर्क और सहयोगात्मक कौशल विकसित करने के लिए।
- **एकीकृत एवं विषय-पार (Cross-curricular) दृष्टिकोण:**विषयों को अलग-अलग खानों (Silos) में पढ़ाने के बजाय उनका आपस में संबंध बनाकर व्यावहारिक उदाहरणों के माध्यम से समझाया जाएगा।

17.6.3 मूल्यांकन प्रणाली में सुधार (Assessment Reforms)

पाठ्यक्रम और शिक्षाशास्त्र में परिवर्तन तब तक प्रभावी नहीं हो सकते जब तक कि मूल्यांकन (Assessment) का तरीका न बदले:

- **सतत और रचनात्मक मूल्यांकन (Formative Assessment):**साल के अंत में होने वाली केवल एक परीक्षा के स्थान पर छात्र के वर्षभर के प्रदर्शन, गतिविधियों और प्रगति का मूल्यांकन किया जाएगा।
- **360-डिग्री बहुआयामी प्रगति कार्ड (360-Degree Holistic Progress Card):**रिपोर्ट कार्ड केवल अंकों का ब्योरा नहीं होगा। इसमें:
    - स्व-मूल्यांकन (Self-assessment)

नोट

- सहपाठी मूल्यांकन (Peer assessment)
- शिक्षक द्वारा मूल्यांकन (Teacher assessment)
- संज्ञानात्मक (Cognitive), भावनात्मक (Affective) और मनोप्रेरणा (Psychomotor) डोमेन में छात्र की प्रगति का विवरण शामिल होगा।

- **परख (PARAKH) की स्थापना:**राष्ट्रीय मूल्यांकन केंद्र**PARAKH** (Performance Assessment, Review, and Analysis of Knowledge for Holistic Development) की स्थापना का प्रस्ताव रखा गया है, जो छात्र मूल्यांकन के लिए मानक और दिशा-निर्देश निर्धारित करेगा।

17.7 उच्च शिक्षा में व्यापक सुधार (Transformational Reforms in Higher Education)

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 का उद्देश्य भारत की उच्च शिक्षा प्रणाली में बुनियादी बदलाव लाकर इसे वैश्विक मानकों के अनुरूप, लचीला, अनुसंधान-केंद्रित और बहु-विषयक बनाना है। वर्तमान में उच्च शिक्षा में बिखराव, कठोर संकाय (Stream) विभाजन और सीमित शोध अवसरों जैसी समस्याओं को NEP 2020 दूर करने का प्रयास करती है।

17.7.1 बहु-विषयक शिक्षा एवं लचीलापन (Multidisciplinary Education and Flexibility)

NEP 2020 उच्च शिक्षा में कला, मानवीय (Humanities), विज्ञान, प्रौद्योगिकी और गणित के बीच के पारंपरिक संकाय विभाजनों को समाप्त करती है।

- **कठोर सीमाओं का अंत:**छात्र अपनी रुचि के अनुसार विषयों का संयोजन चुन सकते हैं। उदाहरण के लिए, एक छात्र भौतिक विज्ञान के साथ संगीत या अर्थशास्त्र का अध्ययन कर सकता है।
- **बहु-विषयक शिक्षा एवं अनुसंधान विश्वविद्यालय (MERUs):** IITs और IIMs की तर्ज पर देश में**MERUs (Multidisciplinary Education and Research Universities)**स्थापित किए जाएंगे, जो बहु-विषयक शिक्षा के वैश्विक मानकों को स्थापित करेंगे।

नोट

- **एकीकृत स्नातक कार्यक्रम:** 3 या 4 वर्ष की अवधि वाले स्नातक (Undergraduate - UG) डिग्री कार्यक्रमों की शुरुआत की गई है, जिसमें विभिन्न निकास और प्रवेश (Entry/Exit) के विकल्प शामिल हैं।

17.7.2 एबीसी (Academic Bank of Credits - ABC) एवं बहु-प्रवेश/निकास (Multiple Entry/Exit)

पारंपरिक उच्च शिक्षा प्रणाली में यदि कोई छात्र किसी कारणवश बीच में ही अपनी पढ़ाई छोड़ देता था, तो उसका पूरा वर्ष या समय व्यर्थ चला जाता था। NEP 2020 ने**बहु-प्रवेश और निकास प्रणाली (Multiple Entry and Exit Options)**लागू कर इस समस्या का समाधान किया है:

[स्नातक कार्यक्रम (Undergraduate Program)]

|

┌──────────────────────────────────────┬──────────┬──────────┐

▼ ▼ ▼ ▼

1 वर्ष पूर्ण होने पर 2 वर्ष पूर्ण होने पर 3 वर्ष पूर्ण होने पर 4 वर्ष पूर्ण होने पर

[डिप्लोमा (Diploma)] [एडवांस डिप्लोमा (Adv. Dip.)] [बैचलर डिग्री (Degree)] [शोध सहित डिग्री (UG Hons/Research)]

- **एकेडेमिक बैंक ऑफ क्रेडिट्स (ABC):**
    - यह एक डिजिटल डिपेजिटरी की तरह कार्य करता है जहाँ छात्रों द्वारा विभिन्न मान्यता प्राप्त उच्च शिक्षा संस्थानों से अर्जित किए गए**अकादमिक क्रेडिट (Academic Credits)**सुरक्षित रूप से डिजिटल रूप में संग्रहीत (Store) रहते हैं।

नोट

- यदि कोई छात्र 1 वर्ष की पढ़ाई के बाद ब्रेक लेता है, तो उसके क्रेडिट ABC में जमा रहेंगे। जब वह दोबारा पढ़ाई शुरू करना चाहेगा, तो उन्हीं क्रेडिट्स के आधार पर अगले वर्ष में सीधे प्रवेश प्राप्त कर सकेगा।

17.7.3 राष्ट्रीय शोध फाउंडेशन (NRF) की स्थापना (Establishment of NRF)

भारत में अनुसंधान और नवाचार (Research and Innovation) की संस्कृति को सुदृढ़ करने के लिए**राष्ट्रीय शोध फाउंडेशन (National Research Foundation - NRF)**की स्थापना का प्रावधान किया गया है।

- **मुख्य उद्देश्य:**विश्वविद्यालयों और कॉलेजों में शोध की गुणवत्ता और मात्रा को बढ़ाना तथा देश में अनुसंधान पारिस्थितिकी तंत्र (Research Ecosystem) को वित्तपोषित (Fund) करना।
- **शोध को प्रोत्साहन:** NRF विभिन्न विषयों (विज्ञान, प्रौद्योगिकी, समाजशास्त्र, कला, मानविकी) में प्रतिस्पर्धात्मक (Competitive) और सहकर्मी-समीक्षित (Peer-reviewed) शोध प्रस्तावों को वित्तीय सहायता प्रदान करेगा।
- **उद्योग और अकादमिक क्षेत्र का जुड़ाव:**यह उद्योगों और शैक्षणिक संस्थानों के बीच बेहतर समन्वय स्थापित करेगा ताकि व्यावहारिक और सामाजिक समस्याओं के समाधान हेतु प्रासंगिक अनुसंधान किया जा सके।

17.7.4 उच्च शिक्षा का नियमन एवं संरचनात्मक पुनर्गठन (Regulatory Restructuring)

उच्च शिक्षा के विखंडित नियामक ढांचे को सुव्यवस्थित करने के लिए एक एकल अतिव्यापी निकाय'**भारतीय उच्च शिक्षा आयोग' (Higher Education Commission of India - HECI)**की स्थापना का प्रस्ताव है (जिसमें चिकित्सा और कानूनी शिक्षा शामिल नहीं होगी)।

HECI के चार स्वतंत्र वर्टिकल (Verticals) होंगे:

1. **NHERC (राष्ट्रीय उच्चतर शिक्षा नियामकीय परिषद):**नियमन (Regulation) के लिए।

नोट

2. **NAC (राष्ट्रीय प्रत्यायन परिषद):**मान्यता और गुणवत्ता (Accreditation) के लिए।
3. **HEGC (उच्चतर शिक्षा अनुदान परिषद):**वित्तपोषण (Funding) के लिए।
4. **GEC (सामान्य शिक्षा परिषद):**अधिगम परिणामों और मानकों (Learning Outcomes/Standards) को तय करने के लिए।

17.8 शिक्षक शिक्षा एवं व्यावसायिक विकास (Teacher Education and Continuous Professional Development)

शिक्षा प्रणाली की सफलता का मुख्य आधार शिक्षक होते हैं। NEP 2020 इस तथ्य को स्वीकार करती है कि शिक्षण क्षेत्र में सबसे उत्कृष्ट और मेधावी युवाओं को आकर्षित करना तथा वर्तमान शिक्षकों के निरंतर सशक्तिकरण के बिना किसी भी शिक्षा नीति को धरातल पर उतारना संभव नहीं है। इसीलिए नीति ने 'शिक्षक शिक्षा' (Teacher Education) और उनके 'सतत व्यावसायिक विकास' (CPD) में मूलभूत सुधारों का खाका प्रस्तुत किया है।

17.8.1 शिक्षक शिक्षा का पुनर्गठन एवं 4-वर्षीय एकीकृत B.Ed. (4-Year Integrated B.Ed.)

NEP 2020 के अनुसार 2030 तक शिक्षण कार्य के लिए न्यूनतम योग्यता**4-वर्षीय एकीकृत B.Ed. डिग्री (Integrated B.Ed. Degree)**होगी:

- **बहु-विषयक वातावरण में B.Ed.:** B.Ed. कार्यक्रमों को एकल (Single-track) शिक्षक प्रशिक्षण संस्थानों से हटाकर बहु-विषयक विश्वविद्यालयों और कॉलेजों में स्थानांतरित किया जाएगा।
- **पाठ्यक्रम संरचना:**
    - **4-वर्षीय एकीकृत B.Ed.:**यह 12वीं के बाद सीधे प्रवेश लेने वाले छात्रों के लिए होगी, जिसमें विषय ज्ञान (Subject Knowledge) के साथ-साथ शिक्षाशास्त्र (Pedagogy) का एकीकृत प्रशिक्षण दिया जाएगा।

नोट

- **2-वर्षीय B.Ed.:**उन छात्रों के लिए जिन्होंने किसी विषय में 3-वर्षीय स्नातक (Bachelor's Degree) पूर्ण कर ली है।
- **1-वर्षीय B.Ed.:**उन शिक्षार्थियों के लिए जिनके पास 4-वर्षीय स्नातक की डिग्री या परास्नातक (Master's Degree) की उपाधि है।

- **गुणवत्ताहीन संस्थानों पर कार्रवाई:**घटिया और व्यावसायिक रूप से चलाए जा रहे शिक्षक शिक्षा संस्थानों (TEIs) के खिलाफ सख्त कार्रवाई की जाएगी।

17.8.2 राष्ट्रीय व्यावसायिक मानक (NPST - National Professional Standards for Teachers)

शिक्षकों की गुणवत्ता, दक्षता और पेशेवर जवाबदेही सुनिश्चित करने के लिए**'शिक्षकों के लिए राष्ट्रीय व्यावसायिक मानक' (NPST)**विकसित किए जाएंगे।

- **विकासकर्ता:**यह मानक**राष्ट्रीय शिक्षक शिक्षा परिषद (NCTE)**द्वारा NCERT, SCERTs और शिक्षकों के परामर्श से तैयार किए जाएंगे।
- **मुख्य उद्देश्य:** NPST शिक्षकों के प्रदर्शन मूल्यांकन, पदोन्नति (Promotion), वेतन वृद्धि और कैरियर प्रगति का आधार बनेगा। इसमें शिक्षकों के अनुभव स्तर (जैसे- मूल शिक्षक, कुशल शिक्षक, विशेषज्ञ शिक्षक, और प्रमुख शिक्षक) के अनुसार अपेक्षाओं को परिभाषित किया जाएगा।

17.8.3 सतत व्यावसायिक विकास (Continuous Professional Development - CPD)

बदलते शैक्षिक परिदृश्य, नई तकनीकों और नवोन्मेषी शिक्षण पद्धतियों से शिक्षकों को अद्यतन (Update) रखने के लिए निरंतर प्रशिक्षण अनिवार्य किया गया है।

- **वार्षिक न्यूनतम 50 घंटे का प्रशिक्षण:**प्रत्येक शिक्षक और प्रधानाचार्य (Principal) से अपेक्षा की जाएगी कि वे अपनी रुचि और आवश्यकता के अनुसार प्रतिवर्ष कम से कम**50 घंटे**के सतत व्यावसायिक विकास (CPD) कार्यक्रमों में भाग लें।

नोट

- **प्रशिक्षण के विषय:**इसमें नवीनतम शिक्षाशास्त्र, बुनियादी साक्षरता एवं संख्यात्मकता (FLN), क्षमता-आधारित शिक्षण (Competency-based Learning), डिजिटल साक्षरता और समावेशी शिक्षा जैसे विषय शामिल होंगे।
- **ऑनलाइन प्रशिक्षण प्लेटफॉर्म:** CPD कार्यक्रमों को**दीक्षा (DIKSHA)**और**निष्ठा (NISHTHA)**जैसे राष्ट्रीय डिजिटल प्लेटफॉर्मों के माध्यम से सुलभ बनाया जाएगा।

17.8.4 भर्ती, पदोन्नति एवं पारदर्शी प्रक्रिया (Recruitment and Career Progression)

शिक्षक भर्ती प्रक्रिया को अधिक पारदर्शी, निष्पक्ष और योग्यता-आधारित बनाने के लिए निम्नलिखित उपाय किए गए हैं:

- **TET (शिक्षक पात्रता परीक्षा) का सुदृढ़ीकरण:**स्कूल शिक्षा के सभी चरणों (बुनियादी, प्रारंभिक, मध्य और माध्यमिक) के लिए TET प्रणाली को अधिक मजबूत और व्यापक बनाया जाएगा।
- **साक्षात्कार और कक्षा प्रदर्शन (Classroom Demonstration):**भर्ती प्रक्रिया में केवल लिखित परीक्षा ही नहीं, बल्कि कक्षा में पढ़ाने का व्यावहारिक प्रदर्शन (Class Demonstration) और साक्षात्कार (Interview) भी अनिवार्य हिस्सा होगा।
- **स्थानांतरण पर रोक:**बार-बार होने वाले शिक्षकों के तबादलों (Transfers) पर रोक लगाई जाएगी ताकि वे स्कूल और समुदाय के साथ दीर्घकालिक संबंध स्थापित कर सकें। विशेष परिस्थितियों को छोड़कर स्थानांतरणकेवल पारदर्शी ऑनलाइन प्रणालियों के माध्यम से ही होंगे।

17.9 प्रौद्योगिकी का समावेश एवं डिजिटल शिक्षा (Technology Integration and Digital Education)

21वीं सदी के डिजिटल युग में शिक्षा की पहुँच, इक्विटी (समानता) और गुणवत्ता सुनिश्चित करने के लिए प्रौद्योगिकी (Technology) एक अत्यंत शक्तिशाली माध्यम है। राष्ट्रीय

नोट

शिक्षा नीति 2020 प्रौद्योगिकी के व्यापक और न्यायसंगत उपयोग पर विशेष बल देती है, ताकि देश के सुदूर क्षेत्रों तक गुणवत्तापूर्ण शिक्षा पहुंचाई जा सके और भाषा की बाधाओं को समाप्त किया जा सके।

17.9.1 राष्ट्रीय शैक्षिक प्रौद्योगिकी मंच (NETF - National Educational Technology Forum)

प्रौद्योगिकी के उपयोग और विचारों के मुक्त आदान-प्रदान को बढ़ावा देने के लिए'**राष्ट्रीय शैक्षिक प्रौद्योगिकी मंच' (NETF)**नामक एक स्वायत्त (Autonomous) निकाय की स्थापना का प्रस्ताव किया गया है।

- **मुख्य भूमिका:** NETF केंद्र और राज्य सरकारों, उच्च शिक्षण संस्थानों और अन्य हितधारकों को प्रौद्योगिकी के एकीकरण, योजना और कार्यान्वयन पर परामर्श प्रदान करेगा।
- **प्रौद्योगिकी पर अनुसंधान:**यह शिक्षा के क्षेत्र में उभरती हुई प्रौद्योगिकियों (जैसे आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, 3D सिमुलेशन, वर्चुअल रियलिटी) के प्रभाव और उपयोग पर अनुसंधान को बढ़ावा देगा।

17.9.2 डिजिटल इंफ्रास्ट्रक्चर एवं प्लेटफॉर्म (Digital Infrastructure and Platforms)

शिक्षा को डिजिटल रूप से सशक्त बनाने के लिए मौजूदा और नए डिजिटल प्लेटफॉर्म्स का सुदृढ़ीकरण किया जाएगा:

- **दीक्षा (DIKSHA):** 'डिजिटल इंफ्रास्ट्रक्चर फॉर नॉलेज शेयरिंग' (DIKSHA) को देश के प्राथमिक और माध्यमिक स्तर के शिक्षण-अधिगम के मुख्य राष्ट्रीय प्लेटफॉर्म के रूप में विकसित किया जाएगा। इस पर सभी भाषाओं में पाठ्यपुस्तकें, क्यूआर (QR) कोड आधारित डिजिटल सामग्री और वीडियो पाठ उपलब्ध होंगे।
- **स्वयं (SWAYAM) और स्वयं प्रभा (SWAYAM PRABHA):**उच्च शिक्षा और दूरस्थ शिक्षा के लिए 'स्वयं' (MOOCs प्लेटफॉर्म) का विस्तार किया जाएगा

नोट

तथा TV चैनलों के माध्यम से उन क्षेत्रों तक शिक्षा पहुँचाई जाएगी जहाँ इंटरनेट पहुँच सीमित है।

- **वर्चुअल लैब्स (Virtual Labs):**विज्ञान और गणित जैसे व्यावहारिक विषयों के लिए 'वर्चुअल लैब्स' विकसित की जाएंगी, जिससे दूरदराज के क्षेत्रों के छात्र भी अपनी प्रयोगशाला परीक्षाएँ और प्रयोग ऑनलाइन सिमुलेशन के माध्यम से कर सकेंगे।

17.9.3 कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) एवं उभरती प्रौद्योगिकियों का समावेश

NEP 2020 शिक्षा प्रणाली में आधुनिक तकनीकी प्रगति को शामिल करने की वकालत करती है:

- **स्कूलों में AI और कोडिंग:**कक्षा 6 से ही छात्रों को कोडिंग, कंप्यूटेशनल थिंकिंग और डेटा साइंस की बुनियादी समझ दी जाएगी।
- **व्यक्तिगत शिक्षण (Personalized Learning):**एआई-आधारित सॉफ्टवेयर और टूल्स का उपयोग छात्रों की सीखने की गति (Learning Pace) और उनकी व्यक्तिगत कमजोरियों व ताकतों का विश्लेषण करने के लिए किया जाएगा।

17.9.4 भाषा की बाधाओं को दूर करना (Overcoming Language Barriers)

- **अनुवाद और संवर्धित सामग्री:**एआई-आधारित अनुवाद टूल्स (जैसे Bhashini) का उपयोग करके पाठ्यपुस्तकों और शैक्षिक सामग्रियों का विभिन्न भारतीय भाषाओं में तुरंत अनुवाद किया जाएगा।
- **दिव्यांग अनुकूल सामग्री:**दृष्टिबाधित और श्रवणबाधित (Deaf and Hard of Hearing) छात्रों के लिए स्क्रीन-रीडर, टॉक-बैक टूल्स और राष्ट्रीय सांकेतिक भाषा (ISL) आधारित डिजिटल सामग्री तैयार की जाएगी।

17.9.5 डिजिटल डिवाइड को पाटना एवं चुनौतियाँ (Bridging the Digital Divide)

प्रौद्योगिकी के उपयोग के साथ NEP 2020 इस बात पर भी ध्यान केंद्रित करती है कि 'डिजिटल विभाजन' (Digital Divide) के कारण कोई भी बच्चा शिक्षा से वंचित न रहे।

नोट

- **डिजिटल पहुँच और समता:**इंटरनेट कनेक्टिविटी, उपकरणों (टैबलेट, स्मार्टफोन) की उपलब्धता और बिजली की निर्बाध आपूर्ति जैसी चुनौतियों से निपटने के लिए सार्वजनिक-निजी भागीदारी (PPP) और सरकारी योजनाओं के तहत कदम उठाए जाएंगे।
- **शिक्षकों की डिजिटल साक्षरता:**केवल छात्रों को तकनीक देना पर्याप्त नहीं है, शिक्षकों को भी डिजिटल शिक्षण उपकरण (EdTech tools) का कुशलतापूर्वक उपयोग करने के लिए निरंतर प्रशिक्षित किया जाएगा।

17.10 NEP 2020 का क्रियान्वयन, चुनौतियाँ एवं भविष्य की राह (Implementation, Challenges, and Road Ahead)

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 का वास्तविक प्रभाव और सफलता केवल इसके उत्कृष्ट प्रस्तावों और दृष्टि (Vision) पर निर्भर नहीं करती, बल्कि इसके धरातलीय क्रियान्वयन (Ground Implementation) पर निर्भर करती है। भारत जैसे विशाल, विविधतापूर्ण और बहुभाषी देश में 34 वर्षों बाद आए इस व्यापक परिवर्तन को लागू करना एक अत्यंत जटिल प्रक्रिया है।

17.10.1 नीति का क्रियान्वयन ढांचा (Implementation Strategy)

NEP 2020 के सफल कार्यान्वयन के लिए एक चरणबद्ध और सहयोगात्मक दृष्टिकोण अपनाया गया है:

- **सहमति और सहकारी संघवाद (Cooperative Federalism):**शिक्षा संविधान की समवर्ती सूची (Concurrent List) का विषय है। इसलिए, नीति को प्रभावी ढंग से लागू करने के लिए केंद्र और राज्य सरकारों, शिक्षा मंत्रालयों, NCERT, SCERTs, UGC, AICTE तथा बोर्डों के बीच निरंतर समन्वय आवश्यक है।
- **सार्थक (SARTHAQ):**स्कूली शिक्षा के कार्यान्वयन के लिए**'सार्थक' (Students' and Teachers' Holistic Advancement through Quality Education)**योजना की शुरुआत की गई है, जो राज्यों को चरणबद्ध तरीके से नीति के लक्ष्यों को पूरा करने का रोडमैप प्रदान करती है।

नोट

- **संसाधनों का आबंटन:**नीति में शिक्षा पर सार्वजनिक व्यय को सकल घरेलू उत्पाद (GDP) के**6%**तक बढ़ाने का लक्ष्य रखा गया है, ताकि आवश्यक अवसंरचना (Infrastructure) तैयार की जा सके।

17.10.2 क्रियान्वयन के मार्ग में मुख्य चुनौतियाँ (Key Challenges in Implementation)

NEP 2020 के पूर्ण और प्रभावी क्रियान्वयन के सामने कई व्यावहारिक चुनौतियाँ हैं:

- **वित्तीय संसाधनों की सीमा (Financial Constraints):**जीडीपी का 6% शिक्षा पर खर्च करने का लक्ष्य दशकों से अधूरा रहा है। बुनियादी ढांचे के विकास, डिजिटल उपकरणों की उपलब्धता और नए संस्थानों के निर्माण के लिए भारी वित्तीय बजट की आवश्यकता है।
- **डिजिटल विभाजन (Digital Divide):**ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों के बीच इंटरनेट कनेक्टिविटी, स्मार्टफोन/टैबलेट और बिजली आपूर्ति की असमानता प्रौद्योगिकी आधारित शिक्षा के प्रसार में बड़ा रोड़ा है।
- **मातृभाषा शिक्षण में व्यावहारिक कठिनाइयाँ:**बहुभाषी राज्यों या शहरी क्षेत्रों के स्कूलों में, जहाँ एक ही कक्षा में विभिन्न भाषाओं को बोलने वाले छात्र होते हैं, वहाँ स्थानीय भाषा में पाठ्यसामग्री और शिक्षक उपलब्ध कराना एक बड़ी चुनौती है।
- **शिक्षकों का प्रशिक्षण और मानसिकता में बदलाव:**पुरानी रटंत प्रणाली से निकलकर अनुभवात्मक शिक्षण (Experiential Learning) और 360-डिग्री मूल्यांकन प्रणाली को अपनाने के लिए लाखों शिक्षकों को प्रशिक्षित करना और उनकी सोच में परिवर्तन लाना आसान नहीं है।
- **उच्च शिक्षा का पुनर्गठन:** 30,000 से अधिक संबद्ध (Affiliated) कॉलेजों को स्वायत्त (Autonomous) बनाना और पुरानी परीक्षा प्रणालियों को बहु-प्रवेश/निकास (Multiple Entry/Exit) प्रणाली में बदलना प्रशासनिक स्तर पर अत्यंत जटिल है।

17.10.3 भविष्य की राह (The Road Ahead)

नोट

चुनौतियों के बावजूद, NEP 2020 भारत को 21वीं सदी के ज्ञान आधारित समाज के रूप में स्थापित करने के लिए एक सटीक दिशा प्रदान करती है। भविष्य में सफल क्रियान्वयन के लिए निम्नलिखित कदम आवश्यक हैं:

- **चरणबद्ध कार्यान्वयन (Phased Implementation):**नीति के प्रस्तावों को एक साथ लागू करने के बजाय प्राथमिकताओं के आधार पर 2040 तक की समयावधि में चरणबद्ध तरीके से लागू किया जा रहा है।
- **स्थानीय अनुकूलनशीलता:**राज्यों को उनकी भौगोलिक, सामाजिक और सांस्कृतिक आवश्यकताओं के अनुसार नीति को अपनाने की स्वतंत्रता देना।

सतत निगरानी और मूल्यांकन:नीति के प्रभाव का समय-समय पर विश्लेषण करने के लिए एक मजबूत निगरानी तंत्र का होना आवश्यक है, ताकि व्यावहारिक समस्याओं का समाधान तुरंत किया जा सके।

1. NEP 2020 की मसौदा समिति (Drafting Committee) के अध्यक्ष कौन थे?

(A) डॉ. के. कस्तूरीरंगन

(B) प्रो. यशपाल

(C) डॉ. वी.के. सारस्वत

(D) डॉ. एम.के. श्रीधर

2. NEP 2020 के अनुसार नई शैक्षणिक संरचना क्या है?

(A) 5+3+3+4

(B) 10+2+3

(C) 5+4+3+2

(D) 3+5+3+4

3. NEP 2020 के तहत मानव संसाधन विकास मंत्रालय (MHRD) का नाम बदलकर क्या रखा गया?

(A) शिक्षा मंत्रालय (Ministry of Education)

(B) उच्च शिक्षा मंत्रालय

(C) कौशल विकास मंत्रालय

(D) मानव कल्याण मंत्रालय

4. NEP 2020 के अनुसार प्राथमिक कक्षाओं में शिक्षण का माध्यम कम से कम किस कक्षा तक मातृभाषा/क्षेत्रीय भाषा रखने का सुझाव दिया गया है?

(A) कक्षा 5 तक

(B) कक्षा 8 तक

(C) कक्षा 10 तक

(D) कक्षा 12 तक

5. NEP 2020 में छात्रों के मूल्यांकन के लिए किस राष्ट्रीय मूल्यांकन केंद्र की स्थापना का प्रस्ताव है?

(A) परख (PARAKH)

(B) दीक्षा (DIKSHA)

(C) निष्ठा (NISHTHA)

(D) स्वयं (SWAYAM)

17.11 सारांश (Summary)

- **नीति की पृष्ठभूमि:**राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 (NEP 2020) ने 34 वर्ष पुरानी 1986 की नीति का स्थान लिया है। यह डॉ. के. कस्तूरीरंगन समिति की सिफारिशों पर आधारित है और इसका उद्देश्य भारत को वैश्विक ज्ञान महाशक्ति बनाना है।
- **स्कूली शिक्षा ढांचा (5+3+3+4):**पारंपरिक 10+2 ढांचे को समाप्त करके 3 से 18 वर्ष की आयु के बच्चों के लिए 5 (बुनियादी) + 3 (प्रारंभिक) + 3 (मध्य) + 4 (माध्यमिक) का नया वैज्ञानिक ढांचा लागू किया गया है।
- **पाठ्यक्रम एवं शिक्षाशास्त्र:**रटंत विद्या को समाप्त कर अनुभवात्मक अधिगम (Experiential Learning), तार्किक सोच, और मातृभाषा में शिक्षा (कम से कम

नोट

नोट

कक्षा 5 तक) पर बल दिया गया है। 360-डिग्री समग्र प्रगति कार्ड और PARAKH की परिकल्पना की गई है।

- **उच्च शिक्षा सुधार:**बहु-विषयक शिक्षा (MERUs), बहु-प्रवेश और निकास विकल्प, एकेडेमिक बैंक ऑफ क्रेडिट्स (ABC), तथा राष्ट्रीय अनुसंधान फाउंडेशन (NRF) की स्थापना के माध्यम से उच्च शिक्षा को लचीला और अनुसंधान-उन्मुख बनाया गया है।
- **शिक्षक शिक्षा एवं प्रौद्योगिकी:** 2030 तक 4-वर्षीय एकीकृत B.Ed. को न्यूनतम योग्यता बनाया गया है, शिक्षकों के लिए 50 घंटे का वार्षिक CPD अनिवार्य किया गया है, और दीक्षा (DIKSHA) तथा NETF के जरिए डिजिटल शिक्षा को बढ़ावा दिया जा रहा है।

17.12 पारिभाषिक शब्दावली (Glossary)

- **NEP (National Education Policy / राष्ट्रीय शिक्षा नीति):**देश की संपूर्ण शिक्षा प्रणाली के मार्गदर्शन और सुधार हेतु बनाई गई व्यापक सरकारी नीति।
- **ECCE (Early Childhood Care and Education / प्रारंभिक बचपन की देखभाल और शिक्षा):** 3 से 8 वर्ष की आयु के बच्चों के लिए खेल-आधारित प्रारंभिक देखभाल और स्कूली शिक्षा।
- **FLN (Foundational Literacy and Numeracy / बुनियादी साक्षरता और संख्यात्मकता):**बच्चों में प्रारंभिक स्तर पर पढ़ने, लिखने और गणितीय गणना करने की बुनियादी क्षमता।
- **ABC (Academic Bank of Credits / एकेडेमिक बैंक ऑफ क्रेडिट्स):**छात्रों द्वारा विभिन्न उच्च शिक्षण संस्थानों से अर्जित क्रेडिट को डिजिटल रूप से संग्रहित करने वाली बैंक प्रणाली।
- **PARAKH (Performance Assessment, Review, and Analysis of Knowledge for Holistic Development):**छात्रों के मूल्यांकन और परीक्षा के मानकों को तय करने वाला राष्ट्रीय केंद्र।

नोट

- **MERUs (Multidisciplinary Education and Research Universities):**आईआईटी और आईआईएम के स्तर के बहु-विषयक शिक्षा और अनुसंधान संस्थान।
- **NRF (National Research Foundation / राष्ट्रीय शोध फाउंडेशन):**देश भर में वैज्ञानिक और सामाजिक अनुसंधान को वित्तपोषित और प्रोत्साहित करने वाली सर्वोच्च संस्था।
- **CPD (Continuous Professional Development / सतत व्यावसायिक विकास):**शिक्षकों की दक्षता और कौशल को निरंतर अद्यतन करने के लिए आयोजित होने वाले प्रशिक्षण कार्यक्रम।

17.13 बोध प्रश्नों के उत्तर

उत्तर: (A) डॉ. के. कस्तूरीरंगन

उत्तर: (A) 5+3+3+4

उत्तर: (A) शिक्षा मंत्रालय (Ministry of Education)

उत्तर: (A) कक्षा 5 तक

उत्तर: (A) परख (PARAKH)

17.14 सुझावित अध्ययन सामग्री – मुक्त शैक्षिक संसाधन

1. Ministry of Education: National Education Policy 2020 (Official Policy Document PDF)
2. eGyanKosh: Paradigm Shift under NEP 2020 (IGNOU)
3. NCERT Portal: NEP 2020 Pedagogical and Curricular Reforms
4. UGC Portal: NEP 2020 Implementation Guidelines for Higher Education
5. Swayam: NEP 2020 Orientation and Reforms Course

नोट

17.15 संदर्भ एवं अतिरिक्त पठन सामग्री (References and Suggested Readings)

- inistry of Education (MoE), Government of India. (2020). *National Education Policy 2020*. New Delhi.
- NCERT. (2023). *National Curriculum Framework for School Education (NCF-SE)*. New Delhi: NCERT.
- अग्रवाल, कपिल. (2021). *भारतीय शिक्षा प्रणाली और राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020*. नई दिल्ली: साहित्य प्रकाशन।
- शर्मा, आर. के. (2022). *शैक्षिक दर्शन, समाजशास्त्र एवं नीतिगत विकास*. जयपुर: पब्लिकेशन हाउस।

17.16 अभ्यास प्रश्न एवं अभ्यास कार्य (Exercise and Self-Assessment)

1 बोध प्रश्न (In-text Questions)

1. राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 किस समिति की सिफारिशों पर तैयार की गई है?
2. स्कूली शिक्षा के नए 5+3+3+4 ढांचे में 'बुनियादी चरण' (Foundational Stage) की समयावधि और आयु वर्ग क्या है?
3. उच्च शिक्षा में 'एकेडेमिक बैंक ऑफ क्रेडिट्स' (ABC) का क्या मुख्य उद्देश्य है?
4. प्राथमिक स्तर पर शिक्षा के माध्यम के रूप में किस भाषा को प्राथमिकता देने की संस्तुति की गई है?

2 निबंधात्मक एवं विश्लेषणात्मक प्रश्न (Long and Analytical Questions)

1. राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की मुख्य विशेषताओं और इसकी पृष्ठभूमि का विस्तार से वर्णन कीजिए।
2. स्कूली शिक्षा में पारंपरिक 10+2 प्रणाली के स्थान पर 5+3+3+4 ढांचे की आवश्यकता और इसके वैज्ञानिक आधार को समझाइए।

नोट

3. उच्च शिक्षा प्रणाली में बहु-विषयक दृष्टिकोण, बहु-प्रवेश/निकास प्रणाली और राष्ट्रीय शोध फाउंडेशन (NRF) के प्रभावों का समालोचनात्मक परीक्षण कीजिए।
4. भारत जैसे विशाल देश में NEP 2020 के सफल क्रियान्वयन के मार्ग में आने वाली प्रमुख चुनौतियों और उनके समाधानों की विवेचना कीजिए।

3 व्यावहारिक गतिविधि / असाइनमेंट (Practical Activity / Assignment)

- **गतिविधि:**अपने नजदीकी किसी प्राथमिक या माध्यमिक विद्यालय का भ्रमण कीजिए और वहाँ के शिक्षकों से चर्चा कर यह जानिए कि NEP 2020 के तहत 'बस्ता-रहित दिवस' (Bagless Days) और अनुभवात्मक अधिगम (Experiential Learning) को किस प्रकार लागू किया जा रहा है। इस पर 500 शब्दों की एक रिपोर्ट तैयार कीजिए।

नोट

इकाई 18
व्यावहारिक अनुप्रयोग एवं अधिगम परिणाम

इकाई की रूपरेखा (Unit Structure)

18.1 प्रस्तावना (Introduction)
18.2 इकाई के उद्देश्य
18.3 शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया में व्यावहारिक अनुप्रयोग
18.3.1 कक्षा-कक्ष शिक्षण में दार्शनिक सिद्धांतों का प्रयोग
18.3.2 अनुभवात्मक अधिगम (Experiential Learning)की अवधारणा
18.3.3 परियोजना-आधारित अधिगम और समुदाय सहभागिता
18.4 शैक्षिक नीतियों और आयोगों के व्यावहारिक निहितार्थ
18.5 अधिगम परिणाम: अवधारणा एवं मूल्यांकन
18.6 21वीं सदी के कौशल और व्यावहारिक दक्षता
18.6.1 आलोचनात्मक चिंतन (Critical Thinking) और समस्या समाधान
18.6.2 सृजनात्मकता, सहयोग और संप्रेषण कौशल
18.6.3 डिजिटल साक्षरता और तकनीकी एकीकरण
18.7 सारांश (Summary)
18.8 शब्दावली (Glossary)
18.9 बोध प्रश्नों के उत्तर
18.10 संदर्भ ग्रन्थ
18.11 सुझावित अध्ययन सामग्री – मुक्त शैक्षिक संसाधन
18.12 अभ्यास प्रश्न (Exercises)

18.1 प्रस्तावना (Introduction)

शिक्षा केवल कुछ अमूर्त सिद्धांतों, दार्शनिक विचारों या कागजी नीतियों का संग्रह मात्र नहीं है, बल्कि यह मानव जीवन के सर्वांगीण विकास और समाज के पुनर्निर्माण का एक जीवंत माध्यम है। इस संपूर्ण पाठ्यक्रम (ब्लॉक 1 से 4) के दौरान हमने शिक्षा के दार्शनिक, समाजशास्त्रीय, ऐतिहासिक और नीतिगत आधारों का गहन अध्ययन किया है। हमने प्राचीन भारतीय परंपराओं से लेकर आधुनिक पाश्चात्य विचारधाराओं और महान विचारकों के योगदान को समझा है। साथ ही, विभिन्न शैक्षिक आयोगों और राष्ट्रीय शिक्षा नीतियों (विशेषकर NEP 2020) के सफर का जायजा लिया है। परंतु किसी भी वैचारिक

नोट

ढांचे की सार्थकता इस बात में निहित होती है कि उसका व्यावहारिक धरातल पर कितना और कैसा उपयोग हो रहा है।

यह इकाई इस पाठ्यक्रम की**समापन इकाई (Closing Unit)**है, जो सिद्धांत (Theory) और व्यवहार (Practice) के बीच के सेतु का कार्य करती है। यहाँ हम यह समझेंगे कि किस प्रकार दार्शनिक मान्यताओं और नीतिगत दस्तावेजों को कक्षा-कक्ष की वास्तविक परिस्थितियों, शिक्षण रणनीतियों और छात्र-केंद्रित अधिगम परिणामों में बदला जा सकता है। आज के वैश्वीकृत और तकनीकी युग में जब शिक्षा के मायने बदल रहे हैं, तब एक शिक्षक और शैक्षिक सामग्री निर्माता (SLM Developer) के रूप में यह आवश्यक हो जाता है कि हम केवल पाठ्यक्रम पूरा करने पर ध्यान न दें, बल्कि यह सुनिश्चित करें कि विद्यार्थी ने क्या वास्तविक योग्यता और कौशल अर्जित किया है।

इस इकाई में हम व्यावहारिक अनुप्रयोगों के विविध आयामों, अनुभवात्मक शिक्षण, सतत एवं व्यापक मूल्यांकन (CCE) और 21वीं सदी के अनिवार्य कौशलों पर विस्तार से चर्चा करेंगे, जिससे शिक्षा प्रणाली को अधिक प्रभावी, उत्पादक और प्रासंगिक बनाया जा सके।

18.2 इकाई के उद्देश्य (Objectives of the Unit)

इस अंतिम इकाई के अध्ययन के उपरांत शिक्षार्थी निम्नलिखित में सक्षम हो सकेंगे:

- शिक्षा के सैद्धांतिक एवं दार्शनिक पक्षों को व्यावहारिक जीवन और दैनिक शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया से जोड़ना।
- समकालीन भारतीय संदर्भ में राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP 2020) और अन्य शैक्षिक आयोगों के व्यावहारिक निहितार्थों का विश्लेषण करना।
- शिक्षण में अनुभवात्मक अधिगम (Experiential Learning) और परियोजना-आधारित विधियों को प्रभावी ढंग से क्रियान्वित करना।
- अधिगम परिणामों (Learning Outcomes) की अवधारणा को समझकर उनके मूल्यांकन के विभिन्न तौर-तरीकों का निर्धारण करना।
- 21वीं सदी की आवश्यकताओं के अनुरूप शिक्षार्थियों में आलोचनात्मक चिंतन, समस्या-समाधान, और डिजिटल साक्षरता जैसे कौशल विकसित करना।

नोट

18.3 शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया में व्यावहारिक अनुप्रयोग (Practical Applications in Teaching-Learning Process)

शिक्षा की सार्थकता इस बात में निहित है कि पुस्तक और कक्षा में सीखे गए सिद्धांत केवल वैचारिक स्तर तक सीमित न रहें, बल्कि वे विद्यार्थी के दैनिक जीवन और वास्तविक दुनिया की समस्याओं को सुलझाने में मददगार साबित हों। इस उप-इकाई में हम यह समझेंगे कि किस प्रकार दार्शनिक सिद्धांतों और शैक्षिक नीतियों को व्यावहारिक रूप से कक्षा-कक्ष में उतारा जा सकता है।

- **18.3.1 कक्षा-कक्ष शिक्षण में दार्शनिक सिद्धांतों का प्रयोग (Application of Philosophical Principles in Classroom Teaching)**
    - **प्रकृतिवाद का प्रभाव:**छात्रों को स्वतंत्र वातावरण देना, प्रकृति के सान्निध्य में सीखने के अवसर प्रदान करना और उनकी स्वाभाविक रुचियों का सम्मान करना।
    - **आदर्शवाद का प्रभाव:**शिक्षक द्वारा नैतिक मूल्यों, अनुशासन, उच्च आदर्शों और चरित्र निर्माण को शिक्षण का केंद्रबिंदु बनाना।
    - **प्रयोजनवाद (Pragmatism) और जॉन डीवी के विचार:** 'करके सीखना' (Learning by Doing) के सिद्धांत को अपनाकर विद्यार्थियों को व्यावहारिक अनुभव देना।
- **18.3.2 अनुभवात्मक अधिगम (Experiential Learning) की अवधारणा**
    - डेविड कोलम्ब (David Kolb) के अनुभवात्मक अधिगम चक्र (Concrete Experience, Reflective Observation, Abstract Conceptualization, and Active Experimentation) का कक्षा में क्रियान्वयन।
    - अमूर्त पाठ्यपुस्तकीय ज्ञान को वास्तविक जीवन की परिस्थितियों, प्रयोगशाला के प्रयोगों और क्षेत्र-भ्रमण (Field Trips) के माध्यम से मूर्त रूप देना।

नोट

- विद्यार्थियों को अपने अनुभवों का विश्लेषण करने और उनसे नए निष्कर्ष निकालने के लिए प्रेरित करना।

- **18.3.3 परियोजना-आधारित अधिगम (Project-Based Learning) और समुदाय सहभागिता**
  - विद्यार्थियों को समूहों में ऐसी परियोजनाएँ सौंपना जो वास्तविक सामाजिक या वैज्ञानिक समस्याओं से जुड़ी हों।
  - विद्यालय और समुदाय के बीच की दूरी को मिटाना, ताकि छात्र समाज की तात्कालिक समस्याओं (जैसे- पर्यावरण संरक्षण, जल संकट, या स्वास्थ्य जागरूकता) का समाधान खोज सकें।
  - सामूहिक कार्य (Teamwork) के माध्यम से नेतृत्व क्षमता, परस्पर सहयोग और उत्तरदायित्व की भावना का विकास करना।
- **18.3.4 सैद्धांतिक ज्ञान और व्यावहारिक कौशल के बीच संतुलन**
  - रटने की प्रवृत्ति (Rote Learning) को हतोत्साहित करते हुए विश्लेषणात्मक सोच और क्रियात्मक दक्षता को बढ़ावा देना।
  - मूल्यांकन प्रणालियों में केवल लिखित परीक्षाओं के स्थान पर आंतरिक मूल्यांकन, पोर्टफोलियो और व्यावहारिक प्रदर्शन (Practical Performance) को प्राथमिकता देना।

18.4 शैक्षिक नीतियों और आयोगों के व्यावहारिक निहितार्थ (Practical Implications of Educational Policies and Commissions)

शैक्षिक नीतियां और आयोग किसी भी राष्ट्र की शिक्षा प्रणाली की रीढ़ होते हैं। वे केवल सैद्धांतिक दस्तावेज नहीं होते, बल्कि भविष्य के समाज के निर्माण के लिए एक सुविचारित खाका प्रस्तुत करते हैं। स्वतंत्रता के बाद से भारत में अनेक शिक्षा आयोगों (जैसे मुदालियर आयोग, कोठारी आयोग) और राष्ट्रीय शिक्षा नीतियों (जैसे NPE 1986 और विशेष रूप से**राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 - NEP 2020**) का गठन किया गया है। इन

नोट

सभी नीतियों का मूल उद्देश्य सैद्धांतिक शिक्षा को जमीनी हकीकत से जोड़ना, रोजगारोन्मुखी बनाना और शिक्षार्थियों को नैतिक रूप से सुदृढ़ करना रहा है। इस उप-इकाई में हम इन नीतियों के व्यावहारिक निहितार्थों का गहराई से विश्लेषण करेंगे।

1. राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP 2020) के व्यावहारिक लक्ष्य और उनका क्रियान्वयन

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 ने भारतीय शिक्षा प्रणाली में एक क्रांतिकारी बदलाव की नींव रखी है। इसके व्यावहारिक निहितार्थों को निम्नलिखित प्रमुख बिंदुओं के माध्यम से समझा जा सकता है:

- **5+3+3+4 संरचना का वैज्ञानिक ढांचा:**पुरानी 10+2 प्रणाली के स्थान पर लाई गई यह नई संरचना बाल-मनोविज्ञान और संज्ञानात्मक विकास के चरणों पर आधारित है।
    - *पूर्व-प्राथमिक स्तर (Foundation Stage):*खेल-आधारित (Play-based) और गतिविधि-आधारित अधिगम को प्राथमिकता दी गई है, जिससे बच्चों में स्कूल के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित हो।
    - *माध्यमिक एवं उच्च स्तर:*बहु-विषयक (Multidisciplinary) दृष्टिकोण अपनाते हुए विज्ञान, कला, और व्यावसायिक शिक्षा के बीच की कृत्रिम दीवारों को समाप्त किया गया है, ताकि छात्र अपनी रुचि के अनुसार विषयों का चयन कर सकें।
- **रटने की प्रवृत्ति का अंत और वैचारिक समझ:** NEP 2020 का सबसे महत्वपूर्ण व्यावहारिक कदम छात्रों को रटने की पद्धति (Rote Learning) से मुक्ति दिलाना है। कक्षाओं में आलोचनात्मक चिंतन (Critical Thinking), तार्किक विश्लेषण और समस्या-समाधान क्षमताओं के विकास पर जोर दिया जा रहा है। परीक्षा प्रणाली को इस प्रकार ढाला जा रहा है कि वह ज्ञान के स्मरण (Recall) के बजाय उसके अनुप्रयोग (Application) का परीक्षण करे।

2. कौशल विकास और व्यावसायिक शिक्षा का एकीकरण

पूर्व की शिक्षा प्रणालियों में व्यावसायिक शिक्षा और अकादमिक शिक्षा को अलग-अलग खानों में देखा जाता था, जिससे व्यावसायिक शिक्षा को अक्सर कमतर आंका जाता था।

नोट

- **प्रारंभिक स्तर पर व्यावसायिक जुड़ाव:** NEP 2020 और समकालीन नीतियों के तहत स्कूली स्तर पर ही (कक्षा 6 से आगे) इंटर्नशिप और व्यावसायिक प्रशिक्षण (जैसे कोडिंग, बढ़ईनी, बागवानी, इलेक्ट्रिकल कार्य आदि) को अनिवार्य या वैकल्पिक रूप से जोड़ा जा रहा है।
- **स्थानीय उद्योगों से जुड़ाव:**स्कूलों और उच्च शिक्षण संस्थानों को स्थानीय कारीगरों, उद्योगों और व्यावसायिक घरानों के साथ जोड़ा जा रहा है, ताकि छात्र किताबी ज्ञान के साथ-साथ व्यावहारिक हस्त कौशल (Hand-on Skills) भी सीख सकें। इससे 'डिग्री के साथ रोजगार' (Employability with Education) की परिकल्पना साकार होती है।

3. मूल्य आधारित शिक्षा और भारतीय लोकाचार का दैनिक जीवन में समावेश

आधुनिक वैश्वीकृत दुनिया में नैतिक पतन और सामाजिक विघटन एक बड़ी चुनौती बनते जा रहे हैं। शैक्षिक नीतियों ने इस बात पर विशेष बल दिया है कि शिक्षा केवल आजीविका कमाने का साधन न बने, बल्कि वह एक बेहतर इंसान बनाने का माध्यम बने।

- **संविधानिक मूल्यों का समावेश:**न्याय, स्वतंत्रता, समानता और बंधुत्व जैसे भारतीय संविधान के मूल मूल्यों को शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया का हिस्सा बनाया गया है।
- **पर्यावरण चेतना और उत्तरदायित्व:**आज की नीतियों में सतत विकास (Sustainable Development) और पर्यावरण संरक्षण को सर्वोच्च प्राथमिकता दी गई है। छात्रों को व्यावहारिक रूप से जल संरक्षण, स्वच्छता अभियान, और ऊर्जा की बचत जैसी गतिविधियों से जोड़ा जा रहा है, जिससे वे जिम्मेदार वैश्विक नागरिक बन सकें।

4. प्रौद्योगिकी एकीकरण और डिजिटल बुनियादी ढांचा

समकालीन शैक्षिक नीतियों का एक अन्य महत्वपूर्ण व्यावहारिक आयाम डिजिटल डिवाइड को पाटना और शिक्षा में तकनीक का प्रभावी उपयोग करना है।

नोट

- **ऑनलाइन और मिश्रित अधिगम (Blended Learning):**दीक्षा (DIKSHA) और स्वयंप्रभा (Swayamprabha) जैसे पोर्टल्स के माध्यम से गुणवत्तापूर्ण डिजिटल सामग्री को देश के दूर-दराज के कोने तक पहुँचाया जा रहा है।
- **शिक्षकों का तकनीकी सशक्तीकरण:**शिक्षकों को केवल पारंपरिक ब्लैकबोर्ड शिक्षण तक सीमित न रखकर आधुनिक डिजिटल टूल्स, स्मार्ट कक्षाओं और वर्चुअल लैब्स का उपयोग करने के लिए व्यावहारिक प्रशिक्षण दिया जा रहा है।

5. समावेशी शिक्षा (Inclusive Education) और समान अवसर

नीतियों का एक मुख्य व्यावहारिक पक्ष यह सुनिश्चित करना है कि समाज के प्रत्येक वर्ग—चाहे वह सामाजिक, आर्थिक, या शारीरिक रूप से वंचित हो—को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा समान रूप से प्राप्त हो।

- **विशेष आवश्यकता वाले बच्चों (CwSN) के लिए प्रावधान:**रैंप निर्माण, ब्रेल लिपि, सुलभ डिजिटल सामग्री और विशेष शिक्षकों की नियुक्ति के माध्यम से समावेशी कक्षाओं की संस्कृति को धरातल पर उतारा जा रहा है।
- **लिंग समावेशी कोष (Gender-Inclusion Fund):**बालिकाओं की शिक्षा को निरंतर बनाए रखने और लैंगिक समानता को बढ़ावा देने के लिए व्यावहारिक वित्तीय और प्रशासनिक कदम उठाए गए हैं।

निष्कर्ष

शैक्षिक नीतियां और आयोग केवल कागजी दस्तावेज या राजनेता के भाषण नहीं होते, बल्कि वे राष्ट्र की दिशा तय करने वाले कंपास होते हैं। जब तक मुदालियर आयोग के व्यावसायिक उद्देश्यों, कोठारी आयोग के सामाजिक परिवर्तन के आदर्शों, और NEP 2020 के आधुनिक और लचीले दृष्टिकोण को शिक्षक अपनी कक्षा के वास्तविक वातावरण में नहीं उतारते, तब तक कोई भी नीति सफल नहीं हो सकती। एक सफल शिक्षक और शिक्षाविद् का दायित्व है कि वह इन नीतियों के मर्म को समझे और उन्हें अपनी दैनिक शिक्षण पद्धति में ढालकर विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास का मार्ग प्रशस्त करे।

नोट

18.5 अधिगम परिणाम: अवधारणा एवं मूल्यांकन (Learning Outcomes: Concept and Evaluation)

शिक्षा प्रणाली की प्रभावशीलता का वास्तविक मूल्यांकन इस बात से होता है कि शिक्षण प्रक्रिया के अंत में विद्यार्थियों ने ज्ञान, कौशल और दृष्टिकोण के स्तर पर क्या ठोस उपलब्धियां हासिल की हैं। 'अधिगम परिणाम' (Learning Outcomes - LOs) वर्तमान वैश्विक और राष्ट्रीय शैक्षिक परिदृश्य का एक केंद्रीय और अनिवार्य हिस्सा बन चुके हैं। यह उप-इकाई अधिगम परिणामों की तात्विक अवधारणा, उनके वर्गीकरण और उनके वैज्ञानिक मूल्यांकन के विविध आयामों का विस्तृत विश्लेषण प्रस्तुत करती है।

1. अधिगम परिणामों की अवधारणा एवं परिभाषा

पारंपरिक शिक्षा प्रणालियों में सारा ध्यान इस बात पर केंद्रित रहता था कि शिक्षक ने पाठ्यक्रम (Curriculum) का कितना हिस्सा पूरा कर दिया है, जिसे 'इनपुट' (Input) आधारित व्यवस्था कहा जाता था। इसके विपरीत, आधुनिक शिक्षा प्रणाली 'आउटपुट' या परिणाम-आधारित (Outcome-based) दृष्टिकोण पर बल देती है।

- **अर्थ:**अधिगम परिणाम वे स्पष्ट, मापने योग्य कथन (Statements) हैं जो यह बताते हैं कि एक शिक्षार्थी को किसी विशेष पाठ्यक्रम, इकाई या शैक्षणिक सत्र के पूर्ण होने पर क्या जानना चाहिए, क्या समझ जाना चाहिए और वह किन कौशलों को प्रदर्शित करने में सक्षम होगा।
- **महत्व:**यह शिक्षकों, छात्रों और अभिभावकों तीनों के लिए स्पष्ट दिशा-निर्देशक का कार्य करता है। इसके माध्यम से यह सुनिश्चित किया जाता है कि शिक्षा केवल सैद्धांतिक जानकारी का संचय न बनकर व्यावहारिक क्षमता का विकास करे।

2. शैक्षिक उद्देश्यों का त्रि-आयामी वर्गीकरण (Taxonomy of Educational Objectives)

अधिगम परिणामों का निर्धारण और वर्गीकरण प्रसिद्ध शिक्षाविद् बेंजामिन ब्लूम (Benjamin Bloom) और उनके सहयोगियों द्वारा दिए गए वर्गीकरण पर आधारित है। इसे मुख्य रूप से तीन पक्षों में विभाजित किया जाता है, जो व्यावहारिक मूल्यांकन का आधार बनते हैं:

नोट

- **ज्ञानात्मक पक्ष (Cognitive Domain):**
    - इसका संबंध बौद्धिक क्षमताओं, ज्ञान के स्मरण, उसकी समझ, अनुप्रयोग, विश्लेषण, संश्लेषण और मूल्यांकन से है।
    - *व्यावहारिक रूप:*छात्र किसी ऐतिहासिक घटना के कारणों का विश्लेषण करने या गणितीय सूत्र को वास्तविक समस्या पर लागू करने में सक्षम होता है।
- **भावात्मक पक्ष (Affective Domain):**
    - इसका संबंध भावनाओं, दृष्टिकोण, मूल्यों, रुचियों और संवेदनाओं के विकास से है।
    - *व्यावहारिक रूप:*पर्यावरण संरक्षण के प्रति व्यक्तिगत जिम्मेदारी महसूस करना, सहपाठियों के प्रति सहानुभूति रखना और नैतिक मूल्यों का आदर करना।
- **मनोसामाजिक या क्रियात्मक पक्ष (Psychomotor Domain):**
    - इसका संबंध शारीरिक कौशल, हस्त-कौशल, और तंत्रिका-पेशीय (Neuromuscular) समन्वय से है।
    - *व्यावहारिक रूप:*प्रयोगशाला में उपकरण चलाना, कंप्यूटर पर कोडिंग करना, खेलकूद या कला एवं शिल्प में दक्षता हासिल करना।

3. अधिगम परिणामों के मूल्यांकन की विधियाँ और रणनीतियाँ

अधिगम परिणामों का आकलन केवल वर्ष के अंत में ली जाने वाली लिखित परीक्षाओं तक सीमित नहीं होना चाहिए, बल्कि यह सतत और व्यापक प्रक्रिया होनी चाहिए।

- **सतत एवं व्यापक मूल्यांकन (Continuous and Comprehensive Evaluation - CCE):**
    - इसके अंतर्गत छात्रों की शैक्षणिक और सह-शैक्षणिक दोनों गतिविधियों का नियमित मूल्यांकन किया जाता है।

नोट

- यह छात्रों की कमजोरियों (Learning Gaps) का समय रहते पता लगाने और उनके निवारण (Remedial Teaching) में सहायता करता है।

- **रूब्रिक्स (Rubrics) का प्रयोग:**
  - अधिगम परिणामों के मूल्यांकन के लिए स्पष्ट मानदंड और रेटिंग स्केल (जैसे- उत्कृष्ट, संतोषजनक, सुधार की आवश्यकता) का उपयोग किया जाता है, जिससे मूल्यांकन प्रक्रिया में निष्पक्षता और पारदर्शिता बनी रहती है।

- **पोर्टफोलियो मूल्यांकन (Portfolio Assessment):**
  - छात्र के पूरे सत्र के श्रेष्ठ कार्यों, परियोजनाओं, चित्रों और स्व-मूल्यांकन रिपोर्टों का एक संग्रहित दस्तावेज तैयार किया जाता है, जो उसकी वास्तविक प्रगति का प्रामाणिक प्रमाण होता है।

4. समकालीन शिक्षा में अधिगम परिणामों की प्रासंगिकता

राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP 2020) और आधुनिक पाठ्यचर्या रूपरेखा (NCF) ने स्पष्ट किया है कि स्कूली शिक्षा से लेकर उच्च शिक्षा तक प्रत्येक स्तर पर 'क्षमता-आधारित शिक्षा' (Competency-Based Education) को बढ़ावा दिया जाना चाहिए।

- **गुणवत्ता में सुधार:**जब अधिगम परिणाम स्पष्ट रूप से परिभाषित होते हैं, तो शिक्षक अपनी शिक्षण विधियों को छात्रों की आवश्यकताओं के अनुसार ढाल सकते हैं।
- **वैश्विक प्रतिस्पर्धा:**यह सुनिश्चित करता है कि हमारे छात्र केवल राष्ट्रीय स्तर पर ही नहीं, बल्कि वैश्विक स्तर पर 21वीं सदी की चुनौतियों का सामना करने के लिए बौद्धिक और व्यावहारिक रूप से सक्षम बनें।

18.6 21वीं सदी के कौशल और व्यावहारिक दक्षता (21st Century Skills and Practical Competencies)

आधुनिक युग में ज्ञान की परिभाषा और उपयोग के तरीके में मूलभूत परिवर्तन आया है। पारंपरिक शिक्षा प्रणाली मुख्य रूप से तथ्यों, सूचनाओं और सिद्धांतों को रटने और उन्हें

नोट

परीक्षाओं में पुनरुत्पादित करने पर आधारित थी। परंतु आज का वैश्वीकृत, डिजिटल और अत्यधिक गतिशील समाज ऐसे नागरिकों की मांग करता है जो न केवल सैद्धांतिक रूप से ज्ञानी हों, बल्कि जिनके पास जटिल वास्तविक जीवन की समस्याओं को हल करने की व्यावहारिक दक्षता भी हो। 21वीं सदी के कौशल (21st Century Skills) इसी व्यावहारिक दक्षता का एक व्यापक खाका प्रस्तुत करते हैं। यह उप-इकाई उन आवश्यक कौशलों, उनके वर्गीकरण और शिक्षा प्रणाली में उनके व्यावहारिक समावेशन का विस्तृत विश्लेषण प्रस्तुत करती है।

1. 21वीं सदी के कौशलों का वैचारिक स्वरूप और वर्गीकरण

21वीं सदी के कौशलों को मुख्य रूप से तीन प्रमुख श्रेणियों में विभाजित किया जाता है, जो विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास का मार्ग प्रशस्त करते हैं:

- **अधिगम कौशल (Learning Skills - 4Cs):**
    - **आलोचनात्मक चिंतन (Critical Thinking):**किसी भी सूचना या समस्या का सतही तौर पर स्वीकार करने के बजाय उसका तार्किक, विश्लेषणात्मक और साक्ष्य-आधारित मूल्यांकन करना।
    - **सृजनात्मकता (Creativity):**पारंपरिक लीक से हटकर नए विचारों, दृष्टिकोणों और समाधानों का आविष्कार करना (Out-of-the-box thinking)।
    - **सहयोग (Collaboration):**विविध पृष्ठभूमियों और विचारों वाले लोगों के साथ मिलकर साझा लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए सामूहिक रूप से कार्य करना।
    - **संप्रेषण कौशल (Communication):**अपने विचारों, भावनाओं और तर्कों को मौखिक, लिखित और डिजिटल माध्यमों से स्पष्ट, प्रभावी और प्रभावशाली ढंग से दूसरों तक पहुँचाना।
- **साक्षरता कौशल (Literacy Skills):**

नोट

- **सूचना साक्षरता (Information Literacy):**डिजिटल और मुद्रित स्रोतों से सही, प्रामाणिक और उपयोगी जानकारी खोजने, उसका मूल्यांकन करने और उसका नैतिक उपयोग करने की क्षमता।
- **मीडिया साक्षरता (Media Literacy):**मीडिया के विभिन्न रूपों और विज्ञापनों के पीछे छिपे उद्देश्यों, पूर्वाग्रहों और सत्यों को समझने की क्षमता।
- **प्रौद्योगिकी साक्षरता (Technology Literacy):**कंप्यूटर, सॉफ्टवेयर, इंटरनेट और आधुनिक डिजिटल उपकरणों का उपयोग करने की तकनीकी दक्षता।

- **जीवन कौशल (Life Skills):**
  - **लचीलापन और अनुकूलनशीलता (Adaptability):** बदलती हुई परिस्थितियों, कार्यस्थलों और तकनीकों के अनुसार स्वयं को ढालने की क्षमता।
  - **नेतृत्व और उत्तरदायित्व (Leadership and Responsibility) :** स्वयं पहल करने, दूसरों का मार्गदर्शन करने और अपने कार्यों व निर्णयों की नैतिक जिम्मेदारी लेने का गुण।
  - **सामाजिक-सांस्कृतिक कौशल (Social and Cross-Cultural Skills):**विभिन्न संस्कृतियों और समाजों के प्रति सम्मानजनक दृष्टिकोण रखते हुए सौहार्दपूर्ण संबंध बनाए रखना।

2. पाठ्यक्रम और कक्षा-कक्ष शिक्षण में इनका व्यावहारिक समावेशन

इन कौशलों को केवल सैद्धांतिक रूप से पाठ्यपुस्तकों में पढ़ाना पर्याप्त नहीं है, बल्कि इन्हें शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया के ताने-बाने में बुनना आवश्यक है:

- **सक्रिय अधिगम पद्धतियों का प्रयोग:**शिक्षक को व्याख्यान पद्धति (Lecture Method) से आगे बढ़कर चर्चा सत्रों, वाद-विवाद, रोल-प्ले (Role-play) और

नोट

केस स्टडी (Case Studies) का उपयोग करना चाहिए। इससे छात्रों में आलोचनात्मक चिंतन और संप्रेषण कौशल का स्वतः विकास होता है।

- **सामूहिक परियोजनाएँ (Group Projects):**विद्यार्थियों को ऐसे प्रोजेक्ट सौंपे जाने चाहिए जिन्हें वे अकेले पूरा न कर सकें। इसके माध्यम से उनमें सामूहिक कार्य (Teamwork), संघर्ष समाधान (Conflict Resolution) और आपसी सहयोग की भावना पैदा होती है।
- **चिंतनशील लेखन (Reflective Writing):**छात्रों को अपनी दैनिक अधिगम यात्रा पर डायरी या पोर्टफोलियो लिखने के लिए प्रेरित किया जाना चाहिए, जिससे वे अपने विचारों के प्रति अधिक सजग और विश्लेषणात्मक बन सकें।

3. डिजिटल साक्षरता और प्रौद्योगिकी का एकीकरण

आज की शताब्दी में तकनीक केवल एक विषय नहीं, बल्कि सीखने और काम करने का माध्यम है।

ब्लेंडेड लर्निंग (Blended Learning):पारंपरिक कक्षा शिक्षण को डिजिटल प्लेटफार्मों, ऑनलाइन संसाधनों और वीडियो लेक्चर्स के साथ जोड़ना। इससे छात्र अपनी गति से सीखने (Self-paced learning) में सक्षम होते हैं।

- **कोडिंग और तार्किक तार्किकता:**स्कूली स्तर पर ही बेसिक कोडिंग, एल्गोरिदम और लॉजिकल रीजनिंग का समावेश किया जाना चाहिए, ताकि छात्र भविष्य की तकनीकी दुनिया में केवल उपभोक्ता न बनकर निर्माता बन सकें।
- **डिजिटल नागरिकता (Digital Citizenship):**इंटरनेट का उपयोग करते समय साइबर सुरक्षा, गोपनीयता (Privacy), और ऑनलाइन नैतिकता (Netiquette) के सिद्धांतों का व्यावहारिक ज्ञान देना आज के समय की सबसे बड़ी अनिवार्यता है।

4. मूल्यांकन पद्धतियों में परिवर्तन और भविष्य की चुनौतियाँ

जब तक हमारे मूल्यांकन की पारंपरिक प्रणालियाँ केवल रटे-रटाए उत्तरों को परखती रहेंगी, तब तक 21वीं सदी के कौशलों का वास्तविक विकास संभव नहीं है।

नोट

- **प्रदर्शन-आधारित मूल्यांकन (Performance-Based Assessment):**छात्रों की बौद्धिक और व्यावहारिक क्षमताओं का परीक्षण लिखित परीक्षाओं के साथ-साथउनके व्यावहारिक प्रदर्शन, प्रेजेंटेशन और समस्या-समाधान के तरीकों के आधार पर किया जाना चाहिए।
- **सतत प्रतिक्रिया (Continuous Feedback):**मूल्यांकन का उद्देश्य केवल अंक देना नहीं होना चाहिए, बल्कि छात्र की कमियों को उजागर कर उसे रचनात्मक प्रतिक्रिया (Constructive Feedback) देना होना चाहिए, जिससे वह निरंतर सुधार कर सके।

5. निष्कर्ष

21वीं सदी के कौशल और व्यावहारिक दक्षताएँ आज के विद्यार्थियों के लिए किसी ऐच्छिक विशेषता (Optional trait) का हिस्सा नहीं हैं, बल्कि यह उनकी उत्तरजीविता और सफलता की अनिवार्य शर्त हैं। शिक्षा प्रणाली का यह परम दायित्व है कि वह सैद्धांतिक ज्ञान और व्यावहारिक कौशल के बीच के इस अंतर को पूरी तरह पाटे। जब एक शिक्षार्थी विद्यालय या महाविद्यालय से बाहर निकले, तो उसके पास न केवल किताबी डिग्रियाँ हों, बल्कि जीवन की अनिश्चितताओं से निपटने के लिए आलोचनात्मक मस्तिष्क, सृजनात्मक दृष्टिकोण और अटूट नैतिक मूल्य भी हों। यही आधुनिक शिक्षा का सर्वोच्च और अंतिम लक्ष्य है।

1. अधिगम परिणाम (Learning Outcomes) का मुख्य उद्देश्य क्या है?

(A) विद्यार्थी ने क्या सीखा और वह क्या कर सकता है, इसका स्पष्ट मापन

(B) केवल पाठ्यक्रम को समय पर समाप्त करना

(C) शिक्षकों पर दबाव बनाना

(D) केवल ग्रेड शीट बनाना

2. सतत एवं व्यापक मूल्यांकन (CCE) किस पर जोर देता है?

(A) छात्र के संज्ञानात्मक, भावात्मक एवं मनोक्रियात्मक पक्षों के निरंतर आकलन पर

(B) केवल वर्ष के अंत में बोर्ड परीक्षा पर

(C) केवल लिखित परीक्षाओं पर

(D) केवल मौखिक प्रश्नों पर

नोट

3. 'रचनात्मक मूल्यांकन' (Formative Assessment) का उपयोग कब किया जाता है?

(A) शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया के दौरान सुधार हेतु

(B) केवल सत्र के अंत में ग्रेड देने के लिए

(C) केवल प्रवेश परीक्षा के समय

(D) प्रमाण पत्र जारी करने के लिए

4. योग्यता आधारित शिक्षा (Competency-Based Education) का ध्यान किस पर केंद्रित होता है?

(A) व्यावहारिक कौशल, समझ और वास्तविक जीवन में अनुप्रयोग पर

(B) केवल उत्तरों को याद रखने पर

(C) केवल परीक्षा पास करने पर

(D) केवल कक्षा में उपस्थिति पर

5. कक्षा शिक्षण में 'ब्लूम के वर्गीकरण' (Bloom's Taxonomy) का व्यावहारिक प्रयोग किसके लिए होता है?

(A) शिक्षण उद्देश्यों एवं प्रश्नों के स्तर निर्धारण हेतु

(B) खेलकूद समय-सारणी हेतु

(C) विद्यालय प्रशासन हेतु

(D) पुस्तकालय प्रबंधन हेतु

18.7 सारांश (Summary)

इस अंतिम इकाई और समग्र पाठ्यक्रम के समापन पर यह स्पष्ट हो जाता है कि शिक्षा का उद्देश्य केवल सैद्धांतिक ज्ञान का संचय करना नहीं, बल्कि विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास और सामाजिक रूपांतरण का मार्ग प्रशस्त करना है।

इस पाठ्यक्रम के दौरान हमने निम्नलिखित प्रमुख निष्कर्षों को रेखांकित किया है:

- **सैद्धांतिक और व्यावहारिक समन्वय:**शिक्षा के दार्शनिक और समाजशास्त्रीय आधार (जैसे प्रकृतिवाद, आदर्शवाद, प्रयोजनवाद) केवल पुस्तकीय विचार नहीं हैं, बल्कि वे कक्षा-कक्ष की शिक्षण पद्धतियों, अनुभवात्मक अधिगम

नोट

(Experiential Learning) और परियोजना-आधारित कार्यों के जीवंत आधार हैं।

- **नीतिगत दृष्टियों का धरातलीय क्रियान्वयन:**मुदालियर और कोठारी आयोग से लेकर राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP 2020) तक, सभी नीतियों का मुख्य लक्ष्य रटने की प्रवृत्ति का अंत, व्यावसायिक शिक्षा का एकीकरण, मूल्य शिक्षा और समावेशी संस्कृति को बढ़ावा देना है।
- **परिणाम-आधारित शिक्षा (Outcome-Based Education):**ज्ञान, कौशल और दृष्टिकोण के त्रि-आयामी विकास (ज्ञानात्मक, भावात्मक और मनोसामाजिक पक्ष) को मापने के लिए सतत एवं व्यापक मूल्यांकन (CCE) और पोर्टफोलियो जैसी आधुनिक विधियों की अनिवार्यता है।
- **21वीं सदी की आवश्यकताएँ:**आज के युग में आलोचनात्मक चिंतन, सृजनात्मकता, सहयोग, संप्रेषण (4Cs) और डिजिटल साक्षरता जैसे कौशल विद्यार्थियों की उत्तरजीविता और वैश्विक प्रतिस्पर्धा के लिए अत्यंत आवश्यक हैं।

अंततः, एक शिक्षक, शिक्षाविद् और पाठ्यक्रम डेवलपर (SLM Developer) के रूप में हमारा यह सामूहिक उत्तरदायित्व है कि हम इन सिद्धांतों और व्यावहारिक उपकरणों को अपनी कक्षाओं में प्रभावी ढंग से लागू करें। जब विद्यार्थी किताबी ज्ञान को वास्तविक जीवन की समस्याओं से जोड़ना सीख जाता है, तभी शिक्षा अपनी सार्थकता और पूर्णता को प्राप्त करती है।

18.8 मुख्य शब्द / पारिभाषिक शब्दावली (Key Words)

1. **अधिगम परिणाम)Learning Outcomes):** वे स्पष्ट और मापने योग्य कौशल, ज्ञान या अभिवृत्तियाँ जिन्हें एक छात्र को अध्ययन की किसी निश्चित अवधि या पाठ्यक्रम के अंत में प्रदर्शित करना होता है।
2. **व्यावहारिक अनुप्रयोग)Practical Application):** सैद्धांतिक ज्ञान)Theoretical Knowledge) को वास्तविक जीवन, कक्षाकक्ष की स्थितियों या -समस्या-समाधान में प्रयोग करने की क्षमता।

नोट

3. **क्षमता-आधारित शिक्षा)Competency-Based Education - CBE):** शिक्षण की वह प्रणाली जो केवल विषयवस्तु को याद करने के बजाय विशिष्ट - कौशलों और क्षमताओं को प्राप्त करने पर केंद्रित होती है।
4. **रचनात्मक) संरचनात्मक संरेखण/Constructive Alignment):** पाठ्यक्रम की एक डिज़ाइन प्रक्रिया जिसमें शिक्षण गतिविधियाँ और मूल्यांकन तकनीकें सीधे 'अधिगम परिणामों' (Learning Outcomes) के साथ मेल खाती हैं।
5. **सतत एवं व्यापक मूल्यांकन)Continuous and Comprehensive Evaluation - CCE):** छात्र के सर्वांगीण विकास का आकलन करने वाली प्रक्रिया, जो केवल परीक्षा तक सीमित न होकर शिक्षणअधिगम प्रक्रिया के साथ - निरंतर चलती है।

18.9 बोध प्रश्नों के उत्तर

उत्तर: (A) विद्यार्थी ने क्या सीखा और वह क्या कर सकता है, इसका स्पष्ट मापन

उत्तर: (A) छात्र के संज्ञानात्मक, भावात्मक एवं मनोक्रियात्मक पक्षों के निरंतर आकलन पर

उत्तर: (A) शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया के दौरान सुधार हेतु

उत्तर: (A) व्यावहारिक कौशल, समझ और वास्तविक जीवन में अनुप्रयोग पर

उत्तर: (A) शिक्षण उद्देश्यों एवं प्रश्नों के स्तर निर्धारण हेतु

18.10 सुझावित अध्ययन सामग्री – मुक्त शैक्षिक संसाधन

1. eGyanKosh: Learning Outcomes and Pedagogy Application (IGNOU)

नोट

2. NCERT Portal: Learning Outcomes at Secondary and Higher Stages
3. UNESCO: Competency-Based Learning and Outcomes
4. OER Commons: Designing Learning Outcomes and Assessments
5. Open Educational Resources (OER) Africa: Constructive Alignment in Curriculum

18.11 ग्रंथसूची एवं संदर्भ ग्रंथ (Bibliography and Suggested Readings)

1. **राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद (NCERT):** *राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (NCF 2005 & NCF-SE 2023)*, नई दिल्ली।
2. **मानव संसाधन विकास मंत्रालय (अब शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार):** *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 (NEP 2020)*, राजपत्रित दस्तावेज।
3. **अग्रवाल, जे. सी. (2018):** *शिक्षा के दार्शनिक और समाजशास्त्रीय आधार*, एस. चांद पब्लिकेशन, नई दिल्ली।
4. **पांडेय, रामकलक (2021):** *भारतीय एवं पाश्चात्य शिक्षा दर्शन*, विनोद पुस्तक हाउस, आगरा।
5. **Dewey, John (1916):** *Democracy and Education: An Introduction to the Philosophy of Education*, Macmillan, New York.
6. **Kolb, David A. (1984):** *Experiential Learning: Experience as the Source of Learning and Development*, Prentice-Hall, Englewood Cliffs, NJ.
7. **Trilling, Bernie, & Fadel, Charles (2009):** *21st Century Skills: Learning for Life in Our Times*, Jossey-Bass, San Francisco.

नोट

18.12 अभ्यास प्रश्न (Exercises)

- **वस्तुनिष्ठ प्रश्न (Objective Questions):**

1. "करके सीखना" (Learning by Doing) का सिद्धांत किस दार्शनिक विचारधारा से संबंधित है?

(क) आदर्शवाद (ख) प्रकृतिवाद (ग) प्रयोजनवाद (घ) अस्तित्ववाद

2. राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 (NEP 2020) में स्कूली शिक्षा के लिए कौन सा नया ढांचा प्रस्तावित किया गया है?

(क) 10+2 (ख) 5+3+3+4 (ग) 8+4+2 (घ) 11+1+2

3. ब्लूम के वर्गीकरण के अनुसार छात्रों की भावनाओं, मूल्यों और दृष्टिकोणों का संबंध किस पक्ष से है?

(क) ज्ञानात्मक पक्ष (ख) भावात्मक पक्ष (ग) मनोसामाजिक पक्ष (घ) क्रियात्मक पक्ष

- **लघु उत्तरीय प्रश्न (Short Answer Questions):**

1. अनुभवात्मक अधिगम (Experiential Learning) से क्या तात्पर्य है? कक्षा शिक्षण में इसकी क्या उपयोगिता है?
2. 21वीं सदी के कौशल के रूप में 'आलोचनात्मक चिंतन' (Critical Thinking) के महत्व को संक्षिप्त में समझाइए।
3. सतत एवं व्यापक मूल्यांकन (CCE) पारंपरिक परीक्षा प्रणाली से किस प्रकार भिन्न है?

- **दीर्घ उत्तरीय प्रश्न (Long Answer Questions):**

1. राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 (NEP 2020) के प्रमुख व्यावहारिक लक्ष्यों का विस्तार से वर्णन कीजिए और बताइए कि यह भारतीय शिक्षा प्रणाली में किस प्रकार क्रांतिकारी परिवर्तन ला रही है।

2 सैद्धांतिक ज्ञान और व्यावहारिक कौशल के बीच संतुलन स्थापित करने में एक शिक्षक की भूमिका का आलोचनात्मक परीक्षण कीजिए।

नोट

18.13 उपसंहार: भविष्य की दृष्टि और शिक्षक की भूमिका (Conclusion: Vision for the Future and the Role of the Teacher)

इस वृहद पाठ्यक्रम के अंतिम पड़ाव पर पहुँचकर जब हम शिक्षा के दार्शनिक आधारों, पाश्चात्य एवं भारतीय विचारकों के दर्शन, महान शैक्षिक आयोगों और राष्ट्रीय शिक्षा नीतियों (विशेषकर NEP 2020) के पूरे परिदृश्य का विहंगम अवलोकन करते हैं, तो एक अकादमिक सत्य पूरी तरह स्पष्ट हो जाता है—शिक्षा कोई स्थिर या जड़ व्यवस्था नहीं है, बल्कि यह निरंतर प्रवाहित होने वाली एक जीवंत और विकासशील प्रक्रिया है।

- **सिद्धांत और व्यवहार का संगम:**हमने समझा कि प्लेटो, टैगोर, विवेकानंद, गांधी, फ्रोबेल और जॉन डीवी के विचार केवल पुस्तकीय दर्शन नहीं हैं, बल्कि वे वर्तमान आधुनिक कक्षाओं की रीढ़ हैं। जब तक दार्शनिक आदर्श कक्षा के धरातल पर क्रियान्वित नहीं होते, तब तक वे केवल बौद्धिक विलास बनकर रह जाते हैं।
- **परिवर्तन के संवाहक के रूप में शिक्षक:**पाठ्यक्रम की इस अंतिम इकाई का मूल स्वर यही है कि एक शिक्षक केवल सूचनाओं का संवाहक (Information Transmitter) नहीं होता, बल्कि वह एक मार्गदर्शक, दार्शनिक और सामाजिक परिवर्तन का शिल्पकार होता है। शिक्षक का दायित्व है कि वह विद्यार्थियों में 21वीं सदी के कौशल—जैसे आलोचनात्मक चिंतन, सृजनात्मकता, सहयोग और संप्रेषण—को इस प्रकार रोपे कि वे भविष्य की हर अनिश्चितता का सामना आत्मविश्वास के साथ कर सकें।

नोट